

बुद्धिधन.

याने

बुद्धि और धनकी विस्तार पूर्वक नवल कथा.

BUDDHI-DHAN

or

AN INTERESTING NOWEL

as

REGARDS THE WEALTH & WISDOM.

कर्ता तथा प्रगट कर्ता

समर्थमल नथमलजी सिंघी

सिररतेदार सदर अदालत फोजदारी

रयासत सिरोही (राजपूताना).

प्रथमावृत्ति.

धी सीटी प्रीन्टींग प्रेस—अमदावादमें

शा. चंदुलाल छगनलालने मुद्रांकित किया.

श्री वीर सवत २४३९.   किमत रु. २-०-०   सन १९१३.

॥ ॐ ॥

मङ्गला चरण.

राग कल्याण.

सहाय करो प्रभु, शरण तिहारी. टेर-
भवभय मोचन नाथजी प्यारे, भक्तवत्सल अघहारी ॥१॥
सुर नर मुनिवर पार न पावत, नेती निगम पुकारी ॥२॥
तो अनुग्रहसे ग्रन्थ रचत हूं, बुद्धिधन उर धारी ॥३॥
वाणी विमल प्रभु दीजो दयाला, ग्रन्थ बने उपकारी ॥४॥
अक्षर भेद मैं तनिक न जाणत, सत्य वदुं मैं विचारी ॥५॥
सफल करो प्रभु यत्न हमारा, तनिक अर्ज उर धारी ॥६॥
करजुग वन्दु दीन दयाला, वार वार जाऊ वारी ॥७॥

भुमिका.

प्रथम उस परमपूज्य परमात्माको धन्यवाद है कि, जिसके अनुग्रहसे आज मैं बुद्धिधन नामका उपन्यास लिखने पाया हूं और अपने भाइयोंके सामने प्रकट कर रहा हूं.

यह उपन्यास किस हेतु लिखा गया है उसका वर्णन करना इस स्थानपर अनुचित नहीं होगा. इसमें संदेह नहीं कि, आजकल संसारकी विचित्र गति होरही है. ऐसे पुरूप बहुत ही कम दिखाई देते हैं जो निज धर्म्म पर कटिबद्ध होकर तथा किस हेतु इस संसारमें जन्म लिया है उसके रहस्यको जानकर अपना मुख्य कर्तव्य करते हो. बल्कि छोटेसे लेकर बड़े तक मोहमायाके जालमें फंसकर केवल द्रव्योपार्जन करनेके अर्थ ऐसे अनिष्ट कर्म करते हैं कि, जिससे दुःखके भागी होते हैं. उनको इस बातका तनिक विचार नहीं आता कि, यह मानव जन्म वार २ नहीं मिलता, मायावी जालमें

फंसकर जो द्रव्य कुमार्गसे उपार्जन कररहे है, सुखदाई नहीं बल्कि अन्तमें जाकर दुःखदाई होगा, निज धर्म्म पर कटिबद्ध होकर कोई धार्मिक औपदेशिक तथा परोपकारी कार्य करें और मनुष्य मात्रको बन्धु समान गिनकर उनके लाभार्थ सहायता करें तथा उन अधर्मी बन्धुओंको जो कुमार्ग ग्रहण कर अनिष्ट कर्म कररहे हैं उपदेश कर सत्यमार्ग पर लानेका यत्न करें. कि, जिससे अपनी आत्माका कल्याण हो. अतएव उसीका प्रताप है कि दिन प्रति दिन हमारे बन्धुवर कर्महीन, धर्म्महीन, विद्याहीन, तथा बलहीन हुए जाते हैं और उनके नाना प्रकारके अनुचित कार्य देखनेमें आते है. जिनका प्राचीन कालमें सुननाभी असम्भवित था. इसमें संदेह नहीं कि, ये सर्व कर्माधीन हैं. किन्तु यदि दीर्घ दृष्टिसे देखा जाय तो यह उन अनिष्ट कर्मोंका प्रताप है कि, हम इस गतिको प्राप्त हुए हैं. यदि हम अनिष्ट कर्म नकर श्रेष्ट कर्म करें तो फिर हमारी ऐसी दशा क्यों होने लगी. क्या पहिलेके पुरुष जो सद्गतिको प्राप्तकर गए है उनके कर्म नहीं थे ? अवश्यमेव थे, किन्तु उन्होंने मानव जन्म पाकर कोई अनिष्ट कर्म न करते पहिलेके कर्मोंका क्षय करनेका यत्न किया कि, सद्गति प्राप्तकर गए. यह केवल अज्ञानताका कारण है कि, हमारे बन्धु वर्ग जो कुछ हाथोंसे करते हैं, कर्मानुसार समझकर, अनिष्ट कर्ममें लीन रहते है. कार्यके करते समय उनको किंचित् विचार नहीं आता. जब उनके अनिष्ट कर्मोंके पापका घड़ा फुट जाता है रोने बैठते हैं और भर २ के पश्चाताप करते हैं.

देखिये! क्रोडीमल, लाहोरीमल, हनुवन्तसिंह, तेजमल आदिको !! वे लोग कैसी आसूदा हालतमे थे. यदि नीत्यनुसार रहकर कार्य करते तो कदापि उनकी बुरी दशा न होती. किन्तु उन्होंने राज्य कार्यमें बढ़ जाने पर निज धर्म्मको छोंड दिया और मोह मायाके जालमें

फंसकर केवल धन, उपार्जन करनेके अर्थ ग़रीबोंके गले काटने तथा अनर्थ करनेमें लीन रहे, जिसका अनिष्ट फल मिला और अन्तमें जाकर अपने कियेका पश्चात्ताप किया. और वही बुद्धिधन ! जिसके लिये किसीको भी आशा नहीं थी कि, वह इस तरह छोटीसी वयमें अपने पिताकी जगह पाकर पहिलेसे भी विशेष निज भुवनको दिपाएगा, चटसे उच्च श्रेणीको प्राप्त कर धनाढ्य बना और वाह वाह होने लगी. वह क्यों ? केवल इसी लिये कि, उसने बचपनसे ही अपने जन्मके रहस्यको जान लिया और सदैव अपनी आत्माके कल्याणके उपायमें रहकर निज धर्ममें लीन रहा तथा मनुष्य मात्र को अपना बन्धु समान गिनकर तन, मन, धनसे सेवाकी. क्या यदि बुद्धिधन अपने पिताकी तरह रहकर अनिष्ट कर्म करता तो उसको यह सुख प्राप्त हो सकता था ? कदापि नहीं.

बन्धुवर ! जब हम स्वयं देख रहे हैं कि, जो जो ख़राबियां अपनेमें नज़र आती हैं, यह केवल कुमार्ग ग्रहण करनेका प्रताप है. तो फिर हम उसको छोडनेका यत्न क्यों नहीं करते ? मै आशा करता हूं कि, मनुष्य मात्र बुद्धिधनकी तरह बनकर ऐसे उत्तम कार्य करेंगे कि, जिससे उनकी जगमें प्रशंसा होकर आत्माका कल्याण हो.

यह मेरा द्वितीय परिश्रम है यदि आपलोगोंने इसको सफल समझा तो और उपन्यास लिखनेका यत्न करूंगा.

इस स्थान पर यह प्रगट करना अनुचित न होगा कि, मेरेमें नागरी भाषाका इतना ज्ञान नहीं और न मैं ऐसा विद्वान् हूं. अतएव सम्भव है कि, कहीं अनुचित बात लिखी गई हो या कोई त्रुटि रह गई हो, जिसके लिये वाचकवृन्द ! क्षमा करेंगे और कहीं २ अंग्रेजी तथा उर्दु शब्द आगए हैं उनका पर्यायार्थ मालूम करनेको

पुस्तकके पीछे नोट लगाया गया है. कृपाकर पाठकगण उसे वक्त जरूरतके देखेंगे.

इस उपन्यासके संशोधन करनेमें दरबार हाईस्कूल सिरोही के हेड पंडित रुद्रदत्तजी व्याकरणोपाध्यायने तथा स्थान २ पर निज बुद्धिसे बनाए हुए गायन देकर इस उपन्यासको सुशोभित करनेमें मेरे प्रिय मित्र राठोड अचलसिंहजीने सहायता की है जिनको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं.

सिरोही राजपूताना } लेखक.
ता० २४–२–१९१३ } समर्थमल नथमलजी सिंघी

अनुक्रमणिका.

पुस्तकके पीछे नोट लगाया गया है. कृपाकर पाठकगण !उसें वक्त जरूरतके देखेंगे.

इस उपन्यासके संशोधन करनेमें दरबार हाईस्कूल सिरोही के हेड पंडित रुद्रदत्तजी व्याकरणोपाध्यायने तथा स्थान २ पर निज बुद्धिसे बनाए हुए गायन देकर इस उपन्यासको सुशोभित करनेमें मेरे प्रिय मित्र राठोड अचलसिंहजीने सहायता की है जिनको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हू.

सिरोही राजपूताना } लेखक.
ता० २४-२-१९१३ } समर्थमल नथमलजी सिंघी

अनुक्रमणिका.



बुद्धिधन.

मङ्गलाचरण.

(दोहा)

स्तवीदेव अरिहंतको, जो कछु कीजे काम;
स्वतः सिद्ध सो होत है, कहां ! विघ्नको नाम. १

(सवैया)

आतमज्ञान प्रकाशबिना, खद्योत समान भया दिमकारा;
तापर मान कहाकरना, दिनचार गयेफिर व्हे अंधियारा.
अतिवल्लभ प्राणप्रिया जगमें, निजस्वारथका सबहीसंसारा;
चितशांत किये संतोष मिले, कर शांतदशा सुखहोतअपारा २

प्रकरण १

मंत्री कोडीमलके हाथमें एक गुमनाम पत्र.



विश्वेश्वर नामी नगर है. उस विशाल नगरमें कुमारी शङ्करी नर्मदाकी छटा देखने योग्य है, जो ठीक राजमहलके पास बहरही है. उसका वह अद्भुत दिखाव राजमहल तथा नगरके दूसरे आलीशान मकानातपरसे बाआसानी देखा जा सकता है. पासमें उसके पृथक २ स्थान पर राज्य तथा सद्गृहस्थियोंकी तरफ़से बाग़ लगाये हुए हैं कि जिससे उसकी सुन्दरताको औरभी शोभा

मिलरही है. उस नगरमें केवल यही शोभायुक्त बात नहीं है बल्कि वन, उपवन, धन, धान्य, प्रायः सभी बातोंमें यह नगर परिपूर्ण है. राज्यके अतिरिक्त यहांके जैनी भाई क़रीब २ सब धनाढ्य हैं जिनके सदाव्रत उसी नगर तथा पृथक् २ देशोंमें चल रहे हैं कोईभी दिन ऐसा नहीं जाता है कि इस नगरमें एक न एक धार्मिक तथा ऊपदेशिक कार्य न होता हो. व्यापार उनका मुल्कों २ में उन्नति दिखारहा हैं, वहलोग धर्म्म अपना मुख्य कर्त्तव्य समझ रहे है और नीतिके अनुसार अपना व्यवहार चलारहे हैं. किन्तु कहागया है कि हाथकी पांचों अंगुलियां बराबर नहीं होती, इसी तरह यहां के जैनी भाई सर्व एक मनके नहीं हैं. हां इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि उनमेंसे बहुतसे धर्म्मानुसार चलने वाले हैं, थोडेही ऐसे होंगे कि जिनकी धर्म्मपर निष्ठा नहो.

शामका समय है. थोडेही समयमें सूर्यनारायण अस्ताचलका उल्लंघन कर जाएँगे और मंद २ तारे टिम टिमाने लगेंगे, ऐसे समयमें राजमंत्री क्रोडीमलकि जो एक जैनीभाई है, अपने बाग़में आराम चौकीपर बैठा हुआ कुछ विचार कर रहा है इस वक्त इसको इस बातका तनिकभी ख़याल नहीं है कि रात्रि आती जाती है, भोजन करना है, रात्रिको भोजन करना धर्म्म विरुद्ध है. चलो पाठकगण! अपनेभी जाकर और उसकी दृष्टिसे छिपकर मालूम करेंकि वह क्या विचार कर रहा है.

मंत्रीके हाथमें एक सफ़ेद काग़ज़ है और उस क़ागजकी ओर दृष्टि करके अपने आपही कहता है कि यह कागज क़िसके हाथका लिखा हुआ है, हो न हो यह उस लाहोरीमलकी बदमाशी है किन्तु यह अक्षरतो उसके मलूम नहीं होते. अजी वह अपने अक्षर ऐसे क्यों लिखने लगा जो शीघ्रही पहिचानमें आजाएं उसने अपने

अक्षर बिगाड कर नहीं लिखे होंगे ? नाजी अगर वह विगाडकर भी लिखता तो मैं शीघ्रही पहिचान लेता. आश्चर्य नहीं किसी दूसरेसे लिखवाये हों, पर अब इसका क्या परिणाम होगा. इस कागज़परसे राजासाहबने तो अवश्य मान लिया होगा कि मैं नमक हराम हूं पर मैंने तो ऐसा नहीं किया है. देखूं ज़रा कागज़को फिरसे पढ़तो लूं इस तरह कहकर कागज़को यों पढ़नेलगा.

महाराजाधिराज युगेन्द्रपालसिंह.

आपके धर्म्म राज्यमें बहुत कुछ अनाचार होता है और इसका कारण मंत्री क्रोडीमल है. जिसदिनसे यह मंत्री हुआ है प्रजाके दिलमें अशान्तिही है. यह बडा हरामज़ादा है. इसकी नमकहरामी तथा अनाचारका पारनहीं रियासतके साथभी नमकहरामी करने में इसने कमी नहीं रक्खी है. यह बहुत कुछ खटपट करता है, कलवाली बात इसने लोगोंमें बुरी तरहसे ज़ाहिर करदी है. अब आपही ख़याल करें कि इसमें प्रजाका दिल दुखनेमें क्या कमी रहेगी ? मैं रियासतका एक खैर ख्वाह नौकर हूं, इस कारण आपको प्रार्थना करताहूं. आशा है कि आप मेरी इस प्रार्थना पर लक्ष देकर, क्रोडीमलको मंत्री पदसे हटाकर. लाहोरीमलको उस पदपर नियत करेंगे जो राज्यहित चाहनेवाला तथा विश्वास पात्रहै.

आपका एक खैरख्वाह नौकर.

ओहो ! इसमेंतो लिखा है कि क्रोडीमलको मंत्रीपदसे हटाकर लाहोरीमलको उस पदपर नियत कियाजाय, फिर मैं यहसब कारखाई दूसरेकी कैसे मानसकताहूं. मेरा पहलेवाला ख़याल दुरुस्त है. उसी हरामज़ादेकी यह वदमाशी है. मेरे पीछे पडाहुआ है. अरे लाहोरीमल ! मैने तेरे वाप या तेरा क्या विगाडा था जो इसतरह

मेरी ठी बदगोई करने लगा है. क्या वह दिन भूलगया जब कि तेरा कुटुम्ब खानेसेभी मोहताज था, और तेरा पिता तुझे नौकर करानेकी गरज़से मेरेपास ले आया था? खैर तेरी इच्छा पर यादरख इसका बदला तुझे दूं जब कोडीमल जानना. इस तरह क्रोडीमल लाहोरीमलको गिरानेका इरादा बांधकर गाडीमें बैठ अपने घरकी तरफ़ लौटा.

चलो पाठकगन्द ! अगनेभी क्रोडीमलके मकानपर जाएं और देखें कि क्या ढङ्ग है.

आलीशान मकान है, जो ठीक नगरके पश्चिम दिशाको राजगृहके करीबमे ही बना हुआ है. मकानके चारोंतरफ़ चार दीवारी खिंची हुई है और चारों दिशाओंमें चार दरवाजे लगे हुए हैं. यह मकान आनन्द भूवनके नामसे प्रसिद्ध है, इतनाही नहीं सदर दरवाजेके ऊपर एक सफ़ेद मकरानेके पत्थर पर नागरी शब्दोंमें "आनन्दभूवन" खुदाहुआ है. और उन शब्दोंमें नाना प्रकारके रङ्ग ऐसा चतुराईसे भरे गए हैं कि जिससे हर मनुष्य उसे देखे बिना न रहे, दरवाजेके अन्दर दाख़िल होतेही एक बडाभारी दालान बनाहुआ है, जहां आने जाने वालोंके लिये बेञ्च आदि पडे हुए हैं, पासमें उसके एक छोटासा नजरबाग लगा हुआ है. और उस बागके बीचमे एक छोटासा जैन देवालय क्रोडीमलके पिता सांवलशाहका बनाया हुआ है, जो अति शोभा युक्त मालूम दे रहा है. अगाडी जाते एक आलीशान चार मंज़िला मकान है, जिसमें कि क्रोडीमल अपना निवास कर रहा है. क्रोडीमल बग्गीसे उतरकर शीघ्रही भोजन करके अपने शयनगृहमें दाख़िल हुआ, जो नाना प्रकारकी चित्रकारी फरनीचर आदिसे सुशोभित है, किन्तु चिन्ताके मारे आज इसले निद्रा हज़ारों कोस दूर भागती है. और यहीबात उसके चित्तमें दोहरा रही है. और अब इस बातका विचार

कर रहा है कि, वह गुप्तबात बाहिर कैसे पडी जिस वक्त मैंने राजा साहबको वह बात कहीथी सिवाय मेरे और राजा साहबके कोई नहीं था. अलबत्ता लाहोरीमल बीचमें कागज़ोंपर हस्ताक्षर कराने आया जरूर था लेकिन उसवक्त उसके सम्बन्धमें कोई बात नहीं हुई थी पर आश्चर्य नहीं कि, वह किसी दिखाव परसे उस बातको ताडगया हो. वरना सिवाय लाहोरीमलके यह कारखाई किसी ओरकी नहीं है. मैंने वहबात लोगोंको अभीतक ज़ाहिरतो की नहीं है जो उनके अशान्तिका कारण हो. कलजातेही इस कामको हाथमें लेकर राजा साहबकी शङ्काको दूरकरता हूं, और लाहोरीमलका ख़ातमा कराता हू यों नाना प्रकारके बुरे ख़यालात क्रोडीमल अपने दिलमें-पलङ्गपर सोता हुआ कर रहा है. इस वक्त इसको यह बिचार तनिक भी नहीं आता कि लाहोरीमल निर्दोष है.

क्रोडीमलकी प्रिया सुन्दरी जिसको एक तरहकी सती कहना चाहिये अपने स्वामीको चिन्ता मग्न देखकर विस्मित हुई जो पासमें सोतीहुई थी और कहने लगी हे नाथ आज आप चिन्ता मग्न क्यों है, क्या यह आपकी दासीभी सुन सकती है ?

क्रोडीमल--(नाराज़ होकर) तुझे इससे क्या मतलब है, राज्यकी कई एक खटपट है, सीधी बिनाबोले सोतीरह

सुन्दरी--हे नाथ ! मुझे यह क्या मालूमथा कि, आप राज्य कार्य में ही चिन्ता मग्न हैं. राज्य कार्य तो आप सदा करते हैं पर कभी भी इस तरह चिन्ता मग्न नहीं पाए और इसी कारण पूछा है. यदि बुरा मालूम हुआ होतो क्षमा करें पर मेरे ख़यालमें यदि आप उस कारणको मुझे कहें तो कोई हर्ज नहीं ?

क्रोडीमल-(आग बबूला होकर) सीधी पडीरह नहींतो और कुछ मेरी जबानसे सुनेगी.

मेरी ठी बदगोई करने लगा है. क्या वह दिन भूलगया जब कि तेरा कुटुम्ब खानेसेभी मोहताज था, और तेरा पिता तुझे नौकर करानेकी गरज़से मेरेपास ले आया था? खैर तेरी इच्छा पर यादरख इसका बदला तुझे दूं जब कोडीमल जानना. इस तरह कोडीमल लाहोरीमलको गिरानेका इरादा बांधकर गाडीमें बैठ अपने घरकी तरफ़ लौटा.

चलो पाठकवृन्द! अपनेभी कोडीमलके मकानपर जाएं और देखें कि क्या ढङ्ग है.

आलीशान मकान है, जो ठीक नगरके पश्चिम दिशाको राजगृहके क़रीबमें ही बना हुआ है. मकानके चारोंतरफ़ चार दीवारी खिंची हुई है और चारों दिशाओंमें चार दरवाज़े लगे हुए हैं. यह मकान आनन्द भुवनके नामसे प्रसिद्ध है, इतनाही नहीं सदर दरवाज़ेके ऊपर एक सफ़ेद मकरानेके पत्थर पर नागरी शब्दोंमें "आनन्दभुवन" खुदाहुआ है. और उन शब्दोंमें नाना प्रकारके रङ्ग ऐसा चतुराईसे भरे गए हैं कि जिससे हर मनुष्य उसे देखे बिना न रहे, दरवाज़ेके अन्दर दाख़िल होतेही एक बडाभारी दालान बनाहुआ है, जहां आने जाने वालोंके लिये बेञ्च आदि पडे हुए हैं, पासमें उसके एक छोटासा नजरबाग लगा हुआ है. और उस बागके बीचमें एक छोटासा जैन देवालय कोडीमलके पिता सांवलशाहका बनाया हुआ है, जो अति शोभा युक्त मालूम दे रहा है. अगाडी जाते एक आलीशान चार मंज़िला मकान है, जिसमें कि कोडीमल अपना निवास कर रहा है. कोडीमल बग्गीसे उतरकर शीघ्रही भोजन करके अपने शयनगृहमें दाख़िल हुआ, जो नाना प्रकारकी चित्रकारी फरनीचर आदिसे सुशोभित है, किन्तु चिन्ताके मारे आज इसले निद्रा हज़ारों कोस दूर भागती है. और वहीबात उसके चित्तमें दोहरा रही है. और अब इस बातका विचार

कर रहा है कि, यह गुप्तवात बाहिर कैसे पडी जिस वक्त मैंने राजा साहबको वह बात कहीथी सिवाय मेरे और राजा साहबके कोई नहीं था. अलबत्ता लाहोरीमल बीचमें कागज़ोंपर हस्ताक्षर कराने आया जरूर था लेकिन उसवक्त उसके सम्बन्धमें कोई बात नहीं हुई थी पर आश्चर्य नहीं कि, वह किसी दिखाव परसे उस बातको ताडगया हो. वर्ना सिवाय लाहोरीमलके यह काररवाई किसी ओरकी नहीं है. मैंने यहबात लोगोंको अभीतक ज़ाहिरतो की नहीं है जो उनके अशान्तिका कारण हो. कलजातेही इस कामको हाथमें लेकर राजा साहबकी शङ्काको दूरकरता हूं, और लाहोरीमलका खातमा कराता हू यों नाना प्रकारके बुरे ख़यालात क्रोडीमल अपने दिलमें-पलङ्गपर सोता हुआ कर रहा है. इस वक्त, इसको यह विचार तनिक भी नहीं आता कि लाहोरीमल निर्दोष है.

क्रोडीमलकी प्रिया सुन्दरी जिसको एक तरहकी सती कहना चाहिये अपने स्वामीको चिन्ता मग्न देखकर विस्मित हुई जो पासमें सोतीहुई थी और कहने लगी हे नाथ आज आप चिन्ता मग्न क्यों है, क्या यह आपकी दासीभी सुन सकती है ?

क्रोडीमल—(नाराज़ होकर) तुझे इससे क्या मतलब है, राज्यकी कई एक खटपट है, सीधी बिनाबोले सोतीरह

सुन्दरी—हे नाथ ! मुझे यह क्या मालूमथा कि, आप राज्य कार्य में ही चिन्ता मग्न हैं. राज्य कार्य तो आप सदा करते हैं पर कभी भी इस तरह चिन्ता मग्न नहीं पाए और इसी कारण पूछा है. यदि बुरा मालूम हुआ होतो क्षमा करें पर मेरे ख़यालमें यदि आप उस कारणको मुझे कहें तो कोई हर्ज नहीं ?

क्रोडीमल—(आग बबूला होकर) सीधी पडीरह नहींतो और कुछ मेरी जबानसे सुनेगी.

सुन्दरी-(धीरेसे) आप जो कुछ सुनाएं यथार्थ है पर मुझसे यह आपकी दशा देखी नहीं जा सकती, आप स्वामी हैं, मैं आपकी दासी हूं, मेरे दिलको शान्त करनेके लिये यदि आप कहें तो क्या हर्ज है ?

क्रोडीमल-हर्ज वर्ज कुछ नहीं, मैं नही कहता, तु क्या करेगी !

सुन्दरी-(लाचार होकर) स्वामीनाथकी इच्छा पर मैंने एक बात आज नवीन सुनी है उसके सुननेसे मेरा दिल व्याकुल होरहा है और आपको चिन्ता मग्न देखकर औरभी व्याकुल हुआ जाता है, इस कारण पूछा है. नहीं तो राज्य कार्यसे मेरा क्या सम्बन्ध ?

क्रोडीमल-(विस्मित होकर) कह तो तूने क्या सुनाहै !

सुन्दरी-(चिन्ता करती हुई) क्या कहूं, कही नहीं जाती. किसी मनुष्यने एक गुमनाम पत्र राजा साहबको भेजा है उसमें लिखा है कि, आप (क्रोडीमल) रियासतके नमकहरामों मेंसे हैं. आपने कोई गुप्त वार्तालोगोंमें ज़ाहिर करदी है जिससे राजा साहब अति नाखुश हुए है. उन्होंने आपको निकालकर उस लाहोरीमलको मन्त्री बनानेका विचार किया है.

क्रोडीमल अपनी प्रियासे यह निराला हाल सुनकर चिन्ता-रूपी सागरमें हिलोरे खाने लगा और अपनी स्त्रीसे कहने लगा "प्रिये राजासाहबने वह पत्र मुझे नाराज़गीकी हालतमें दिया था और कहाथा कि देखो यह तुम्हारा कर्तव्य, पर मैंनेतो किसीको वह गुप्त बात नहीं कही. यह सब उस लाहोरीमलकी बदमाशी है, खैर कोई बात नहीं उसे सम्हाल लूंगा"

सुन्दरी-लाहोरीमलने क्या किया क्या उसने वह पत्र राजासाहबको दिया है ?

क्रोडीमल-वह नही तो और कौन देता, उसीकी तो यह सब काररवाई है.

सुन्दरी–आप किसपरसे कहते हैं कि उस पत्रको लाहोरीमलने दिया है ?

क्रोडीमल–वहीतो मेरा उत्कट शत्रु है और कौन जो मेरी बुराई करने लगा !

सुन्दरी–यहतो आप स्वप्नमेंभी खयाल न करें कि आपके और कोई शत्रु न हो, आजकल क़रीब २ सब आपके शत्रु होरहे हैं पर यह तो कहे कि लाहोरीमलने ही उस पत्रको राजा साहबके पास भेजा ऐसा आप किसपरसे मानते हैं ?

क्रोडीमल–मैं अपने शत्रु और कोई सिवाय उस लाहोरीमलके नहीं जानता हूं. जब हम गुप्त बात कररहे थे, लाहोरीमल वहां हस्ताक्षर कराने आयाथा. पत्रमें यहभी लिखा है कि लाहोरीमलको मंत्री पद पर नियत किया जाय और आजकल वह मुझसे पूरी शत्रुता रखता है. अब तूही बता कि इन बातोंपरसे मैं कैसे मानूं कि यह खटपट लाहोरीमलकी नहीं, दूसरे किसी औरकी है !

सुन्दरी—उसपत्रके अक्षर पहिचानमें आए हैं क्या ?

क्रोडीमल—अक्षर पहिचानमें आजाएं तो फिर क्या चाहिये

सुन्दरी—जबतक अक्षर पहिचानमें न आवें या गुप्त विषय करनेके समय लाहोरीमलका मौजूद होना कहा नहींजाए, मैं नहीं मान सकती कि यह खटपट लाहोरीमलकी है.

क्रोडीमल–कोई विषय तो उसके सामने नहीं चलाथा पर तू नहीं जानती वह बडा हरामज़ादा है, दिखावपरसे ताड गया होगा और अपनी खैरख्वाही बताने तथा मंत्री पदलेनेकी गरज़से इस पत्र को लिख या लिखवा मारा है. ऐसों का बदला लिये बिना कदापि नहीं रहना चाहिये वरना यह मुझे जरूर धका मारेगा.

सुन्दरी–शास्त्रमें कहा हुआ है,

असमीक्ष्य न कर्तव्यं कर्तव्यं सुसमीक्षितम् ॥

अर्थात् कोईभी कार्य विना सोचे समझे नहीं करना चाहिये, किन्तु अच्छी तरह विचार कर करना चाहिये. आपको अच्छीतरह विचार किये विना लाहोरीमल पर इसका दोष नहीं रखना चाहिये पहिले आप इसका निर्णय करलीजिये और निर्णय कर लेनेके बाद भी समझदारका तो यह काम है कि उसका किंचित् खयालभी न करें, उसका कर्म उसको आपसे फल देगा. आगे जैसी इच्छा ।

क्रोडीमल–तु कौन जो शास्त्रका उपदेश मुझे करने लगी, मैं निर्णय विर्णय कुछ नहीं जानता मुझे कल इसका जवाब देना है, तू जवाब देने थोडीही आवेगी.

सुन्दरी–क्या जवाब देना है ?

क्रोडीमल–यही कि आया मैंने गुप्त बात किसीसे कही है या क्या तथा उस पत्रका लिखने वाला कौन ! सो वह बात जब कि मैंने किसीको कही नहीं तो फिर मैं नमकहराम कैसे ठहरा, और पत्रका लिखनेवाला लाहोरीमलको बतादुंगा.

सुन्दरी–स्वामीनाथ ! आपतो सत्यपरही रहिये, जब कि आपको इस बातकी पूरी खातिरीही नहीं हुई फिर आप लाहोरीमलका झूठा नाम कैसे लेते हैं. निर्दोषको सदोष न बनाएं.

क्रोडीमल–क्यों ! आज लाहोरीमलका इतना पक्ष क्यों लेरही हो ? क्या वह तुह्मारा यार लगता है ?

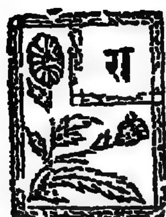
विचारी अवला अपने स्वामीके मुखसे ऐसे कठोर शब्द सुनकर एकदम खामोश होगई और चिन्ता करने लगी यहां तक कि चेहरे परसे वह खूनकी ललाई अदृश्य होगई और मनही मन कहने

लगीकि " अव मेरे स्वामीका दिन उठ गया है. वाहरे अनिष्ट कर्म्म ! तेरी क्या वलिहारी है. कहांतो वह समयथा कि इस घरमें तुझे स्थान तक नहीं मिलताथा. अरे स्थानका मिलनातो वडी वात बुज़र्गोंके सदुपयोग तथा सत् संगसे उलटे औरोंके ऐसे कर्म्मोंका क्षय होताथा. और कहां आज उन धर्म्मिष्ट, दयालु, ज्ञानी पुरुषोंके पुत्र स्वयं तुझे अपना मित्र वना रहे हैं और समझानेपर तनिक लक्षभी नहीं देते हैं. पर यदि ज्ञानरूपी चक्षुसे देखाजाय तो हे अनिष्ट कर्म्म ! इसमें तेरा कोई दोष नहीं है, तेरेको जिस किसीने अपना मित्र वनाया है उसे अपने गुण वताने ही चाहियें. मेरे स्वामीने मंत्रीके होतेही निज धर्म्म तो छोडही दियाथा और वहुतसे नीच कर्म्म इस मन्त्री पदकी जगहपर किये होंगे फिर उसका वदला उनको क्यों नहीं मिले ? मालूम होता है कि यह सव उस वदलेके लिये तैयारियां होरही हैं कि मेरी ठीकवात नहीं मानते हैं ख़ैर तेरी गति, इसमें मैं क्या कर सकती हूं " इस तरहके विचार करती हुई सुन्दरीनिद्रादेवीके शरणागत हुई तथा क्रोडीमलभी बुरे ख़यालातोंकी लहरोंमें हर्ष मानता हुआ ख़ामोश सोरहा.

पाठकगण ! अव आप ज़रा मेरे साथ चलिये मालूम करेंकि राजा युगेन्द्रपालसिंहका उस पत्रके विषयमें क्या अभिप्राय है.

प्रकरण २

पत्रके विषयमें महाराजाका अभिप्राय.



रात्रिका समय है. सूर्यनारायण कभीके इस पृथ्वी परसे बारह घंटोंके लिये विदा होचुके हैं. अबतो चन्द्रमाने अपना अटल राज्य पृथ्वीपर फैला रक्खा है. चन्द्रमाके प्रकाशसे तारे अपनी रोशनी ठीक तौरपर नहीं दिखाते हैं, फिरभी वह शोभायमान मालूम होरहे हैं लगभग दस ग्यारह बजेका समय है मनुष्य मात्र इस वक्त अपने २ घरोंमें सोए हुए हैं, कोईभी चलता फिरता नज़र नहीं आता, पुलिसवाले ख़बरदार २ की आवाज़ पुकार रहे है. इसके अतिरिक्त वह कुकर्म करनेवाले दुराचारी इधरसे उधर गलियोंमें छिपते फिरते हैं और चाहते हैं कि कोईभी माक़ा हाथ लगे और अपना काम बने पाठकवृन्द ! इन लोगोंको इस बातका किंचित्भी ज्ञान नहीं है कि वह काम जो हम करते हैं महा नीच है, वह हमको आख़िरमें नर्कमें लेजानेवाला है और एक अपनी धुनमें वही अपना बुरा काम लिये हुए फिर रहे हैं. ऐसे समयमें राजा युगेन्द्रपालसिंह अपने ज़नाने महलमें सोए हुए मनही मन विचार कर रहे हैं और अपने आपकोही कहते हैं कि " हे क्रोडीमल ! मैंने तुझको कभीभी ऐसा नहीं समझाथा. लोगोंने तेरे विरुद्ध बहुतसी भली बुरी कहीं पर मैंने कदापि उनको सत्य नहीं माना, न उनपर किंचित् लक्ष दिया.क्या उसीका बदला अब तू मुझे दे रहा है ? क्या सावलशाहका पुत्र होकरके तुझे यह उचित था ! कदापि नहीं, तेरा पिता धर्म्मिष्ठ, ज्ञानी, दयालु इस राज्यका खरा शुभ चिन्तकथा. क्या उसके तू

क्रोडीमल पुत्र ? मैंने तुझको ऐसा समझ कर तो अपना मंत्री नहीं बनायाथा. तेरे कुटुम्ब तथा तेरे पिताकी भलमनसाईको देखकर मंत्री पद पर नियत कियाथा. किन्तु आखिरको तू कोराही क्रोडीमल निकला, अपनी मूढता दिखा गया. पर अरे क्रोडीमल्ल इसमें तुझको क्या मिल गया, ज़रातो तू अपने मनमें विचारना. बाततो उसमें कुछ नहीं थी पर मैं अपनी प्रिय प्रजाको अशान्तिका कारण देना नहीं चाहता. ऐसे नमक हराम मंत्रीको, जिसने अपनी रोज़ीका तनिकभी ख़याल नहीं किया और चटसे एक बातको सारे आममें ज़ाहिर करदी, मंत्री पद पर रखना अब मुझे उचित नहीं है. कलही बदलता हूं, नहीं तो न मालूम आइन्दाके लिये यह प्रजावर्ग या ज्ञातिमें मेरे विरुद्ध और कुछ भिडा बैठे और मुश्किल होजाय मैं यह नहीं चाहता कि किसी बातके लिये अपनी पुत्रवत् प्रजाको उनकी इच्छाके विरुद्ध कोई कार्य करके सारे नगरमें अशान्ति फैलाऊं. राज्यनीतिके अनुसार मुझे यही उचित है कि हरतरहसे प्रजावर्गको सदैवके लिये प्रसन्न रखनेका यत्न करूं, और उसीमें कल्याण है यह उस मेरी पुत्रवत् प्रजाकाही प्रताप है कि पुश्तें गुज़रीं कि मेरा राज्य निर्विघ्नतासे चलता आरहा है, और इस राज्यमें इस समय जो जो अद्भुत बातें दिखाई दे रही हैं, और जो जो सुधारे हुए हैं, प्रजामें अशान्ति न फैलानेका कारण है. यह मेरा राज, पाट, ताज, धन, माया सब इन्हींके बलोंपर टिका हुआ है, नहीं तो शत्रुओंने इसके खोसलेनेमें कौनसी कमी रक्खी थी. यह मेरी प्रजाही थी कि पानीकी जगह लोहू बहाकर इस राज्यको टिका रक्खा है. क्या फिर मैं उसके अशान्तिका कारण बनूं ? कदापि नहीं मेरा राज्य, पाट, आदि सब चला जाए, मैं ख़ुद क्यों नहीं चला जाऊं, पर मैं अपनी प्रजाको अशान्तिका समय कदापि नहीं दूंगा. पर

क्रोडीमल कैसा विचित्र मनुष्य कि हाथोंसे वात उठाई और फिर वही प्रजावर्गमें कहने लगा. देखूं कल वह क्या जवाव लाता है ” किन्तु अरे मन यह मैं कैसे कहसकती हूं कि “ क्रोडीमलने उसवांतको राज्यके विरुद्ध प्रजावर्गमें ज़ाहिरकी. यदि ऐसा होतातो कोई न कोई आकर मुझे अवश्य कह जाता. पर वहअभीसे क्यों कहने लगे समयआए उसका सदुपयोग नहीं करेंगे ? ” किन्तु मुझे यहभी विचारना चाहिये कि क्रोडीमल उस वातको क्यों कहने लगा ? अरे कहनेको तो काम वनानेको कहा होगा पर उस तरहसे क्यों कि जिससे प्रजाके अशान्तिका कारण हो. अजव नहीं लाहोरीमलकी शत्रुतासे तथा अपना प्रजावर्गके समीप वुरा मालूम नहो इस हेतु वातको पलटकर वुरी तरहसे कहा हो कि जिससे प्रजाके अशान्तिका कारण हो सकता है. पर इसमे लाहोरीमलकी क्या हानि ? वाह हानि क्यो नहीं, उस तरहसे कहनेमें उस पर प्रजावर्गकी क्रुद्दृष्टिका कारण हो सकता है. यह सव कुछ है लेकिन क्रोडीमलने लाहोरीमलका झूठा नाम लेकर क्यों कहा ? वह वेचारा इस वातको जानता तक नहीं है. अरे ओ ठीक—याद आया आजकल लाहोरीमलपर मैं कृपा दृष्टिसे देखता हूं, कहीं इसका परिचय मेरेसे वढ़ न जाय, इस कारण कहा होगा, वरना लिखने वाला ऐसा क्यों लिखने लगा, लेखकका लिखना यथार्थ है और क्रोडीमलकीही वदमाशी है, देख मन कलही इसको गिराताहूं. ” यों नाना प्रकारसे राजा साहव मनही मन हवाई वातें वना रहे हैं और उसमें चिन्ता मग्न होरहे हैं. पर उनकी महारानीको भला अपने स्वामीका चिन्ता ग्रसित होना कहां तक भाने लगा, उसने शीघ्रही प्रश्न किया.

महारानी—मुकुट शिरोमणे ! आज आप कौनसे सङ्कटमें मग्न होरहे है जो इस दासीपर दुक दृष्टिभी नहीं ?

महाराजा—प्रिये ! ऐसा कोई सङ्कट नहीं पर हां किसी आवश्यक विचारमें लीन हूं.

महारानी—पृथ्वीनाथ ! यथार्थ है, परमात्मा आपको किसी सङ्कटमें मग्न न करें दासीके मुखसे यह बुरे शब्द निकल पडे आप कृपाकर क्षमा कीजिये और उस आवश्यक विचारको प्रगटकर मेरे दिलको शान्त कीजिये ?

महाराजा—सुवदने ! किसी मनुष्यने मुझे विना नामका एक पत्र लिखभेजा है उसमें लिखाहै कि, क्रोडीमल बडा नमक हराम है, कलवाली वात उसने लोगोंमें ज़ाहिर करदी है, अब इसको रखना उचित नहीं, लाहोरीमलको मंत्री पदपर नियत किया जाय प्रिये ! वात तो कुछ नहीं है किन्तु मैं अपनी प्रजाका दिल दुखाकर कोई काम करना नहीं चाहता. अब मैं इस विचारमें हूं कि, यह काम किसका है, पत्रका लिखने वाला कौन, और क्रोडीमलने उस वातको ऐसे रूपमें कही या नहीं कि जिससे प्रजाके अशान्तिका कारण हो.

महारानी—स्वामीनाथ ! हक़ीक़तमें यदि क्रोडीमलने उस वातको लोगोंमें बुरे रूपमें ज़ाहिर की है तो यह उसकी मूर्खता है, पर मैं नहीं मान सकती कि क्रोडीमलने उस वातको कही हो.

महाराजा—प्रिये ! क्रोडीमलके कहनेका एक कारण हो सकता है कि लाहोरीमलका परिचय मेरेसे कहीं वढ़ न जाय.

महारानी—इसमें लाहोरीमलका क्या सम्बन्ध ? और लाहोरीमलकी क्या हानि ?

महाराजा—लाहोरीमलके नामपर उस वातको कही होगी कि जिससे प्रजाके अशान्तिका कारण हो, और मैं उसपर क्रोधित होऊं.

महारानी–मेरी समझमें नहीं आती कि क्रोडीमलने इस तरह कहा हो, वह बडा चतुरहै, उसके किसी मनुने यांही लिखनाराहै.

महाराजा–चतुर है जबही तो ऐसी चतुराई करसका है. तू जानती होगी कि लाहोरीमल दस रुपयेका पाइन्दाथा, उसको मैंने चतुर समझकर प्राईवेट सेक्रेटरीके पदतक बढ़ाया, अब उसको कहीं मैं मन्त्री न बना दूं इस कारण क्रोडीमलने चतुराई बताई है.

महारानी–स्वामी ! क्या वह कार्य आपने लाहोरीमलकी मारफत किया है ?

महाराजा–प्रिये नहीतो, वहतो बेचारा जानता तक नही. यहतो क्रोडीमलकी ही बदमाशी है कि हाथोंसे बातको उठाकर लाहोरीमलको बदनाम करानेका यत्न किया है

महारानी–होगा महाराज पर मैं नहीं कह सकती कि क्रोडीमल की ऐसी काररवाई हो. लो ! अब निद्रा कर लीजिये, एक बज-चुका है, दो बजे जाते हैं.

महाराजा–क्या दो बजगए ?

महारानी–ना महाराज अभी दो बजे नहीं है बजनेही वाले हैं. लो सो जाऐं.

इतना कहकर दोनोंने आंखें बन्द करली पर राजा साहबको निद्रा क्यों आने लगी उनके हृदयमें तो क्रोधरूपी अग्नि सुलग रही है और यह कह रहे हैं कि भोर कब हो और क्रोडीमलका खातमा करूं.

———o———

प्रकरण. ३

क्रोडीमलका कुटुम्ब चिन्ता मग्न.



भातका समय है. सूर्य नारायणने अपना अटल राज्य पृथ्वीपर फैला दियाहै. मनुष्य मात्र निद्रादेवीसे जागृत होकर अपने २ नित्यकार्यमें लगे हुए हैं. गाय, भैंस, बकरी, भेड आदि चारा चरनेके अर्थ वनमें जा रहे हैं पखेरु कभीके चारेकी तलाशमें अपने २ स्थानोंको छोडकर उड निकले हैं. जैनीभाई पूजन आदिको जैन मन्दिरोंमें तथा धर्म्म गुरु पास उपदेश आदि सुननेको इधरसे उधर जारहे हैं. वैष्णव ब्राह्मण आदि अपने अपने षट् कर्म्मोंमें लगे हुए हैं. इसी प्रकार क्रोडीमलकी स्त्री सुन्दरी तथा मातुश्री सौभाग्यवती कभीके उठकर प्रतिक्रमण, सामायिक, आदि विधि पूर्वक करके नित्य कार्यमें लीन हैं, पर क्रोडीमल अभीतक उठनेही नहीं पाया है, वह भला इतना जल्दी क्यों उठने लगा उसने अपना नित्य कर्मतो कभीका छोड रक्खा है, साथमें कलसे वह चिन्ता मग्नभी है.

जब आठ बज चुके, लोगोंके भोजन करनेका समय निकट आया क्रोडीमल जागृत हुआ और स्नान भोजन आदि करके शीघ्र ही राजमहलको रवाना हुआ.

पाठकवृन्द ! क्रोडीमल तथा राजा साहब उसके जातेही उस कामको हाथमें लें सम्भव नहीं नाहक अपना समय अभीसे जाकर क्यों व्यर्थ गुमावें. कृपाकर क्रोडीमलके घरपर चलिये और मालूम कीजिये कि क्या चर्चा हो रही है.

क्रोडीमलकी मातुश्री सौभाग्यवती तथा उसकी स्त्री सुन्दरी दोनों अपने कार्यसे निवृत्त होकर वैठी हुई वुद्धिधनकी वाट देख रही हैं कि वह पाठशालासे कव आवे और भोजन आदि करके निश्चिन्त होवें. इतनेमें सौभाग्यवती वोल उठी कि वहू आज पौत्र अभीतक क्यों नहीं आया, दसतो वज चुके हैं ?

सुन्दरी– सासजी । आताही होगा.

सौभाग्यवती–वहू ! आज उदास क्यों दीखती है क्या कोई कष्ट है ?

सुन्दरी–सासजी ! क्या कहूं आपके वेटेकी मति जवसे मन्त्री हुए हैं फिर गई है. कहांतो वह दिनथेकि पूजा किये विना तथा गुरुका उपदेश सुने विना भोजन नहीं करते थे, प्रतिक्रमण करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते थे, किसीसे लडना तो वडी वात कटु शब्दतक नहीं कहते थे, कि जिसकी वदौलत मन्त्रीका पद मिला. कहां आज वह दिन है कि धर्म्म परसे उनका भाव विलकुलही हट गया है, किसीका कहना उनको प्रिय नहीं लगता, कोई कहता है तो काटने दोडते हैं, माजी ! अपनी क्या गति होगी ?

सौभाग्यवती–मैंभी अपने वेटेकी मति फिरी हुई पाती हूं वास्तवमें उसने निज धरमको छोड रक्खा है, पर क्या कहूं कई वार कहा नहीं मानता.

सुन्दरी–मेरी वातपर तो वे तनिकभी लक्ष नहीं देते और आपभी नहीं कहो तो फिर हो चुका.

सौभाग्यवती–ठीक वेटा मैं फिर कहूंगी पर आज तुझे उठतेही इसका स्मरण क्यों और कैसे हुआ ?

सुन्दरी–क्या कहूं माजी । कहते नही वनती.

सौभाग्यवती–कहो तो सही ऐसा कौनसा विषय है जो कहते नहीं बनता ?

सुन्दरी–माजी ! कहनेको तो कह सकती हूं पर कहनेमें मेरा हृदय फटा जा रहा है.

सौभाग्यवती–बेटा ! ऐसा कौनसा सङ्कट आपडा जो तू अधीरी हुई जाती है, कृपाकर शीघ्रही कह, मेराभी हृदय फटाजा रहा है ?

सुन्दरी–क्या कहूं माजी ! किसी हरामज़ादेने आपके बेटेपर एक गुम नाम पत्र राजा साहबको भेजा है उसमें लिखा है कि मन्त्रीने उस बातको लोगोंके समक्ष प्रगट करदी है कि जिससे प्रजा की अशान्तिका कारण है. उचित है कि वर्तमान मन्त्रीको निकाल कर लाहोरीमलको उस पदपर नियत किया जाय, राजा साहबने उस पत्रपरसे आपके बेटेको नमकहराम ठहरा लिया है और वह लाहोरीमलकी यह सब रचना बताते हैं. मैंने उनको रात्रिको पूछा था तो उन्होंने लाहोरीमलकी ही यह सब खटपट है, वैसे दाखिले तो नहीं बताए और कहा कि उसके सिवाय किसीकी नहीं हो सकती उसीका नाम राजासाहबके सामने लूंगा और बदनाम कराऊंगा. मैंने कहा कि बिना सबूत किसीको कलङ्कित बनाना सज्जन पुरुषोंको उचित नहीं है, आप किंचित् विचारिये और नीतिका स्मरण कीजिये पर एक न मानी और उलटी मुझे फटकारें बताई, फटकारोंकी तो कोई बात नहीं, पर इतना कहकर सुन्दरी रुक गई कि, सौभाग्यवती बोली पर क्या बेटा जो हो सो कहदे

सुन्दरी–अभी थोडी देर हुई जब कि आप पूजन में बैठी हुई थीं रामनाथ आया था. वह मुझे कह गया है कि राजासाहबने आपके बेटेको मन्त्री पदसे हटा देनेका निश्चय कर लिया है.

सौभाग्यवती—बेटा घबराओ मत, यह सब उसीका फल है कि मेरे बेटेने धर्म्मका बीज अपने हृदयसे निकाल दिया है और महा अघोर कृत्य एक अपने पापी पेटके ख़ातिर कर रहा है.

सौभाग्यवती इतना कहकर शीघ्रही विचारमें पडगई और मन ही मन अपनी पहिलेकी हालत याद लाकर आह भरकर कहने लगी "क्या किसीको स्वप्नेमेंभी आशा थी कि मेरी कुक्षिसे जन्मा हुआ पुत्र निज धर्मको छोड देगा, अनाथोंके गले काटनेमें लीन रहेगा, अपने ज्ञाति भाइयोंसे शत्रुता करेगा और राज्यका नमकहराम कहलाएगा ? कदापि नहीं यह मेरा धर्म्म घर था इसमें जिन जिन पुरुषोंने जन्म लिया है सब एक एकसे उत्तम हुए हैं. उन्होंने कभीभी किसीको दुःख नहीं दिया न किसीको अपना शत्रु समझा. जहांतक उनसे बन आया हर तरहसे मनुष्यको आनन्दमें रखनेका प्रयत्न किया किसीके कुसम्पका कारण हुआ तो बीचमें पडकर सम्प करादेते, राज्यके तो सदैव खैरख्वाह रहे. वह ऐसे २ शुभ कार्य हमेशाके लिये कर गए है कि जिससे उनकी यादगार अभीतक क़ायम है. सबके आरामके लिये स्थान २ पर धर्म्मशालाएं कूपादि बनादिये, अनाथोंका पालन पोषण किया विद्या दान दिया अथवा निज धर्म्म दिपानेमें किसी तरहकी कमी नहीं रक्खी, लाखों रुपयेका व्यय करके मन्दिरादि बनवाए, सदाव्रतका देना हरसमय उत्तमही समझा. मेरा पति था जिसनेभी नाना प्रकारके उत्तमोत्तम कार्य कर यश प्राप्त किया, मरण पर्यन्त दयाको अपनेसे दूर नहीं छोडी, निज धर्म्मको सदैव अपना मुकुट बना रक्खा, यहांतक कि राज्य कार्यसे उनको अवकाश नहीं मिलताथा और पूजन यानि आत्म साधन आदिमें विघ्न पडने लगे इस कारण निज घरमें ही मन्दिर बनादिया इनके ऐसे शुभ कर्म फिर न मालूम मेरे

पुत्रके ऐसे अनिष्ट कर्म क्यों ? कि जिसको युवा वस्थामें उसके पिताने उपदेश देनेमें तनिकभी कमी नहीं रक्खी. अरे यह सब कुसंगत और कुकर्मका प्रताप है कि उसकी मति फिर गई वरना पहिले मेरा पुत्र ऐसा नहीं था, नीति अनुसार अपना कार्य करता था जबसे मन्त्री हुआ है अपनी मति फिरा रक्खी है पर मन्त्री तो मेरा पतिभी था, उसके तो ऐसे कर्म नही थे. अरे उसके ऐसे कर्म क्यों होने लगे, पूर्व कर्म उसके अच्छे होंगे. पर इसमें तो कोई संदेह नहीं कि अवश्य कोई कर्म हमसे ऐसे होगये हैं कि जिससे ऐसा पुत्र मेरी कुक्षिसे जन्मा है. वाहरे कर्म! तेरी गहन गति है. किसीकाभी ज़रासा उधार नहीं रखता शीघ्रही जैसा तैसा बदला देता है. ” इतना अपने मनमें कहकर सौभाग्यवती आह भरनेलगी कि सुन्दरी बोली “सासजी! आप इतनी व्याकुल क्यों होरही हो ”

सौभाग्यवती–क्या कहूं समझमें नहीं आता कि क्रोडीमलने ऐसा किया हो.

सुन्दरी–यह मैंभी जानतीहूं बल्कि वह ख़ुद कह रहे हैं; कि मैंने ऐसा नहीं किया पर मुसीबत तो उठाना पड़ता है न. अब वे राजा साहबको जाकर लाहोरीमलका नाम लेंगे माना कि राजा साहबको इस बातकी निर्णय करादेंगे कि उन्होंने ऐसा नहीं किया पर लाहोरीमलतो आजसे अपना कट्टर शत्रु बनान ?

सौभाग्यवती–(आह भरती हुई) बहू ठीक कहती है पर बेटेके जानेके पहिले यह हाल मुझे क्यों नहीं कह दिया, मैं ज़रा उसे समझा देती.

सुन्दरी–मैंने कहा-सो बहुत हुआ आपकोभी दो बातें सुननी थीं क्या ?

सौभाग्यवती–बेटा कहती तो ठीकहो आजकल वह हकीकतमें चिडचिडा हो रहा है. खैर कर्मकी गति जो होनेका है उसको कौन रोक सकता है.

इस तरह सास बहू वार्तालाप कर रहीं थीं कि क्रोडीमलका पुत्र बुद्धिधन पाठशालासे रोताहुआ आया और पूछने लगा क्या पिताजी कचहरीको पधार गए ?

सुन्दरी–हां बेटा. पर आज तू ने इतनी विलम्ब कहां लगाई और रोताहुआ क्यों आरहा है. क्या मास्टरजीने तुझे मारा सबक याद नहीं था क्या ?

बुद्धिधन–ना माजी ! सबकतो ठीक याद था. पाठशालासे छुट्टी होनेके बाद हम सब विद्यार्थी आरहे थे कि रास्तेमें कुत्तेने मुझे काट खाया.

इतना सुनतेही सौभाग्यवती तथा सुन्दरी रोने लगीं और कहने लगीं " क्या आज ऐसेही समाचार सुनने बदे हैं ! कर्मकी गति है, कोई हर्ज नहीं " पर बेटा बतातो सही तुझे कुत्ता कहां कैसे काटा ?

बुद्धिधनने आज्ञा पातेही अपनी जङ्घा दिखाई देखने पर मालूम हुआ कि भारी घावथा, रक्त बह रहा था. सुन्दरीने जल्दी से लाल मिर्चीं लाकर तेलके साथ उस घावमें भरके ऊपर कपडा बांध दिया, तदनन्तर सबने भोजन किया और इसी चिन्तामें बैठे हुए हैं कि न मालूम आज क्या होनेवाला है. इतनेमें चिन्तारूपी नावमें बैठी हुई सुन्दरी अपने बेटेसे कहने लगी "बेटा तुम अपने पिताके जैसा मत होना इस धर्म्म घरमें तुम्हारे पिताको धर्म्महीन देखकर मेरा हृदय दुःख पारहा है."

बुद्धिधन—मातुश्री ! यह तू क्या कहती है पिता मेरा धर्महीन?

सुन्दरी—हां बेटा ! बाप तुम्हारा धर्म्महीन पर बेटा वे पहिले सेही ऐसे नहीं थे. मन्त्री पद लेनेके बाद उन्होंने निज धर्म्मको छोड रक्खा है, कहीं अनाथोंके गले काटनेमें लीन रहते हैं. देखो तुम्हारे प्रिय मित्र किशोरीलालके पिता हरिलालको उस बेचारेने क्या अपराध किया था जो कामसे हटा दिया. तुमने इस विषयमें कई वार कहा सही पर नहीं माना, बेटा तुम बडा काम पाकरके ऐसे मत हो जाना निज धर्म्मको मत छोडना.

बुद्धिधन—मातुश्री ! मैं इस बातको पहिलेसेही कैसे कहसकता हूं पर तुम जानती होगी कि मेरा भाव धर्म्मपर कैसा है ?

सुन्दरी—अभी तो तुम्हारा भाव धर्म्मपर ठीक देखतीहूं तुह्मारे पिताकाभी पहिले यही भाव धर्म्मपर था परन्तु बेटा तू आजकल के कलियुग (पंचम काल) की ख़ूबीको नहीं जानता है. कोईभी मनुष्य जब राज्य तथा व्यापार आदिमें बढ़जाता है उसकी आंखें पीछेको आजाती हैं. उसको इस बातका तनिकभी ख़याल नहीं होता कि कौनसे शुभ कर्म मैंने ऐसे किये थे कि जिसकी बदोलत बढ़ाहूं और अब भविष्यके लिये मुझे क्या करना उचित है कि जो साथ चले और फलदायक हो. यही हाल बेटा तेरे पिताका होरहा है, न मालूम किस पुण्यसे इनको मन्त्रीपद मिला और अपनी सद्गतिके लिये कुछ ख़याल नहीं करते, आंखें बिलकुल पीछे लेररक्खी हैं. इस कलियुगकी ख़ूबीको देखते हुए मुझे शङ्का है कि क़हीं तूभी ऐसा न करजाय.

बुद्धिधन—अहा धर्म्म ! इसको भला कौन छोडने लगा, मातुश्री ! आज मैंने स्कूलमें इसी विषयका पाठ पढ़ा है उसमें बतलाया गया है कि " तन चला जाय पर धर्म्मको कदापि नहीं छोडना

चाहिये, " मैं कदापि ऐसा नहीं करूंगा. मुझे धन माया आदिसे कोई सरोकार नहीं, निज धर्म्मका स्मरण करना और केवल उदर पोषणके अर्थ कमाना, यही मैं अपना मुख्य कर्त्तव्य समझता हूं.

बुद्धिधनके इस प्रश्न पर सुन्दरीने सारा हाल अपने पुत्रको कह सुनाया जो ठीक समझ सकता था और जिसकी उम्र लगभग चौदह पन्दरह वर्षकी होगी.

बुद्धिधनने साराहाल सुनकर दिलमें बहुत पश्चात्ताप किया पर वह तो एक कर्म्म व धर्म्मको मानने वाला था थोडीदेरके लिये अपने दिलको शान्त कर बैठा रहा और विद्याके उद्योगमें लगगया पर फिरभी वह बालक था पढाईको छोडकर चिन्ता रूपी सागरमें हिलोरे खाने लगा.

पाठकगण ! इन बातोंपरसे आपको विदित हुआ होगा कि क्रोडीमलका कुटुम्ब सदैवसे उच्च पद्धतिको ग्रहण करता हुआ चला आरहा है. केवल क्रोडीमलने ही अपनी पुरानी लकीरको तोड रक्खी है जो वास्तवमें अनुत्तमथी फिरभी उसकी मातुश्री प्रियपत्नी तथा पुत्र धर्म्मिष्ठ, ज्ञानी तथा शान्त स्वभावके हैं. और बुद्धिधन यही है जो इस उपन्यासका शिरोमणि है इसको इसी तरहके धार्मिक तथा सांसारिक उपदेश मातुश्री आदिसे मिला करते हैं. क्रोडीमल स्वयं मन्त्री होनेसे पहिले ऐसा नहीं था बादमें मोह मायाके जालमें फँसनेसे उसकी मति फिर गई है और उसीका परिणाम यह है कि उसपर सङ्कट पडने लगा है. पर हम यह नही कह सकते कि उसका मन्त्रीपद आजही चला जायगा या क्या ! क्योंकि कर्मकी गति निराली है, न मालूम उसके पूर्व कर्मोंके अनुसार मंत्री पदका मद और चखना बाकी नहो



प्रकरण ४

॥ विनाशकाले विपरीत बुद्धिः ॥



नका समय है. बारह बज चुके हैं. गर्मीका मौसिम होने तथा धूप जियादा होनेसे थोडी देरके लिये लोगोने चलना फिरना बन्द कर दिया है. वही इधरसे उधर घूम रहे हैं जिनको आवश्यक काम है. राज्यमहलमें अमीर उमराव तथा अहलकार, आदि अपने २ स्थानपर बैठे हुए राज्यका कार्य कर रहे हैं. इस वक्तमें वह पंखेकी हवा जोकि कुली बैठा हुआ कर रहा है उनके लिये अति आनन्द दायक हो रही है. जब कि कुली थकावटकी वजहसे रुक जाता है और कचहरीमें बैठे हुए अहलकारोंके शरीरसे पसीना टपकने लगता है, तो बेचारेपर फटकारें पडती हैं और उनका यही कहना रहता है कि " क्योंरे पंखा क्यों नहीं चलाता थामे हुए क्यों बैठा रहता है क्या राज तुझे तनख्वाह नहीं देता है. ? " बेचारा अनाथ हरएक की ऐसी २ फटकारें सुनकर अपनी थकावटका तनिकभी विचार नकर धीमें २ पंखा चलाया करता है. कचहरियोंके सामने आसामियोंका झुंड जमा हुआ है और बारि २ सबका काम न्यायाऽनुसार हो रहा है.

चलो पाठकगण ! राजा साहबके आमदरबारमें भीजाकर सुनें और देखें कि क्या हाल होरहा है.

दरबारी हॉल मनोहर और सुन्दर बना हुआ है उसमें सोना चांदी, आदिका काम किया हुआ है और फरनीचर ऐसा क्रमसे रक्खा हुआ है कि जो चित्रकारीकी शोभाको और भी बढ़ा रहा

है. वह विजलीदार पंखा ऐसी तेजीसे चलकर हवा दे रहा है कि मानों किसी सरोवर के किनारेपर किसी पहाड़की चट्टानपर बैठे हुए हवा खा रहे हैं. सदर दरवाजे पर प्रतीहार वर्दी पहिने हुए तथा पट्टा लगाए हुए टहल रहा है. पासमें उसके दूसरे सेवक बैठे हुए हैं. कोई तो चुपकेसे आपसमें बातें कर रहे हैं कोई कान लगाकर अन्दर क्या २ बातें हो रही हैं, सुन रहे हैं. किन्तु इतनी भीड भाड आज दरबारी कचहरीमें नहीं है जितनीकि दूसरी कचहरियोंके सामने पाठक गणदेख आए हैं. राजा साहब एक आराम चौकीपर लेटे हुए हुक्का गुड गुडा रहे हैं और हाथमें वही पत्र लिये हुए हैं जो कोडीमलके पास हम देख आए हैं. पास में उनके चांदनीपर लाहोरीमल तथा कोडीमल बैठे हुए हैं जिनके चेहरे मारे चिन्ता के मलिनसे दृष्टि गत हो रहे हैं दोनों नीचा सिर किये हुए इस तरहसे बैठे हैं मानो इनपर फटकारें पडी हों, इतनेमें राजा साहबने मंत्रीसे प्रश्न किया क्योंरे क्या यह पत्र लाहोरीमलने ही लिखवा कर दिया है ? ”

मंत्री–पृथ्वीनाथ ! हां इसीने लिखवाकर दिया है और मेरा ऐसा कौन शत्रु है जो मेरी बुराई करने लगा ?

राजा–तेरे शत्रु जो जो हैं मेरेसे गुप्त नहीं हैं. यह तू अपने मनमें कभी भी ख़याल मत करकि तेरा शत्रु सिवाय लाहोरीमलके कोई नही. तेरे शत्रु अनेकहै पर मेरी कृपाके कारण वे अपना सिर उठाने नहीं पाए हैं. और मैं यहि देख रहाथा कि तू सांवलशाहका पुत्र है नहीं तो तू कभीका बदनाम होचुका होता. पर यह तो कह तू किस परसे कहता है कि, इस पत्रको लाहोरीमलने लिखवाकर दिया है, क्या हरूफ़ किसीके पहिचानमें आए है ?

मंत्री–हरूफ़ तो पहिचानमें नहीं आए और हरूफ़ पहिचानमें

आगए होते तो फिर क्या चाहिये था. परन्तु सिवाय लाहोरीमलके मेरा कोइ शत्रु नहीं.

राजा-तू यह कहनेमें भूल करता है कि सिवाय लाहोरीमलके कोई तेरा शत्रु नहीं. अब यह बाततो कहकि तूने वह बात प्रजा वर्गमें बुरी तरहसे कही है या नहीं.

मन्त्री-मुकुट शिरोमणे! कही होती तो मुझे पश्चात्ताप करनेका कोई कारण नहीं था. यह पत्र बिलकुल झूठा लिखा गया है इसीसे तो जलना पडता है.

राजा-आया अब साहुकार बनने? यदि तूने नहीं कही होती तो लेखकको ऐसी मिथ्या बात लिखनेसे क्या प्रयोजन था! मैं अच्छी तरहसे जानता हूं कि, तूने अवश्यमेव उस बातको बुरी तरहसे कहदी है, जिसका कारण केवल यही हो सकता है, कि, आज कल तू लाहोरीमलसे जलता है. तूने देखा कि, लाहोरीमल कहीं बढ़ न जाय, और इसी लिये तूने अपनी खैरख्वाही बताई है, पर याद रख इसका क्या परिणाम निकलता है?

मन्त्री-(विस्मित होकर) आप बडे हैं आपका कहना यथार्थ होगा पर मैंतो निर्दोष हूं आपही कहें कि क्या प्रजावर्गने आपसे कोई ज़िक्र किया था?

राजा-वे लोग इस तरह क्यों कहने लगे वेतो समय आएमेरे दिलको जलावेंगे जा जा ज़ियादा मत बोल वरना और सुनेगा.

मन्त्री-पृथ्वीनाथ! मैंने तो प्रजावर्गको तो क्या किसीको कुछ कहा तक नहीं है.

राजा-जा दुष्ट अपना मुंह कालाकर नाहक़को झूंठ क्यों बोल रहा है.

राजा साहबकी ऐसी नाराजगी देखकर छोडीमल [illegible] हो बैठा.

राजासाहब इतना कहकर विचार मग्न हुए और उनके चित्तमें खयाल आया कि " मैंने मन्त्रीके साथमें कई वर्ष काम किये पर आज दिनतक ऐसी शिकायत तो नहीं सुनी, मेरे मानसे कि इस वर्गमें इस बातको कोई करता नहीं है. और इस [illegible] मात्र हूं, अपने मतलबके खातिर ऐसाभी होगा, पर यदि मन्त्रीके कहा होता तो कोई न कोई प्रजावर्गमेंसे आकर जाहिर करता. [illegible] अर्थ नहीं कि यहांभी कहीं हो और किसी शत्रुने बनावट करके योंही लिखवाया हो, पर लाहोरीमलकी यह कारगुजारी [illegible] नहीं मानता, देखूं फिरसे पूछता हूं. " यह विचार कर राजाने [illegible] पूछा क्योंरे लाहोरीमल इस पत्रके लिखनेका साहस तेरा तो नहीं है ?

लाहोरीमल–स्वामीनाथ ! आप स्वप्नमेंभी ऐसा खयाल न करें कि यह साहस मेरा हो. मन्त्रीजी मेरे पिता तुल्य हैं [illegible] पाहुआ मैं पीता हूं, क्या इन्हींकी बुराई करने लगा ! कृपानाथ ! आपही कहें मैंने इनकी कोई बुराई की है ?

राजा–ना लाहोरीमल ! तेरी जुबानसे तो मैंने मन्त्रीकी कोई बुराई नहीं सुनी, परन्तु इस तरह बुराई करता होतो क्या आश्चर्य है ?

लाहोरीमल–पृथ्वीनाथ ! मेरा तो यह काम नहीं है, मन्त्रीजी कहें तो यह उनकी बडाई है.

राजासाहबने देखा कि " इधर कोडीमल इस बातको [illegible] नटता है उधर लाहोरीमल कहता है कि मैंने [illegible] नहीं लिखवाया

न मालूम इसमें क्या भेद है. कोडीमलने प्रजाको बात कही या क्या इसका भेद निकालना कठिन है. प्रजाको तो पूछनेसे रहा यदि पूछूं और मन्त्रीने नहीं कहा हो तो उलटी जान जाएगी और उसीपरसे कोई बखेडा कर बैठें. और तरहसे भेदका निकालना प्रथम आवश्यक है. पर यह काम किससे बन आवेगा ? मन्त्रीनेतो झूठा जबाब देदिया, लाहोरीमल पर इसका दोष रखकर उसे पता लगानेको कहूं तो अवश्य है कि वह अपने सिरका कलङ्क उतारनेके लिए पता लगा देगा. " यह विचारकर लाहोरीमलसे कहनेलगे कि कोडीमल यह सब कृत्य तेरा बताता है, यदि तू सचा है तो पता लगा कि इस पत्रका लिखने वाला कौन है ?

लाहोरीमल–पृथ्वीनाथ ! यह कैसा अन्याय कोडीमल इस बातको साबित तो करही नहीं सकता कि वह कृत्य मेरा है, केवल बताता भर है. फिर मेरेपर यह फर्ज कैसे रक्खा जाता है ?

राजा–हमतो मैंभी जानता हूं कि कोडीमल इस बातको तेरे विरुद्ध ठीक तौरपर साबित नहीं कर सकता परन्तु भीतो अपने परका कलङ्क उतारना है, यदि तू सचा है तो सत्य निकालला ?

लाहोरीमल–जो आज्ञा, इतना कहकर मन्त्रीजीकी तरफ मुखातिब होता है और कहता है कि मन्त्रीजी ! " आपने मेरपर यह झूठा कलङ्क रखा है याद रखना अब इसका बदला आपको न चखाऊं तो मेरा नाम लाहोरीमल नहीं " इतना कहकर राजासाहबसे लाहोरीमलने उस पत्रको लिया और फिर अपने २ कार्यमें लीनहुए.

पाठकगण ! अब आप इसपरसे समझ ही गए होंगे कि इतने दिनोंतक कोडीमल और लाहोरीमलको शत्रुता थी या क्या ठीक

तौरपर ज़ाहिर नहीं था, पर आजसे तो दोनों एक दूसरेके कट्टर शत्रु वन गए हैं ऐसा साफ़ तौरपर प्रगट हो रहा है. हम खेदके साथ कहते हैं कि क्रोडीमलको यह क्या सूझी जिसने विना सबूत लाहोरीमलपर कलङ्क रख दिया. पर कर्मकी गति निराली है इसमें किसीका दोष नहीं. किसी महाशयने सच कहा है कि " विनाश-काले विपरीत बुद्धिः " मालूम होता है कि क्रोडीमलका विनाश होने वाला है इस कारण उसकी ऐसी विपरीत बुद्धि होगई है, वरना उस पत्रके उत्तरमें इतनाही कहना बसथा कि मैं निर्दोष हूं. पत्रका लिखने वाला कौन है पता नहीं चलता फिरभी यत्न करूंगा



प्रकरण ५

पत्रका लेखक तथा उसके साथी.



सायंकालका समय है. अहलकार आदिने अपने २ कामसे छुट्टी पाली है और इस समय वायु सेवन करना उत्तम समझकर मनुष्य मात्र इधरसे उधर फिर रहे हैं. कोई बाज़ारमें खड़ा हुआ सौदा ख़रीद रहा है तो कोई किसीसे वार्तालाप ही कर रहा है. कोई गाडीमें बैठे हुए हैं. तो कोई पैदलही चले जारहे हैं. कोई वायुसेवनार्थ शहरके बाहर यमुनाके किनारे जारहे हैं पाठशालाके लडकोंनेभी इस समयको उत्तम समझकर अपने २ खेल आरम्भ करदिये हैं. कोई फ़ुटबॉल खेलता है तो कोई क्रिकेटके खेलमें मस्त हो रहा है. वह लडके जिनमें- फ़ुटबॉल तथा क्रिकेट खेलनेकी शक्ति नहीं है टैनिस ही खेल रहे हैं वह छोटे २ लडके जिन कोइस खेलमें शरीक़ नहीं किये जाते बेचारे इधर उधर दौड़कर कोई औरही खेल खेल रहे हैं. ऐसे आनन्ददायक समयमें चार युवा पुरुष यमुनाके तटपर एक बेंचपर बैठे हुए वार्तालाप ऐसी गुप्त रीतिसे कर रहे हैं कि कोई उनकी बातको सुनने नहीं पावे. चलो पाठकगण अपनेभी ज़रा चुपकेसे जाकर और कान लगाकर सुनें कि यह युवा पुरुष परस्पर क्या बातें कर रहे हैं.

केवलदास–कहो भाई क्रोधदास तुमने उस गुमनाम पत्रको भेजा तो सही, पर अभीतक उसका परिणाम कुछ नहीं निकला. इस मन्त्रीका कब ख़ातमा होगा! मैंतो उसके दिये हुए दुःखोंसे

तङ्ग आगया परसोंके दिन उसने मेरी मातुश्रीका वेतनभी बंद कर दिया है.

क्रोधदास–केवलदास ! अभीसे परिणाम कैसा. पर यह फिर नई बला कैसे जरा फिरसेतो कह ?

केवलदास–मेरे पिताके खैरख्वाहीके बदले मेरी मातुश्रीको पांच रुपये माहवार वेतनके मिलते थे. वहभी इस मन्त्रीने बंध कर दिये हैं.

क्रोधदास–क्या वेतन बंध कर दिया है ?

केवलदास–हां क्रोधदास ! बंध कर दिया अबतो मेरा भरण-पोषणभी करना कठिन होगया मैं नौकरीसे गया, मेरी जागीर गई, थोडा बहुत आधार इस वेतनपर था और उसको देखकर लोग कर्ज़भी देतेथे अब वह भीन रहा. इतनेमें मानसिंह बोल उठा.

मानसिंह–अरे यार क्रोधदास! यह मन्त्रीतो बडा हरामज़ादा है आज चार दिन हुए मेरा लडका रूपसिंह नौकरीकी तलाशमें योंही बतौर उम्मेदवार हुजूरियोंके पास जाया करता था, उसकोभी बंध कर दिया.

क्रोधदास–यह कैसा दुष्ट मन्त्री जो अनाथों पर तनिकभी दया नहीं लाया. भाई मेरी तो तुम जानतेही हो. इसी दुष्ट मन्त्रीके कारण अपनी हमेशाकी नौकरी छोडी और अब व्यापार कर अपना गुज़र करता हूं. पर यह आश्चर्यकी बात है कि मन्त्री अपन लोगोंके पीछे इतना क्यों पडा हुआ है.

केवलदास–भाई ! अपनेही लोगोंके पीछे यह नहीं पडा हुआ है, उसने तो आजकल सबके साथ ऐसा बर्ताव कर रक्खा है. तुमने सुना होगा कि हरिलालकोभी नौकरीसे हटा दिया है.

मानसिंह–ना भाई ! नहीं सुना यहभी नई बात, सुनी नहीं जाती आजकल क्रोडीमलको क्या होगया है ?

क्रोधदास–क्या ! क्या होगया है घर वैठनेकी तैयारी कररहा है.

केवलदास–तुमतो यह कहते हो और चारदिन हुए राजासाहबने उसको एक हजार रुपया इनआम दिया है ?

क्रोधदास–मन चाहे जितना इनआम लेलो पर मैं कहता हूं जो ठीक है. हक़ीक़तमें यह घर वैठनेकी तैयारी कर रहा है.

ग़रीबोंकी आह कभी खाली नहीं जाती. देखो मोहनलाल बज़ाजको, उसने एकके दो वना कर तथा सेरका पोनसेर तोलकर दिया, जिससे ग़रीबोंकी आह लगी न जो आज खानेसेभी मोहताज हो रहा है. लडके वाले उसके इधरसे उधर मारे २ फिरते हैं.

मानसिंह—मोहनलाल तो क्या. पहिलेके मंत्री गोपालसिंह के ख़ानदानको देखिये उसनेभी क्रोडीमलकी तरह वहुतेरे ग़रीबोंके गले काटे थे, अपने मतलवके सामने वह विलकुल अंधा वनाहुआ था, जिसका आज यह परिणाम अपनी नज़रोंसे देख रहे हैं कि कुटुम्ब उसका एक रोटीके टुकडेके लिये घर घर रोता फिरता है. यह ही हाल इस मंत्रीका होगा जो अपने जैसे अनाथोंकी आहको लेरहा है. हमने इसका या इसके पिताका क्या विगाड किया था जो पीछे पडा हुआ है.

क्रोधदास—तुम ठीक कहते हो. केवलदास ! क्या क्रोडीमलका पिताभी ऐसाही था ?

मानसिंह–वह तो हरिका भक्त था, उसका क्या कहना. सांदलशाहने पचास वर्ष तक राज्य कारभार चलाया पर किसीको

विनाकारण दुःख नहीं दिया और उसीका यह परिणाम हैकि क्रोडिमल मंत्रिके पद तक पहुंचा.

क्रोधदास—हां भाई यह ही बातहै, पर अवतो मेरे हृदयमें क्रोध सुलग रहा है, अनाथोंका यह हाल मुझसे देखा नहीं जाता. अबतो एक कोई ऐसा उपाय निकालना चाहिये कि शीघ्रही इसमंत्रीका खातमा हो जाय.

किशोरसिंह—और इलाजकी जुरूरत नहीं मैं आज योंही महलोंमें हुजूरी लोगोंके पास गयाथा तो मालूम हुआकि राजासाहब उस पत्रपरसे मंत्रीपर जल उठे हैं. यह उनको निश्चय होगया हैकि मंत्रीने उस गुप्त बातको मजासे जरूर कहदीहै.

क्रोधदास—वाहरे मैं क्रोधदास! कैसा उस्ताद हूं कि झूठी बातको सच्ची करदिखाई पर किशोरसिंह! यह तो कह कि आखिर उसका परिणाम क्या हुआ?

किशोरसिंह—परिणाम क्या मंत्रीने यह सब खटपट लाहोरी मलकी बताई है. वह नटता रहा, इस कारण वह पत्र लाहोरीमल-को पता लगानेकी गरज़से दिया गया है.

क्रोधदास—यह हाल सुनकर प्रथम तो घबरा गया और ऐसा बन गया जैसे उसके सब मर गये हो क्योंकि चोरकी डाढ़ीमें तिनका वाला मज़मून था, किन्तु साहसी बनकर कहने लगा. "भाई केवलदास देखी क्रोडीमलकी काररवाई, बेचारे लाहोरीमलपर कैसा झूठा कलङ्क लगाया. लाहोरीमल सिरका फिरा हुआ 'यथा नामा तथा गुणा' है. वह उसे जरूर सम्हाल लेगा ठीक है एकसे दोहुए" पर क्रोधदासने ज़रा विचार किया तो बेचारा फिर बावला बन गया और सबसे कहने लगा कि "अब अपनेको क्रोडीमलके लिये

फिक्र नहीं रहा, पर लाहोरीमल उस पत्रका पता लगावेगा तो अपने लोग सब मारे जावेंगे. इसका पहिले सोचो."

मानसिंह—इसमें सोचना क्या है, मरगया कोई पता लगाने वाला.

क्रोधदास—हां भाई कहता तो ठीक है, हरूफ़ तो मैंने ऐसे बनाए हैं कि कोईभी पहिचाननेसे रहा. पर भाई, फिरभी लाहोरीमल लाहोरीमल है, इसकी चतुराई में घाटा नहीं. देखो अभी पच्चीस वर्षकाभी नहीं हुआ और अपनी चतुराईको बता कर प्राईवेट सेक्रेटरी बनगया. कहीं वह ऐसा न करे कि कपटसे पता लगाले और अपना सर्वस्व नाश हो.

किशोरसिंह—चली उसकी चतुराई और चला उसका छल कपट अपने कौनसे कम हैं.

क्रोधदास—अरे भाई तुम नहीं जानते, मैं उसकी चालोंको देखा हुआ हूं. पर इसका प्रवन्ध प्रथम आवश्यक है कहीं केवलदास अपना दास पना न दिखादे, उसको पक्का करदेना चाहिये.

इतनेमें केवलदास कहता है, "भाई ठीक कहा तुम लोगोंने मेरी गिरी दशापर दया लाकर काम किया और मैंही तुह्मारा शत्रु बनकर वातको कहूं. !"

क्रोधदास—नारे केवलदास! यह बात नहीं है यह तो हमभी जानते हैं कि तू शत्रुवनकर वातको कदापि नहीं कहेगा पर तू ज़रा भोला दीखता है, भूलमें कहीं कह न दे.

केवलदास—भाई हूं तो मैं जन्मका भोलाही पर वातको कभी नहीं कहूंगा, निश्चय मानिये.

क्रोधदास—बस यही चाहिये.

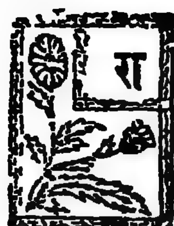
इतना कहकर क्रोधदासने कहा कि चलो दिन अस्त हुए जाता है घरचलें, और चारों उठके रवाना हुए.

पाठकगण ! इसपरसे आपको विदित हुआ होगा कि उस पत्रका लिखने वाला क्रोधदास है, और उन चारोंकी सलाहसे लिखकर भेजागया था. दरबार वाली बात सुनकर आप यहां आश्चर्य करते होंगे पर आपको याद दिलाता हूं कि दरबार हालके सदर दरवाजे पर जो हुजुरी बैठे हुए बातें कर रहे थे और अन्दरका हाल सुन रहे थे उनमें यही किशोरसिंह था, जिसने सारा हाल सुनकर यहां आकर अपने मित्रोंको प्रगट किया है. वाहरे इनका प्रबन्ध.



प्रकरण. ६

कोडीमलकी मूढ़ मति.



रात्रिका समय है. लगभग आठ बजेका शुमार है. गर्मी का मौसिम होनेसे कोडीमलने दालानमें चांदनी बिछा रक्खी है और उसपर गद्दी तकिया लगाए हुए बैठा है. पासमें उसके अहलकार तथा दूसरे नगरके आदमी आकर अपने २ मतलबके ख़ातिर बैठे हुए हैं. पर आज कोडीम-लका ध्यान किसी परभी नहीं. इस समय न तो किसीका बोलना इसको रुचता है, न किसी काम काजमें ध्यान है, केवल उसी बात पर चिन्ता मग्न होकर चिन्ताग्रसित बैठा हुआ है और मन ही मन हवाई ख़यालातोंको बना रहा है एकदफ़ा विचार करता है कि "मैंने लाहोरीमलका नाम नाहक़को क्यों लिया और अपनी प्रिय पत्निका कहना मानकर ख़ामोश क्यों नहीं होगया ? इस में तो संदेह नहीं कि, लाहोरीमल आजसे मेरा कट्टर शत्रु बन गया, न मालूम अब वह इस शत्रुतामें मेरेको क्या क्या कर देगा" फिर कहता है "अरे उसकी क्या मजाल जो मेरे सामने टक्कर झेल सके मैंने उसपर कौनसा झूठा दोष रक्खा है. क्या इसकी माका सिर करेगा ? यह हरामजादा ही इस खटपटका मूल है, चुपका हो रहे-गा, इससे कुछभी बन न आवेगा पर यदि वह वास्तवमें निर्दोष है तबतो मेरी बात झूठी निकलेगी और मुझे राजा साहबके सामने शर्मिन्दा होना पडेगा. अरे शर्मिन्दा क्या ? कहीं इस बातपर कोई दंड कर दियातो ग़ज़ब हो जावेगा, अरे इसमें ग़ज़ब काहेका वह निर्दोष ठहर चुका, कभी ठहरभी गया तो क्या होगया असली बात तो जब वह बतावेगा तब निर्दोष ठहरेगा. मैंने कोई ऐसाकाम

किया नहीं है, जो राजा साहब मुझसे नाराज़ हों और कोई दंड करें किन्तु इन राजासाहबका ढङ्ग निराला है, अब इन्हें बिलकुल पसंद नहीं है, क्रोधी पूरे हैं, आजही मुझपर कितने जले. यदि पता लगभी जावेगा तो मुझे इस बातसे कायर करेंगे कि तूने लाहोरीमलका झूठा नाम क्यों लिया, अबतो ऐसा उपाय करना चाहिये कि राजासाहब नाराज़ न हों और लाहोरीमलका खातमा हो जाय. पर वह उपाय कौनसा ? उपाय यही कि एक दो इस तरहकी सच्ची झूठी बातें लाहोरीमलके विरुद्ध राजा साहबसे कह दूंगा, आपसे जल उठेंगे. ”

इस तरहके अनेक तर्क वितर्क विचार क्रोडीमल बैठा हुआ कर रहा है. लोगोंने देखाकि क्रोडीमलका किंचित्‌भी लक्ष अपनी तरफ नहीं है, एकदो करके सब लौटने लगे. वही एक दो बैठे रहे जो इनके स्वाधीन और प्रिय थे, इनमेंसे तेज़मल बोल उठा “ मैंने उस पत्रके विषयमें खोज की पर कहीं पता नहीं लगा. ”

क्रोडीमल—जाय अपनी बलासे, उसी बदमाश लाहोरीमल पर पता लगानेका बोझ रक्खा गया है.

तेज़मल—अच्छा हुआ बला टली, वह चोर तो है ही, क्या पता लगाएगा ?

क्रोडीमल—लाहोरीमल पता लगा चुका, पर भाई अब आजसे लाहोरीमल अपना कट्टर शत्रु बन गया होशियार रहना. ’

तेज़मल—बन गया तो क्या हो गया, इसमें अपने क्या ? रे यदि उसे आपसे मित्रता रखनी थी तो इतना पीछे क्यों पड़ा हुआ था ? उसने ऐसा नीच काम क्यों किया ! यह तो आपही थे जो इतने दिन खामोश बैठे रहे, मेरे जैसा होतातो कभीका उखेड मारता.

क्रोडीमल—भाई यह मेरा लगाया हुआ पौदा था, मुझे स्वप्नमेंभी आशा नहीं थी कि वह मेरे साथ इसतरह करेगा क्या बिगड गया अबही सही, पर भाई राजासाहब इस बातपरसे मेरेपर बिगड रहे हैं.

तेज़मल—क्या आज कुछ बिगडे ?

क्रोडीमल—हां आज मुझे बहुतेरी सुनाई.

तेज़मल—तो फिर लाहोरीमलको पता लगानेके लिये पत्र क्यों दिया गया.

क्रोडीमल—केवल इसी लियेकि यदि तू सच्चा है तो सचाई निकाल ला.

तेज़मल—वह सचाई निकाल लाया, आप इसीपरसे विचार कीजिये कि अगर वह दिलसे जले होते तो लाहोरीमलपर इसका फ़र्ज़ नहीं छोडते, इसपरसे तो राजासाहबकी कृपा समझना चाहिये.

क्रोडीमल—यहतो उनकी कृपा है पर उस वक़ बहुत ही जल गए थे.

तेज़मल—यहतो आप जानते ही हैं कि पहिली दफ़ा वह गर्म होजाते हैं पर फिरभी राजा हैं, उन्होंने विचार किया होगा कि क्रोडीमल भला है ऐसा कदापि करे नहीं, यहतो लाहोरीमलकी ही खटपट होगी. यदि उसकी खटपट नहीं है तो पता निकाल लावेगा वरना बस समझ जाएंगे कि लाहोरीमलही चोर है.

क्रोडीमल—ठीक कहतेहो भाई तेजमल ! पर इसमें तो सन्देह नहीं कि, लाहोरीमल अपना शत्रु बनगया. अब एक दो बातें ऐसी सच्ची झूठी लाहोरीमलके विरुद्ध राजा साहबको कहनी चाहियें कि उसका ख़ातमा होजाय, नहीं तो लाहोरीमल अपनेको बदनाम कराएगा,

तेज़मल—मन्त्रीजी ! आपका विचार यथार्थ है अब आपको उसके उखेडनेमें तनिकभी विलम्ब नहीं करना चाहिए, वह बडा नीच है. देखिये मैंने उसका क्या बिगाडा था जो राजासाहबसे कह दिया कि मन्त्रीके दफ़तरमें तेज़मल करता है जो होता है, मन्त्रीजी थोडेही देखते हैं यह तो राजासाहब तथा आपका अनुग्रह है कि कुछ नहीं हुआ वरना उसकी तो मन्शा मुझे निकलवा देनेकी थी न.

क्रोडीमल—वह तुम्हें निकलवा चुका, जबतक मेरे तनमें प्राण हैं कोई बाल तक तुम्हारा बांका नहीं कर सकता. देखो कलही क्या करता हूं.

तेज़मल—इस वक्त कुछ नहीं करना चाहिये नहीतो राजा साहब किंचित् लक्ष नहीं देंगे, कुछ रोज़ ठहरिये.

क्रोडीमल—हां तेज़मल ठीक कहता है. अभी कहूंगा तो शत्रुताका कारण समझेंगे. पर अब शत्रुता तो हमेशा कहलावेगी ?

तेज़मल—यहतो ठीक है पर कुछ विलम्ब करना चाहिये.

क्रोडीमल—बहुत अच्छा ऐसाही करूंगा.

इतना कहकर मन्त्रीजीने भोजन करने जानेका इरादा किया इतनेमें रामनाथ बोल उठा " आपके जानेके बाद राजासाहब फरमाते थे कि क्या क्रोडीमलने यह बात प्रजाको कही होगी ? मैंने अर्ज़ किया कि कदापि नहीं कृपानाथ ! क्रोडीमल प्रजाको बात कहने लगा ? यह तो लाहोरीमलकी बदमाशी है. उसबरसे राजासाहबको निश्चय होगया है कि मन्त्री निर्दोष है, नाहक़ मैं उसपर जला. "

क्रोडीमल—मन ही मन कहने लगा कि, कहां तो मेरे विचार थे और अब क्या सुनता हूं इतना विचार कर रामनाथसे कहने लगा कि " क्या तुम सच कहते हो ? "

रामनाथ—जी हां मैं मिथ्या क्यों कहने लगा.

कोडीमल—फिरभी मौका लगे राजासाहबको कहते रहना कि मन्त्री निर्दोष है, लाहोरीमलकी ही यह सब बदमाशी है.

रामनाथ—जो आज्ञा, कहकर चला गया.

तेज़मल—देखा मन्त्रीजी मैं ठीक कहता था न ?

कोडीमल—हां भाई तुम्हरा कहना यथार्थ है परन्तु अपने को लाहोरीमलके लिये कुछ उपाय करना चाहिए.

तेज़मल—हां क्यों नहीं पर समय आए.

इतनेमें सेवकने आकर ज़ाहिर किया कि भोजन तैयार है. उस सेवकके आते ही तेज़मल आज्ञा लेकर घरको रवाना हुआ और मन्त्रीजी भोजन करने चले गए.

मन्त्रीजी भोजन करके जब शयन गृहमें जाने लगे उनकी मातुश्रीने आवाज देकर अपने बेटेको पुकारा और कहने लगी "बेटा ज़रा इधरतो आओ, आजकल तो मातासे बोलतेभी नहीं हो."

मन्त्री—हमारा वक्त तुम्हारे साथ बातें कर गुमानेको नहीं है, सो जाओ, अभी अवकाश नहीं है.

माता—बेटा यह उत्तर कैसा ! क्या बेटे माता पितासे कोई बात नहीं करते होंगे और यदि करें तो क्या उनका वक्त फ़ज़ूल जाना कहलाता है ?

मन्त्री—फ़ज़ूल नहीं तो क्या ?

माता—बेटा तुम ऐसा कहनेमें भूल करते हो ऐसा कोई मनुष्य इस पृथ्वीपर नहीं होगा जो माता पितासे बातें नहीं करता हो, और माता पितासे बातें करनेमें अपना वक्त जो जाता है, उसको

फ़जूल समझता हो. मनुष्य मात्र माता पिताके साथ अति प्रेमसे बोलते हैं और उसीमें उनका कल्याण है.

मन्त्री—हमारा कल्याण नही तो न सही पर इस वक्त तो तुम्हारी बातें नहीं सुनेंगे.

माता—बेटा! न सुनो तो न सही पर माताके साथ यह गर्व कैसा? क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि गर्व करना नि न बुरा है? भाई! गर्व किसीका होके नहीं रहा है. महान् ऋषि मुनि इससे हार गए और राजा रावण जैसेका गर्व नहीं रहा, कुलीन हो करके तुमको यह गर्व कैसा? ज़रा सुनोतो इस विषयमें कवि लोग क्या कह रहे हैं:—

(ग़ज़ल.)

क्या करता है गुमान, तुं जाना ज़रूर है;
रख दिलमें तेरे भान, जाना ज़रूर है.
चार दिनकी चांदनीमें, क्या बने मगरूर;
दौलत दुनिया छोडके, जाना ज़रूर है क्या० ॥ १ ॥
फरमान तुं प्रभुका, प्रेम से उठाले शिर;
कर रहम तुं ग़रीबोंपर, जाना ज़रूर है क्या० ॥ २ ॥
अमीरीके फ़कीरी में, दिल राख तुं समान;
छबीली जोरु छोडके, जाना ज़रूर है क्या० ॥ ३ ॥
लछमन रहा न राम न, रावण रहा न भीम;
काल लेगया सबी, जाना ज़रूर है क्या० ॥ ४ ॥
निरधन अरु धनवंत, गुनवंत के गमार;
जमके साथ चले गए, जाना ज़रूर है क्या० ॥ ५ ॥
रहा न कोई मंत्र सें, न कोई तंत्र सें;
सब हाथ पसारे चले, जाना ज़रूर है क्या० ॥ ६ ॥

भले भलाई कर गये, बैठ प्रभुके पास;
तूभी कर भलाई को, जाना जरूर है क्या० ॥ ७ ॥
करे तेरे दिलको सफा, मौका अच्छा मीला;
जिन भक्तिसे शिव पायगा, जाना जरूर है क्या० ॥८॥

मन्त्री—माता इसमें गर्व काहेका ?

माता—गर्व नहीं तो क्या ? जबसे तू मन्त्री हुआ है अभिमानको तूने अपना मित्र बना रक्खा है, पर यह ठीक नहीं ज़रा मेरा कहना मान. देख कवि लोग और क्या कह रहे हैं:—

(ग़ज़ल)

नहिंकर गुमान दिलमें तेरे, रावण सरीखे मरगए;
गुमानसे जो हुकुम चलाते, वो भी आखीर मरगए ॥ १ ॥
आदत बुरी नादान बनके, क्यों रक्खे दिलमें तेरे;
फिरते थे मग़रूर बनके, वोभी आखीर मरगए ॥ २ ॥
याद कर मालीक निशदिन, साफ़रख दिलको सदाः
मतलबकी मसलत करते थे, वो भी आखीर मरगए ॥ ३ ॥
उलटी समझ तस दिलसे तेरे, ये फीकर मत रो कभी;
जो बड़ी तकलीफ़ उठाते, वोभी आखीर मरगए ॥ ४ ॥
अंधेर नहीं इस जगतमें, शिवपर ज़रूर बीसवास कर;
खुशी से जो बदकाम करते, वोभी आखिर मरगए ॥ ५ ॥

मन्त्री—कह माता अब तू कहना क्या चाहती है, जल्दी कह मुझे और काम करनेका है.

माता—काम वामको तो ज़रा दूर छोडदे और ध्यान लगाकर सुन, तेरेही फ़ायदेके लिये कहती हूं.

मन्त्री—फिर कहती क्यों नहीं ! देर क्या लगाती है ! कहना हो तो कह, नहीं तो बंदा तो यह जाना है.

इतना कहकर क्रोडीमल जाने लगा कि मातुश्रीने उठकर उसको पकड खींच कर अपने पास बैठाया और कहने लगी. "बेटा क्या तुमने आजके दरबारमें लाहोरीमलपर उस पत्रका दोष लगा दिया, ज़रा मुझे पूछता तो सही ? "

मन्त्री—तू कौन जो मैं पूछता, हां हां लगा दिया.

मातासे अब रहा नहीं गया, छाती ठोक कर कहने लगी. मैं तेरी माता ! सांसारिक तथा धार्मिक व्यवहारके अनुसार तुझे पूछना फर्ज़ था और है, इस तरह पूछे विना काम न कर देख पछताएगा ! कह तूने कैसे मान लिया कि वह कृत्य लाहोरीमलका हो है ? "

मन्त्री—तेरेसे मैं ज़ियादा समझता हूं, कुछ विचार करही लाहोरीमलपर दोष रक्खा होगा.

माता—यह तो ठीक लाला ! पर कह तूने कैसे मान लिया कि वह कृत्य लाहोरीमलका है ?

मन्त्री— कैसे क्या ऐसे कि वह मेरा शत्रु है मन्त्री पद लेना चाहता है.

माता—यह ख़याल तेरा मिथ्या है. शत्रु तेरे एक से अनेक हैं. मन्त्री पद उसकी चाहसे लिया नहीं जा सकता, वह तो कर्मके आधीन है, मूढ़ न बन, ज़रा विचार कर.

मन्त्री—मुझे तो सिवाय लाहोरीमलके कोई शत्रु नहीं दीखता मनुष्य मात्र हँसी ख़ुशीमें बोलते हैं और मेरी वाह वाह करते हैं. यही लाहोरीमल एक है जो मेरे साथ द्वेष रखता है.

माता—वाहरे तेरा विचार लोगोंके हँसी ख़ुशी बोलनेपर मान लिया कि सर्व तेरे मित्र हैं और शत्रु नहीं. क्या पंचम काल (क-

लियुग्) को नहीं जानता ? आजकलके मनुष्य ऐसे हैं कि ज़ुबान पर हंसी ख़ुशीसे बोलते हैं और पेटमें छुरी रखते हैं. तेरेसे हंसी ख़ुशी बोलनेका मात्र यही कारण है कि तू मन्त्री पद्द पर है.

मन्त्री—तू क्या जानती है ? मैं इस बातको कदापि नहीं मानूंगा, फिरभी माना कि लोग मेरे मन्त्री होनेके कारण हंसी ख़ुशी से मेरे साथ बोलते होंगे पर यदि वे शत्रु होते और पेटमें छुरी रखते होते तो आज दिन तक मेरी कोई शिकायत की तो नहीं ?

माता—बेचारे क्या शिकायत करें उनकी चले जब न, और इसका दूसरा कारण यहभी है कि कहीं तू उनको फँसा तो न दे, नहीं तो बेटा लोग मुसीबतमें पडे कब चूकने वाले.

मन्त्री—मा मुसीबत कैसी, मैंने तो किसीको कोई कष्ट नहीं दिया ?

माता—राजा कष्ट देता जाता है पर उसको यह विचार नहीं होता कि मैं इसको कष्ट दे रहा हूं. वहतो उसीको मालूम होता है जिसको सहन करना पडता है. तू जिन जिनको कष्ट देता है तुझे क्या मालूम होने लगा, वह बेचारे अपने कर्मोंको रोतेहैं और यहां आकर आंसू बहा जाते हैं.

मन्त्री—कौन आया किसका मैंने बिगाडा ?

माता—हरिलाल आया था, वह रो रहा था कि मुझ अनाथ को मन्त्रीजीने बिना कारण अपने कामसे हटा दिया.

मंत्री—अरे मा तू नहीं जानती वहतो बड़ा घमंडी है उसने एक रोज़ मुझे सलाम नहीं की फिर मैं ऐसे घमंडीको नहीं निकालता तो क्या करता ?

माता—अरे क्या एक सलाम न करनेसे क्रोधमें आकर हरि-

लालको निकाला ? वाहरे तेरी बुद्धि कहीं दुनियामें ऐसाभी मनुष्य होगा जो ज़रासी वातमें किसीको रोटीसे मोहताज करदे. वेटा ! बडे आदमी ऐसे नहीं हुआ करते हैं, सलाम की तो क्या ! नहीं की तो क्या ? खैर हरिलालने तो सलाम नहीं की पर केवलदासने तुम्हारा क्या विगाडाथा जो उसको नौकरीसेभी हटाया, जागीर ज़ब्तकी, उसकी माके वेतन आताथा सोभी बन्द कर दिया ?

मन्त्री—मातुश्री ! यह तो वडा हरामजादा है. इसने एक रोज़ राजासाहबके कानमें फूँक मारदी कि मन्त्रीजी वडे घमण्डी हैं, लोगोंको सलाम तक नहीं लेते. फिर मैं ऐसा नहीं करता तो क्या करता ? यदि मैं खामोश हो वैठता तो उसका मेरे विरुद्ध शिकायत करनेका और होसला वढ़ता.

माता—वेटा ! उसने क्या वुरा कहा, यौंतो मैंने भी आज तुझे कहा है कि इस तरह गर्व करना अच्छा नहीं मुझको भी घरसे वाहर निकाल कर कष्ट देगा क्या ?

मन्त्री—अरे मा तूने ऐसा कव कहा ! यदि कहेगी तो तेरीभी यही गति होवेगी.

सौभाग्यवतीको अपने पुत्रका ऐसा उत्तर सुनकर शीघ्रही यह श्लोक याद आया कि:—

उपदेशोहि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये,
पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विष वर्द्धनम् ॥

और उसके प्रश्नके उत्तरमें इतनाही कहा कि " जा वेटा ! तुझ जैसे कपूत वेटेसे मैंभी हारी.

कोडीमल मातुश्रीसे छुट्टी पातेही चला गया. उसके मनमें तो यह खलवली मचरही थी कि " इस पापिनीसे कव पल्ला छूटे "

क्रोडीमलके चले जाने बाद सुन्दरी आई और कहने लगी " क्यों सासजी भली बुरी सुनी न, मैं कहती थी कि नाहक् क्यों कहते हो.

सौभाग्यवती--वह ठीक कहा पर नहीं कहती तो क्या कहती? उसने भला बुरा कह दिया इसमें मेरा क्या बिगडा ? नाहक् अपनी ज़बान बिगाडी.

सुन्दरी-- पर उनके ऐसे विचारोंका भविष्यके लिये क्या परिणाम सोचती हो?

सौभाग्यवती--परिणाम सोचा सोचाया है, अपनेको अति कष्ट भोगना पडेगा.

सुन्दरी--तो अब क्या करें सासजी ?

सौभाग्यवती--करना क्या है, उसको तो कहने जाते हैं तो काटने दौडता है. परमात्माका भजन करो और बैठे रहो. लिखा लेख कदापि टल नहीं सकता.

ठीक कहती हो सासजी ! लिखा लेख नहीं टल शकता पर आपके पुत्रकी ऐसी मति कैसे होगई, पहिले तो ऐसे नहीं थे !

सौभाग्यवती--यह उस हरामज़ादे तेज़मलकी बदमाशी है. जबसे क्रोडीमल मन्त्री हुआ तबहीसे वह उसके पास है, उसने उसकी मति फिरादी. लोगोंने कहा कि, उस हरामख़ोरको मत रक्खो परन्तु क्रोडीमल नहीं मानता, न मालूम उसने क्या मद चखादिया है, याकि वश कर दिया है.

सुन्दरी--ठीक कहती हो सासजी ! उसका यह अनुग्रह हुआ है, पर उसकाभी तो भला नहीं होगा ?

सौभाग्यवती—बुरे करनेवालोंके लिये भला कैसा! कियेका फल सबको भोगना पडेगा. जा बेटा अब तू भी सोजा. ग्यारह बजने आए हैं, मैंभी सोती हूं.

सुन्दरीका मन नहीं है कि, अपने पतिके पास जाए, पर कहीं नाराज़ होकर फटकारें नहीं सुनाए, इस ख़यालसे उसने सासका कहना शिर चढ़ाया और चली गई. पर आज उसकी हिम्मत अपने स्वामीसे कुछ कहनेकी नहीं बनी और चुपकी सोकर निद्रा देवीके शरणागत होगई.

आज सौभाग्यवतीसे निद्राने अपना मुंह मोड लिया है. सौभाग्यवती बुढ़िया होनेके कारण पूरी निद्रा तो उसे आती ही नहीं है, थोडी बहुत आती थी जोभी आज क्रोडीमलने भगादी. बेचारी बुढ़िया खाटपर सोती हुई विचार कर रही है कि "हे प्रभो! यह क्या विचित्र गति! मैंने स्वप्नमेंभी ऐसा ख़याल नहीं किया था कि, आख़िरको जाकर बेटा मेरा आज्ञाहीन, मूढ़ तथा कुपुत्र निकलेगा, वह तो अब मुझे कुछ समझता भी नहीं क्या मैं तुझे नोमाह अपने पेटमें रखकर योंही भारी मरी थी? क्या योंही मैंने तुझको पालकर बड़ा किया था जो आज तू इस तरह बकने लगा! प्राचीन कालके लोग कहते थे कि पंचम काल (कलियुग्) आने वाला है सो इसपरसे विदित होता है कि कलियुग्का प्रवेश होगया है. पर सत्यवादियोंके घरमें कलियुग् कैसा? अरे सत्यवादीतो मेरा पति था जो चला गया, अब कलियुग् क्यों नहीं आवे, ख़ैर कर्मकी गति. इस तरहके अनेक विचार करती हुई सौभाग्यवती अभीसे दुःखकी गठडी अपने शिर पर लेरही है.

प्रकरण ७

लाहोरीमल चिन्ता मग्न.



पाठकगण! जबसे क्रोडीमलने लाहोरीमल पर उस पत्रका दोष रक्खा है. तबहीसे लाहोरीमलके दिलमें खलबली मच रही है और उसका एक कारण यहभी है कि वह बेचारा निर्दोष है. भला निर्दोष मनुष्य पर ऐसा दोष लगे और उसको खलबली क्यों न मचे. वह यही चाहता है कि किसी तरहसे पता लगे और निर्दोषी ठहरूं.

आलिशान मकान है. वह आनन्द भवन जैसा नहीं है पर दिखाव में ठीक मालूम दे रहा है. मकानके चारों तरफ़ चार दीवारी खिंची हुई है और उसमें एक बड़ा दरवाज़ा मकानके अन्दर जाने आनेका लगा हुआ है, मकान दो मंज़िला है.

लाहोरीमलका पिता ग़रीबी स्थितिमें था, लाहोरीमलको बड़ी मुश्किलसे थोडा बहुत लिखा पढ़ाकर होशियार कर राज्यमें क्रोडीमलकी मार्फ़त ही नौकर कराया था. भाग्यने वह ज़ोर मारा कि आज हुज़ूर ख़ासका प्राईवेट सेक्रेटरी बना हुआ है. लाहोरीमलने कुछ दिनों तक तो (जबतक कि वह प्राईवेट सेक्रेटरी नहीं बना था) क्रोडीमलके साथ कोई विरुद्धता नहीं रक्खी थी, जब वह प्राईवेट सेक्रेटरी हुआ उसकी आंख पीछे आगई और अपना मतलब निकालनेके ख़ातिर क्रोडीमलके काममें खटपट करना शुरूकिया. सच है बड़े होजाने बाद सम्हलकर रहना नीतिको पहिचानना बड़ा कठिन काम है. ऐसे विरले कम होते हैं कि जो बढ़ने पर आपके-

वृक्षकी तरह जब उसपर फल लगता है और वह नीचे झुकता है नीचे झुकते जाते हैं. किन्तु लाहोरीमलने आजतक क्रोडीमलसे ऐसी कोई विरुद्धता नहीं की जैसा कि उस वेचारेपर दोष रक्खा गया है,

मकान पुरानी बनावटका होनेके कारण नीचेके भागमें हवा कम रहती है, इस कारण लाहोरीमल अपने इष्ट मित्रों सहित, ऊपरके भागमें बैठा हुआ है और परस्पर बातें कर रहे हैं, चलो पाठक गण देखें कि इनके क्या क्या अभिप्राय हैं,

लाहोरीमल—कहो भाई गणपति ! आज तो एक निराली बात हुई है, सुनी है न ?

गणपति—ना भाई ! क्या नई बात ?

लाहोरीमल—मंत्रीजीने मेरे पर एक झूठा कलङ्क लगाया है

गणपति—तुमपर कैसा कलङ्क ! क्या कोई रिश्वतका मामला आपडा ?

लाहोरीमल—रिशवतका नहीं मन्त्री साहबपरन मालूम किस हरामखोरने एक गुमनाम अर्ज़ी राजा साहबको दी है और मंत्रीजीने उसका भ्रम मेरे पर किया है. मैंने तो वहु तेरा कहा किमैं निर्दोषी हूं पर नहीं माना राजा साहबने उस पत्रके लेखकका पता लगानेको असली पत्र मुझे दिया है पर यार पता लगाना कठिन हो रहा है तुम्हारेने आनेसे पहिले नाना प्रकारसे विचार किया किन्तु कुछभी पता नहीं चलता. लिखनेवालेने ऐसे अक्षर लिखे हैं कि पहिचानमें ही नहीं आते.

गणपति—ऐसा लिखनेवाला कौन जो अक्षरभी पहिचानमें नहीं आते, यार ! ज़रा दिखाओ तो सही ?

लाहारीमलने पत्रको लाकर गणपतिके हाथमें दिया. गणपतिने प्रथम तो देखा बाद पढ़ा, पासके बैठनेवालोंने भी देखा, पर कोई भी अक्षरों को पहिचान नहीं सका.

आखिर उनमेंसे मसखरीके तौरपर ईश्वरदास बोल उठा "कहीं तुम्हीने तो इसको नहीं लिखा है जैसा कि मन्त्रीजी भ्रम करते हैं, यार अक्षर तो ठीक बनाए हैं ?"

लाहोरीमल—खूब कहा मेरा यह काम होता तो तुमको क्यों बताता, तुम कोई औरतो हो नहीं. इसके अतिरिक्त मैं अशुद्ध कैसे लिखने लगा, बेचारे मन्त्रीजीने कोई बात लोगोंमें नहीं कही है. क्या वह मन्त्री होके ऐसी बातें लोगोंमें करने लगे ! लिखने वाले ने यह बात बिलकुल गलत लिखी है.

ईश्वरदास—नहीं मित्र ! मैं तो मसखरी करता हूं, बुरा मत मान जाना. गणपति ! अब तो इसका पता लगाना चाहिए.

गणपति—हां भाई, पर लाहोरीमल ! यह मामला क्या हुआ, मन्त्रीजी तुम पर ऐसे क्यों बिगडे जो झूठा दोष रक्खा ?

लाहोरीमल—क्या बताऊं उन्होंने तो यही कहा कि, सिवाय लाहोरीमलके कोई मेरा शत्रुही नहीं, तुमही कहो मैंने उनकी कौन-सी नानी मारदी ?

ईश्वरदास—क्यों भाई क्यों झूठ बोलते हो ? बहुतसे मामलों में तुमने दखल दिया है. क्या उनको बुरा नहीं मालूम हुआ होगा ?

लाहोरीमल—तुमभी लगे खूब मसखरी करने. क्या सब मंत्री-जीके ही चाहियें, अपने नहीं चाहियें क्या ?

इतनेमें जसवन्तसिंह बोलउठा " ऐसी मसखरियों में तो कुछ

आता जाता नहीं है कोई उपाय सोचो न, कि जिससे असली भेद खुल आए और अपने मित्रके ऊपरका कलङ्क उतरे, "

गणपति—हां भाई कहते तो ठीक हो, पर यदि सच पूछो तो यह काम तुम्हारे ही करनेका है. ख़ुफ़िया पुलिसमें तुम क़दम रखते हो, फिर वह तुम्हारी ख़ुफ़िया काररवाई किसकाम आएगी. इस पत्रको लो और पता लगाओ.

जसवन्तसिंह—भाई गणपति ठीक कहा किसीने कहा कि, घोड़ा कहां बांधूं तो उत्तर मिला कि तेरी ही ज़बान पर, यह तो उसवाला मज़मून हुआ. ख़ैर दोस्तोंकी मर्ज़ी, यदि मेरेसे ही पता इसका लगाना है तो पत्रको दो.

लाहोरीमलने अपने मित्र जसवन्तसिंहकी ऐसी सहायता और उत्साहको देखकर उसका आभार माना और पत्रको उसके हवाले किया.

गणपति—यार जसवन्तसिंह ! इस पत्रका पता जहां तक हो सके शीघ्रही लगाना, फिर ज़रा मन्त्रीजीके दांत खट्टे करें.

जसवन्तसिंह—मुझे कहनेकी ज़रूरत नहीं, मैं ख़ुदभी यही चाहता हूँ. मन्त्रीजीने मेरी तनख्वाह बढ़ानेके वक़्त बुरा बोलनेमें कौनसी कमी रक्खी थी और वह हालका जिगरी दाग़ कहां भूल-गया हूं कि मेरे बेटेको बिना क़सूर वन्दीख़ाने भेजा था.

लाहोरीमल—यार पता तो लगाके ला फिर मैं अच्छी तरह मन्त्रीजीको सम्हाल लूँगा. मुझकोभी तू कम मत जानना, आख़िर लाहोरीमल हूं. काम पड़े अपनी कपट क्रिया किये विना कदापि नहीं रहूंगा.

जसवन्तसिंह—अबभी साधुकी तरह रहोगे तो तुम तुम्हारी

जानो. मैं तो तुम्हें प्रथमसे ही कहताथा कि क्रोडीमल आज कल वड़ा बद मिज़ाज़, दयाहीन, धर्महीन, नीच हो रहा है, इसको सम्हालो, पर तुम लोगोंने मेरी एक न सुनी. यदि पहिलेसे ही चेत जाते तो आज झूठा कलङ्क शिर पर लेनेकी नोवत नहीं आती.

गणपति—ऐसी वातों में तुम नहीं समझते, ताकीद करना अच्छा नहीं होता है, पेच पेचसे काम लेना चाहिए अब क्रोडीमलने शत्रुता को अपने हाथमें लिया है तो देखो अपने क्या करते हैं. इतने दिनों तक लाहोरीमलके साथ उन्होंने कोई ऐसा काम नहीं किया था, वह कैसे बोलता. अब ख़ासा मौक़ा हाथ लगा है, घवराओ मत. कृपाकर प्रथम इस कामको करदो.

ईश्वरदास—जसवन्तसिंह ! तुम इसका पता कैसे लगाओगे ? मेरी रायमें तो मंत्रीजीके जियादा विरुद्ध बोलने वालोंमें मिल जानेसे पता लग सकता है.

जसवन्तसिंह—यार ऐसा ही करूँगा.

यह बात करके गणपति, ईश्वरदास तथा जसवन्तसिंह लाहोरीमलसे विदा होगए और लाहोरीमल अपने कार्यमें लीन हुआ.



प्रकरण ८

बुद्धिधन.



पाठकगण ! तीसरे प्रकरणमें हम आपको बताआए हैंकि बुद्धिधन कौन है. इसपरसे आपको विदित हुआ होगा कि, क्रोडीमलका पुत्र है जो इस उपन्यासका नायक है. इसका विवाह पासके गांव प्रतापगढ़में कनककुमारीसे हालहीमें चार माहपर हुआ है. घरमें हरतरहकी सुव्यवस्थाके कारण तथा बुद्धिधन तीक्ष्ण बुद्धिका होनेसे, अभीतक पढ़ रहा है. हालहीमें इसने एण्टेन्स कक्षाकी परीक्षादीथी सो फर्स्ट डिविजनमें पास हुआ और अब एफ. ए. क्लासमें पढ़ रहाहै. पत्नी इसकी आजकल सांसारिक व्यवहारके अनुसार अपने पिताके घर रहती है तथापि बुद्धिधन ऐसा बुद्धिमान् हैकि यदि उसकी पत्नी हमेशाके लियेभी पास रहे तोभी नुकसानकारक नहीं होसकता, क्योंकि वह अपने ज्ञानके ज़ोरसे फायदे नुकसानको विचार सकता है. परन्तु बुद्धिधन अपने घरके दुःखोंसे तङ्ग आगया, यहां उसका कोई उपाय नहीं चल सकता. वह जानता है और समझता हैकि, पिता मेरे उलटा कृत्य कर रहेहैं बल्कि वक्तपर अपने पिताको कहभी बैठता है लेकिन मातुश्री तथा प्रियपत्नी जैसोंका नहीं माने तो बेचारे बालकका वह क्यों मानने लगा. बेचारा हररोज़ अपनी हार मानकर मनही मन पश्चात्ताप कर रहा है कि जिससे वह उसका सुन्दर मुख तथा कोमल शरीर कुमलाता जाता है और किसी बातमें उसका चित्त नहीं लगता.

मध्यान्हका समय है. इस समय सूर्य भगवानने अपनी

सर्व किरणोंको पृथ्वीपर ऐसी तपा रक्खी हैं कि भूमि अग्निकी तरह जल रही है. इस वक्त किसीकी भी हिम्मत नहीं पडती कि कुछ देरके लिये नङ्गे पैर चल सकें किन्तु वेचारे दुखिये ऐसीभी हिम्मत काम पडे कर वैठते हैं. एक अनाथ भिक्षुक नङ्गे पैर पेटके खातिर घर २ फिररहा है. बुद्धिधन अपने पढ़ाईके कमरे में खिडकी खोलकर वैठा हुआ है. वह चाहता है कि कुछ पढाई करूं पर चिन्ता तथा ग्रीष्म के मारे वह लाचार हो रहा है और योंही वैठा हुआ गवाक्षसे शहर आदिकी शोभाको निहार रहा है. इतनेमें उसकी नज़र उस भिक्षुकपर गई देखाकि, यह वेचारा इतना दुखिया है कि पैरमें जूते तक पहिननेको नहीं हैं, पैर उसके धूपसे जल रहे हैं, ऐसे अनाथपर दया लाना उचित है, एक महात्माने कहा है कि:—

दया धर्मका मूल है, पाप मूल अभिमान;
तुलसी दया न छोडिये जब लगि घटमें प्राण ॥

और उसकी करुणामय स्थितिपर दया लाकर नीचे आया और सेवकद्वारा उसे बुलवाकर अपने पैरके जूते, कपडे, पहनाकर तथा भोजन आदि कराके विदा किया. फिर अपने कमरेमें जाकर वैठ गया और इसीपर विचार करने लगा " देखो संसारकी क्या विचित्र गति है एक मनुष्य जिसके ज़रूरत नहीं है उसके पास ज़रूरतसे ज़ियादा है. एक ऐसा है कि जिसको खाने तक नहीं मिलता और रोटीके टुकडेके लिये मध्यान्ह के समय ग्रीष्म कातनिकभी ख़याल न कर घर घर रोता फिरता है. इसमें किसीका दोष नहीं, कर्मकी गति है. जो भला करता है उसके भला होता है, जो बुरा करता है उसके बुरा होता है. उस वेचारेने बुरे कर्म किये होंगे तबही उसको ऐसा कष्ट उठाना पडता है. परमात्मा ऐसे बुरे क-

मौंसे बचाए परन्तु हाय शोक! मेरे पिताकी तथा मेरी क्या गति होगी! क्या हमारे कर्ममेंभी ऐसाही बदा होगा? इसवक्त तक तो हमारे घरमें खासा धन है और हरतरहसे सुभीता है पर मेरे पिताके ऐसे कृत्य हैं कि जिसके परिणाममें आश्चर्य नहीं कि हमारीभी यह गति हो जाय पर मुझे यह मालूम नहीं होता कि मेरे पिताको क्या सूझी हुई है, हरएककी बुराई शिरपर लेकर यह अशुभ द्रव्य किसके लिये इकट्ठा कर रहे हैं क्या मेरेही आरामके लिये ऐसा नहीं कर रहे है? यदि उनका ऐसा विचार है तो यह उनकी नादानी है वह इस तरहसे मेरे आरामके लिये चाहे जितना यत्न करें पर यदि मेरे भाग्यमें खोटा लिखा होगा तो यह यत्न उनका क्या काम आसकता है, और यदि मेरे भाग्यमें शुभ बदा है तो खाली घर होनेकी हालतमेंभी सुखकी प्राप्ति हो सकती है. इसमें तो सन्देह नहीं कि उनका वैसाही विचार हो रहा है, पर क्या उनको इस बातका तनिक भी विचार नहीं आता कि, इस तरह करनेमें करीब २ सब मेरे शत्रु बन जायँगे और जिसका बुरा परिणाम मेरे तथा मेरे बेटेके लिये होगा? भला उनका वैसा विचार होता तो वह ऐसा क्यों करने लगे, लाहोरीमलपर झूठा कलङ्क क्यों लगाते, अनाथोंकी रोज़ीको क्यों तोडते, गरीबोंके गले क्यों काटते. मालूम होता है कि यह सब मेरे दुःखोंकी तैयारी हो रही है, पर मेरे भाइयो! ज़रातो विचार करना कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं है. अरे मैं कैसा बावला! वह ऐसा विचार कब करने लगे? वह तो मौका आए मेरे पिताके कृत्योंका सब बदला विना किसी विचारके मुझे देंगे. हे वीतराग प्रभु! मेरी क्या गति होगी, क्या दुःख पाने के लिये ही मुझे इस घरमें जन्म लेना पडा है? सर्व मनुष्य तो अमीरोंके घरमें जन्म पाकर अपने आपको सुखी मान रहे हैं पर मैं

तो इसके विलकुल प्रतिकूल हूं. मेरा जन्म ग़रीवके घरमें क्यों नहीं हुआ जो जन्मते ही ऐसे विचारतो न करने पडते, इस तरह दिलको दुखाना तो न पडता. पर इसमें कोई क्या करे भविष्यमें जो होने-वाला है हो जाएगा क्यों कि अगले किये हुए पापोंका फल है, उसके विरुद्ध क्या होसकता है, मेरा यह सब कहना वृथा है " यों नाना प्रकारसे वालक अपने विचारोंको अपने मनमें दोहरा रहा है और व्याकुलसा वैठा हुआ है. इतने में उसका प्रिय मित्र किशोरी लाल आ पहुंचा. जवतक किशोरीलाल ठीक वुद्धिधनके पास नहीं आया था, उसे अपने विचारों में लीन होनेके कारण मालूम नहीं हो सका कि कोई आ रहा है, जव किशोरीलाल विलकुल पास आया वुद्धिधनने कहा कि आओ भाई वैठो. क्या सवक़ याद करने आए हो ?

किशोरीलाल—हां भाई आयातो हूं सवक़ याद करने पर आज तुम उदास क्यों वैठे हो ?

वुद्धिधन—क्या कहूं घरके दुःखोंसे मैं तङ्ग आगया. आजकल मेरा पढ़ाई में विलकुल दिल नहीं लगता.

किशोरीलाल—भाई आपको घरका दुःख कैसा ! हम जैसोंके लिये कहो तो हो भी सकता है जो पढ़ाईके लिये फ़ीस तथा किताव के लिये आप जैसोंकी सेवा करते फिरते हैं. देखो कैसी धूप पडती है पर आप कहीं नाराज़ न होजाओ इस ख़यालसे धूपका तनिक भी ख़याल न कर आना पडता है.

वुद्धिधन—यह तो ठीक है पर मैं मेरेसे तुमको ज़ियादा सुखी समझता हूं.

किशोरीलाल—मैं क़ैसा सुखी ? यह आपने क्या कहा ? पंद-

रह रुपये माहवार मेरे पिताको मिलते थे जोभी अब मंत्रीजी की कृपासे नहीं रहे, अबतो पेट भर अन्न मिलनाभी कठिन हो रहा है.

बुद्धिधन—यही तो सब दुःख मुझे सता रहे हैं.

किशोरीलाल—यह दुःख सता रहा है तो हमें, आपको इसमें काहेका. आप तो मजेसे आनन्द उडाते हो, आपके काहेकी कमी है.

बुद्धिधन—भाई मैं नादान बुद्धिका नहीं हूं जो तुम्हारी बातोंको मान जाऊं. वास्तव में देखा जाय तो इस वक्त हमारे किसी बातकी कमी नहीं है पर इसको मैं सच्चा सुख नहीं समझता. मेरे पिता आजकल सबकी बुरी आह ले रहे हैं, वह बुरी आह कदापि भला नहीं कर सकती. क्या भूल गए कल ही तो तुमने इस विषय का पाठ पढ़ा है ? फिर मैं कैसे सुख मानूं. तुमही कहो मेरे पिताने विना कारण तुम्हारे पिताको नौकरीसे हटा दिया, क्या तुम या तुम्हारा पिता मौका आए मुझसे चूकोगे ?

किशोरीलाल—यह कहना तो आपका यथार्थ है. गरीबोंकी आह बुरी होती है पर मेरे लिये आप ऐसा विचार कदापि न कीजिये, हम तो आपके दास हैं.

बुद्धिधन—भाई कभी तुम इसका विचार नहीं करोगे पर सब वैसे थोडेही हैं, वह समय आए कभी नहीं चूकेंगे.

किशोरीलाल—यह तो है, सब एक मनके थोडेही होते हैं पर भाई अपने विद्यार्थी हैं अभीसे ऐसा फिक्र कैसा.

बुद्धिधन—फिक्र हुए विना नहीं रहता.

किशोरीलाल—क्या आपके पिताको इस बातका किंचित् फिक्र नहीं होता.

बुद्धिधन—फिक्र होता हो तो फिर क्या चाहिए, तुम्हारे ही

पिताके लिये मैंने कहाथा पर किंचित् ख्याल नहीं किया और इस लिये मेरे दिलको दुःख होरहा है.

किशोरीलाल—क्या मंत्रीजी आपका कहना नहीं मानते ?

बुद्धिधन—अरे क्या मानें, कहते हैं तो काटने दौडते हैं. मेरी मातुश्री तथा दादीने कहा तो उनको काटने दौडे, यहांतक कि न कहने की बातें उनको कहीं. क्या भाई यह दुःख मुझको कम है ?

किशोरीलाल—अब मानता हूं कि आपको सुख होते हुएभी भारी दुःख है पर भाई ऐसे फिक्रसे क्या फायदा, चिन्ता बुरी बला है, इसको और छोडो अपना काम करो, अरिहन्त देव सब अच्छा करेंगे.

बुद्धिधन—क्या काम करें तुम्हारे हालपर मुझे दया आती है, अब तुम अपना गुज़र कैसे करते होगे ?

किशोरीलाल—यह आपका अनुग्रह है कि हमारी हालत पर दया लाते हैं, हमारे हालकी न पूछिये हम अपना निपटते हैं और निपटेंगे. (इतना कहकर किशोरीलाल रोगया)

बुद्धिधन—नहीं भाई घबराओ मत (अपनी पेटी खोलकर और एक कग़ज़ निकालकर) लो ! यह एक हज़ारका नोट इससे अपना गुज़र करो, ज़रूरतके वक्त फिर कहना.

किशोरीलाल—नहीं साहब मंत्रीजी मेरे पितासे जलते हैं, सुनेंगे तो आपको लडेंगे, माफ़ करें.

बुद्धिधन—मेरे पिताको मालूम होगा जब लडेंगे न !

किशोरीलाल—भाई यह बात उनसे कैसे गुप्त रह सकती है, आपके पास हिसाब मांगेंगे जब वह जानलेंगे.

बुद्धिधन—हज़ार रुपया उनका दिया हुआ थोडाही है, जो

हिसाबमें लिखना पडे. मेरे ससुरने पोकेट खर्चके लिये दिया था जों यों ही पडा हुआ था. कृपाकर लो और अपना कष्ट दूर करो.

किशोरीलाल—ठीक है मैं ले जाऊं पर मेरे पिता लडेंगे.

बुद्धिधन—यदि तुम्हारे पिता लडें तो मेरा नाम लेना कि मैं ने बहुतेरा चाहा कि न लूं पर जबरदस्ती दिया है, क्या करूं यदि नहीं रखना हो तो तुमही दे आओ.

बुद्धिधनके इतने आग्रह पर किशोरीलालने उस नोटको ले लिया और कहने लगा भाई साहब आप ऐसी चिन्ता न करें. अपना भविष्य सुधारनेके अर्थ विद्या पठन करते जाएं. आपका जैसा दयालु मन है उसी अनुसार आपको जरूर सुख मिलेगा. परमात्मा आपको चिरायु रक्खे.

बुद्धिधन—विद्या पठन तो करूंगाही यदि परमात्मा की सहायता रही पर आज तो चिन्ताके मारे पढ़नेमें मेरा दिल नहीं लगता.

किशोरीलाल—अब पढ़नेका वक्तभी नहीं रहा, चलो जरा खेलमें चले जाएँ, तबीअत बहलेगी.

बुद्धिधन—ठीक कहा भाई! ठहरो, जरा कपडे पहनलूं.

इतना कहकर बुद्धिधन उठा और कपडे आदि पहनकर किशोरीलालके साथ प्ले ग्राउण्ड को चला गया.

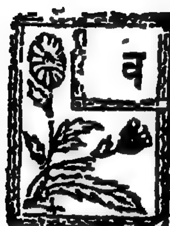
पाठकगण! देखिये बुद्धिधनकी कैसी बुद्धि और कैसें उत्तम २ विचार हैं. पर बेचारा अपने पितासे हारा हुआ है, और मनही मन दुःख मान रहा है. पिताकेही कारण इसको आज अपने पोकेट से एक हजार रुपया अपने मित्रको देना पडा है. यदि कोडीमल बुद्धिधनकी बातको मान जाता तो बेचारे बालकका हृदय दुःख नहीं पाता और एक हजार रुपया देना नहीं पडता. पर धन्य है

ऐसे मित्रको कि एकदम किशोरीलालकी अनाथ स्थिति पर दया लाकर हजार रुपये दे दिये. वास्तवमें मित्र होतो ऐसाही हो. कहने वालेने ठीक कहा है:—

सुहृदि निरन्तर चित्ते गुणवतिभृत्ये प्रियासु योषित्सु ॥
करुणाशालिनि भूपेनिवेद्य दुःखं सुखी भवति ॥१॥

प्रकरण ९.

क्रोडीमलका नया शत्रु भूपालसिंह.



वसन्तगढ़ नामी गांव है. यहां एक भूपालसिंह करके जमीनदार है. उसीका यह गांव कहलाता है. यह गांव विश्वेश्वर नगरके ही इलाकेमें है. भूपालसिंहके यहएक ही गांव नहीं है बल्कि अग्यारह गांव और हैं, पर निवास स्थान उसका वसन्तगढ़ही है. इसके बीस हजारकी जागीरी है. यह जिस किसीसे मेल रखता है उसका होके रहता है पर यदि इसका कोई एक कामभी बिगाड दे तो फिर यह सामने वालेका भूपाला निकाले बिना नहीं रहता है. इसके और क्रोडीमलके पूरी मित्रता चली आती है. यह मित्रता क्रोडीमलसे नहीं बल्कि पहिलेहीसे चली आती है. अतएव भूपालसिंह क्रोडीमलको एक तरहसे अपना हाकिम तथा दूसरी तरहसे अपना मित्र समझता है. राज्य सम्बन्धी कोई कार्य होता है तो क्रोडीमलको ही कहलाता है. भूपालसिंहका दूसरा विवाह है, बरात ग़ैर इलाकेमें जाने वाली है, इस कारण मात्र शोभाके लिये मंत्रीजीसे राज्यका हाथी आदि मंगवाया

बरातकी खानगीमें मात्र एक दिनकी कमी है पर अभीतक वह आदमी, जो इस कामके लिये मंत्रीजीके पास गया हुआ है, विश्वेश्वर नगरसे नहीं लौटा है. और इसी कारण भूपालसिंह चिन्ता मग्न होरहा है, मन ही मन विचार कर रहा है कि " अभी-तक कर्णसिंहके न आनेका क्या कारण है ? गए दस ने दिन होगए. क्या मंत्रीजीने कोई प्रबन्ध नहीं किया या कि, कर्णसिंह ही सुस्त हो के बैठ गया ? कर्णसिंह सुस्त होके बैठे यहतो संभाव नहीं, या तो मंत्रीजीने ही मेरे काममें टाला टूली की है, या कहीं हाथी रास्ते में बीमार न पड गया हो. मन्त्रीजी मेरे काममें टालाटूली करें यह मैं कैसे मानूं. कहीं ऐसा ही कोई कारण बना होगा तबही कर्ण-सिंह नहीं लौटा है. " इसी तरहके विचार भूपालसिंह कर रहा था कि, कर्णसिंह खालीहाथ आ उपस्थित हुआ और हाथ जोडकर खडा होगया.

भूपालसिंह—क्या कर्णसिंह आगया, हाथी कहां है ?

कर्णसिंह—हाथी कैसा ?

भूपालसिंह—तुझे हाथी लेने भेजा था न, लाया क्यों नहीं ?

कर्णसिंह—लाता कैसे, क्या खोसकर लाना था ?

भूपालसिंह—खोसकर क्यों, क्या मन्त्रीजीने हाथीके लिये कोई प्रबन्ध नहीं किया ?

कर्णसिंह—उन्होंने किया प्रबन्ध रोटियों तकका तो पूछा नहीं.

भूपालसिंह—क्या रोटी भी नहीं खिलाई ?

कर्णसिंह—जी हां नहीं खिलाई.

भूपालसिंह—खैर पर आखिर उन्होंने कुछ जवाब भी तो दिया होगा ?

कर्णसिंह—आप जवाबकी पूछते हो प्रथम तो मुंहसे भी नहीं बोले, मैंने आपका पत्र दियासो प.कर यों ही रखलिया, पीछे मैं सुबह शाम जाता रहा पर कोई उत्तर नहीं मिला. मैंने देखा कि दिन नज़दीक आते जाते हैं, मन्त्रीजीसे पूछा कि साहब हाथीके लिये क्या हुक्म है, मैं कई दिनोंका बैठा हुआ हैरान होरहा हूँ, जैसा हो उत्तर दीजिये. तब बोले कि " हाथी पडा है, जा अपना रास्ता ले " जिसपर कृपानाथ मैं चला आया.

भूपालसिंह ऐसा उत्तर सुनकर शीघ्रही लीला पीला होगया और कहने लगा कि " क्या कर्णसिंह ! मन्त्रीजीकी तरफ़से मेरे लिये ऐसा जवाब " ?

कर्णसिंह—जी हां ऐसा जवाब, वहां कौन सुने यह तो अपने ही हैं जो मन्त्रीजीका काम करदेते हैं नहीं तो मन्त्रीजी तो किसीको समझते भी नहीं.

भूपालसिंह—ठीक है ! सम्हाल लूंगा, बरातकी तैयारी करो ?

कर्णसिंह—आज्ञाके पातेही बरातकी तैयारीमें लगा.

अब भूपालसिंह बैठा हुआ विचार कर रहा है कि " मंत्रीकी तरफ़से यह उत्तर कैसा ! क्या मैंने बहुत खिलाया पिलाया ख़ातिर दारी रक्खी उसीका आज बदला मिल रहा है ? नारे इसमें मन्त्रीजीका दोष नहीं होसकता, कहीं राजा साहबने इन्कार न किया हो . देखूं ज़रा कर्णसिंहको पूछ तो लूं " इतना विचार कर कर्णसिंहको आवाज़ दी. कर्णसिंह आ उपस्थित हुआ तब भूपालसिंहने पूछा " क्या मंत्रीजीने राजा साहबको इस विषयकी इत्तिलाकी थी " ?

कर्णसिंह—नारे साहब ! कोई इत्तिला ही नहीं की, यदि इ-

दिला करते तो हाथी मिल जाता आपके लिये राजा साहब थोडे ही इन्कार करते. यह तो मन्त्रीजीकी ही मिहरबानी हुई कि हाथी नहीं मिला, नहीं तो यदि राजा साहब हाथीके देने में इन्कार भी करते और यदि मन्त्रीजी चाहते तो हर तरहसे दिला सकते थे.

भूपालसिंह—हकीकत में ऐसा ही हुआ है, जाओ अपना काम करो.

कर्णसिंहके चले जानेपर फिर भूपालसिंह विचार करने लगा "क्या मंत्रीजी मेरे लिये आपको ऐसाही उचित था ? यदि आपको हाथी नहीं दिलाना था तो मेरे आदमीको नाहक क्यों बिठाया रक्खा, शीघ्र जवाब देदेते, ताकि मैं कहीं औरसे हाथी मंगवानेका प्रबन्ध करता, अब इस थोडेसे समयमें मैं क्या प्रबन्ध कर सकता हूं. पर मन्त्रीजी ! यह आपको क्या धुन सूझी. क्या आप भूपालसिंहको नहीं पहिचानते ? यह वही भूपालसिंह है कि, बहुतसों को नीचा दिखाया है. खैर आपकी इच्छा पर जरातो विचारते, मेरे आदमी को रोटी तक नहीं आपका हाथी देना तो दूर. वाःरे क्रोडीमल ! तू निराही क्रोडीमल है पर याद रखना भूपालसिंहसे अब काम पडा है, देखो तुम्हारे क्या भोपाले निकालना है यह तीसरी वार है, एक रहंट (कुआ) खालसा किया उस समय राजा साहबका नाम लिया तब मैं चुपका होरहा दूसरे कापूतकार लोगोंके दस घर खालसा सरकारमें लेलिये, तीसरा यह कि, आज मेरे लिये हाथी नहीं. क्या यह बात बरदाश्त हो सकती है ! पैसेकी मार बरदाश्त होगई पर इज्जत की मार बरदाश्त नहीं होसकती. अब हाथी बिना गैर इलाके में मेरी कैसी हलकी लगेगी. मैं भी राजपूत भाई शिरका फिरा हुआ हूं, देखना क्या करता हूं, पर अभी तो लाचार हूं कि विवाह करने जाता हूं, खाना हो जितना खालो, आनेके पीछे

देखना तुम्हारा क्या बुरा हाल करता हूं." यों नाना प्रकारसे भूपालसिंह विचार कर रहा हैं और विदा होनेकी तैयारी कर रहा है.

पाठकगण! देखिये बुरे कर्मोंकी निशानी जो जरासी बातपर क्रोडीमलका यह एक नया शत्रु और खडा हुआ. वास्तवमें बात कुछ नहीं है पर जमीनदार ऐसी वस्तुओं में अपनी इज्जत समझते हैं. न मालूम क्रोडीमलको यह क्या सूझी जो भूपालसिंहकी बातपर लक्ष नहीं दिया.

प्रकरण १०.

उस गुमनाम पत्रकी खोजमें जसवन्तसिंह.



त्रिका समय है. लगभग आठ बजे होंगे. जसवन्तसिंह भोजन आदि करके थानेमें एक चौकी पर बैठा हुआ है और विचार कर रहा है कि, " उस पत्रका पता कैसे लगाया जाय. खुफिया तौरपर मैंने कई लोगोंसे इस विषयमें पूछा बल्कि उस पत्रकोभी बताया, बहुतसों से लिखवाया भी. लेकिन कोई पता नहीं लगा न लगना संभव है. लिखने वालेने अक्षरोंको ऐसा बिगाडकर लिखा है कि पहिचानमें ही नहीं आते, पता लगाऊं तो कैसे ? व्यर्थके लिये मैंने यह बला शिर क्यों ली यदि मेरी जबान उस मौके न चलती तो मुमकिन नहीं था कि आज मुझे इतना फिक्र करना पडता . अब मैं बिना लगाए पता अपने मित्रोंको अपना मुंह कैसे बताऊं, शरमिन्दगीकी

बात है. यदि मै यह जाकर कहूं कि मैने परिश्रम किया पर पता नहीं लगा तो लाहोरीमल आदि क्या कहेंगे, उस वक्त तो जुबान हिलाता था और अब पता भी नहीं लगा सका, खुफिया पुलिसका इन्सपेक्टर खूब हुआ." फिर विचारता है "इसमें क्या ऐसा कहेंगे तो कहदूंगा कि मैंने पता लगानेका ठेका थोडे ही लिया था. सौ काम उठाते हैं उनमेंसे पांच निष्फलभी जाते हैं." इतना विचारकर जसवन्तसिंह लाहोरीमलके घरको रवाना हुआ पर फिर उसका मन फिरगया और कहने लगा "सौ काम निष्फल जाएँ पर यह काम निष्फल नहीं जाना चाहिए मित्र मेरा क्या समझेगा कि यह मनुष्य जो खुनी मामलोंका पता लगाए विदून नहीं रहता, उससे एक छोटासा काम भी नहीं होसका यदि मैं काम पडे उसके काम न आऊँ तो फिर मित्र काहेका हरतरहसे कष्ट सह करके भी इस कामको कर ही देना चाहिये पर यह देखना चाहिये कि पता उसका कैसे लगे! अबतो कोडीमलके जो २ शत्रु हैं उनके घरोंमें जाकर भेद निकालना चाहिये पर कोडीमलके शत्रु एक दो थोडेही हैं अनेक हैं. अरे अनेक हुए तो क्या सबके घरोंमें जाकर भेद लूंगा पर पता लगाए विना नही रहूंगा." यह निश्चय कर जसवन्तसिंहने रात्रिका समय उत्तम समझ इधर उधर कोडीमलके शत्रुओंके घर फिरना शुरू किया.

बारह बजेका समय है. आधी रात होचुकी है. मनुष्य- मात्र इस वक्त सुखकी निद्रा लेरहे हैं, पर दुःखियोंको सुख कहां.

एक मकान है उसमें चिराग़ टिमटिमा रहा है. मकानका दरवाज़ा बंद है पर झांकने पर जसवन्तसिंहने जान लिया कि तीन आदमी बैठे हुए कुछ वार्तालाप कर रहे हैं, चुपकासा खडा हुआ कान देकर सुनने लगा, सुनता क्या है:-

पहिला--यार क्या बताऊं मैंतो दुःखोंसे तङ्ग आगया न मालूम ऐसे मैंने कौनसे खोटे कर्म किये थे जो कष्ट देख रहा हूं.

दूसरा--भाई मेराभी यही हाल हो रहा है किसको कहूं.

तीसरा--मैं फिर कौनसा सुखी हूं, जैसे तुम वैसा मैं.

जसवन्तसिंहने देखा कि, यहां तो कुछ नहीं यह तो अपने काम को रो रहे हैं, अगाडी बढ़ने लगा पर अन्दर वालोंको और बोलते हुए देख रुक गया और मन ही मन कहने लगा कि "सुन तोलूं क्या बात है जबतक हरएककी पूरी बात नहीं सुनेंगे पता कैसे मिल सकता है. हरएककी ऐसी गुप्त बात सुनकर उसपर अनुमान बांधकर फिर पता लगानेका है. अभीसे ना हिम्मत हूंगा तो काम कैसे बनेगा." ऐसा निश्चय कर बातोंको सुनने लगाः--

पहिला--भाई इसमें किसीका दोष नहीं, कर्मोंकी गति है.

दूसरा--क्या सब खोटे कर्म अपनने ही किये हैं !

तीसरा--अपनने किये होंगे तबही भुगतते हैं.

जसवन्तसिंहने देखा कि, यहां तो कोई मतलब जैसी बात नहीं है नाहक अपना समय क्यों गुमाऊं, अगाडी बढ़ा किन्तु आगे जाकर किसीको जगता हुआ नहीं पाया फिर उसी रास्तेसे लौटा और वहीं उन लोगोंको बातें करते हुए देखकर ठहर गयाः--

पहिला--यार ! मन्त्रीजी अपने पीछे क्यों पडे हुए हैं ? हमने उनका क्या बिगाडा है ?

दूसरा--भाई ! बिगाडनेकी इसमें बात नहीं है, बडे आदमी ऐसे ही हुआ करते हैं.

जसवन्तसिंहने देखा कि यह मन्त्रीजीके शत्रुओंमें से हैं, जम-कर वहां बैठगया और हरएक बात सुनने लगा:-

पहिला—क्या वडे आदमी ऐसे ही होते हैं ?

तीसरा—हां ऐसे होते हैं पर क्या करें इनका गुरु कोई नहीं मिलता.

दूसरा—गुरु मिले तो क्या करो ?

तीसरा—सब ठीक कर दें.

दूसरा—तुम तो जब गुरु मिलेगा तब मन्त्रीजीको ठीक करोगे पर अभी तो वह अपनेको ठीक कर रहे हैं.

पहिला—हां भाई यही बातहै खैर उनका कर्म उनको खाएगा.

इतनी बात परभी जसवन्तसिंहने अपने मतलबकी बात नहीं पाई और रात्रि जियादा होनेके कारण तथा यह विचार कर कि, इस तरहके शत्रु तो मन्त्रीजीके अनेक हैं सब ही योंही कहते हैं, उठ रवाना हुआ.

उन लोगोंनेभी एक दो ऐसी बातें करके देखा कि, एक बजा जाता है, अपने २ घरोंका रास्ता लिया.

पाठकगण ! उस मकानमें बैठने वाले, पहिलेवाला वही केवल दास दूसरा मानसिंह तथा तीसरा किशोरसिंह था जो मन्त्रीजीके कट्टर शत्रु होरहे हैं. इन्हींकी सलाहसे वह पत्र दिया गया था. वह मकान केवलदासका है. उसी विषय पर चर्चा कर रहे थे, जब सब चर्चा हो चुकी अपने २ कर्मको गाने लगे. अच्छा हुआ जो जसवन्तसिंह कोई भेदकी बातें सुनने नही पाया नहीं तो वेचारे कहीं फंस जाते.

प्रकरण ११.

क्रोडीमलके बुरेकाम.



संध्याका समय है. सूर्य अस्ताचलका उल्लंघन करगया. मंदिर मार्गी देवालयोंमें भगवान्के दर्शनार्थ जा रहे हैं तो कोई होभी आए हैं. कोई मंदिरोंमें ईश्वर स्तुति कर रहे हैं. मुसलमान लोग मसजिदमें बांग देरहे हैं. पर क्रोडीमल इस समय अपने घरमें बैठा हुआ निराला ही काम कर रहा है. इसका तनिकभी ख़याल नहीं है कि, यह समय अमूल्य ईश्वर स्तुतिका है, और राज्य कार्यमें लीन हो रहा है. पासमें उसके तेज़मल आदि बैठे हुए काग़ज़ातकी पेशी कर रहे हैं. क्रोडीमल बाद किंचित् विचारके, जो दिलमें आता है, हुक्म देता है. तेज़मलने यह समय उत्तम समझ कर लाहोरीमलका हज़ार रुपयेका बिल पेश किया. क्रोडीमलने पूछा क्या यह वही बिल बम्बईका है न याकि कोई नया ?

तेज़मल---नहीं साहब वही है. अबके सामान ख़रीदने बम्बई गए थे न उसका बिल है. इस बाबत उनका रिमाइण्डर और आया है.

क्रोडीमल---रिमाइण्डर आया तो क्या होगया ? रिमाइण्डर तो आते ही रहते हैं पर यह तो कहो तुमने इस बिलको देखा है ?

तेज़मल---जी हां देख लिया है.

क्रोडीमल---यह बिल कहां तक यथार्थ है ?

तेज़मल---लाहोरीमलका बिल वाजबी कैसा बहुतसी रकमें ग़ैर वाजबी दर्ज हैं' देखिये हारमोनियमके तीनसौ रुपये लिखे हैं हारमोनियम तो आपने देखा ही है.

क्रोडीमल—क्या हारमोनियमके तीन सौ रुपये ?

तेज़मल—जी हां तीन सौ रुपये.

क्रोडीमल—ऐसी रक़में हैं तो वाद दे दो, बाक़ी जो वाजबी हो मंज़ूर करो !

तेज़मल—एक हज़ारमें केवल चारसौ रुपये मंज़ूर करने जैसे हैं.

क्रोडीमल—यह कैसा बिल ! क्या साथमें वाउचर नहीं हैं ?

तेज़मल—वाउचर तो सब हैं पर आप नहीं जानते कम्पनी वालोंसे वाउचर तो झूठे लिखा लेते हैं.

क्रोडीमल—अच्छा चारसौ रुपये मंज़ूर करो !

तेज़मल—जो आज्ञा.

तेज़मलने फिर एक काग़ज़ लाहोरीमलका ही इसी तरहका पेश किया कि फ़ौजवख़्शी लिखते हैं कि, प्राईवेट सेक्रेटरीके पास एक सिपाही विशेष है.

क्रोडीमल—विशेष कैसा हमेशाके कितने आदमी मुक़र्रर हैं ?

तेज़मल—दो मुक़र्रर हैं जब कि, इस समय उनके पास तीन हैं.

क्रोडीमल—तो फिर एक आदमी मंगालो इसमें पूछना ही क्या है ?

तेज़मल—हुज़ूर बड़े आदमियोंका काम है पूछना चाहिये.

क्रोडीमल—वह काहेका बड़ा आदमी वह तो मेरा कलका लगाया हुआ लड़का है.

तेज़मल—आपकी नज़रमें लड़का है पर हमारे तो वह अफ़सर हैं.

क्रोडीमल—तुम्हारा वह अफ़सर कैसा ?

तेज़मल—यों तो अफ़सर मेरे आप हैं, पर फिरभी बडे आदमियोंको हम अपना अफ़सर समझा करते हैं.

क्रोडीमल—तू लाहोरीमलको अफ़सर समझेगा तो होचुका, अपने अपना काम कैसे बनाओगे ?

तेज़मल—कहनेको तो हम यों कहते हैं पर कामपडे नहीं चूकते हैं यही तो अहल्कारी पेच है.

क्रोडीमल—हां जब तो ठीक. पर अभीतक लाहोरीमलने उस पत्रका पता निकाला तो नहीं.

तेज़मल—वह उसका पता लगा चुका राम राम कीजिये.

क्रोडीमल—नहीं भाई वह कदापि नहीं चूकेगा उसने पता लगानेका काम जसवन्तसिंहके सुपुर्द किया है. वह आजकल घर घर फिरता है, अवश्य पता लगा देगा.

तेज़मल—क्या यह काम जसवन्तसिंहने हाथमें लिया है.

क्रोडीमल—हां

तेज़मल—तब तो साहब वह पता लगाए बिदून नहीं रहेगा.

क्रोडीमल—अच्छा है असली भेद निकल आएगा.

तेज़मल—असली भेद तो निकल आएगा पर लाहोरीमलके विरुद्ध लगाया हुआ दोष तो सही नहीं रहेगा न. ऐसों को तो तङ्ग करने चाहिये कि, शत्रुओंको सहायता करनेका होसला न बढे.

क्रोडीमल—कहते तो ठीक हो इस समय जसवन्तसिंहके विरुद्ध कोई काम अपने यहां है ?

तेज़मल—है क्यों नहीं हालही में जसवन्तसिंहने कृष्णपुरीमें

जाकर तथा जमीनदारसे मिलकर रामपुरी वालेका नाश मिला दिया, रामपुरीवालेकी अर्जी पडी हुई है कौन सुनता है

क्रोडीमल--ऐसा है तो उसपर पांच रुपये तनख्वाहमें कम करनेका लिख दो ?

तेजमल--जो आज्ञा.

इतनेमें नगरके सद्गृहस्थोंमें से हजारीमल कार्य वश आ उपस्थित हुए प्रणामकर बैठ गए तेजमलने देखा कि, अब काम करनेका अवकाश नहीं रहा, चटसे कागजोंको समेटना शुरुकिया.

क्रोडीमल मनमें तो जलता है कि, यह बला कहां से आगई, पर कहने लगा. कहिये हजारीमलजी! आज आपका आना कैसे हुआ?

हजारीमल--मिले बहुत दिन होगए थे योंही प्रणाम करने चला आया, आजकल तो आप दीखते ही नहीं. क्या सुबह शाम भी राज्य कार्यमें लीन रहते हैं!

क्रोडीमल--क्या कहूं राज्य कार्यसे अवकाशही नहीं मिलता-दिलतो बहुत चाहता है कि, कहीं जाऊं, पर लाचार हूं.

हजारीमल--हां साहब राज्यका काम ऐसाही हुआ करता है पर यदि आप वक्तमें से वक्त निकालें और गुरुका उपदेश सुनने तथा शामको मन्दिरमें दर्शनार्थ आवें तो हो सकता है. आजकल उपदेश विजयजी आए हुए हैं, अति उत्तम व्याख्यान देते हैं.

क्रोडीमल--आपका कहना यथार्थ है पर क्या कहूं राज्य खटपटसे लाचार हूं.

हजारीमल--आप फिर ऐसी खटपट क्यों करते हो जो धार्मिक तथा व्यवहारिक काममें मुंह मोडना पडता है.

क्रोडीमल---राज्य कार्यमें खटपट हो ही जाती है. नहीं करें तो चलता नहीं पापी पेटभी तो पीछे पडा हुआ है आप जैसे धनाढ्य थोडे ही हैं जो राज्य खटपट न करें.

हज़ारीमल---यह तो आपकी बड़ाई है जो ऐसा कहते हैं. यदि कोई खटपट न करना चाहे तो होसकता है. राज्य कार्य तो सबही करते हैं, वह तो आपकी तरहसे नहीं है. आपके कौनसी पैसेकी कमी है जो आपको राज्य खटपट करना ही पडे.

क्रोडीमल---यह सब कुछ आप ठीक कहते हैं पर मुझसे तो सिवाय राज्य कार्यके कुछ बन नहीं आता.

हज़ारीमल---ख़ैर मंशा आपकी पर यदि देखा जाय तो मंत्री होनेके पहिले आप ठीक थे.

क्रोडीमल---(क्रोधित होकर) होगा ऐसी बातोंमें क्या धरा है. कहिये आपका आना कैसे हुआ ?

हज़ारीमल---मैं खेदके साथ कहता हूं कि, आपकी आस्था धर्म्म पर किंचित् नहीं है, फिर मैं उस बातको कहकर क्या करूं ?

क्रोडीमल---(शर्मिन्दा होकर) यहतो जगत ज़ाहिर है पर आप कहें तो सही आपकी बातको सुन तो लूं.

हज़ारीमल---उपदेशविजयजी महाराज यहां पर एक कन्या-शाला खोलनेका उपदेश करते हैं जिसको करीब २ सबने मंजूर किया है, कारण यह कि आजकलके समयमें स्त्री शिक्षाकी पूरी आवश्यकता है. स्त्री शिक्षाके होनेसे कन्या विक्रय, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, आदि सब निषेध होजाएँगे. यह कार्य द्रव्यसे संबन्ध रखता है. कमसे कम पचास हज़ार रुपये इस कापमें दरकार हैं. कहिये आप क्या देंगे ?

पैसा देनेकी बात सुनतेही क्रोडीमलके कान ठण्डे होगए पर ज़रा विचार कर कहने लगा, मेरे ख़यालमें स्त्रियोंका पढ़ना बहुत ही बुरा है, पढ़कर स्त्रियां कुलक्षण ग्रहण करने लगती हैं, फिरभी आप सब लोगोंकी राय है तो मेरे घरमेंसे तो देनेको है नहीं इधर उधर से पच्चीस पचासकी मदद दूंगा.

हज़ारीमल—क्यों मन्त्रीजी मैं कहता था न आख़िर वैसा ही हुआ. वाहरे आपके पच्चीस पचास, जोभी घरमेंसे नहीं बेचारे अनाथोंका गलाकाटकर, पर मन्त्रीजी यह तो कहें आपके घरमेंका द्रव्य फिर किस काममें आवेगा ?

क्रोडीमल—घरमें द्रव्य कैसा ! आता है ज्यों ख़र्च होता है.

हज़ारीमलने इस प्रश्नका उत्तर न देकर मनही मन कहने लगा कि " जैसा कहते हो वैसाही होगा जो धर्म्मके काममें इस तरह आना कानि करते हो.

इतनेमें मन्त्रीजीको रसोइया बुलाने आया और कहने लगा कि भोजन तैयार है.

हज़ारीमलको यह और मौका कहनेका हाथ लगा और कहने लगा. क्या अभी भोजन करना है ?

क्रोडीमल—हां ज़रा राज्यका काम करता था.

हज़ारीमल—वाहरे आपका काम जो दिनको भोजनभी नहीं करते बनता. क्या आप दफ़्तरसे आते ही काममें लग जाते हैं ?

क्रोडीमल—नहीं तो दफ़्तरसे आतेही बाग़को चला जाता हूं, दिन अस्त होते वहांसे लौटता हूं, बाद काम काजमें लीन होजाता हूं, फिर दिनमें कैसे भोजन किया जा सकता है.

हज़ारीमल—यह कैसा धर्म्मके विरुद्ध कार्य ?

क्रोडीमल—क्या कहूं आदत पडगई.

इतना कह कर क्रोडीमल उठने लगा हज़ारीमलने भी देखा कि, यहां बैठना वृथा है, उठ खडे हुए और प्रणाम कर चले गए तेजमल्ल आदिनेभी अपना रास्ता लिया.

हज़ारीमलने रास्ते चलते विचार किया कि "क्रोडीमलकी मति फिर गई है. ऐसा मन्त्री मैंने कोई नहीं देखा, होन हो इसके लिये बुरा समय आने वाला है, जिससे उलटी सूझ रही है. पर अपने क्या अपने तो दे उसका भी भला न दे उसका भी भला दो चार महाशयको और याचेंगे."

प्रकरण १२

उस पत्रकी टोहके लिये एक मासकी मियाद.



दस बजेका समय है इस वक़्त मनुष्य मात्र अपने २ धंधेमें लगे हुए हैं. अहलकार लोग भोजन आदि करके दफ्तरकी तरफ़ भाग रहे हैं और यह चिन्ता कर रहे हैं कि, कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि दस बजगए हों; परन्तु जब वह दफ्तरमें जाते हैं और दस वहांही बजते हैं तो सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं. महाराजाधिराजके मन्त्री प्राईवेट सेक्रेटरी आदि नियत समय दफ्तरमें आगए हैं. महाराजा युगेन्द्रपालसिंह भी भोजन आदिसे निश्चिन्त होकर दरबारमें आ उपस्थित हुए हैं. मन्त्री आदि दण्डवत् करके अपने २ स्थान पर बैठ गए और राज्य कार्यमें लीन हुए, मन्त्री निर्दोषको फंसाना

चाहता है तो पासवाले प्राईवेट सेक्रेटरी आदि कहते हैं कि, यह बेचारा बे गुनाह है. पर राजा साहब न्यायानुसार जो कहते हैं वही होता है. इसी तरह कईएक मुकदमें मामले पेश हो रहे हैं.

इतनेमें राजा साहबको उस पत्रकी याद आयी. प्रथमतो मन हीं मन कहने लगे कि " लाहोरीमलने अभीतक पता लगा कर गुनेहगारको मेरे सामने नहीं लाया इससे विदित होता है कि यही चोर नहो पर पूछूं तो सही क्या उत्तर देता है. " इतना विचार कर राजा साहब लाहोरीमलसे कहने लगे. क्योंरे लाहोरीमल! उस पत्रका पता लगाया ?

लाहोरीमल—नहीं हुजूर अभीतक कोई पता नहीं लगा.

राजा—यह ऐसा कौनसा भारी काम था जो अभी तक पता नहीं लगा.

लाहोरीमल—देखनेमें तो काम मामूली मालूम होरहा है पर जब करने बैठते हैं तो वहुत भारी मालूम होता है. बदमाशने अक्षर ऐसे बिगाडकर लिखें हैं कि, पता नहीं चलता.

राजा—यह तो मैंभी जानता हूं पर तेरे सामने वह कोई काम मुश्किल नहीं है. अभीतक पता क्यों नहीं लगाया, क्या वह काम तेराही तो नहीं है जैसा कि, मन्त्रीका कथन है.

इतनेमें मन्त्री क्रोडीमल बीचमें कूदपडा " पृथ्वीनाथ! इसमें सन्देह नहीं कि यह कृत्य लाहोरीमलका है, नहीं तो पता लगाना कौनसी मुश्किल बात थी. "

लाहोरीमल—आपका तथा मन्त्रीजीका कहना यथार्थ है, वह कृत्य मेरा ही समझ लीजिये, पर मन्त्रीजी याद रखना पता लग गया तो बताऊंगा.

मन्त्री—तू बता चुका, चोरभी कहीं साहुकार बना है,

लाहोरीमल—अभी तो आप कहें या न कहें तोभी चोर हूं पर समय आए साहुकार बन बताऊंगा.

मन्त्री—हमभी देखते हैं.

राजा—कहो लाहोरीमल अब तुम कितने दिनोंमें पता लगाओगे ?

लाहोरीमलने देखा कि महाराज मेरेपर जल रहे हैं और तङ्ग कर रहे हैं, विचार कर कहने लगा पृथ्वीनाथ ! क्याबताऊं पता एक दिनमेंभी लग जाय, महीनाभी गुज़र जाय.

मन्त्री—एक दिनमें लगता तो कभीका लगजाता अब कह कि, इतने दिनोंमें पता लगाऊंगा.

राजा—हां हां कह कमसे कम कितने दिनोंमें तू पता लगा सकेगा ?

लाहोरीमल—(लाचार होकर) कृपानिधान ! एक माहमें पता लगादूंगा या जैसा होगा उत्तर दूंगा.

मन्त्री—हुज़ूर एक महीनेकी मियाद ज़ियादा है.

राजा साहबने मंत्रीके कहनेका कुछ ख़याल न कर लाहोरीमलसे कहा कि अच्छा एक महीनेके अन्दर पता लगाना नहीं तो तू ही गुनाहगार ठहराया जायगा.

लाहोरीमलने जो आज्ञा कहा-पर बेचारा एकदम चिन्तारूपी सागरमें हिलोरे खाने लगा और मनही मन कहने लगाकि "जसवन्तसिंह तो पत्र ले जानेके बाद मिलाही नहीं. उस होनहारसे इतने दिनोंमें कुछ नहीं हुआ तो फिर एक महीनेके अन्दर क्या

पता लग सकता है. हाय कर्म्म ! निर्दोष पर यह कैसा कलङ्क क्या मैं एक माह के बाद यदि पता नहीं लगा तो गुनाहगार ठहरूंगा,' मुझे तो ऐसाही दीखता है. पता लगना होता तो लग जाता नहीं तो अब लगना कठिन है. वाहरे मन्त्रीजी ! यह आपको क्या सूझी. क्या आपका मैं ही एक शत्रु था जो झूठा कलङ्क मेरे पर लगा दिया ? अरे कहीं जसवन्तसिंहने पता लगातो नहीं दिया ? वाह मन ! पता लगगया होतातो क्या जसवन्तसिंह मुझे आकर नहीं कहता ? पता नहीं लगा है तबही तो वह आजकल मेरे पास नहीं आता है पता लगजाता तो वह दौड़ता हुआ आजाता ख़ैर कर्मकी गति जैसा होना वदा है वह हुए बिदून नहीं रहेगा. पर मंत्रीजी याद रखना "सचेका बोल बाला झूठेका मुंह काला" हुआ करता है" इस तरह विचार करतया मनको धीरज देकर लाहोरीमल काममें लीन हुआ.

आज मन्त्री अपने दिलमें बहुत ख़ुश होरहा है और मन ही मन वाह वाह कर रहा है पर न मालूम यह ख़ुशी इसकी सदैवके लिये क़ायम रहेगी या क्या.

इस तरह काम करते हुए, जब चार बज चुके, महाराजाधिराजने दरबार बरख़ास्त किया और सब अपने २ घरोंको भागने लगे.

प्रकरण १३

उस पत्रका किंचित् पता.



रात्रिका समय है. लगभग नौ बजे होंगे. मनुष्य मात्र अपने २ कार्यसे निवृत्त होकर आराम कर रहे हैं. ऐसे समयमें जसवन्तसिंहने विचारा कि "जाऊं यदि कुछ पता निकल आवे. पर आज मेरे लिये यह विपरीत हुक्म कैसा कि मन्त्रीजीने विना विचारे मेरी तनख्वाहमें पांच रुपये कम कर दिये. वास्तवमें बडोंसे शत्रुता अच्छी नहीं. नाहक़को मैंने यह बला अपने सिर क्यों ली जो आज मंत्रीजी मेरे पर नाराज़ होने पाए हैं तथा पांच रुपये तनख्वाहमें कम कर दिये. मंत्रीजी! ज़रातो विचारते इसमें मेरा क्या दोष था, विना कारण मुझको यह सज़ा दी गई है, अपील करूंगा. पर अपील करूं तो किसको? किसको क्या राजा साहबको. अरे राजा साहब सुनचुके यदि वह सुनते तो क्या चाहिये था. आजकल तो मंत्रीजी कहते हैं वही होता है. अब मुझे उचित नहीं कि उस पत्रका पता लगाऊं. दूसरेके ख़ातिर कष्ट सहना आज कलके सांसारिक रिवाजके विरुद्ध है. जाके पत्रको लाहोरीमलकी छातीपर पटक आऊं" यह विचार कर जसवन्तसिंहने लाहोरीमलके पास जानेका साहस किया पर फिर रुकगया और मनही मन कहने लगा " अरे मैं कैसा बावला होगया वह पुलिसवाला क्या जिसने कष्टका फिक्र किया? मैंने अपनी उम्र पुलिसमें गुज़ारी, आज पहिले कभीतो कष्टकी चिन्ता नहीं की आज अपने मित्रके काममें कष्टको देखने लगा, जो वास्तवमें कुछ भी नहीं है. वाहरे मैं नादान! मुझको ऐसे कष्टसे कदापि नहीं डरना चाहिये. यह तो क्या इससे भी कोई विशेष कष्ट मंत्रीजी दें तो

क्या होगया ? अब तो मुझे यही उचित है कि किसी प्रकारसे उस पत्रका पता लगाऊँ और मंत्रीजीके दांत खट्टे करूं." यों विचार कर तथा कमर कसकर जसवन्तसिंह पता लगानेको चला और चलता हुआ उसी केवलदासके मकान पर गया, जहां पहिले कुछ हाल मंत्रीके विरुद्ध सुन आया था. पर आज वहां जाकर देखता है तो कुछभी नहीं है, मकान बिलकुल बन्ध है. न तो उसमें कोई चिराग दीखता है न किसी मनुष्यके बोलनेकी आवाज आती.

उस मकानका यह हाल देखकर जसवन्तसिंह निराश होकर लौट आया और दूसरी गलियोंमें इधर उधर भटकने लगा. जब वह यमुना बाजारमें पहुंचा, एक मकानमें दो आदमियोंको कुछ गुप्त बात करते पाए जसवन्तसिंहने देखा कि यहां कभी अपना मतलब निकल आवे और चुपकेसे जाकर एकान्त स्थानमें इस तरहसे बैठ गया कि, कोई उसको देखने नहीं पावे, और बैठा २ हर एक बात सुन सके:—

पहिला—यार क्या मंत्रीजीका अभीतक खातमा नहीं हुआ ?

दूसरा—हो कहांसे राजा साहबतो उस पर मिहरबान है.

पहिला—भाई यही बात है, पर अबतो कुछ युक्ति निकालनी चाहिये.

दूसरा—क्या युक्ति निकालें क्रोधदासतो आज कल मिलता भी नहीं, वह कुछ युक्ति निकाल सकता है.

पहिला—क्रोधदासको क्या होगया जो आज कल दीखता भी नहीं.

दूसरा—किशोरसिंहभी तो आज नहीं आया है, विचार करें तो कैसे.

पहिला—हां भाई अकेले अपने दो क्या कर सकते हैं, दोनों दास जैसे हैं.

दूसरा—दास जैसे तुमहुए, मैं क्यों होने लगा. मैं तो एक हट्टा कट्टा राजपूत हूँ, जो चाहूं सो कर सकता हूं.

पहिला—फिर कुछ करते तो नहीं किसी तरहसे मंत्रीका खातमा करो न, फिर देखूं तुम्हारी राजपूती.

दूसरा—भाई ऐसा वैसा काम हमसे नहीं हो सकता.

पहिला—तो फिर तुम क्या करो गे ?

दूसरा—यही कि हां में हां मिलाएंगे और राजपूतीकी टांग ऊंची ही रक्खें गे.

पहिला—भले राजपूत हुए इन बातोंको छोडो. इसमें क्या आना जाना है. कहो उस पत्रका क्या परिणाम निकला ?

दूसरा—मुझे क्या मालूम पर यह तो मैं कह सकता हूं कि अभीतक मंत्रीजीका कुछभी नहीं बिगडा और लाहोरीमलने पता लगानेको अपने पीछे पुलिस कर रक्खी है.

यह हाल सुनकर जसवन्तसिंहने देखा कि मामला खुलता जाता है क्रोधदास तथा किशोरसिंहके नाम याद करने लगा और इस तरह बातको सुनने लगा कि कोई बात सुननेमें रह न जाएः—

पहिला—भाई अपने पीछे पुलिस !

दूसरा—हैं भाई पुलिस अरे पुलिस क्या महा पुलिस. जसवन्तसिंह जैसा खुफिया पुलिसका इन्सपेक्टर अपने पीछे फिर रहा है.

पहिला—अरे यार जबतो अपने मरगए कहो भाई क्या होगा ?

दूसरा—होता क्या है हिम्मत मत हारो तकडे रहो, सब निपट लेंगे.

इन बातोंपरसे जसवन्तसिंहने देखा कि, पूरे बदमाश हैं, इन्ही दो तथा क्रोधदास किशोरसिंहकी यह सब काररवाई है. पर यहां पर आज क्रोधदास तथा किशोरसिंह तो हैं ही नहीं सिर्फ दो हैं जोभी कौन हैं मालूम नहीं देखूं यहां ही बैठा रहूं जाते समय पहिचान लूंगा, यह निश्चय कर फिर बात सुनने लगाः—

पहिला—भाई मैं तो डर गया, हिम्मत कहांसे लाऊं.

दूसरा—बनियाही ठहरा न. अरे नामर्द! ज़रा तो हिम्मत रख मत घबरा.

पहिला—हिम्मत रखूंगा पर अब तो ऐसा उपाय करना चाहिये कि जसवन्तसिंह इसका पता ही लगाने न पावे.

दूसरा—वह पता लगा चुका.

पहिला—लो भाई अब देर हुई जाता हूं और उठ खडाहुआ.

उसके ऐसा कहने पर तथा उठ खडा होने पर दूसरा दरवाजे तक उसे पहुंचाने आया और वहांभी कह दिया कि "भाई डर मत जाना हिम्मत रखना" फिर दोनों अदृश्य हो गए. पर जसवन्तसिंहने ऐसी चतुराईसे झॉक कर उन दोनोंको दरवाजेमें खडे पहिचान लिये कि, बस कहा नहीं जाता. वह तो उन लोगोंके देखनेमें आया नहीं और उसने उन दोनोंको देखकर पहिचान लिये और जान लिया कि जाने वाला केवलदास था, तथा मकान वाला मानसिंह था. किन्तु जसवन्तसिंहने देखा कि, यह समय इनकी गिरफ्तारीका ठीक नहीं है, यह केवल दोही आदमी हैं जब कि कृत्यके करने वाले चार है, यदि मैं इन दोको पकडूं तो क्रोधदास किशोरसिंह इनकी गिरफ्तारी जानकर भाग जाऍगे. अब तो कोई ऐसा मौका मिले कि. चारों एक जगह मिलें, यह निश्चय कर केव-

दास तथा मानसिंहकी गिरफ़्तारीका कोई यत्न नहीं किया और वहांसे अपने दिलमें आनन्द मनाता हुआ चला गया.

पाठकगण ! अब ज़रा जसवन्तसिंहको ढाढ़स हुई है कि मैं अपने कार्यमें फलीभूत हूंगा और मनही मन यह कहता हुआ चला जा रहा है कि देखना मन्त्रीजी ! अब आपके दांत खट्टे करता हूं.



प्रकरण १४

बुद्धिधनका पश्चात्ताप.



दो पहरका समय है. बुद्धिधन स्कूलसे आकर भोजन आदि करके अपने घरकी स्थिति देखकर मनमें पश्चात्ताप कर रहा है कि "हाय कर्म तूने मुझे इस घरमें जन्म क्यों दिया यदि तुझे यहांही जन्म देना मंजूर था तो मेराभी हृदय मेरे पिता जैसा क्यों नही बनाया कि, ऐसी स्थिति देखकर दिलमे दुःख तो नहीं होता. अरे मैं कैसा बावला हुआ हूं जो उसे दोष दे रहा हूं. इसमें वह क्या करे किये हुए-का फल भोगे विना कैसे छुटकारा हो सकता है. पर मेरे बापने हजारीमलको यह कैसा जवाब दिया. क्या मेरे घरमे द्रव्य नहीं है ? क्या स्त्रीको शिक्षाका देना बुरा होता है. कदापि नहीं, मेरे पिताका विचार इस विषयमें गलत है. कहीं स्त्रीको शिक्षा देना बुरा हुआ है. स्त्रीतो क्या पशु पक्षीकोभी शिक्षाका देना बुरा नहीं होता. देखो एक तोता जब उसको शिक्षा दी जाती है तो राम राम आदि शब्दोंको कैसी मधुर आवाजसे बोलता है. बन्दर शिक्षा पाकर

कैसा चतुर होता है कि, मदारी उसको मन मांगे ढंग पर नचाता है. सिंह रींछ आदि ख़ूनख़्वार जानवर कि, जो जंगलमें यदि मनुष्य आदिको मिलते हैं तो उनकी रुह कब्ज़ होजाती है. पर यदि कोई मनुष्य उनको पकडकर शिक्षा देता है तो वही जानवर फिर ऐसे बन जाते हैं कि, हर मनुष्य उनको ख़ुशीके साथ देखने पाते हैं; किंचित्भी डर नहीं रहता. तो फिर स्त्री तो एक मनुष्यका अवतार है, भला उसको शिक्षाका देना कैसे बुरा. मेरी समझमें नहीं आता जहांतक मैं विचार करता हूं और देखता हूं तो स्त्रीको शिक्षा देना अति उत्तम है. उससे नाना प्रकारके फ़ायदे होते हैं ”

(राग गज़ल)

बालाको नहीं पढ़ाना, अनर्थ का है निशाना;
डूबे क्या रहे हो, तुमको जताना क्या है ॥ १ ॥
विद्या विना की बाला, अज्ञान का है आला;
निज कृत्यको विचारो, मेरा जताना क्या है ॥ २ ॥
बाला जो नही पढ़ेगी, संतान मूढ़ बनेगी;
टुक सोच लो पियारे, मेरा बताना क्या है ॥ ३ ॥
बालाका पढ़ना प्यारे, बालक से श्रेष्ट भारे;
घटमें ज़रा विचारो, समर्थका कहना क्या है ॥ ४ ॥

स्त्री पढ़ी लिखी होनेसे उसकी सन्तानोंको हर तरहकी सुविधा रहती है. इतनाज नहीं वह स्वयं ज्ञानके ज़ोरसे अपना समय धर्मध्यान आदिमें काटती है. देखो मेरी दादी तथा मातुश्रीको ! जिनको नागरी भाषाका ज्ञान है कि जिसके ज़ोरसे उन्होंने मुझे पाल कर अच्छी तरहसे बड़ा किया, विद्या ज्ञान दिया. अबभी उनके वैसेही आचार विचार हैं. सारे दिन उसीमें मस्त रहती हैं. न मालूम

घरमें प्रत्यक्ष सुधारा देखते हुए मेरे पिताका यह उत्तर कैसा ? हकीकतमें मंत्री पदने उनको मूढ़ बना दिया. पर हा शोक ! हजारीमल आदि अपने मनमें क्या विचार करते होंगे तथा जब कि, नगरके मंत्रीने ऐसे उत्तम कार्यमें पैसा देनेसे इन्कार किया तो फिर दूसरे लोग क्या देंगे. और उनका विचारा हुआ काम कैसे पार पड़ेगा धर्म आदि कामोंमे मेरे पिता जैसे, जिनके पास लाखों रुपयोंका द्रव्य है, मुंह छिपावेंगे तो जगत्में हमारी क्या कीर्ति होगी. उलटे उनलोगोंकी नजरोंसे गिरेंगे, यहां तक कि ज्ञाति वाले हमसे घृणा करेंगे. यह सब कुछ है. पर मैं इसमें क्या करूं, अबतो मेरे पासभी नहीं रहा जो देता. एक हजार रुपये मेरे पास थे जो मैं अपने प्रिय मित्रको दे चुका. हां यदि दादी या मातुश्रीके पास कुछ गुप्त धन हो तो हो सकता है जाऊं और पूछूं, यदि होतो गुप्त रीतिसे कुछ हजारीमलको दे आऊं" यह निश्चय कर बुद्धिधन नीचे उतरा और अपनी मातुश्री तथा दादीके पास गया.

बुद्धिधन—मातुश्री तुमने सुना होगा कि यहां एक कन्याशाला खुलने वाली है जिसका चंदा हो रहा है. हजारीमल चंदा लिखाने पिताश्रीके पास आए थे, किन्तु इन्कार कर गए.

मातुश्री—हां बेटा मालूम है पर अपने इसमें क्या करें.

बुद्धिधन—यहतो उचित नहीं है कि अपने पास द्रव्य होते हुए चंदेमें कुछ न दें.

मातुश्री—बेटा तू कहता है जो यथार्थ है, पर अपने कहांसे दें. अपने पास तो द्रव्य है कहां ?

बुद्धिधन—क्या मातुश्री तेरे पास कुछ नहीं है ! ज्ञाति वाले यदि नहीं देंगे तो क्या विचार करेंगे ?

मातुश्री—मैं जानती हूं कि, ज्ञातिवाले अपने ताईं बुरा विचार करेंगे पर देना कहांसे; मेरे पास तो कुछ नहीं है. थोडा बहुत मेरे पास था उसको मैं दान आदि शुभ कार्यमें लगाती थी, पर जब तेरे पिताको मालूम हुआ, वहभी लेलिया. अबतो एक पैसेके लिये तेरे पिताकी मोहताज हो रही हूं.

बुद्धिधन—(दिलमें अफ़सोस लाकर) क्या कहती हो माता तुम्हारे पास कुछ भी नहीं रहने दिया ?

मातुश्री—ना बेटा.

बुद्धिधन—क्या दादीके पास कुछ है ?

दादी—बेटा क्या कहूं मेराभी यही हाल हो रहा है.

बेचारा बुद्धिधन दोनोंके ऐसे उत्तर सुनकर जो वास्तवमें सही थे निराश होगया. और वापिस अपने कमरेमें जाकर दाखिल हुआ अब उसको औरभी जियादा विचार होने लगा " हाय यह कैसा मनुष्य जिसको किंचित् भी ख़याल नहीं है. स्त्रीयोंके पासका द्रव्य भी लेकर ख़जानेमें डाल दिया. ऐसा तो मैंने किसीके घरमें नहीं सुना यहां ही एक निराली माया हो रही है. पर इसका परिणाम क्या होगा ? क्या क्या होगा, वास्तवमें परिणाम इसका बुरा ही होगा जो मेरा द्रव्य शुभ मार्गमें नहीं जाता है. पर न मालूम मेरे पिताको यह क्या सूझी है. क्या सब द्रव्यको मरते वक्त साथ ले जायगा ? किन्तु द्रव्य नतो किसीके साथ गया है न जायगा. एक धर्म और पापही साथ चलने वाला है. पर मू.को ऐसा ज्ञान कहां ! खैर कर्मकी गति "

इस तरह बेचारा बालक मनमें उत्तम उत्तम विचार लाकर अपने दिलको जला रहा है. यहां तक कि किसी वक्त रो बैठता है पर इस वक्त इसका कोई उपाय नहीं चलता.

इतनेमें किशोरीलाल आ उपस्थित हुआ और बुद्धिधनको हाथ से पकड़कर कहने लगा, " प्रिय मित्र आज आप ऐसे उदास क्यों हो रहे हैं ? "

बुद्धिधन--क्या कहूं में तो इस घरसे तंग आ गया.

किशोरीलाल--फिर क्या हो गया ?

बुद्धिधन—क्या तुमने सुना नहीं कि मेरे पिताने कन्याशालाके फण्डमें द्रव्यके देनेसे इन्कार किया.

किशोरीलाल--हां भाई सुना क्या कहूं कही नहीं जाती.

बुद्धिधन--ऐसी फिर कौनसी बात हुई जो कही नहीं जाती, शीघ्र कहो.

किशोरीलाल--शहरके तमाम लोग आपके पिताकी बुराई कर रहे हैं यहां तक कि, उनका विचार हो रहा है कि जबकभी ज्ञाति सम्बन्धी काम आवे तब देखेंगे. पर बेचारे अनाथ डरते भी हैं.

बुद्धिधन—यही तो मुझे चिन्ता हो रही है मैंने चाहा कि यदि हाथ लगे तो पोशीदा तौर पर फण्डमें कुछ दूं पर कर्महीन ऐसा हूं कि कहीं मिलाभी नहीं.

किशोरीलाल-क्या कहते हो आपको देनेको कहीं मिला ही नहीं ?

बुद्धिधन--हां भाई नहीं मिला. मातुश्री तथा दादीके पास कुछ द्रव्य मांगने गया था पर उनके पास पैसाभी नहीं है.

किशोरीलाल—(विचित्र हाल देखकर) क्या उनके पास कुछ नहीं ?

बुद्धिधन—यहीतो बात है नहीं तो भला मैं दिये विना चूकूं और लोगोंसे तो मांगनेसे रहा यदि मैं मांगने जाऊं तो प्रथमतो लोग ख़याल करें कि, यह कैसे मांगने आया. क्या इसके घरमें

कमी है ? और फिर वात गुप्त नहीं रह सकती. पिताजी जान जाएं तो घरमें और क्लेश हो.

किशोरीलाल--तो आप ऐसा क्यों नहीं करते आपने मुझे जो हज़ार रुपया दिया है यह लेलीजिये और फण्डमें दे दीजिये. स्त्री शिक्षा जैसा उत्तम कार्य कोई नहीं है.

(माढ़)

अरज़ हमारी मानरे, वीरो अरज़ हमारी मानः
दिजो वाला विद्यादानरे. ॥ टेर ॥
कहां सावित्री गार्गी, कहां मैत्री गुणखान;
कहां लीलावती द्रौपदी, सब गुण विद्या निधान ॥ १ ॥
इच्छो निज कल्याण तो, बाला पढ़ावो आप;
देवीपद पुनः ग्रहण कराओ, त्यागो तिमिर अमाप ॥ २ ॥
वामा विद्या जो पढ़े, आर्यानंद अपार;
प्रेम परस्पर दृढ़ बने, सुधरे यह संसार ॥ ३ ॥
जो सुख चाहवो जगतमें, वनिता विद्या पढ़ाव,
आर्य गोरव प्रेमसे, यशके शिखर चढ़ाव ॥ ४ ॥
विद्यावती माता बने, प्रजा सुधरे पूर;
विचार अचार शुद्ध बने, प्रकटे आर्य नूर ॥ ५ ॥
सुधरे एक से अन्यभी, यह कुदरत का सार;
विद्या उपयोगमें आर्य वर, अनुभवे जै जै कार ॥ ६ ॥
वर वनिता पंडित बने, यह सुखका नहीं पार;
उभय चक्र यह हर्पते, चाले रथ संसार ॥ ७ ॥
पारस मणिके स्पर्श ते, लोहा कनक हो जाय;
त्यु विद्याके पठण ते, रामा रमणी कहाय ॥ ८ ॥

अबलाको प्रबला करो, दे विद्या भर पूर;
सब शिक्षणके दान ते, प्रकटे उन्नति सूर ॥ ९ ॥
कुपढ़ नारि नित नित करे, कठोर शब्दका प्रहार;
मन मारे अति कष्ट ते, सहन करे भरतार ॥ १० ॥
सुख स्वप्न में पावे नहिं, कुपढ़ नारि के संग;
डूबत उभय अज्ञान में, होवे धर्म को भंग ॥ ११ ॥
आर्य बालाको करो, सुशिक्षित सुजान;
ग्रह लक्ष्मी कुल देवी हो, जग में पावे मान ॥ १२ ॥

बुद्धिधन—(अपने मित्रको धन्यवाद देकर) तुम्हारी जातसे मुझे ऐसी ही आशा थी और है पर मैं दिया हुआ धन वापिस लेना नहीं चाहता. यह कैसा जो एकको सुखी बनाकर अन्यको दुःखी करूं और दूसरे को दूं.

किशोरीलाल—इसमें कोई बात नहीं हम मिहनत तथा मज़दूरी कर अपना काम चलावें गे. आप उसको लीजिये और शुभ लाभ उठाकर हमेशा के लिये आते हुए कष्टको दूर कीजिये.

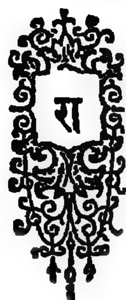
बुद्धिधन—नहीं भाई मुझे कष्ट सहना मंजूर है पर मैं तुम्हारा कष्ट देखना पसन्द नहीं करता, माफ़ करो.

किशोरीलाल—जो आज्ञा पर अब आप इस चिन्ताको दूर कीजिये और पढ़िये.

बुद्धिधन—भाई मुझे पढ़ना किंचित् नही सूझता. इतना कहकर बेचारा बालक रोगया. साथमें किशोरीलालकी आंखसेभी आंसू बह गए पर किशोरीलालने हिम्मत बांध कर बुद्धिधनको ढाढ़सदी और फिर हवा ख़ोरीको ले गया.

प्रकरण १५.

लाहोरीमलकी मित्र गोष्ठीमें जसवन्तसिंह.



त्रिका समय है. लगभग ७-८ बजे होंगे मनुष्य मात्र भोजन आदि करके कामसे निश्चिन्त होकर बैठे हुए सुख दुःखकी बातें कर रहे हैं. ऐसे समयमें लाहोरीमल, गणपति ईश्वरदास तथा जसवन्तसिंह आदिभी लाहोरीमलके मकान पर बैठे हुए बातें कर रहे हैं. चलो पाठकगण ! अपने भी जावे और सुने कि इनके आपसमें क्या बातें होरही हैं.

लाहोरीमल—भाई गणपति आज तो राजा साहब मेरे पर बहुत क्रोधित हुए.

गणपति—क्यों ऐसा क्रोधित होनेका क्या कारण था ?

लाहोरीमल—वही पत्र ! कहने लगे कि अभीतक पता क्यों नहीं लगाया ? तूने पता नहीं लगाया इससे ज्ञात होता है कि वह कार्य तेरा ही है.

जसवन्तसिंह—भाई घबराओ मत, थोडा बहुत पता मुझे मिल आया है.

लाहोरीमल—भाई जसवन्तसिंह क्या पता मिला, ज़रा कहो तो सही ?

जसवन्तसिंह—यहतो तुम जानते हो उस दिनसे मैंने दमतो लिया नहीं है. रात दिन उसीकी टोहमें फिरता हूं और इसी कारण आप लोगोंके पास नहीं आ सका. रात्रिके समय मैं जारहा था

कि, मानसिंहके मकानपर मानसिंह तथा केवलदास परस्पर बातें कर रहे थे. वह बातें मन्त्रीजीके विरुद्ध थीं इस कारण मैं ठहर गया. बस फिर क्याथा अच्छी अच्छी मतलबकी बातें सुनने लगा.

लाहोरीमल—भाई कहो तो वह बातें क्या थीं ?

जसवन्तसिंह—वह यही थीं कि उन्होंने तथा क्रोधदास किशोरसिंहने उस पत्रको भेजा पर मन्त्रीजीका अभीतक खातमा नहीं हुआ.

लाहोरीमल—(अति प्रसन्न होकर) वाहरे ईश्वर ! पर जसवन्तसिंह तुमने फिर उनको पकड क्यो नहीं लिया.

जसवन्तसिंह—खूब कहा यदि मैं उनको पकड लेता तो क्रोधदास तथा किशोरसिंह तो भाग जाते न, फिर क्या होता ?

ईश्वरदास—हां भाई ठीक किया यदि तुम उनको पकडते तो क्रोधदास तथा किशोरसिंह शीघ्र ही भागजाते.

लाहोरीमल—अब फिर क्या करोगे ! राजा साहबने तो सिर्फ़ एक महीनेकी मोहल्लत दी है,

जसवन्तसिंह—(एक माहकी मोहल्लत सुनकर अति प्रसन्न हो कर) बस अब क्या करें, हमसे भाई यह काम नहीं होगा. तुम्हारे लिये मन्त्रीजी नाहक़ नाराज़ होते हैं. देखो मेरे पांच रुपये तनख्वाहमें कम कर दिये, तुम भरके थोडेही दोगे ?

लाहोरीमल—भाई मेरी किसे कहूं एक हज़ार रुपयेका वाजवी बिल था जिसमेंसे छःसौ रुपये मन्त्रीजीने बाद दे दिये.

जसवन्तसिंह—करें होंगे न, मन्त्रीजीसे शत्रुता क्यों करतेथे ?

लाहोरीमल—भाई मैंने शत्रुता कहां की, मन्त्रीजीने ख़ामख़ाहको शत्रुता पकडली.

ईश्वरदास—भाई जसवन्तसिंह अच्छे हुए जो कायर कीसी बातें करने लगे. अब क्या होसकता है मन्त्रीजी तुम्हारे ऐसा न करने से कौनसे तुम पर प्रसन्न होजायंगे और कौनसा तुमको सिरोपाव बँधा देंगे.

जसवन्तसिंह—लाहोरीमल फिर कौनसा सिरोपाव बंधादेगा ?

लाहोरीमल—भाई जसवन्तसिंह तुम्हे क्या चाहिये जो कहो सो तुम्हारे लिये तैयार है.

जसवन्तसिंह—बस मुझे यही चाहिये और कुछ नहीं चाहिये. सदैव के लिये ऐसा ही विचार रखना देखना अब मन्त्रीजीकी धूल उडाता हूं. भाई लाहोरीमल यह बातें तो सब कहनेकी थीं बुरा मत मानना.

लाहोरीमल—यह तो मैंभी जानता था. यदि तुम्हारा भाव मेर ताई ऐसा नही होता तो पत्रको ही मांगकर क्यों लेते. पर कृपा कर अब तो शीघ्र ही पता लगाओ, मेरा शरीर सूखा जारहा है.

जसवन्तसिंह—शीघ्रही लो पर यह बातें अभी आप किसीको मत कहना, नहीं तो बना बनाया मामला बिगड जायगा.

गणपति—ठीक कहा अपनेमेंका कोई बात क्यों कहने लगा, ऐसा विचारही न करो. पर जसवन्तसिंह ! यदि तुम पता लगादोगे तो मन्त्रीजी तो फिर तुमसे ख़ूब जलेंगे, कहीं तुमको नामा काटकर निकाल न दें ?

जसवन्तसिंह—नामा काटकर निकाल दें तो क्या होगा ? मेरा तक़दीर तो कोई नही ले सकता, पर मैं तो अपने मित्रका काम किये बिदून कदापि नहीं रहूंगा.

गणपति—शावास मित्र ! शावास ! मित्र हो तो ऐसा ही हो.

ईश्वरदास—क्यों नहीं. पर मैं तो काम वने जसवन्तसिंहको शावासी दूंगा.

गणपति—यह तो ठीक है पर इस तरह शावासी देनेसे ही काम वनता है.

ईश्वरदास—भाई यह तो झूठी शावासी है यदि काम नहीं वना तो आपकी यह शावासी मुफ्तमें जायगी न ?

जसवन्तसिंह—हां भाई ईश्वरदासका कहना यथार्थ है अभीसे ऐसी शावासी क्यों देते हो काम वने देना. पर ईश्वरदास ! काम वननेके वादभी मुझको शावासीकी दरकार नहीं है.

ईश्वरदास—क्या आप वुरा मान गये ऐसा कहनेमें मेरी यह पोलिसी है कि, आप कामको करें फिर हम भर भरके शावाशी दें कि; जिससे मजा आवे. यदि वुरा मालूम हुआ होतो क्षमा करें.

जसवन्तसिंह—वाह भाई इसमें वुरा मालूम करनेकी कौनसी वात कही. अच्छा ही कहा न, यदि आपको वुरा मालूम हुआ हो तो क्षमा करें.

ईश्वरदास—नहीं तो मुझे इसमें क्यों वुरा मालूम होने लगा. लो भाई ! अव जाएँ सोनेका वक्त निकट आया.

इतना कहकर ईश्वरदास उठनेको ही था कि लाहोरीमलने वैठा दिया और कहने लगा कि, आप लोग सव मेरे लिये कष्ट सह रहे हो, उसका वदला मैं कैसे दूंगा.

ईश्वरदास—काम पड़े दे सको तो देना नहीं तो तुम तुम्हारे घर और हम हमारे घर.

लाहोरीमल—ठीक है समय आए देखूंगा पर आप सब क्षमा करें.

ईश्वरदास—क्षमा क्यों करने लगे समय आए बदला लिये बिदून नहीं रहेंगे ?

लाहोरीमल—मेरा यह मतलब नहीं है, जैसा कि तुम समझे हुए हो. इस बातकी केवल माफ़ी चाहता हूं कि आने जानेमें आपको तकलीफ़ होती है उसे कृपाकर क्षमा करें

ईश्वरदास—ठीक है देखेंगे.

लाहोरीमल—जसवन्तसिंह ज़रा सुनो तो मानसिंह, किशोर-सिंह, क्रोधदास तथा केवलदास शामको यमुना किनारे जाया आया करते है, वहां तुम जाते रहना, चारों एक साथ मिलेंगे.

जसवन्तसिंह—बहुत ठीक परलो अब जाते हैं.

जसवन्तसिंहके इतना कहने पर सब उठ रवाना हुए.

पाठकगण ! आज लाहोरीमलका मन कुछ प्रसन्न होने लगा है क्यों न हो उस पत्रका थोडा बहुत पता लग ही गया है.

प्रकरण १६.

लाहोरीमलके विरुद्ध एक नई शिकायत.



मुना किनारे पश्चिम दिशाको आनन्द विलास करके एक राजबाग़ है, जिसमें नाना प्रकारके वृक्ष फूल आदि लगे हुए हैं. इसी बाग़के बीचमें एक उत्तम महल बना हुआ है जो सर्व सामान इत्यादिक अमूल्य वस्तुओंसे सुशोभित है. आज शामको जब कि, सूर्यनारायण अस्ताचलका उल्लंघन करनेको तत्परथे राजा युगेन्द्रपालसिंह अपने

मन्त्री सहित बाग़में आकर वायु सेवन कर रहे हैं. कभी गुलाबके फूलको तोडकर हाथमें लेते हैं तो कभी चम्पाके फूलकी शोभाको निहार रहे हैं. जब वह देखते हैं कि चम्पाका फूलभी सुन्दरता आदिसे कम नहीं है तो उसकी तरफ़ जाते हैं और उसे भी तोड लेते हैं. पर चिन्तामें उनको आनन्द कैसा ? वहतो अपने विचारोंमें बावरे बने हुए इधरसे उधर फिर रहे हैं. पीछे उनका मन्त्री भी चलाजाता है. जब राजा साहब तमाम बाग़में फिर लिये और थकान मालूम होने लगी, उस सुन्दर महलमें आकर आराम शय्या पर लेटगए. और मनही मन चिन्ता करने लगे कि मेरी बातें बाहर कैसे जाती हैं. क्या राज प्रबन्ध ठीक नहीं है. मालूम तो ऐसा ही देता है. पर मैं इसमें क्या करूं आदमी ही सब ऐसे रहगए हैं और उनमें भी फूट. फिर राजका काम होतो कैसे हो. देखो राजगढ़का ठाकुर क्या लिख रहा है उसको भला यह सब हाल कैसे मालूम हुआ क्या यह मेरे अहलकारोंकी बदमाशी नहीं है कि जिनके द्वाराये रामगढ़ ठाकुरके कानतक बात पहुंचने पाई. ख़ैर कोई बात नहीं समय आए देखलूंगा पर मन्त्रीको इस विषयमें पूछूं वह क्या कहता है, इतना निश्चय कर खीसेमेंसे उस अर्ज़ीको निकाल कर मन्त्री के हाथमें दी और कहने लगे कि पढ़ो तो इसमें क्या लिखा है ?

मन्त्री (उस अर्ज़ीको पढ़कर और मतलबसे वाक़िफ़ होकर) पृथ्वीनाथ इसको पढ़ी.

राजा—कहो कैसा ठीक लिखता है ?

मन्त्री—क्या ठीक लिखता है उसका लिखनातो यह है कि, आप अनर्थ करना चाहते हैं; अच्छा नहीं और अपने जानते तक भी कहां हैं.

राजा—रहने दे तेरी वातें यहां कौनसा ग़ैर शख्स् खडा हुआ है जो वातको छिपाता है. वास्तवमें उसका लिखना वो सव सहीहैन ?

मन्त्री—जी महाराज है तो सही.

राजा—अव वता कि, वात कैसे वाहर पडी और राजगढ़ ठाकुर उसको अर्ज़ीमें लिखने पाया ?

मन्त्रीने लाहोरीमलपर दोष रखनेका यह समय उत्तम समझ और कहने लगा पृथ्वीनाथ ! यह सव उस लाहोरीमलकी काररवाई है.

राजा—यह तुम कैसे कहते हो ?

मन्त्री—वह आजकल मुझे वदनाम करानेको पीछे पडा हुआ है. उसके विदून वातको कौन जानताथा जो राजगढ़ ठाकुरको वताता. देखा कि, यह समय मन्त्रीको वदनाम करनेका अच्छा है, राजगढ़ ठाकुरके कान फूँक दिये.

राजा—क्या उस लाहोरीमलकी यह काररवाई है ?

मन्त्री—जीहां हुजूर इसकी तो कई एक ऐसी काररवाई और हैं मैं निवेदन नहीं कर सकता.

राजा—वह क्या जरा कहतो ?

मन्त्री—क्या कहूं तमाम जागीरदारोंको वहकाता फिरता है, रुपये मारता है, और मुझे वदनाम करनेकी युक्ति निकाल रहा है. आपको उसी गुम नाम पत्रपरसे खातिरी हुई होगी, उसका कैसा अनुचित कार्य.

राजा—हां मन्त्री ठीक कहते हो यदि वह गुमनाम पत्र उसने

नहीं दिलवाया होता तो ज़रूरथा कि, वह पता लगा लाता अभी तक उसने कोई पता नहीं लगाया.

पृथ्वीनाथ—=पता लगावे कहांसे, दिलका तो चोरहै.

राजा—खैर कोई बात नहीं एक मास और देखने दे, फिर वह क्या जवाब लाता है.

मन्त्री—वह क्या जवाब लाताहै, लाचुका वही सूखा जवाबहै.

राजा—हां मन्त्री ऐसाही दीखता है.

तेजमलके कथनानुसार मन्त्रीको लाहोरीमलके विरुद्ध अभीसे कुछ कहना नहीं चाहिए था पर यह समय उसने उत्तम समझकर कह दिया. इतनाही नहीं मन्त्रीने और कहनेका विचार किया और धीरे २ कहने लगा " पृथ्वीनाथ ! यदि आप मेरा कहना मानोंतो लाहोरीमलको प्राईवेट सेक्रेटरीके पदसे हटादो. "

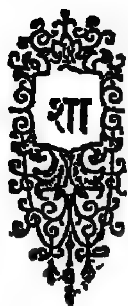
मंत्रीके ऐसा कहनेपर राजाका भाव एकदम पलट गया और लाहोरीमलके विरुद्ध कही हुई बातोंपर पानी फिराना शुरू किया यहां तककि, मंत्रीही लाहोरीमलके विरुद्ध होरहाहै जो इस तरह कह रहाहै. यदि लाहोरीमल मंत्रीके विरुद्ध होतातो वहभी किसी समय ऐसा कहता पर आज तक कुछ नहीं कहा बल्कि मंत्रीका भलाही कहता रहा. पर इन बातोंको मंत्रीसे कहना राजाने उचित न समझकर इतनाही कहाकि, ठीकहै विचार करेंगे.

राजाके इतना कहनेपर मंत्रीजी फूलकर कुप्पा होगए पर इनको यह मालूम नहीं है कि मेरे इतना कहनेसे पंहिलेवाली बातोंपर पानी फिर गया.

राजासाहबने इतना कहकर महलोंमें जानेका इरादा किया और गाडीके आतेही दोनों उसमें बैठकर रवाना हुए.

प्रकरण १७

यमुनामें जसवन्तसिंह.



मका समय है. सूर्य के अदृश्य होने में दोही घडी की देरी है. यह समय वायु सेवनका होनेसे मनुष्य मात्र इधरसे उधर हवा खा रहे हैं और अपने मनको नाना प्रकारसे बहला रहे हैं. कोई पुष्पोंके हार आदि पहनकर मस्त हो रहा है तो कोई खेल कूदमें अपने मनको आनन्दमय बना रहा है. पर बेचारे क्रोधदास मानसिंह, किशोरसिंह, केवलदासको किसी तरहका आनन्द नहीं है. चारों यमुना किनारे एकान्त स्थानपर बैठे हुए चिन्तारूपी सागरमें हिलोरे खा रहे हैं और मन ही मन पश्चात्ताप कर रहे हैं.

चलो पाठकगण ! अपने भी जावें और देखें कि, वह सब क्या कर रहे हैं.

केवलदास—कहो यार क्रोधदास ! आजकल तुमतो मिलते भी नहीं, कहां रहते हो. तुम्हें तथा किशोरसिंहको रात्रिको ही हमने याद कियाथा.

क्रोधदास—किया होगा पर आजकल कुछ काम लगा हुआ है इसकारण नहीं मिल सकता, माफ़ करना.

केवलदास—कामतो सबके पीछे पडा हुआ है पर अपना वह काम कौनसा कम है, प्रथम उसे करना चाहिये.

क्रोधदास—उस काममें मैं क्या करूं पत्रभी भेजा, पर कुछ नही हुआ.

मानसिंह—तुम जैसे ऐसा उत्तर देंगे तो फिर हो चुका इस तरह हिम्मत न हारो.

क्रोधदास—हिम्मततो नहीं हारता पर पुलिससे डर है. आज कल जसवन्तसिंह अपने पीछे पडा हुआ है.

मानसिंह—निरे वनिये ठहरे. पुलिस अपना क्या कर लेगी? ज़रा हिम्मत रक्खो और काम को वनाओ.

क्रोधदास—तुमही कहो अव क्या करें. उस पत्रसे तो कुछ नहीं हुआ.

मानसिंह—एक दूसरा पत्र और लिख मारो.

क्रोधदास—वाह ख़ूव कहा एक भेजा जिसकी वदौलत तो पुलिस पीछे पड़ रही है. अव दूसरा भेजेंगे तो और कम्वख़्ती न आएगी क्या?

किशोरसिंह—मानसिंह! वनियोंसे कुछ नहीं होगा, अपने हिम्मत वांधो.

क्रोधदास—अव भाई क्या हिम्मत वांधने की है. उस पत्रपरसे मंत्रीजीका शत्रु लाहोरीमल वन चुका वह आपसे निपट लेगा.

किशोरसिंह—यहतो सव कुछ है पर फिरभी कुछ युक्ति निकालनी चाहिये.

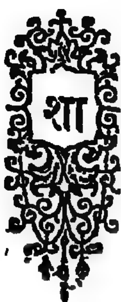
क्रोधदास—वह क्या?

किशोरसिंह—यही कि, एकरोज़ चारों मिलकर राजा साहवकी वग्गी पकडलें और रो वैठें, आपसे ख़ुलासा हो जायगा.

क्रोधदास—ख़ूव कहा ऐसा करेंताकि शीघ्रही पकडमें आजावें.

प्रकरण १७

यमुनामें जसवन्तसिंह.



शाम का समय है. सूर्य के अदृश्य होने में दोही घडी की देरी है. यह समय वायु सेवनका होनेसे मनुष्य मात्र इधरसे उधर हवा खा रहे हैं और अपने मनको नाना प्रकारसे बहला रहे हैं. कोई पुष्पोंके हार आदि पहनकर मस्त हो रहा है तो कोई खेल कूदमें अपने मनको आनन्दमय बना रहा है. पर बेचारे क्रोधदास मानसिंह, किशोरसिंह, केवलदासको किसी तरहका आनन्द नहीं है. चारों यमुना किनारे एकान्त स्थानपर बैठे हुए चिन्तारूपी सागरमें हिलोरे खा रहे हैं और मन ही मन पश्चात्ताप कर रहे हैं.

चलो पाठकगण ! अपने भी जावें और देखें कि, वह सब क्या कर रहे हैं.

केवलदास—कहो यार क्रोधदास ! आजकल तुमतो मिलते भी नहीं, कहां रहते हो. तुम्हें तथा किशोरसिंहको रात्रिको ही हमने याद कियाथा.

क्रोधदास—किया होगा पर आजकल कुछ काम लगा हुआ है इसकारण नहीं मिल सकता, माफ़ करना.

केवलदास—कामतो सबके पीछे पडा हुआ है पर अपना वह काम कौनसा कम है, प्रथम उसे करना चाहिये.

क्रोधदास—उस काममें मैं क्या करूं पत्रभी भेजा, पर कुछ नहीं हुआ.

मानसिंह—तुम जैसे ऐसा उत्तर देंगे तो फिर हो चुका इस तरह हिम्मत न हारो.

क्रोधदास—हिम्मततो नहीं हारता पर पुलिससे डर है. आज कल जसवन्तसिंह अपने पीछे पडा हुआ है.

मानसिंह—निरे वनिये ठहरे. पुलिस अपना क्या कर लेगी? ज़रा हिम्मत रक्खो और काम को वनाओ.

क्रोधदास—तुमही कहो अव क्या करें. उस पत्रसे तो कुछ नहीं हुआ.

मानसिंह—एक दूसरा पत्र और लिख मारो.

क्रोधदास—वाह ख़ूब कहा एक भेजा जिसकी वदौलत तो पुलिस पीछे पड़ रही है. अव दूसरा भेजेंगे तो और कम्वख़्ती न आएगी क्या ?

किशोरसिंह—मानसिंह ! वनियोंसे कुछ नहीं होगा, अपने हिम्मत वांधो.

क्रोधदास—अव भाई क्या हिम्मत वांधने की है. उस पत्रपरसे मंत्रीजीका शत्रु लाहोरीमल वन चुका वह आपसे निपट लेगा.

किशोरसिंह—यहतो सव कुछ है पर फिरभी कुछ युक्ति निकालनी चाहिये.

क्रोधदास—वह क्या ?

किशोरसिंह—यही कि, एकरोज़ चारों मिलकर राजा साहवकी वग्गी पकडलें और रो देंवें, आपसे ख़ुलासा हो जायगा.

क्रोधदास—ख़ूब कहा ऐसा करेंताकि शीघ्रही पकडमें आजावें.

मानसिंह—फिर तुम्हीं कहो क्या किया जाय ? कुछ न कुछ करनातो चाहिये.

क्रोधदास—मेरीतो यही सम्मति है कि ख़ामोश बैठे रहें.

केवलदास—तुम खामोश क्यों नहीं बैठो तुम्हारे तो ख़ासा रोज़गार चल रहा है. इस तरह खामोश बैठनेमें हमारी क्या गति होगी कुछ मालूम है.

क्रोधदास—गति क्या होगी ? मज़ेसे मेहनत करो और कमाओ.

केवलदास—इतना बल कहांसे लाए यदि मुझमें बल होता तो आज तुम लोगोंका मोहताज न बनता.

मानसिंह—केवलदास ठीक कहता है. कुछ न कुछ करना चाहिये नहीं तो जब तक क्रोडीमल मंत्री है, अपना कष्ट कदापि दूर नहीं होगा.

क्रोधदास—पर तुमने सुना है कि आज कल मंत्रीजी लाहोरीमलके नाकमें दम ला रहे हैं, जसवन्तसिंह जिसने पता लगानेका काम हाथमें लिया है, उसकेभी पांच रुपये माहवारतनख्वाहमें कम कर दिये. नाहक़ और करके उनको क्यो जलाते हो, हाथों बला क्यों लेते हो ?

मानसिंह—जले तो जले पर अपनेसे इस तरह चुपका तो नहीं बैठा जायगा. तुम्हारे कुछ करना हो तो करो, नहीं तो साफ़ जवाब देदो.

क्रोधदास—इसमें जवाब क्या दूं ? मैंतो तुम कहो सो करने को तैयार हूं. पर काम करनेसे पहिले विचारना चाहिये कि उसका परिणाम क्या होगा. एक किया है उससे बचजावें तो काफ़ी है.

मानसिंह—तो क्या उस काममें अपने फँसेंगे ?

क्रोधदास—फँसेंगे नहीं तो क्या ?

मानसिंह—किस तरह ! अपनने कौनसा खोटा काम किया है ?

क्रोधदास—इसके सिवाय और कैसा खोटा काम ! बेचारे मन्त्रीने पब्लिकमे कहा तक नहीं और अर्ज़ीमें लिखमारा.

मानसिंह—इसमें क्या हुआ रोटी वगै़र नमक के अच्छी नहीं लगती, इसी तरह इसमें भी यह एक तरहका नमक डाला है.

क्रोधदास—तुम इस वक़्तमें नमक समझते हो परमात्मा कष्ट न दे नहीं तो उस वक़्त देखना कि, वह नमक था या कि कोई बला थी.

किशोरसिंह—आज तुझे ऐसे विचार कहाँसे आए. वाहरे नामर्द ! बिल्कुल पानीमें बैठ गया. यदि ऐसा ही था तो प्रथम ही हमको क्यों शामिल करता और अर्ज़ी क्यों देता था. अब जब पुलिस पडी पीछे तो लगा थरथराने.

क्रोधदास—किशोरसिंह के ऐसे वचनोंसे लाचार हो गया और कहने लगा. कहो भाई तुम क्या चाहते हो जो कहो सो कर दूँ.

किशोरसिंह—यही कि एक पत्र और लिख मार.

क्रोधदास—पत्र तो लिखूँ पर उसमें लिखूँ क्या ?

किशोरसिंह—यह कि, क्रोडीमल बड़ा नमकहराम है आप उसको क्यों नहीं निकालते, ग़रीबोंके गले क्यों कटवाते हो ? हमारे पहिले के लिखने मुआफिक निकाल दो, नहीं तो रिआया सब भागजायगी.

क्रोधदासने कहा वहुत अच्छा और जेवमेंसे पेनसिल काग़ज़ निकालकर वांए हाथसे पत्र लिखने लगा.

पाठकगण ! जसवन्तसिंह इस समय लाहोरीमल के कहने मुआफिक़ इन लोगों की तलाशमें यहां आया हुआ है और वाग़में वृक्षोंकी ओटमें बैठा हुआ वातें सुन रहा हैं. उसने विचार किया कि, यह समय गिरफ़्तारीका अच्छा है. पर क्या हर्ज़ है एक पत्र लिखकर और भेजने दूं, मंत्रीका इस परसे ख़ातमा हो जायगा. नही ! विलम्ब करना अच्छा नही, न मालूम कव ऐसा मौक़ा हाथ लगे. राजा साहवने एक महीनेकी मोहलत दी है कहीं उस समय तक मौक़ा न मिले तो फिर मनको वड़ा भारी पश्चात्ताप रहेगा. यह निश्चय कर एकदम अपने स्थानसे उठा और गुप्त रीतिसे धीरे२ उनके पास पहुंचकर क्रोधदास, मानसिंह, किशोरसिंह और केवल-दासको घेर लिये और कहने लगा " क्यों वदमाशो ! यह कृत्य करना तुम्हें उचित था ? तुम्हारे ऐसे कृत्यसे राजा तथा राज के कर्म-चारियोंके दिलमे खलुवली मची हुई है. " इतना कहकर चारों को पकडने की युक्ति करने लगा. किन्तु वह अकेला क्या कर सकता था ? मानसिंहने देखाकि, अव अपने वचावका कोई आधार नहीं है. इनकार तो कर ही नहीं सकते कि, वह कृत्य हमारा नहीं है क्योंकि इसने नज़रों से देखलिया है. उचित है कि इसको पानीमें ढेला मार दूं और फुरतीसे अपना हाथ छुडाकर जसवन्तसिंहको ऐसा ढेला मारा कि वेचारा यमुनामें जा गिरा फिर चारों वहांसे भाग निकले.

प्रकरण १८

शत्रुतानिषेध.



रात्रिका समय है. लगभग नौ दस बजे होंगे शुक्ल पक्षकी अष्टमी होनेसे चंद्रमाने अपना प्रकाश पृथ्वीपर फैला रक्खा है; इस समय मनुष्य मात्र मकान के दरवाज़े बंधकर अपने २ घरोंमें सोए हुए हैं इसी प्रकार बुद्धिधनभी विद्याभ्यास करके पलङ्गपर अकेला सोया हुआ है परन्तु चिन्ताके कारण इसको निद्रा नहीं आई है. सोताहुआ इधरसे उधर करवटें बदलता है और चाहता है कि, किसी तरहसे निद्रा आए और चिन्ता रूपी दुःखसे थोडी देरके लिये छुटकारा पाऊं पर ऐसोंको निद्रा कहां इस वक्त निद्रातो इससे बिल्कुल विमुख होती जाती है. बेचारा बालक मन ही मन कहता है कि, " अभीसे मेरे पर कष्ट कैसा जो निद्रातक मुझसे विमुख हुई जाती है कितावोंमें मैंने पढ़ा और देखा है और सुना है तो बूढोंको निद्रा कम आया करती है. ऐसा तो मैंने कहीं नहीं पढ़ा न देखा न सुना कि मेरे जैसे बालकोंको निद्रा नहीं आती है. सर्व सुखसे निद्रा लेते हैं. मैं ही कर्म हीन हूं जो इस तरह निद्राके लिये तडफ़ताहूँ. "

इस तरह परिश्रम करते हुए भी जब निद्रा नहीं आने लगी, बेचारा बालक उठकर चौकीपर बैठा और विचार करने लगा. " हा शोक ! मुझ बालकको यह कष्ट कैसा ! न मालूम मैंने पूर्व जन्ममें ऐसा कौनसा पाप किया भी जो जबसे विचारने योग्य हुआ हूँ तबसे अपने आपको दुःखी ही पाता हूं. जिसमें भी विचित्र बात यह है कि, लोग ज़ाहिरा मेरे दुःखको नहीं जान

सकते. यदि किसीको इस विषयमें कहा जाता है तो यही उत्तर मिलता है "भाई तुम्हें काहेका. दुःख. क्या तुम्हारी सलाह बिदून मंत्रीजी काम करते होंगे" हाय कर्म ! यह कैसा समय अरे परमात्मा क्या इस तरहसे मैं अपना दुःख व्यतीत करूंगा ? क्या जन्मभर मुझे दुःख ही भोगना है ? आजकल के ढङ्ग देखते हुए तो मुझे ऐसाही विदित होता है देखो आज लाहोरीमल जब कि मैं हवाख़ोरीसे लौट रहाथा रास्तेमें कह रहाथा कि, मंत्रीजी मेरे पीछे क्यों पडे हुए हैं, ज़रा समझा देना नहीं तो इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा भला मंत्रीजी मेरा कब मानने लगे क्या लाहोरीमल समय आए चूकेगा ? कदापि नहीं वहतो हर तरहसे कष्ट देगा शत्रुता वास्तवमें ऐसी ही हुआ करती है. शत्रुता पकडलेने बाद कौन चूकेगा ? मेरे पिता उसके साथमें कौनसी कमी रखते है, जो वह रक्खेगा पर सज्जन पुरुषको शत्रुता रखना उचित नहीं है कारण कि शत्रुता एक बुरी बला है इसको रखकर न तो किसीने सुख पाया है न पावेगा. राजा महाराजा तथा बडे बडे ऋषि मुनियोंने इस शत्रुतासे अपने राजपाट खोये हैं तथा अपने किये हुए शुभ कामोंके फलोंको नष्ट किये हैं. सामान्य मनुष्यनेतो इसको करके आखिरमें पश्चात्ताप किया है. मानाकि शत्रुतामें एक दो दफ़ा मनुष्य अपनी जीतभी पाता है पर आख़िरको जाके उसका परिणाम अच्छा नहीं होता. देखो ! किसी कहने वालेने कैसा उत्तम कहा है:—

(राग-होरी.)

शत्रुपद दूर करोरी
रावण द्वेष कियो रामासे, सीता सती को हरोरी,
नाश हुओ कुल रावण केरो, यह चित चूक धरोरी. ॥ १ ॥

शत्रुतासे क्या फल पायो, कौरव पांडु भलोरी;
किया निकंदन निज कुल कोरी, अपयश हाथ ग्रहोरी. ॥ २ ॥
क्या पृथिराज जयचंदने पाया, शत्रुपद को ग्रहोरी;
क्षत्रिकुलंका नाश किया प्यारे, शिर अपयश तो धरोरी. ॥ ३ ॥
शत्रुपदको त्यागरे मनवा, यह विष कुंभ भरोरी;
पान किये ते प्राण हरत है, यह लख दूर करोरी. ॥ ४ ॥
द्वेष दमे नित निज करताको, यह टुक चीत में धरोरी;
छांया मात्र पडे रिपु दलपे, यह लख चितसे हरोरी. ॥ ५ ॥
मेलकी फौज रचो मेरे प्यारे, प्रेम के बाण करोरी;
शान्ति की तोप भरो बन्धुवर, शत्रुपद को हणोरी. ॥ ६ ॥
पान करो रस प्रेम परस्पर, सत सुख वीर ग्रहोरी;
अचलानंदमें मस्त बनो प्यारे, भवसागरमें तरोरी. ॥ ७ ॥

न मालूम मेरे पिताको यह क्या सूझी है. इस तरह करनेमें उनको क्या मिलजायगा ? भाग्यके उपरांत उनको एक कोडी भी मिलनेकी नहीं है. नाहक द्वेष क्यों फैला रहे हैं. पर वास्तवमें देखा जाय इसमें पिताश्री क्या करें, योग बिदून कोई कार्य नहीं होता. किन्तु यदि विचारकर कोई मनुष्य चले तो शत्रु न भी बने. यदि मैं किसीसे शत्रुता न रक्खूं तो फिर वह मेरे साथ शत्रुता कैसे रक्खेगा पर सबकी एक मति नहीं होती है. न मालूम पहिलकी शत्रुता यादकर शत्रु बन जाय. मैं नहीं चाहताकि, किसीका शत्रु बनूं तथापि मेरे पिताकी सत्रुताके कारण कोई कष्ट देतो क्या उपाय और मैं उसको कैसे रोक शकता हूं. किन्तु आज यहतो मैं प्रतिज्ञाकर कहता हूं कि, पिताश्रीके शत्रु मन चाहे उतना कष्ट दें पर मैं कदापि उनका शत्रु बनकर बदला नहीं लूंगा. हे मन ! यह

वात तो सव कुछ हुई पर आज मुझे निद्रा क्यों नहीं आती ? इस तरह मैं कहांतक विचार करता रहूंगा. देखूं ज़रा सो जाऊं. निद्रा देवी कुछ कृपा करती हैकि नहीं " यह निश्चयकर बुद्धिधन चौकीपरसे उठ खडा हुआ और पलङ्गपर लेटा किन्तु आज निद्राने तो बेचारे वालकपर पूरा कोपकर रक्खाहै. फिर इसी तरह विचार मग्न हुवा. " हे प्रिय मित्र ! किशोरीलाल ! आज तू यहांपर क्यों नहीं सो गया जो वाते करके दिल बहलाते और निद्रा आजाती ? अरे बेचारे उसका क्या दोष उसने तो कहाथा कि, यहांही सो जाऊं पर मुझ कर्महीननेही मना किया अभी उसको बुला न लूं. " यह निश्चयकर उठ खडा हुआ पर जब घड़ीकी तरफ़ देखाकि, वारह वज चुकेहैं सो गया होगा फिर रुक गया और लेटकर करवटें लेने लगा. इतनेमें उसकी प्रिय पत्नी आ उपस्थित हुई जिसको देखतेही बुद्धिधनका चित्त प्रफुल्लित होगया.

पाठकगण ! क्यों न हो मन मांगी वस्तु हाथ लगी. वह तो चाहताही थाकि, कोई वार्तालाप करनेवाला पासहो जिसस वात करके राक्षसी रातको काटूं.

बुद्धिधन—प्रिये ! आधी रातके समय तेरा आना कैसे हुआ ?

कनककुमारी—क्या कहूं स्वामी ! चाहती तो थी कि, मैं शीघ्रही आपकी सेवामें आजाऊँ; पर रास्तेमें गाडी टूट पडी जिससे विलम्ब हो गया.

बुद्धिधन—तुम्हारे आनेकी तो खबरभी नही थी ?

कनककुमारी—कहांसे हो पंदरह दिन वाद आनेका विचार था पर दिन ठीक नहीं होनेसे आजका दिन शुभ समझकर मेरे पिताने मुझे भेज दी.

बुद्धिधन—क्या आजका दिन शुभ है? मैं तो चिन्तारूपी शय्यापर सोता हुआहूं?

कनककुमारी—स्वामी! यह कैसा अशुभ समाचार?

बुद्धिधनने अपनी प्रियाके इस प्रश्नपर घरकी सारी कर्म कथा सुना दी जिसके सुनते ही वेचारी वाला रोने लगी और अपने स्वामी से कहने लगी " आप ऐसे अधीरे न वनिये, धीरज धरिये, आपके ग्रह बलवान् हैं तो कोई आपका वाल बांका नहीं कर सकता. पर आपके पिताश्रीने यह तो बुरा किया जो कन्याशालाके चन्देमें कुछ नहीं दिया आपके पास एक हजार रुपये थे उसीको आपने दे क्यों नहीं दिये? अच्छा था एक पंथ और दो काज. नही तो भी वह हजार रुपये आपके किस काम आते थे."

बुद्धिधन—प्रिये! यह तो तूने ठीक कहा यदि मेरे पास रुपये होते तो मैं दिये विदून नहीं रहता. वह तो मैं प्रथम ही अपने प्रिय मित्र किशोरीलालको देचुका.

कनककुमारी—अच्छा किया वह भी वेचारा अनाथ है. आपने सासजीसे क्यों नहीं मांग लिया?

बुद्धिधन—मातुश्री तथा दादी दोनोंके पास मांगा पर उनमें से किसी के पास एक पैसा भी नहीं है.

कनककुमारी—एक सौ रुपये तो मेरे पास हैं यदि आज्ञा हो तो तैयार हैं.

बुद्धिधन—अपना घर देखते हुए सौ रुपये दिये न दिये के बराबर है, इतने तो मेरे पास भी थे, कमसे कम एक हजार रुपये तो देना चाहिये, काम भी तो पचास हजार रुपये का है.

कनककुमारी—खैर कोई वात नहीं मेरा एक जेवर वेचकर

हज़ार रुपये दे देना. आप ऐसे व्याकुल क्यों हो रहे हैं, ज़रा हंसी खुशीसे बोलिये.

बुद्धिधन—हंसी खुशीतो गई न मालूम परमात्मा वह दिन मुझे कब दिखाएगा कि, मैं इस घरके दुःखोंसे छुटकारा पाऊंगा. प्रिय ! तेरा गहना लेनेमें तो कोई हर्ज़ नहीं परमैं यह नहीं चाहता कि, यह बात किसीको मालूम हो, गहना बेचूंगा जब काम चलेगा गहना बेचने जाऊंगा तो बात खुल आवेगी और पिताश्री उलटा क्रोध करेंगे, घरमें क्लेश होगा.

कनककुमारी—रुपये तो आप चन्देमें देंगे, वह भला कैसे गुप्त रहेगा ?

बुद्धिधन—यहीतो मुश्किल है इसी विचारसे तो रुका हुआहूं नहीं तो हर तरहसे दे देता मेरे पासभी गहना मौजूदथा एक हीरेकी अंगूठी बस थी.

कनककुमारी—यदि आप देंगे तो गुप्त नहीं रहेगा पिताश्री जान जाएंगे, नाहक़ घरमें क्लेश होगा.

बुद्धिधन—एसा ही विचारा है.

कनककुमारी—कहिये आप शरीरसे प्रसन्नतो हैं देखनेसे आप कुछ दुबले मालूम हो रहे हैं ?

बुद्धिधन—हां यों तो मैं कुशलतासे हुं पर चिन्ता के मारे शरीर मेरा दुबला हो गया है.

कनककुमारी—अभी से आप ऐसी चिन्ता न कीजिये न मालूम आपको कितने कष्ट सहने पड़ेंगे चिन्ता बुरी बला है, रति २ ख़ून संग्रह होता है जब कि चिन्तासे तोला २ ख़ून उड़ता जाता है.

बुद्धिधन---यह तो मैं भी जानता हूं पर क्या करुं अपनी बुद्धिके सामने ऐसा माननेसे लाचार हूं.

कनककुमारी---स्वामीनाथ ! मेरा यह कथन नही है कि आप बिलकुल विचार ही न करें. मूढ होता है जो विचार नहीं करता आप खूब विचारिये, सोचिये, समझिये पर अष्ट प्रहर उसीका ध्यान न रखकर चिन्तारूपी अङ्कुरको न बढाइये. देखिये चिन्ताके कितने दुर्गुण गिरिधर कविरायने बताए हैं:-

चिन्तासे चतुराई घटे, घटे रूप गुन ग्यान,
बुद्धि सहित विद्या घटे, चिन्ता चिता समान.
चिन्ता चिता समान, नयन निद्रा नहीं आवेः
नहिं नारीसे प्रेम, भूख नहिं भोजन भावे.
कहे गिरिधर कविराय, सुनो सब सुजन मिंता,
सो नर कैसे जिये, निसिदिन जिस मन चिन्ता.

बुद्धिधन---वाहरे तेरी बुद्धि ! तूने ऐसे २ उपदेशकी बातें कहांसे सीखीं ?

कनककुमारी---प्रथम थोडी बहुत नागरीतो सीखी हुईथी. यहांसे जाने बाद स्त्री उपदेश आदि पुस्तकोंका पठन किया जिनमें यह सब बातें लिखी हुई हैं.

बुद्धिधन---अच्छा है खूब पढ़ो इसीमें अपना समय व्यतीत करो.

कनककुमारी---जो आज्ञा पर अब आपको निद्रा आने लगी है सोजाइये.

बुद्धिधन---हाँ प्यारी कहती तो ठीक हो यह तुम्हारी ही कृपा है, नहीं तो इतनी देर में तडफ २ मरा पर निद्रा नहीं आई.

कनककुमारी—निद्रा कैसे आती मैं जो आने वाली थी.

बुद्धिधन—क्या तेरे ही लिये निद्रा देनी रुकी हुई थी ?

कनककुमारी—जी हां.

बुद्धिधन—खैर अच्छा अब आने तो लगी, लो सोगाएं. यह कहकर दोनों सोगए.

पाठकगण ! देखिये शुभ लक्षण स्त्री को. कहां तो बुद्धिधन निद्रा के लिये तडफ रहा था और कहां अपनी प्रिय पत्नीके मुखसे उत्तम २ औपदेशिक बातें सुनकर सुखकी निद्रा ले रहा है.

—॰—

प्रकरण १९.

जसवन्तसिंह यमुनासे बाहर



इये पाठकगण ! मालूम करे कि जसवन्तसिंहका यमुनामें क्या हाल हो रहा है. वर्षाऋतु होनेसे यमुना जोरसे बह रही थी इस समय यमुनामें सौ मनका पत्थर भी डालो तो खेंचकर कहीं का कहीं ले जाय. जसवन्तसिंहने यमुनामें गिरतेही बहुतेरा चाहा कि शीघ्रही तैरकर पार होजाऊं. पर पानीके जोरके आगे तमाम यत्न उसके व्यर्थ गए और बहचला. किन्तु भाग्य उसके ऐसे प्रबल कि एक पाटसा लकडा बहता हुआ हाथ लग गया. बस क्या था उसको रोककर जसवन्तसिंह झटसे उसपर बैठगया. पर पानीकी ठण्डकसे बेचारे के नाकमें दम आगया. फिर भी साहसी बनकर जहां वह लकडा जाता है वह भी चला जा रहा है जहां तक सूर्यका प्रकाश था इसे आशा थी कि, कोई न कोई मनुष्य देखेगा और मुझे पार कर

लेगा मगर जब सूर्यका प्रकाश अदृश्य हो गया और रात्रिने अपना आगमन किया, वह आशा भी जाती रही. अबतो नाना प्रकारके विचार उसके मनमें हो रहे हैं. " हाय मैंने जाते ही चारोंको क्यों नहीं पकड लिया " बीचमें बातें करने क्यों लगा जो उनको ढेला मारनेका अवकाश मिला. पर वह तो चार थे अकेला मैं उन चारों को कैसे पकड सक्ताथा था. मैंने साथमें एक दो सिपाहियोंको क्यों नहीं रक्खे जो इस समय काम देते और उनकी साक्षी भी हो जाती. अब यदि मै जाकर यह हाल राजा साहबसे कहूं तो सही मानने के लिये साक्षी कहां ? वह तो बिलकुल नट जाएंगे. होचुका हुआ न हुआ बराबर हुआ. मेरे कहनेपर कौन भरोसा करेगा. हाय ! उस काग़ज़को भी न ले सका जो काम आता पर मुझे यह कहां मालूम था कि इस तरह हो जायगा. देखो अब बदमाशोंको ठीक करता हूं पर यमुनाके पार हूं जब न, अभी तो मुझे यमुनासे पार होनेकी भी उमेद नहीं है. पानी खूब ज़ोरसे बहता हुआ चला आ रहा है. न मालूम यह मुझे कहां तक ले जाएगा और मैं जीने पाऊंगा या कि मर जाऊंगा. ठंडकने मुझे इस क़दर सता रखा है कि मेरा तमाम शरीर बलहीन हुआ जारहा है इस समय तो सिवाय हरि को भजने के किसी तरहका विचार दिलमें नहीं लाना चाहिये. न मालूम प्राण छूट जाएं. " यह निश्चय कर जसवन्तसिंह ईश्वरका स्मरण करता हुआ चला जा रहा है कि " हे प्रभो ! इस अन्त समय एक तूही मेरा सहायक है. तूही एक इस कष्टसे मुक्त करने वाला है. "

प्रभातका समय है. अभी सूर्य नारायण प्रकाशित नहीं हुए हैं. थोडे ही समय के बाद वह उदयाचल पर्वत के शिखरकी ओर अपनी मधुर किरणो सहित दिखलाइ पडेंगे. इस समय पक्षीगण

अपने २ स्थानोंसे चिल्लाते हुए चारेकी तलाशमें उड रहे हैं. कोई मनुष्य उठकर सन्ध्या आदि कामोंमें लगे हुए है तो कोई अपने पेटकी फिक्रमें जा रहा है. कायर लोग अभीतक उठनेभी नहीं पाए हैं. स्त्रियां अपने घरोंमें काम कर रही है. कोई गरम पानी करके नहा रही है तो कोई अपने पतिको नहला रही हैं. कोई मकान झाड रही हैं. पूजा करने वाले मनुष्य स्नान आदिसे निवृत्त होकर पूजाके निमित्त तैयारी कर रहे हैं. पर बेचारा जसवन्तसिंहतो इसी तरहसे मुसीबतमें फँसा हुआ वहा जारहा है. इतनेमें एक बडे भारी पथ्थरके आनेसे वहपाट अटकपडा साथमें वह भी रूक गया. इसपरसे उसको निश्चय हो गया कि, अबमें अगाडी जानेसे तो रहा पर अजब नहीं फिरसे कोई पानीका ऐसा ठेला आवे कि, पाट वह चले और मुझेभी अगाडी जाना पडे, अबतो यह उचित है कि, किसी तरह बाहर निकलनेका उपाय किया जाय पाटतो मेरे ले जानेसे तिरछा जायगा नहीं. यदि कोशिश करूं और कहीं वह जायतो और अभागा हो. अबतो कोई मनुष्य आवे और मुझे निकाले तो हो सक्ता है. इस तरह विचार कर जसवन्तसिंह मनुष्यकी तलाशमें चारों दिशा देख रहा है. कभी पश्चिमको देखता है तो कभी उत्तरको, कभी दक्षिणको तो कभी पुर्वको, पर कहींभी उसको मनुष्य दिखाई नहीं पडा अलबत्ता उत्तर दिशाको कुछ दूरीपर एक गांव दृष्टी गत हुआ, किन्तु उससे उसका कौनसा छुटकारा होनाथा पर गांवको देखकर उसी तरफको देखने लगाकि, इतनेमें दो खेडुत उसी गांवकी तरफसे आते हुए जसवंतसिंहको दिखाई पडे, जिनको देखकर उसका मन प्रफुल्लित होने लगा. किन्तु जब वह दूसरे रास्ते जाने लगे, बेचारा फिर चिन्ता करने लगा और ज़ोरसे आवाज़ देकर उनको पुकारने लगा. आ-

वाज़को सुनकर उन खेड्डतोंने देखाकि, कौन बुला रहा है तव उन्होंने किसीको नहीं पाया फिर चलने लगे जसवंतसिंहने और पुकारना शुरु किया और कहने लगा “ भाइयो आओ यमुनामें डूबाजा रहा हूं. मुसीबतसे बचाओ ” इसपर वह दोनों यमुना तरफ होकर जसवन्तसिंहके पास आए और उनके आनेके साथ ही जसवंतसिंह कहेने लगा “ कृपाकर मुझे यमुनासे पारकर जीवितदान दो. तुम्हारा कल्याण होगा. ”

खेडुतोंमेंसे एक कहता है “ यहतो तू ठीक कहता है पर ऐसी वहती हुई यमुनामेंसे कैसेपार करें यहां तैरने वालेभी लाचारहैं. ज़रा ठहरो तो हो सक्ता है. तव तक पानीका यह ज़ोर शोर हलका पड जायगा. ”

जसवंतसिंह—यह तो ठीक है परठण्डकसे मेरा शरीर बलहीन हुआ जाता है. कृपाकर ऐसी युक्ति निकालोकि मैं शीघ्रही बहार आसकूं.

दूसराखेडुत—भाई एक युक्ति है यदि लम्बा रस्सा डालके और उसके पत्थर वांधकर इसतक पहुंचाया जाय और फिर वह रस्सेको उस लकडेके बांधदे तो अपने खेंच निकाले.

पहिला खेडुत—यहतो तुम सब ठीक कहते हो पर प्रथम तो ऐसी ज़ोरसे वहती हुई यमुनामें यह असम्भव है. कभी होभी जायतो इसमें एक दो नहीं कर सक्ते कमसे कम पचास साठ आदमी चाहियें.

दुसरा—नहीं तो इतने आदमियों की क्या ज़रूरत है यह मनुष्य वीस पचीस हाथके ही फ़ासले पर है. पंदरह वीस आदमी क़ाफी होंगे.

पहिला—इतने भी आदमी आवेंगे जब न. जाने भी दो चले चलो, अपना धन्धा करें.

दूसरा—नहीं भाई इस बेचारे को तो किसी तरह निकालनाही चाहीगे.

पहिला—यदि निकालनाही है तो गांवमें जा और बीस मजबूत आदमी तथा एक रस्सा लेआ

दूसरेने कहा लो जाता हूं और दौडता हुआ गांवमें गया तथा शीघ्रही बीस आदमी व रस्सा ले आया. उनके आतेही सबने बडी महेनत करके रस्सेको जसवन्तसिंह तक पहुंचाया. जसवन्तसिंहने अति मिहनत करके उसे पाटके बांधा फिर सब लोग लगे रस्सेको खेंचने. बस क्या था शीघ्रही जसवन्तसिंह बाहर आगया. आनेके साथही सबके पैरां पडा और कहने लगा "विश्वेश्वर नगर यहांसे कितना दूर है"

उनमेंसे एकने उत्तर दिया " वह तो बहुत दूर रहा यहांसे एक सौ माइल है क्या तुम वहांके रहने वाले हो " ?

जसवन्तसिंहने कहा " हां मैं वहीं का रहने वाला हुं " और अपना सारा हाल कह सुनाया.

पाठकगण ! किसी महाशयने सच कहा है कि " जेने राखे राम तेने मारे कौन " मानसिंह आदिने तो चाहा था कि किसी तरहसे जसवन्तसिंहका खातमा होजाय पर आयुष्य उसका बाकी था कैसे मर सक्ता था.

जब जसवन्तसिंहने देखा कि नगर मेरा बहुत दूर रहा मेरी इतनी श्रद्धा भी नहीं कि शीघ्रही जासकूं; पासवाले गावमें जाकर आराम लेना उचित समझा और धीरे २ गांवमें जाकर विश्राम

लिया. दोएक रोज़ और ठहर कर सवारी आदिका वन्दोवस्त कर विश्वेश्वर नगरको लौटा.

पाठकगण ! अव न मालूम जसवन्तसिंह कहां २ जायगा इसके साथ २ जंगल और पहाडोंमें भटकना व्यर्थ है कृपाकर मेरे साथ चलिये और मालूम कीजिये कि क्रोधदास आदि चारों यमुना किनारेसे भागकर कहां गए.

प्रकरण २०

क्रोधदास आदि शहरसे बाहर.



धदास, केवलदास, मानसिंह तथा किशोरसिंह जसवन्तसिंहको यमुनामें ठेला मारकर प्रथमतो ऐसे तीव्र भागेकि कहीं पीछेसे आकर पकड न ले. पर जव उन्होंने देखाकि, अभीतक जसवन्तसिंह यमुनासे वाहर नहीं हुआ, नहो सकता यह विचार कर सब अपने २ घर गए कि, भोजन आदिकी सामग्री लेकर शीघ्रही इस नगरसे भाग जावें, नहीं तो कहीं पकडे जावेंगे और खराबी मिलेगी, चारों वहां से उसी समय भाग निकले.

प्रभातका समय है सूर्यनारायणने अपनी मधुर किरणोंको धीरे धीरे पृथ्वीपर फैलाना शुरू कर दिया है. जङ्गली जानवरोंने इस समय जङ्गल दूसरोंका समझकर चलना फिरना वंद कर दिया है. पहीं पक्षीगण इधरसे उधर उडते हुए दिखाई दे रहे हैं. एसे समयमें चारोंएक निविड जङ्गलमें आ पहुंचे और वहां एक देवालय तथा कूआ आदिकी सहायता देखकर ठहरगए. इतनी देरतक इन

लोगोंके प्राण पखेरूकी तरहसे उडे जा रहेथे, लेकिन अब इनको किंचित् निश्चय हुआ है कि, यह गुप्त स्थान है यहांपर कोई आकर तलाश करे संभव नहीं और मज़ेसे विश्राम लेकर बातें करने लगे.

मानसिंह—किशोरसिंह ! मैंने अच्छा किया न जसवन्तसिंहको यमुनामें गिराकर वह चलाया.

किशोरसिंह—वाहरे तेरी चातुरी ! अच्छा किया अबतो वह कभीका मरगया होगा.

मानसिंह—अरे वह तो कभी का मर गया होगा ऐसी वहती हुई यमुनामें कैसे बच सकता है.

केवलदास—यहतो ठीक है पर जसवन्तसिंह तैराक है कभी का पार हो गया होगा.

क्रोधदास—वहते हुए पानीमें तैराकका कोई वस नहीं चल सकता पर यदि वह नहीं मरा होगा तब तो अपनी कमबख्ती आवेगी ?

मानसिंह—अपनी कमबख्ती कदापि नहीं आसकती वह तो अवश्य ही मर गया होगा.

क्रोधदास—यदि ऐसा ही था तो फिर यहांपर भाग आनेकी क्या जरूरत थी ? घरपर ही क्यों नहीं वैठे रहे ? तुम्हें कौन पकडनें आताथा ?

मानसिंह—वह तो मर ही गया होगा पर फिर भी चोरको डर हुआ करता है. अपने कैसे घर रह सकते थे, न मालूम जिन्दा निकल आवे और कहीं पकड ले.

क्रोधदास—भाई यही तो मेरा मानना है. कभी वह न मरा हो और जिन्दा पार होजाए तब तो कमबख्ती आवेगीन. मैंने

तुमको कहा था कि अब कोई कार्य नहीं करना चाहिये. पर तुमने नहीं माना जिसका यह परिणाम है कि, इस तरह छिपे फिरते हैं.

किशोरसिंह—यार क्रोधदास ! तूतो बडा डरपोक है अभी भी क्या होनेवाला है ? इस तरह डरा मतकर जो हुआ सो हुआ. हुई बातका पश्चात्ताप क्या ? देखो महात्मा पुरुषोंका क्या वचन है " गतंन सोचामि "

क्रोधदास—मुसीबतमें पश्चात्ताप होही जाता है. यदि तुम लोग मेरा कहना मानजाते तो आज यह मुसीबत घर छोडनेकी नहीं आती.

केवलदास—यह तो सब कुछ है पर होनेवाली बात को कौन रोक सकता है ? वह तो होना था, तुम कैसे रोक सकते थे ?

क्रोधदास—यह तो है. पर विचार भी एक उत्तम चीज़ है. बाद विचार के कोई काम किया जाय तो कदापि बुरा नहीं हो सकता.

किशोरसिंह—अभी तेरे विचार रहने दे कुछ नहीं बिगडा.

क्रोधदास—यदि वह पत्र जो मैं लिख रहाथा जसवन्तसिंह के हाथमें जाता तो बताता.

किशोरसिंह—क्या बताता हमने तो जसवन्तसिंहको ही पानीमें डालदियाहै. यदि वह पत्रको लेने भी पाता तो क्या होजाता, पानीमें वह निकलता.

क्रोधदास—वह क्यों जाता ? वह उसे सम्हालकर न रखता ?

किशोरसिंह—मूर्खताकी क्या बातें करता है. उस समय वह अपने प्राणकी फिक्र करता कि तेरे पत्रको सम्हालने जाता.

क्रोधदास—ठीक भाई तुम कहते हो जो सब ठीक है, मैं मूर्ख ही सही. पर देखना अब वह अपनी क्या गति करता है ?

किशोरसिंह—फिर मूर्खताकी बात ! वह अपनी क्या गति करेगा ? उसके पास सबूत क्या है ?

क्रोधदास—जब कि सबूत नहीं था तो नाहकको यहां तक क्यों आए ? घरपर ही बैठे रहते ?

किशोरसिंह—अपने यहॉ तक फजूल आए.

क्रोधदास—जब ही तो उलटे चोर बनोगेन ?

किशोरसिंह—बनेहीगे. मैं तो तुम लोगोंको पहिले ही से कहता था, पर नही माना.

मानसिंह—इसमें क्या बिगड गया फिर चले जायँगे.

किशोरसिंह—जानाही चाहिये.

क्रोधदास—यदि जसवन्तसिंह जीवित निकल आया तो अब वह थोडे ही छोडेगा. चुपके यहॉ ही पडे रहो नहीं तो शीघ्र ही पकडे जाओगे.

केवलदास—हॉ भाइ ठीक कहा.

किशोरसिंह—तो क्या यहॉ ही ठहरना है.

क्रोधदास—यहां नहीं तो कहां ! किसी गांवमें जाओगे तो फौरन पता लग जावेगा ! यहां महादेवका स्थान है कोई देखेगा तो कहदेंगे कि, दर्शन करने आए हैं. कुछ दिनों बाद विचार करेंगे.

किशोरसिंह—विचार क्या करोगे अपनेको यहां जसवन्तसिंह का क्या पता मिलेगा कि, आया वह ज़िन्दा है या कि मर गया, यदि जिन्दा है तो क्या कर रहा है.

क्रोधदास—वाह तुम्हारी तरह मैं थोडा ही हूं. अपने बेटेसे सब कह आया हूं. ज्यों ?. खबर मिलती जायगी, अपनेको पहुंचाया करेगा.

किशोरसिंह—बस अब ठीक है. बे खटके आराम करो इस तरह निश्चयकर चारों वहां ठहर गए और भोजन आदिके काममें लगे.

पाठकगण ! इन लोगोंने अपना घर छोडनेमें भूल की है. वास्तवमें देखा जायतो इन लोगोंने जो जो बातेंकीं थीं वह सिवाय जसवन्तसिंहके और किसीने नहीं सुनीं थीं ज्यों जब जसवन्तसिंह को मानसिंहने ठेला मारा किसीने नहीं देखा था यह चारों अवश्यमेव गिरफतार किये जाते पर सबूतके न होनेसे आखिरको छूट जाते. किन्तु बुरे कर्मोंका फल भोगे बिदून छुटकारा नहीं होता है और इसीलिये ऐसी सूझी है.

—o—

प्रकरण २१.

भूपालसिंहके उपाय.



आइए पाठकगण ! मालूम करें कि वसन्तगढ़में भूपालसिंह क्रोडीमलके विरुद्ध क्या कर रहा है.

भूपालसिंह विवाह करके अपने गाँवमें लौट आया है. यह तो अपनको विदित ही है कि, मंत्री क्रोडीमलके हाथी न देनेसे भूपालसिंह चिडचिडा हो रहा था. उसके ससुरालमें ससुरालवालोंके हाथीके विषयमें दर्याफ़्त करनेपर मंत्रीपर और आग बबूला हो गया. और अब यही चाहता है कि, कौनसी ऐसी युक्ति निकालूं कि बदला ले सकूं.

संध्याका समय हो चुका है. शुक्ल पक्षकी द्वादशी होनेके कारण चंद्रमाका कुछ प्रकाश होना चाहिये पर वर्षाकी ऋतु होनेसे उलटा अंधेरा हो रहा है. जब कभी बादल चन्द्रमाके सामनेसे हट जाते हैं तो थोडा बहुत प्रकाश होता है. पर जब फिर बादल आकर चन्द्रमाको घेर लेते हैं तो वही अंधेरा सा मालूम होता है. इस समय मनुष्य मात्र सारे दिनकी थकावटको दूरकर आरामसे बैठे हुए हैं. ऐसे समयमें भूपालसिंह एक चौकीपर बैठा हुआ विचार कर रहा है और मन ही मन कह रहा है " क्या मंत्रीजी मेरी भलाईका तुम्हें ज़रा भी ख्याल नहीं आया ? क्या तुमने मुझे ऐसा ही समझा ? तुमने यह मान रक्खा होगा कि, भूपालसिंह बरदास्त करजायगा पर कदापि नहीं. भला अब मुझे बरदास्त क्यों होने लगा. जबतक मेरे ससुरालवालोंने हाथी के विषयमें

नहीं पूछा था तबतक तो फिर भी कोई बात नहीं थी. पर उन्होंने पूछ लिया, मेरा हलका लगा, अब भला कैसे बरदास्त करने लगा. क्या जब मेरे सम्नुरालवालोंने हाथीके विषयमें पूछा मुझे कम बुरा मालूम हुआ होगा ? यह तो मैं ही था कि गोलमटोल उत्तर देकर बातको टाल दी, नहीं तो कहीं दूसरा होता तो दहल जाता. स्वप्नमें भी ऐसा ख़याल मत करो कि भूपालसिंह बातको बरदास्त कर जायगा. देखना तुम्हारे कैसे दांत खट्टे करता हूं. पर हे मन ! दांत खट्टा करनेके लिये उपाय कौनसा ठीक होगा. क्या हाथी न देनेका ही विषय लेकर मंत्रीजीकी शिकायत कर दूं ? नहीं तो इससे कुछ नहीं होगा दरबारके घरमें ऐसी सुनवाई कहां. दरबार तो मंत्रीजी के ही हो रहे हैं. कोई दूसरी युक्ति ऐसी निकालनी चाहिये कि, दरबार जलकर आग बबूला हो होजाएँ और मंत्रीजीका शीघ्र ही ख़ातमा होजाय. पर वह युक्ति कौनसी ? क्या कुछ झूठा दोष दूं ? नहीं तो यह काम मेरा नहीं हैं. सही बात कहूं और उसपरसे ख़ातमा हो जिसमें तारीफ़ है. पर वह सही बात कौनसी ? यही कि, मेरे पट्टे की रिआयासे रिशवत खाकर अन्याय किया है उसकी एक फ़हरिस्त तैयार कर पेश कर दूं. पर फहरिस्त तैयार करनेमें विलम्ब लगेगा, कोई ऐसा उपाय नहीं है कि आज ही रवाना होकर विश्वेश्वर नगरको पहुंचूं और मंत्रीजीका ख़ातमा कराऊं. नहीं तो ऐसी जल्दी अच्छी नहीं. जल्दी करनेमें काम बिगडता है. अपने कामदारको फ़हरिस्त तैयार करनेके लिये कह दूं फ़हरिस्त तैयार होने पर चला जाऊंगा" यह निश्चय कर काम-दारको बुला लानेको कर्णसिंहको हुक्म दिया जो पासमें बैठा हुआ था.

कर्णसिंह आज्ञाके पाते ही कामदारको बुला लाया. कामदार के आनेपर भूपालसिंहने कहा कि, तुमको मालूम होगा कि मंत्रीजी ने अब के हाथी नहीं दिया जिससे ठिकानेका हलका लगा.

कामदार—जी हां मंत्रीजीने अबके बड़ा खराब किया जो आपको हाथी नहीं भेजा.

भूपालसिंह—अब मै इसका बदला मंत्रीजीको देना चाहता हूं. जिसके लिये मैंने यह उपाय सोचा है कि, अपने पटेकी रिआयासे मंत्रीजीने रिशवत लेकर जोजो अन्याय किया है, उसकी एक फहरिस्त राजा साहबको लेजाकर बताऊं और मंत्रीजीका खातमा कराऊं.

कामदार—जी हां ठीक है ऐसोंके लिये एसाही करना चाहिये. इस ठिकाने ने मंत्रीजीका कितना रक्खा जिसका आज यह बदला! इस मौके ठिकानेका कितना बुरा लगा.

भूपालसिंह—पर फहरिस्त तैयार कहां है, इसलिये तो तुमको बुलाए हैं कृपाकर ऐसी फहरिस्त सही २ हाल की तैयार करलाओ फिर मै उसे लेकर विश्वेश्वर नगर जाऊंगा.

कामदार—जो आज्ञा.

भूपालसिंह—जो आज्ञातो कहा सो ठीक पर शीघ्र ही करके लाओ जब है. कहो कितने दिनों में लाओगे !

कामदार—कमसे कम दो माह तो लगेंगे.

भूपालसिंहजी—दो माह नहीं, मैं जल्दी चाहता हूं.

कामदार—आप जलदीतो चाहते हैं पर साथमें आप सही हालभी चाहते हैं ऊट पटांग फहारिस्त तो चाहिये ही नहीं एसी

तो चाहिये तो अभी दे सकता हूं. सही हालकी फहरिस्त के लिये तो गांव गांव फिरूंगा जब तैयार होगी.

भूपालसिंह—ठीक है दो माह की मियाद दी जाती है पर ज़ियादा विलम्ब न करना, जहांतक हो सके जल्दी लाना.

कामदार—जो आज्ञा.

कामदार इतना कहकर चला गया अब भूपालसिंहके मनमें यही विचार हो रहा है कि कामदार कब फहरिस्त लावे और मैं विश्वेश्वर नगर जाकर मंत्रीका ख़ातमा कराऊं.

प्रकरण २२

विश्वेश्वर नगरमें जसवन्तसिंह.



भातका समय है. सूर्यनारायणके उदय होनेमें अभीतक घड़ीभरकी देर है. इस समय मनुष्य मात्र अपने २ घरोंमें सोए हुए हैं. थोडे ही ऐसे होंगे जो उठने पाए हैं. किन्तु आम सड़क पर उन्होंनेभी चलना फिरना शुरू नहीं किया है. सर्व अपने २ घरोंमें बैठे हुए काम कर रहे हैं. ऐसे समयमें जसवन्तसिंह दिनोंके बाद अपनी जन्म भूमि (विश्वेश्वर) में पहुंचा है और मन ही मन विचार कर रहा है कि, अब मुझे क्या करना चाहिये. क्या वे लोग यहां ही होंगे ? यदि यहां हांतो मज़ा आजाय शीघ्र ही जाकर पकड़ लूं. पर आशा नहीं. जाऊं तो ज़रा प्रथम लाहोरीमलको मिल आऊं. यह निश्चयकर जसवन्तसिंह लाहोरीमलके यहां आ पहुंचा जो सोया हुआ था. जसवन्तसिंहने उसको प्रथम जागृत किया फिर तमाम हक़ीक़त कह सुनाई.

लाहोरीमल यह निराला हाल सुनकर अति पश्चाताप करने लगा और कहने लगा मुझेभी कुछ ऐसी ही सूझी थी कि, जसवन्तसिंह न मालूम कहां चलागया, अभीतक क्यों नहीं आया, किसी मुसीबतमें तो नहीं फंसा ? जो आज वास्तवमें सही हुआ. पर कहो जसवन्तसिंह अब तुम क्या चाहते हो.

जसवन्तसिंह—चाहनेको तो मैं उन बदमाशोंकी जान चाहता हूं, पर कहीं मिलेभी कहो क्या वे लोग यहां पर हैं ?

लाहोरीमल—मैंने उनको देखे तो नहीं क्या उनकी ख़बर कराऊं ?

जसवन्तसिंह—इस तरह ख़बर कराओगे तो वे होंगे तो भी भाग जाएंगे. मैं ख़ुद जाकर पता निकालूंगा लो अब जाता हूं.

इतना कहकर जसवन्तसिंह जानेलगा कि, लाहोरीमलने उसको रोक लिया और कहने लगा इतनी क्या ताक़ीद है. ज़रा दम लो. अभी तो थके हुए आए हो. चाह तैयार हुई जाती है. पीकर जाओ.

जसवन्तसिंह—मुझे चाह वाह कुछ नहीं सूझती. कृपाकर जाने दो और दुष्टोंका ख़ातमा करने दो.

लाहोरीमल—मैं तुम्हें ज़ियादा समयतक थोडाही रोकता हूं. पांच मिनिटमें चाह तैयार हुए जाती है.

इतना कहकर लाहोरीमलने घरमें चाह बनानेको कहा और जसवन्तसिंहसे पूछा " मियाद मुक़र्रमें काम बन जाएगा " ?

जसवन्तसिंह—यह मैं कैसे कह सकता हूं. बदमाश कहीं दूर चले गए होंगे. मियादके कितने दिन बाक़ी हैं ?

लाहोरीमल—सिर्फ़ पॉच दिन बाक़ी हैं.

जसवन्तसिंह—क्या पांच दिन ही ?

लाहोरीमल—हां जभी तो कहता हूं.

जसवन्तसिंह—देखो जहांतक वन सकेगा कोशिश करूंगा.

लाहोरीमल—यदि मियादके अन्दर पता नहीं मिला तो मेरी खराबी आ जाएगी.

जसवन्तसिंह—खराबी क्यों आने लगी. यदि चार रोज़ तक पता नहीं लगा तो यह सारा हाल राजा साहबको कहदेना.

लाहोरीमल—ठीक है पर मानेंगे जब न ?

जसवन्तसिंह—यदि न मानें तो मुझे बुला लेना.

लाहोरीमल—तुम्हें कैसे बुला सकूंगा न मालूम तुम कहां होगे ?

जसवन्तसिंह—यह तो है. मेरा पता मिलना मुश्किल होगा पर मैं खुद ही आजाऊंगा.

इतनेंमें चाह तैयार होकर आई. जसवन्तसिंहने जल्दीसे उसको पी ली और जाने लगा कि, लाहोरीमल उसको फिरसे रोककर कहने लगा कि " भाई शीघ्र ही आजाना कहीं ऐसा न हो कि मेरी खराबी हो. " इसके उत्तरमें जसवन्तसिंह हां कहकर चलता बना बल्कि साथमें यह भी कह गया कि " यह बात किसीको मत कहना. "

जसवन्तसिंह लाहोरीमलसे विदा होकर अपने थानेमें आया और प्रथम दो कोन्सटेबलोंको भेजकर खुफिया तौरपर पता लगाया कि वे बदमाश यहां है याकि भाग गए. जब कोन्सटेबलोंने आकर कहा कि " वे तो यहां नहीं हैं कभी के न मालूम बाहर गांव को गए हुए हैं, जसवन्तसिंह एक गार्डको साथ लेकर उनकी टोहमें रवाना हुआ.

प्रकरण २३.

दया ही धर्म्मका मूल है.



ध्याह्नका समय है, वर्षाका ऋतु होनेसे सूर्यनारायण आसमानमें दिखाई नहीं पडते हैं. चारों दिशा अंधेरा हो रहा है मंद २ वर्षा हो रही है, इस कारण दिन का समय होते हुए भी चाहियें उतने लोग चलते फिरते नज़र नहीं आते. यह ऋतु भी सर्व ऋतुओंमें निराला है. वर्षा होनेके कारण अकसर लोग इसको बुरा कहते हैं कि, यह ऋतु कैसा जो घरसे बाहर भी निकलने नहीं देता, यदि जाते हैं तो कीचड़ नाकमें दम करदेता है, पहिननेके कपडे तक ख़राब हो जाते हैं. पर फिर भी यह ऋतु सबसे उत्तम कहा जाता है जिसका कारण केवल यही है कि, पानीके पडनेसे हरतरहका आराम रहता है. तमाम वृक्ष आदि हरे हो जाते हैं अन्न पैदा होता है. कूंए ता लाब आदि भर जाते है कि, जिनमेंका पानी वक्त़ ज़रूरतके काम देता है. ऐसे समयमें बुद्धिधन तथा किशोरीलाल स्कूल होलमें बैठे हुए हैं. स्कूलके सर्व लडकोंको छुट्टी हो चुकी है. पर इनके साथ आज छाता नहीं होनेसे वर्षाके कारण रुके हुए हैं और दोनो यों ही बातें कर रहें है.

चलो पाठकगण ! अपने भी जाकर सुनें कि यह दोनों बालक क्या बातें कर रहें हैं.

बुद्धिधन—मियादमें तो सिर्फ़ पांच ही दिन बाकी रहे हैं क्या काशेरीमलने उस पत्रका पता लगाया ?

किशोरीलाल—मैंने खुफिया तौरपर सुना है कि, उस पत्र के लिखनेवाले क्रोधदास, केवलदास, मानसिंह तथा किशोरसिंह, जाहिर हुए हैं. पर अभितक कुछ हुआ मालूम नहीं होता.

बुद्धिधन—आजकल वह लोग हैं कहां, कहीं दीखनेमें भी नहीं आते ?

किशोरीलाल—मुझे भी यही आश्चर्य होता है.

बुद्धिधन—कहीं पकड़े तो नहीं गए ?

किशोरीलाल—पकड़े तो नहीं गए यदि पकडे गए होते तो जाहिर हुए विदून नहीं रहता

बुद्धिधन—यदि वह पकडे गए तो लाहोरीमल निर्दोष ठहरेगा ?

किशोरीलाल—यह तो है.

बुद्धिधन—हा ! अफसोस ! मेरे पिताको यह क्या सूझी जो एक निर्दोष लाहोरीमलपर कलङ्क रक्खा. भाइ सत्यका बेली परमात्मा हुआ करता है यह चारों अवश्यमेव गिरफ़्तार होंगे.

किशोरीलाल—यदि वह गिरफ़्तार हो गए तो अबकि मंत्रीजी की खैर नहीं है. राजा साहब इस बातपर बहुत बिगडे बैठे हैं.

किशोरीलालकी जवानी यह हाल सुनकर बेचारा बुद्धिधन और चिन्ता करने लगा मन ही मन विचार कर रहा है " इसका क्या परिणाम होगा ? वास्तव में इसका परिणाम बुराही होगा. बुरा क्या मेरे पिताको मंत्री पदसे हटादिये जायंगे ? अरे मंत्रीपदसे हटादेतो कोई बात नहीं पर कहीं रुपये की मार न लगे. यदि रुपये की मार लगी तो मुशकिल होगा. मैं अभी बालावस्थामें हूं घरका गुजर कैसे चलेगा. क्या मेरे भाग्यमें दुखही बदा है "

इतना कहकर रो बैठा और अपने प्रिय मित्रसे कहने लगा "इस में मैं क्या करूं."

किशोरीलालने देखा कि, यह दुःखसे घबराया हुआ है बातको पलटना मुनासिब समझ कहने लगा. "आप इसमें क्या कर सकते हैं जो होना बदा है कदापि टल नहीं सकता है. इस तरह चिन्ता करके अपने कोमल शरीरको कष्ट न दो. देखो ! आज प्रोफेसर साहबने दया के विषयमें कैसा उत्तम व्याख्यान दियाथा."

बुद्धिधन—हां उनका भाषण अति उत्तमथा. वास्तवमें देखा जायतो दया ही धर्म्मका मूल है पर मेरे पिताके हृदयमें दया कहां.

किशोरीलाल—फिर अपने पिताको लाया उनको छोडो. वे ही आपके दुःखों के मूल हो रहेहैं. मेरी बात पर किंचित् लक्ष दो.

बुद्धिधन—अपने पिताको कभी छोडाभी जाता है ?

किशोरीलाल—मेरी मंशाको आप नहीं समझे. मेरी यह मंशा कदापि नहीं है कि आप अपने पिताको छोडें बल्कि कहनेका मतलब यह है कि, थोडी देरके लिये उनका ख्याल दुर करो.

बुद्धिधन—अच्छा कहो तो तुम क्या कहना चाहते हो ?

किशोरीमल—देखो पन्नालाल बलदेवका कैसा कट्टा शत्रु बना हुआ था पर अन्त समय उसकी अनाथ स्थिति पर बलदेवने दया लाई और अपने भाई समान समझा. बल्कि हर मनुष्य तथा जानवर आदि पर उसने दया की दृष्टि रक्खी. जिसका फल उसको यह मिला कि वह उमरभर सुखी रहा. आखिर स्वर्गको सिधारा इसलिये हे मित्र ! अपनेको भी चाहिये कि, हर जानपर दया रक्खें.

बुद्धिधन—मित्र ! तुम जानते हो कि, मेरा मन कैसा दयालु है. पर अफ़सोस कि, वह किसी कामका नहीं. दया रक्खूं तो कैसे रक्खूं.

किशोरीलाल—देने लेने से ही केवल दया नहीं होती है. यदि कोई अनाथ रास्तेमें दुःखित अवस्थामें पडा हो और उसे देनेको अपने पास कुछ न हो तो कोई कारण नहीं. पर उसकी अवस्थापर अपने रहम लावें तो वह भी दया कही जाती है. कोई रुपये दे दे और ऐसे अनाथपर रहम नहीं लावे तो कुछभी नहीं. देनेके बनिसबत रहमका लाना अति उत्तम है.

बुद्धिधन—वह कैसे ?

किशोरीलाल—इस तरहसे कि, दया लानेमें साराका सारा मन ही दयालु हो जाता है फिर वह हर समय यथा शक्ति दया ही करता है.

बुद्धिधन—ठीक कहते हो. अन्तमें जाकर प्रोफ़ेसर साहब के व्याख्यानका सारांश यही था पर भाई इस समय खेदके साथ कहना पडता है कि, आजकलके संसारमें ऐसे सज्जन पुरुष कम होंगे जिनको किंचित् दया हो, वहतो किसीको गिराने, काटने, मारने, जानवर, पशु, पक्षियोंके प्राण लेनेमें ताक़ रहते हैं और उसीमें अपना जीवन सफल समझते हैं

किशोरीलाल—थोडे समयके लिये भले ही ऐसा समझलो पर वास्तवमें उनको दुःख ही है. क्या प्रोफ़ेसर साहबका वह कहना भूल गए कि, पन्नालालने बलदेवसे शत्रुता रक्खी, अनाथों के गले काटे जिसका परिणाम यह हुआ कि, वह नरकमें गया. वही गति उन लोगोंके लिये होने वाली है जिनको किंचित् दया नहीं है और नीच काममें फंसे रहते हैं.

बुद्धिधन—हाय ! अफ़सोस ! क्या इस व्याख्यानके अनुसार मेरे पिताकी भी वही दशा होगी ? पर मेरे पिताने किसीका प्राण तो नहीं लिया है. ?

कीशोरीलाल प्राणका लेना अच्छा पर प्राण होते हुए किसीको दुःखी करना यह सबसे बुरा है. प्राण ले ले तो शीघ्र ही दुःखसे मुक्त होजाय.

बुद्धिधन—ठीक कहते हो यह उससे भी बुरा है पर भाई मेरा इसमें क्या उपाय मुझे ऐसी बातें नाहक को क्यों सुनाते हो.

किशोरीलाल—मैंने इसलिये नहीं सुनाई है कि, आप अपने पिताको इस विषयमें उपदेश करो उनको न तो उपदेश हुआ न होगा. मैंतो आपके लिये यह सब बातें कह रहा हूं कि, दया ही धर्म्मका मूल है. इसे ग्रहण करना चाहिये. देखो ! इस विषयमें कैसे उत्तम दोहे कविलोग कह गए हैः—

जहां दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप ।
जहां क्रोध तहां काल है, जहां क्षमा तहां आप ॥ १ ॥
तुलसी ग़रीब न सतावीजे, बुरी ग़रीबकी हाय ।
मुआ ढोरके चामसे, लोहा भस्म हो जाय ॥ २ ॥

बुद्धिधन—मेरा हृदय कैसा है सो तो तुम जानते ही हो फिर भी तुम्हारा उपदेश शिर चढाता हूं.

यह कहकर बुद्धिधन कहने लगा कि "अभीतक सेवक छाता लेकर क्यों नहीं आया धुप लगी जाती है ? " बुद्धिधनका इतना कहनाथा कि सेवक दोनोंके लिये छाते लेकर आ उपस्थि हुआ, जिन्हें पातेही दोनों उठरवाना हुए.

प्रकरण २४.

जसवन्तसिंहकी जय.



सवन्तसिंह आदि शहरसे चलकर वनमें आए और फिर विचार करने लगे कि, अब कौनसी दिशाको जाएं. इस राज्यमें खोखरी नामी बड़ा पहाड है उसमें अकसर लुटेरे पनाह पाते हैं मथम उसी पहाडमें चलकर खोज करना चाहिये और खोखरी नामी पहाडकी तरफ बढ़े जो ठीक शहरसे चौवीस माइलकी दूरी पर था. यह पहाड ६४ माइलके घेरेमें है. उसकी ऊंचाई हिमालयसे किसी क़दर कम होगी पर दिखावमें हिमालय जैसा ही है. इस पहाडमें नाना मकारकी वनस्पति पडी हुई हैं. चलते फिरते खुंख्वार जानवर नज़र आते हैं. इस पहाडमें कहीं गुफाए ऐसी क़ुदरती बनी हुई हैं कि, जिनमें ऋषि मुनि आदि बैठकर भजन किया करते हैं तथा जब कभी कोई गुफा खाली होती है तो लुटेरे भी आकर अपना आश्रम उसमें कर देते हैं. कारणकि गुफाएं ऐसे स्थान पर आई हुई हैं कि, मामूली आदमीको उनका पता नहीं मिल सकता. यदि कोई पता लगाकर आभी जायतो अन्दर बैठे २ वह लोग उसको हार मनाकर वापिस कर सकते हैं.

जसवन्तसिंह आदि उन बदगाशोंकी तलाश करते हुए तथा स्थान २ पर ठहरते हुए शामके समय ठीक उस पहाडके मध्यमें आ पहुंचे. किन्तु अंधेरी रात्रिका आगमन देखकर अगाडी जाना उचित नहीं समझा और वहीं एक गुफामें ठहरकर भोजन आदि करके सो गए. भोर होते ही उन लोगोंने प्रथम भोजन

आदिका फ़िक्र किया. जब वह उससे निपट चुके, कमर कसकर अगाडी बढ़े. किन्तु सबका एक जगह जाना उचित न समझ गार्डके चार विभाग किये गए और पृथक २ दिशाओंमे गए. सारादिन इधर उधर भटके पर उनका कहीं पता नहीं मिला दूसरे रोजभी इसी तरह गए पर कहीभी वह लोग दिखाई नहीं पडे जिस परसे विदित हो गया कि, बदमाश लोग यहां नहीं आए पर जसवन्तसिंह एक होनहार, नौजवान, ज्ञानी तथा साहसी पुरुष है. हिम्मतको न हारकर तथा यह कहकरः—

" नहो सकेगा " यह काम भाई,
कभी न बोलो अति हीनताई ।
न क्यों सकोगे कर सो विचारो,
अधीरताको मनसे निकारो ॥ १ ॥
नहीं बनोगे यदि कर्मवीर,
सभी कहेंगे तुमको अधीर ।
असाहसीको हंसते सभी हैं,
न प्रेम जीसे करते कभी हैं ॥ २ ॥

ज़रा बिचार करने लगा कि, इस राज्यमें और कोई स्थान नही है जहां वह गए हों, वह कहीं इसी पहाडमें होने चाहियें. पर कहीं ऐसा तो नही हुआ कि, इस इलाके के बाहर गए हों नारे इतनी उनकी हिम्मत कहां. क्रोधदास तथा केवलदास तो दोनों दास हैं. वह भला एकदम एक सौ माइलके परे कैसे जाने लगे. पर मानसिंह तथा किशोरसिंह बड़े हिम्मतवान हैं. बेचारोको घसीट करले गए हों. खेर कोईबात नहीं मुझे इस तरहसे कायर

नहीं होना चाहिये. यह यदि पातालमेंभी गए होंगे तो खोज निकालूंगा. " यह निश्चयकर जसवन्तसिंह आदि वहीं आराम करने लगे.

प्रभातका समय है. सूर्यनारायणने अपना अटल राज्य पृथ्वी पर फैलादिया है. विकट जङ्गल तथा बडा पहाड होनेके कारण मनुष्य कोई दिखाई नहीं देता. जहां तहां खरगोश हिरन आदि जानवर तथा पक्षीगण नज़र आते हैं. ऐसे समयमें जसवन्तसिंह आदि इधरसे उधर उन बदमाशोंकी तलाशमें फिर रहे हैं दस बज चुके पर कहींभी उनका पता नहीं पाया और बिलकुल निराश होकर जसवन्तसिंह एक चट्टानपर बैठ गया मन ही मन कहने लगा कि " यहां पर कोई बदमाश लोग मिलते तो हैं नहीं नाहक समय जा रहा है " इतनेमें एक कॉन्सटेबलने आकर खबर दी कि, उत्तर दिशाको जो गुफा है वहां मनुष्योंके चिल्लानेकी आवाज़ आ रही है. यह समाचार पाकर जसवन्तसिंह शीघ्रही उठ खडा हुआ और कॉन्सटेबलके साथ उस गुफाकी तरफ गया यहां तक कि, उस गुफाको भी टटोलमारी पर कहीं भी मनुष्य नज़र नहीं आया, लाचार जसवन्तसिंह वापिस लौटा. जब वह वापिस लौट रहाथा कि, पश्चिमदिशासे मनुष्यके बोलने की आवाज़ सुनाई दी. उस आवाज़के सुनतेही जसवन्तसिंह उस तरफ पढ़ा और ज्यों २ आवाज़ सुनाई देने लगी अपने क़दम धीरे २ रखकर चलने लगा. जब वह ठीक निकटको पहुंचा, एक पत्थरकी ओटमें छिपकर देखने लगा तो महादेवके मन्दिरके पास एक कुंडमें वह चारों बदमाश स्नान करते हुए तथा आपसमें खेल कुद करते हुए दिखाई पडे. जसवन्तसिंहने यह मौका गिरफतारीका उत्तम समझा और हाथके इशारेसे अपने साथियोंको बुलाए उनके आतेही सबने

मिलकर शीघ्रही जाकर चटसे घेर लिये. बस क्याथा चारों ज्यों के त्यों गिरफ्तार हो गए. उन्होंने बहुतेरा चाहाकि किसी तरक़ीबसे पुलिसको मार भगावें और भाग जाएं पर इस समय तमाम यत्न उनके व्यर्थथे क्योंकि स्नान करते हुए यकायक पकडे गए.

इन लोगोंके गिरफ्तार होते ही जसवन्तसिंहके दममें दम आया और ईश्वरको धन्यवाद देता हुआ मारे ख़ुशीके बाग़ २ होने लगा. उससे रहा नहीं गया एकदम कह उठा. "देखो अब तुम्हारी कैसी मिट्टी पलीत करता हूं यमुना किनारे मुझे ढेला देकर मारना चाहाथा. अब मारो तो यह खड़ा ?"

मानसिंह आदिको जसवन्तसिंहके इन शब्दोंपर बुरा मालूम हुआ पर क्या करसकते थे. गिरफ्तार होजानेसे लाचार थे. फिर भी मानसिंह साहसी बनकर कहने लगा "यह तुम क्या कहते हो ? तुमको यमुनामें किसने ढेला माराथा ?"

जसवन्तसिंह—तुम्हीं और फिर कौन था ?

मानसिंह—ख़ामख्वाहको गले क्यों पड़ते हो ? कोई साक्षी भी होगा ?

जसवन्तसिंह—चुपका रह. अब साक्षी पूछ रहा है. शहरमें तो चल सब साक्षी दे दूंगा.

क्रोधदास—भाई मैंने तो ढेला नहीं मारा था मुझको क्यों पकड़ा है ?

जसवन्तसिंह—पत्रका लिखनेवाला तो तू ही है सब शरारत तेरी ही है.

किशोरसिंह—अच्छा मुझे क्यों पकड़ा है मैंने तो कोई पत्र नहीं लिखा है ?

जसवन्तसिंह—तू ही तो हरामज़ादा है. बोल तो दूसरा पत्र किसकी सलाहसे लिखा जाताथा.

केवलदास—किशोरसिंह तो दूसरा पत्र लिखाने मेंथा. पर मैंने क्या अपराध किया जो पकडे हुए हो ?

जसवन्तसिंह—क्यों मंत्रीजीको तो तूही निकलवाना चाहता है न. तुम्हारी कार्रवाई मेरेसे पोशीदा नहीं है महीने गुजरे इसी फिराक़में था: शहरमें चलो सब ठीक किये जाओगे.

इतना कहकर जसवन्तसिंहने गार्डको उन्हें ले चलनेकी आज्ञा दी बल्कि ख़ुद उनके साथ रवाना हुआ.

—०—

प्रकरण २५.

सचेका बोल बाला झूंठेका मुंह काला:



दिनका समय है. वर्षा ऋतुके कारण आसमानमें बादल छाए हुए हैं. बादलोंके कारण सूर्य भगवान्का तेज पृथ्वीपर बहुत ही कम दिखाई पड़ता-है. इस समय वक़्तका अंदाज़ा मनुष्योंको ठीक तौरपर मालूम नहीं होता है. वही ठीक वक़्तको मालूम कर सक्ते हैं जिनके पास घडी है. अहलकार लोग भोजन करके दफ़्तरोंमें भागे जा रहे हैं कोई नौ बजे पहुंच गया है तो कोई दस भी बज गए पर अभी तक जाने नहीं पाया है. ऐसे समयमें विश्वेश्वर नगरके राज्य महलमें ख़ास दरबार जमा हुआ है. उस गुप नाम पत्रेका पता लगानेका

जो एक माहकी मियाद लाहोरीमलको दी गई थी वह आज खतम होती है, इस कारण क्रोडीमल कोई पता न लगना जानकर नौ बजेसे ही कचहरीमें जाकर बैठा है. राजासाहबने भी इसी कारण दस वजते ही दरबारमें अपना आगमन करदिया है. पर अग्यारह जब बज गए लाहोरीमलको न आता देख दिलमें खेद करने लगे पर यह विचारकर कि, " अब नहीं तो थोडी देरमें आखिर आवेहीगा, " शान्त हो बैठे. उधर लाहोरीमलने देखा कि, "अग्यारह बज चुके, जसवन्तसिंह न तो खुद आया न समाचार भेजा. न मालूम उसने क्या किया. बदमाशोंको पकडे या क्या ? कहीं एसा तो नहीं हुआ कि, फिर किसी जालमें फँस गया हो. पर अब मैं उसकी कहा तक राह देखता रहूं, राजासाहब नाहकको क्रोधित होंगे, उचित है की, अब चला जाउं पर जाके उत्तर क्या दूंगा ? न मालूम आज मेरे भाग्यमें क्या पड़ा है. मालूम होता है कि, मेरे भाग्यमें कुछ खोटा बदा है जो अभीतक कुछ पता नहीं लगा. किन्तु इस तरह पश्चात्ताप करनेसे क्या होगा. ? अब तो हिम्मत बांधकर जाना ही चाहिये जाकर जो कुछ पता लगा है कहदूंगा. " यह निश्चय कर लाहोरीमल घरसे रवाना हो दरबारमें पहूंचा उसके पहुंचते ही राजासाहबने प्रश्न किया " कहो लाहोरीमल उस पत्र का क्या पता लगाया ? "

लाहोरीमल---(उदास होकर) पता लगा तो बहुत कुछ लगा है नहीं तो कुछ भी नही.

राजा---यह कैसे ?

लाहोरीमल---मैंने इस कामपर जसवन्तसिंहको नियत किया था. जिसने पता लगाया तो मालूम हुआ कि, उस पत्रका लिखने

वाला क्रोधदास है और वह मानसिंह, किशोरसिंह तथा केवलदासकी सलाहसे लिखा गयाथा.

राजा—तो फिर उनको साथ क्यों नहीं ले आया !

लाहोरीमल—हुजूर ले कहांसे आता. भेद इसमें यह हुआ कि, जसवन्तसिंह उन चारोंको पकडने यमुना किनारे गया था. वह उनको पकडना चाहताथा कि, मानसिंहने उसको यमुनामें ढेला मार गिरा दिया और वह चारों वहांसे भाग गए. जसवन्तसिंह बहता हुआ रामपुरी तक चला गया वहां उसको खेडुओंने बडी मुशकिलसे बाहर निकाला सो हाल हीमें आजसे पांचवे रोजपर उन बदमाशोंके पीछे गया हुआ है.

राजा—क्या कहता है यदि ऐसा था तो तूने मुझे पहिले क्यों नहीं कहा ?

क्रोडीमल—हुजूर सब बनावट की बातें है. यदि ऐसा होता तो कदापि कहे बिदून नही रहता. जसवन्तसिंह इसका मित्र है जिस तरह बनाना चाहे बना सकता है.

लाहोरीमल—(क्रोधित होकर तथा मन्त्रीजीकी तरफ हाथ करते हुए) ज़रा थमे रहिये. कहने तो दो खबर पाकर बदमाश लोग कहीं भाग न जाएं. इस कारण जसवन्तसिंहने मुझे यह सब हाल गुप्त रखनेका कहा था. फिर मैं कैसे कहता ?

क्रोडीमल—बदमाश लोग यों भी तो भागे हुए हैं जैसा कि तुम कहते हो.

लाहोरीमल—यदि मैं बातको कह देता तो कहीं आप जैसों की सलाहसे बहुत दूर तक न भाग जाते कि, उमर भर पता भी न लगता और मैं निर्दोषी मारा जाता.

लाहोरीमलके ऐसा कहने पर मन्त्री लाजवाब हो गया और राजा साहब बोल उठे कि लाहोरीमल ! क्या तू निर्दोष है ?

लाहोरीमल---वास्तवमें हूं मैं निर्दोष पर अभीसे न तो मैं कह सकता और न आप उसको मानेंगे. कृपाकर दो एक रोज़ और ठहर जाइये. जसवन्तसिहको आने दीजिये. आपसे मालूम हो जायगा.

राजा---अच्छा दो दिनकी और मियाद देता हूं.

इतनेमें क्रोडीमल बोल उठा. "हुजूर यह फिर मियाद कैसी ? अब मैं सच्चा ठहर चुका; यह तो उमर भर पता नहीं लगाएगा".

क्रोडीमलके इन शब्दोंपर राजा साहबको क्रोध तो बहुत आया पर उसको दबा कर कहने लगे " क्या हर्ज है दो दिन और देख लें. " लाचार मन्त्रीने भी इस बातको मंजूर किया और दोनों अपने २ काममें लीन हुए. इतनेमें वही खूफिया पुलिसका इन्स-पेक्टर चारोंको लेकर दरबारमें आ उपस्थित हुआ. जिन्हे देखते ही लाहोरीमलका मन प्रफुल्लित होने लगा. क्रोडीमलके चहरेपरसे खून उडने लगा, तथा राजा साहबने भी क्रोडीमलपर क्रोधित होकर लाहोरीमलका कहना सत्य माना

राजा---कहो जसवन्तसिंह इन्हें क्यों पकडकर लाया है. ?

जसवन्तसिह---यह वही पत्रके देने वाले हैं. कोमदासने उस पत्रको लिखाया और मानसिंह, किशारसिंह तथा केवलदासकी सलाहसे लिखा गया था.

राजा साहबने लाहोरीमलसे वह पत्र मांगा किन्तु उसके पास तो था नहीं, चटसे जसवन्तसिंहने अपने थैलेमेंसे निकालकर राजा साहबके हाथमें दिया.

राजा—क्योंरे क्रोधदास ! यह पत्र तेरा ही लिखा हुआ है ?

क्रोधदास—नहीं हुज़ूर यह पत्र मेरा लिखा हुआ नहीं है, न मैं इस विषयमें कुछ जानता.

जसवन्तसिंह—हुजूर इससे बाएं हाथसे लिखवाइये आपसे मालूम होजायगा.

जसवन्तसिंहके यह कहनेपर राजा साहबने क्रोधदासको बाएं हाथसे कुछ लिखनेकी आज्ञा दी किन्तु क्रोधदास इस तरहसे लिखने लगा कि, वह बाएं हाथसे लिख ही नहीं सका और जिस क़दर अक्षर लिखे निराले मालूम होने लगे तब राजा साहबने जसवन्तसिंहसे पूछा कि, यह अक्षर तो उनसे नहीं मिलते हैं. तू कैसे कहता है कि, यह पत्र क्रोधदासके हाथसे लिखा हुआ है ?

जसवन्तसिंह—(क्रोधदासकी जालसाज़ीको धन्यवादका पात्र समझकर) हुजूर यह बडा जाली है, अब वहपत्र जैसे हरूफ क्यों लिखने लगा ! पर वास्तवमें यह कृत्य इसीका है. थोडे दिनोंपर यमुना किनारे दूसरा पत्र क्रोधदास और लिख रहाथा कि मैं शीघ्रही जा पहुंचा, मेरे जातेही मानसिंहने मुझे ठेलामारा सो वहचला.

राजा—क्यों मानसिंह तुमने जसवन्तसिंहको यमुनामें ठेला माराथा ?

मानसिंह—नहीं हज़ूर मेरी क्या मजालजो इनको ठेला मारता.

राजा—जसवन्तसिंह ! यहतो ठेला मारनेसे इन्कार करता है ?

जसवन्तसिंह—हुज़ूर चौर कब सत्य कहने लगा ? यहतो इन्कार ही करेगा.

राजा—अच्छा तो फिर साक्षी लाओ ?

जसवन्तसिंह मन ही मन पश्चात्ताप कर कहने लगा हुज़ूर एसे समय साक्षी कौन होने लगा ? मैं पता लगानेके कारण अकेला फिरताथा. अच्छा आप इनसे पूछिये कि " जब तुम लोगोंने पत्रको नहीं लिखा, नहीं दिया, जसवन्तसिंहको ठेला नहीं मारा, तो फिर खोखरी पहाडमें भाग क्यों गएथे ? "

क्रोधदास बीचमें कहपडा हुजूर वहांतो हम महादेवके दर्शन करने गएथे.

क्रोधदासके ऐसा कहनेपर राजा साहबने ज़रा विचार किया कि " यहां के जैनी लोग महादेवको नहीं मानते हैं. क्रोधदास जैनी है, कैसे महादेवके दर्शनको गया होगा. जरा पूछूं तो " इतना कह राजा साहब क्रोधदाससे कहने लगे तुमतो जैनी हो तुम लोग महादेवको कब मानते हो, जिस परसे तुम्हारा कहना सही माना जाय ?

राजा साहबके इस प्रश्नपर किशोरसिंह बीचमें बोल उठा " हुज़ूर हम दोनों इनको जबरदस्ती ले गएथे. यहतो बहुत कुछ इनकार करतेथे कि, हम जैनी हैं; महादेवको नहीं मानते. "

राजा—(बदमाशोंकी चतुराईको देखकर) अच्छा ऐसाथा ? कह केवलदास क्या यही हाल है ?

केवलदास—जी हुजूर.

राजा—तुम वहां कबसे गए हुए थे ?

केवलदास—(घबराताहुआ) कमसे कम आ-आ-आ आठ द-द-द-दस दिन हुए.

राजा—इतने दिन वहां क्या करते थे ?

इस प्रश्नका उत्तर केवलदास नहीं दे सका. किशोरसिंह बोल उठा " हुजूर ! मेरे बोलमाथी कि यदि मैं शरीरसे तनदुरुस्त

हो जाउंगा तो पन्दराह दिनतक स्थानपर आकर भजन करुंगा, इस लिये हम वहां ठहरे थे.

राजा—बोल मा तेरेथी नकि दूसरोंके उन्हें ऐसी क्या ग़रज़ पडीथी कि, इतने दिन तेरे साथ पहाडमें रहते ?

किशोरसिंह—यह सब मेरे मित्र हैं, यह तो क्या इससे भी ज़ियादा काम पडे तो करते हैं.

जसवन्तसिंह—देखिये हुजूर किशोरसिंहके कहने पर इन चारोंकी मित्रता तो ज़ाहिर हो चुकी.

राजा साहबने जसवन्तसिंहके इस प्रश्नके उत्तरमें "हां" कहा और कहने लगे कि यहतो साफ़ ज़ाहिर है. पर यह लोग कोईभी बात कबूल नहीं करते और तुम साक्षी नही बताते फिर मैं कैसे मानूं कि यह सापराध हैं.

अब मन्त्री क्रोडीमलको बोलनेका मौका हाथ लगा और कहने लगा "हुजूर है ही विना साक्षी बेचारे अनाथोंको पकडलाना कितने बडे ज़ुल्मकी बात है."

जसवन्तसिंह—हुजूर आप एक २ को अलहदा बुलाकर पूछिये कुछ सख़्ती कीजिये आपसे सत्यता निकल आवेगी.

राजासाहब कहने लगे लो ऐसा करें. इतना कहकर पहरेदारोंको तीनके लेजानेकी आज्ञा दी. आज्ञापाकर पहरेदार मानसिंह, किशोरसिंह, तथा केवलदासको ले जाने लगे और क्रोधदासको छोडने लगे पर जसवन्तसिंहने केवलदासको रखना मुनासिब समझ उसीको ठहराया. दूसरोंको ले जानेकी आज्ञादी. क्रोधदास, मानसिंह, तथा किशोरसिंहके चले जाने बाद जसवन्तसिंह केवलदासको कहने लगाकि "इस तरह घबराओ मत. तेरे क्यों

होनेका है तूतो निर्दोषी है, रोएगा क्रोधदाश जिसने पत्र लिखा है और रोएगा मानसिंह जिसने मुझे ठेला मारा. तूतो सही २ हाल कह दे, मैं तेरी सब बातें जानता हूं. क्यों दोस्त! उस रोज रातको मानसिंहके मकानपर तुम तथा मानसिंह क्या बातें करतेथे ? मेरेसे गुप्त नही हैं, खडा हुआ सुन रहाथा. नाहक़ देर क्यों लगाता है, कहना हो सो कह दे." जसवन्तसिंहके इतना कहनेपर केवलदास थर थर कांपने लगा और मन ही मन विचार करने लगा कि "कहूं कि, नहीं कहूं. यदि नहीं कहता हूं तो मारा जाता हूं. कहूं तो बचने पाता हूं. कहही दूं. होगी सो देखी जायगी" यह निश्चयकर हाथ जोडकर कहने लगा "पृथ्वीनाथ ! जसवन्तसिंह जो कहते हैं सब ठीक है. कृपाकर मुझ दुःखियाको इस कष्टसे दुर कीजिये." केवलदासके इतना कहते ही मंत्रीने अपना शिर नीचे करलिया और लाहोरीमल झांक झांक कर देखने लगा. अब राजा साहबको ज़रा विश्वास हुआ कि, जसवन्तसिंहका कहना सही है. पर केवलदासकी जबानसे सारा हाल सुनना आवश्यकी य समझ इस तरह केवलदाससे प्रश्न करने लगे.

राजा—क्या इस पत्रको क्रोधदासने लिखा है ?

केवलदास—जीहां. उसने इस पत्रको वांए हाथसे लिखाथा.

राजा—ऐसा पत्र लिखनेका कारण क्याथा ?

केवलदास—मंत्रीजी हमारे पीछे पडे हुए हैं, दुःखों पर दुःख दे रहे हैं, इस कारण लिखा गयाथा.

राजा—क्या इस पत्रके लिखवानेमें तुम; मानसिंह तथा किशोरसिंह शामिल हो ?

केवलदास—जीहां.

राजा—यह पत्र कहां लिखा गयाथा ?

केवलदास—क्रोधदासके मकानपर.

राजा—पत्र लिखनेके समय सब तुम पास थे ?

केवलदास—जी हुज़ूर.

राजा—क्या जसवन्तसिंह मानसिंहके मकानपर आया था और तुम्हारी बातें सुन गया है ?

केवलदास—मैंने इनको नहीं देखे पर यह हमारी कही हुई बात बतलाते हैं जिससे आश्चर्य नहीं कि आए होंगे.

राजा—थोडे दिनोंपर तुम सब शाम के समय यमुना किनारे गए थे ?

केवलदास—जी हुज़ूर.

राजा—वहां दूसरा पत्र लिखा जा रहा था ?

केवलदास—जी हुज़ूर. पर क्रोधदास बेचारा इन्कार करता था. जब हम लोगोंने ज़ोर दिया तब लिखने लगा.

राजा—फिर क्या हुआ—

केवलदासने देखा कि, ', यह सब मैं क्या कहता जाता हूं, इसमें सबका नुक़शान होगा, ढेला मारने की बात कहना मुनासिब नहीं है. " ऐसा विचार कर कहने लगा कि, " फिर क्या हुज़ूर! क्रोधदासने पत्र लिखना शुरु किया कि, जसवन्तसिंह आ गए उनके आनेके साथ ही हम लोग भाग गए. "

राजा—क्या जसवन्तसिंहको मानसिंहने ढेला नहीं मारा ?

केवलदास—नहीं तो हुज़ूर ! उसकी क्या मजाल जो जसवन्तसिंहको ढेला मारता.

जसवन्तसिंहने देखा कि, सब बातें ठीक २ कहीं यहां आकर पड़ा, चट से भौंयें चढ़ाकर कहने लगा. “ क्योंरे ! अब वह भी सही २ क्यों नहीं कह देता. नाहक़ क्यों मरता है, तने तो ढेला मारा ही नहीं था. ”

केवलदासने देखा कि, यदि मैं नहीं कहूँगा तो यह दुष्ट मुझे मारेगा. कह दिया कि, “ हुजूर ! मानसिंहने जसवन्तसिंहको यमुनामें ढेला मार गिरा दिया, फिर हम भाग गए. ”

राजा—भागकर फिर कहां गए ?

केवलदास—हुजूर वहीं जहांसे यह पकड कर लाए हैं.

राजा—तुम भागकर वहां क्यों गए थे ?

केवलदास—हमने देखा कि, शहरमें रहेंगे और कहीं जसवन्तसिंह जिन्दा निकल आया तो शीघ्र ही पकड लेगा; डरके मारे पहाडमें चले गए.

राजा—तो क्या किशोरसिंहका यह कहना ग़फलत हैं कि, महादेवका भजन करने गए थे ?

इस प्रश्नका उत्तर बेचारा केवलदास क्या देता ! नीचा शिर कर लिया. केवलदासके इस तरह कहने तथा नीचा शिर कर लेने से राजा साहबको निश्चय हो गया कि, जसवन्तसिंह सच्चा है. अब दूसरोंको बुलाकर इसका निर्णय करना चाहिये. और एक सेवकको मानसिंहको बुलालानेकी आज्ञा दी इतनेमें जसवन्तसिंहने देखा कि, केवलदास कहीं मानसिंहके आतेही नट न जाय, यह कहकर पक्का करने लगा कि, “तेरे कुछ नहीं होगा. मानसिंह आदिसे डर मत जाना. इस तरह सही २ हाल उनके सामने भी कह देना.” यह बातें जसवन्तसिंह केवलदासको कह रहा था कि, आज्ञानुसार वह सेवक मानसिंहको ले आया, जिसके आते ही राजा साहबने

उसे प्रश्न किया, कि "केवलदासने जो जो हाल था कह दिया है, उचित है कि, तुम भी कह दो वरना फिर दया नहीं रहगी."

मानसिंहने देखा कि, " राजा साहव गर्म हुए जाते हैं, केवलदासने तमाम हकीक़त कह दी है. यदि मैं नहीं कहूंगा तो उलटा मारा जाऊगा और मेरे पर राजा साहव फिर किंचित् भी दया नहीं लाएंगे, कह ही दूं. पर कह देने पर मैं वचने नहीं पाऊंगा कहना तो ठीक नहीं. " यह निश्चय कर कहने लगा हुज़ूर ! मैं तो कुछ नहीं जानता.

राजा—क्या तू कुछ नहीं जानता ? (केवलदासकी तरफ दृष्टि कर) क्यांरे केवलदास ! इसीने जसवन्तसिंहको ढेला मारा था न ?

केवलदासने देखा कि, अव यदि नहीं कहता हूं तो मारा जाऊंगा. कहना ही उचित समझ वोला कि, " हां हुजूर "

राजा—ले तेरा वाप क्या कहता है ठीक २ हाल कह दे नहीं तो तेरी वुरी गति होगी .

मानसिंह—(लाचार होकर) जी हां हुजूर ! केवलदास जो कहता है सत्य कहता है.

राजा—केवलदास जो कहता है वह तो सत्य है पर मैं तेरी ज़वानसे कहलाना चाहता हूं. कह कि, तूने जसवन्तसिंह को य- मुनामें ढेला मारा या क्या ?

मानसिंह—माराथा पर मुसीवतका मारा लाचारथा.

राजा साहव फिर कहने लगे, कोई वात नहीं न्याय होगा वैठजा मानसिंह आज्ञा पाकर केवलदास के पास जा वैठा. राजा साहवने फिर किशोरसिंह को वुलानेकी आज्ञादी. आज्ञानुसार

किशोरसिंह आउपस्थित हुआ. प्रथम तो उसनेभी सही हाल कहने में आनाकानीकी पर जब देखाकि पहिलेवाले सही हाल कहचुके हैं उसनेभी कहकर अपने कसूरको कबूल करलिया. किशोरसिंह के सही हाल जाहिर करलेनेके बाद कोधदासको बुलाया गया वह भला शीघ्रही सत्य कब बोलने लगा, हरतरहसे इन्कार करता रहा अन्तमें जाकर राजा साहबने उसे यह प्रश्न पूछा " क्या यहतेरे तीनों साथी गलत कहते हैं ? "

राजासाहबके इस प्रश्नपर क्रोधदास दिलमें बहुत दिलगीर हुआ और मनहीमन कहने लगा " आखिरकों केवलदासने अपना दासपना दिखलादिया मैं कहताथा जो वास्तवमें ठीक निकलापर अब क्या हो सकता है. कहे विदून चुटकारा नहीं. " यह विचारकर कहने लगा " हुजूर! यह पत्र मेराही लिखा हुआ है "

राजा—अब तुम सब मिलकर कहो कि, ऐसा पत्र मंत्रीके विरुद्ध मुझे लिख भेजनेमें तुम्हारा क्या तात्पर्य था ?

चारों की तरफ से क्रोधदास (जो सबमें मुखिया है) कहने लगा " पृथ्वीनाथ ! मंत्रीजी हमको हरतरहसे कष्ट देने लगे तब लाचार होकर यह पत्र भेजाथा परहम ऐसे कर्महीन हैं कि, आज उलटे पकडे गए. "

राजा—(पत्रको हाथमें लेकर) तुमने यह जो पत्रमें लिखा है कि, कलवाली बात मंत्रीने प्रजा वर्ग में बुरी तरहसें जाहिर करदी है, कहांतक सही है ?

क्रोधदास—यह बात बिलकुल गलत है.

राजा—ऐसी गलत बात लिखनेका क्या कारण था ?

क्रोधदास—इसीलिये कि, इसपरसे आप मंत्रीजीपर शीघ्रही नाराज होजाएंगे और हमारा काम बन आएगा.

राजा—तुम्हारा क्या काम वनआना था ?

क्रोधदास—यही कि, आप मंत्रीजी को निकालदेते.

राजा—तुम मंत्रीको निकलवाना चाहते हो ?

इस प्रश्नका उत्तर कोईभी नहीं देसका, सब खामोश हो गए.

इस तरफ लाहोरीमल जय जयके डंके वजा रहा है उस तरफ क्रोडोमल लाहोरीमल पर झूठा दोष रखनेका पश्चात्ताप करता हुआ अपने कर्मोंको रोरहा है. और मनही मन कहरहा है कि, " हाय! मैंने लाहोरीमल पर झूठा कलङ्क क्यों रक्खा ? घरवालोंका कहना क्यों नहीं मान लिया ? अब न मालूम राजासाहव मेरी क्या गति करेंगे शत्रु तो मेरे इस तरह पीछे पडे हुए है. "

अब राजासाहव विचार करने लगे कि, " मुझे इस विषयमें क्या करना उचित होगा ? इन सब वातों परसे यहतो साफ़ ज़ाहिर हो गया कि, लाहोरीमल निर्दोष है, क्रोडीमलने उसपर झूठा कलङ्क रक्खा. जो वातथी क्रोडीमलने प्रजा वर्गमें ज़ाहिर नहीं की, पर इस तरह क्रोडीमल को लाहोरीमल पर झूठा कलङ्क लगाना उचित नहीं था क्यों झूठा पत्र विना नामका लिखकर भेजना इन चारोंको उचित नहीं था यदि कोई कष्ट थातो रूवरुमें आकर मुझे कह जाते या नामवाला पत्र लिखकर भेजते. ध्यान दिया जाता इस तरह एक झूठा पत्र मेरे मंत्रीको मंत्रोपद से हटानेकी ग़र्ज़से भेजना इन लोगोंकी शरारत में दाखिल है इतनाज नहीं मानसिंह तो अव्वल दर्जेका वदमाश है जिसने पुलिस अमलदारको जानसे मारनेकी ग़र्ज़से यमुना में ढेला मारा. यहतो अच्छा हुआ कि, वह वचने पाया नहीं तो वेचारा मरही जाता. ऐसे शख्सों को उचित दण्ड किये विदून छोडना राज्यनीतिके विरुद्ध है

यदि मैं इस समय दया लाकर इन्हें छोडूंगा तो आइन्दाको लोगो का और हॉसला वढ़ेगा पर इन सबको क्या दण्ड किया जाय ? मंत्रीने बातको प्रजावर्ग में नहीं कही. पर वेचारे निरपराधी लाहोरीमल पर झूठा दोष रक्खा, उसकी बुराईकी, जिससे दसहजार रुपया दंड करना उचित होगा चारों जिन्होंने एक सलाह होकर पत्रको लिखाया उनको एक २ सालकी जेलकी सज़ा देना ठीक होगा तथा मानासह जिसने जसवन्तसिंहके प्राण हरनेका विचारकर यमुना में ढेला मारा, उसको दस साल वंदी खाने में और रखना उचित होगा. इन सबको इस तरह दंड दिया जायपर जसवन्तसिंहके लिये क्या ? जिसने प्राणका तनिक भी खयाल न कर इस गुप्त विषय का पता लगाया, उसके लियेयह उचित है कि, मंत्रीके दण्डमें से पान सौ रूपये इनाम दिये जाएँ तथा आजसे दस रूपये माहवार (घटाए हुए रुपये शामिल गिनकर) तनख्वाह में बढ़ाए जाएं. लाहोरीमल जिसने सत्य बोला उसकी तनख्वाह में पचास रुपये माहवार तरक्की किये जाने चाहियें. इस तरह राजा साहबने निश्चयकर कागज़को हाथमें लिया और सब बाते लिखकर आम इजलासमें सुनादी. बाद सुना लेनेके मंत्रीको कहने लगे " देखो तुमने बातको प्रजावर्ग में नही कही इस कारण दण्ड करके ही छोडा है. भविष्यमे पूरा खयाल रहे नहीं तो कभी मंत्रीपद से हटादिये जाओ गे.

राजा साहबकी आज्ञानुसार सब तामील हुई मंत्री क्रोडीमलने दस हजार रुपये लाकर सामने रक्खे, जिसमेंसे पानसौ रुपये जसवन्तसिंहको बतौर इनाम दिये गए. क्रोधदास, केवलदास तथा किशोरसिंह एक २ साल तथा मानसिह अग्यारह सालके लिये बंदीखाने भेजे गए. बदन्तर दरबार बरखास्त हुआ.

अब इन चारोंको अपने २ कहने तथा क्रोधदासका कहना न माननेका बहुत कुछ पश्चात्ताप होने लगा पर क्या हो सकताथा होनी बात कदापि टल नहीं सकती.

पाठकगण ! देखिये कैसा उत्तम न्याय तथा कर्मकी बलिहारी लाहोरीमल जो निर्दोष था उसने पचास रुपये माहवारकी तरक्की पाई. जसवन्तसिंह जिसकी तनख्वाहमें मंत्रीने पांच रुपये कम कियेथे वही आज दस रुपयेकी तरक्की तथा पानसौ रुपय इनाम पा रहा है. क्रोडीमल जिसने लाहोरीमल पर झुठा दोष रक्खा उसने दस हजार रुपये दंडके दिये. क्रोधदास, केवलदास, किशोरसिंह तथा मानसिंह जिन्होंने झूठा पत्र भेजा तथा मानसिंहने विनाकारण जसवन्तसिंह-को प्राण हरनके लिये यमुनामें ढेला मारा, बंदीखाने भेजे गए हैं. किसीने ठीक कहा है कि, "सचेका बोल बाला झूठेका मुंह काला" जो सत्य परथे उनका आज बोल बाला हुआ जो झूठेथे उनका मुंह काला हुआ.

प्रकरण २६.

क्रोडीमल की वही मूढ़ मांत.



डीमल कचहरीसे रुखसत होकर घरको लौटा. और आते ही अपने कमरेमें दाखिल होकर प्रथम तो मन ही मन पश्चाताप करने लगा. " हाय ! यह मुझे क्या सूझी जो लाहोरीमलपर झूठ कलङ्क दिया. मैंने अपनी प्रिय पत्नी तथा मातुश्री आदिका कहना क्यों नहीं माना ?

यदि मान जाता और लाहोरीमलका नाम न लेता तो आज मुझे दस हज़ार रुपये देने न पडते. कहां तो मैं एक पैसेके लिये रोता था, कहां आज एकदम दस हज़ार रुपये विना कारण चले गए फिरभी दसहज़ार रुपयेके लिये मैं अपने दिलमें ऐसा विचार करुं कि, रुपये और कमालूंगा पर इस तरह मेरे पर दंडका कलङ्क हुआ जोतो अब मिटने से रहा. लोग जिन्होने सुना और सुनेंगे क्या कहेंगे कि, क्रोडीमल ने लाहोरीमलपर झूठा कलङ्क रक्खा जिस कारण दसहज़ार रुपये दंडके दिये मैंने बहुत ही बुरा किया." लेकिन थोडेही समयमें उसका भाव बदल गया और विचारने लगा कि, मैं ऐसे समय लाहोरीमल का नाम न लेता तो और क्या करता आखिर किसी तरहसे मुझे उसको प्राइवेट सेक्रेटरी के पदसे हटाना भीतो है. क्या करुं बीचमें जसवन्तासिंह आपडा, नहीं तो मैं सफलता प्राप्त किये विना कदापि न रहता खैर हुआ सो हुआ पर अबभी मुझे चुपका नहीं बैठना चाहिये. उचित है कि, कोई ऐसी युक्ति निकालूं कि शीघ्रही काम बनजाय और मैं अलहदाका अलहदा बचा रहूं. नहीं तो ज़रुर है कि, वह मुझे कष्ट देगा और धक्का मारेगा पर वह युक्ति कौनसी ? यही कि, आज तक मैं जितने बुरे काम उसने राज्य आदिके विरुद्ध किये हैं उसका एक लिस्ट तैयार कर राजासाहबको पेश करदूं उसपरसे नहीं निकालेंगे तो जायगे कहां."

"अरे ! लाहोरीमल-काही क्या मुझे जसवन्तासिंह, क्रोधदास मानसिंह केवलदास तथा किशोरासिंहका भी तो बदला लेना है, जिनके कारण यह काम होने पाया. यदि क्रोधदास आदिपत्र नहीं लिखते और जसवन्तासिंह पता नहीं लगाता तो आज मुझे दसहज़ार रुपये देने नहीं पडते. किन्तु क्रोधदास आदि यारोंसे हालहीमें

तो बदला लेनेसे रहा वह तो इस समय बंदीखाने भेजे गए हैं. एक तरहसे तो उन्होंने अपने किये की सज़ा पाली पर मैं अपना बदला लिये विना क्यों रहने लगा ? समय आए देखूंगा. रहा इस समय जसवन्तसिंह के लिये, सो उसने भी आज तकमें जो जो बुरे काम किये हैं उसका एक लिस्ट तैयार करके राजासाहब को पेश कर दूंगा, आपसे खातमा हो जायगा. यह अरिहन्त देवने बहुत अच्छा किया जो मुझे मंत्रीपदसे नहीं हटाया यदि हटादिया होता तो कदापि मैं इन बदमाशों का बदला लेने नहीं पाता, उलटे वे मुझे कष्ट देते पर शुक्र है अरिहन्त देवका कि, मंत्रीपद पर कायम हूं अब मुझे उचित है कि शीघ्रही बदलालूं नहीं तो यह लोग आजसे मंत्रीपदसे हटाने की कोशिश करेंगे कहीं वे सफलता प्राप्त कर गए तो मेरे दिलको पश्चात्ताप रह जायगा. पर वैसे लिस्ट मेरे पास कहां तैयार है जो कलही लेजाकर पेश करदूं ? तेजमल के पास न हो, ज़रा बुलाकर पूछलूं. " इतना विचारकर एक सेवक को तेजमल के बुलालानेकी आज्ञादी आज्ञानुसार तेजमल आउपस्थित हुआ उसके आते ही मंत्री कहने लगा " कहो तेजमल आजका न्याय सुना कि नहीं. कैसा अच्छा न्याय. कहीं भी एक छोटी बात पर दसहज़ार रुपये दंडके सुने थे ? "

तेजमल—नहीं साहब यह तो बड़ाभारी दंड क्या राजासाहब ने फैसला देनेके वक्त किंचित् विचार नहीं किया ?

क्रोडीमल—तू विचार की पूछता है, वह तो आज मेरे पर आग बबूला हुए जाते थे.

तेजमल—फिरभी आप कुछ कहते तो सही कि, "हुजूर मेरा इस में क्या कसूर. जो इतना भारी दण्ड. "

क्रोडीमल—यदि कहता तो और मारा जाता चुपका बैठना

ही उस समय उचित था, नहीं तो मंत्रीपद से भी हटादिया जाता.

तेजमल—हां साहब यह तो अच्छा हुआ कि, आप अपनी जगह पर क़ायम रहे मंत्रीपद अपने घर रहा है तो शत्रुओं को भी सम्हाल लेंगे.

क्रोडीमल—आज लाहोरीमल तथा जसवन्तसिंह मारे आनन्द के फूलकर कुप्पा हो गए. दरबार में वैठे हुए भी मेरी तरफ दृष्टि-कर हँसरहे थे और मूछों पर ताव देते थे.

तेजमल—क्यों नहीं साहब आज उनके हंसने काही समय है पर देखना अपने भी उनको कैसे रु लाते हैं.

क्रोडीमल—अब कब रुलाएगा? शीघ्रही मसाला तैयारकर?

तेजमल—मसाला बना बनाया तैयार है.

क्रोडीमल—क्या कहता है मसाला बना बनाया तैयार है?

तेजमल—जीहां आपने पहिले लाहोरीमल के विरुद्ध राजा-साहब से अर्ज़ करने का कहाथा तभी फिक्रमें था.

क्रोडीमल—पर मैं तो जसवन्तसिंह के लिये और मसाला चाहता हूं.

तेजमल—उसके लियेभी लीजिये.

क्रोडीमल—लातो कहां है कलही लेजाकर राजासाहब को पेश करता हूं.

तेजमल—आप इतनी ताकीद न कीजिये थोडे दिनों के लिये शान्त रहिये.

क्रोडीमल—यहतो मैंभी जानता हूं कि, धीरज के फल मीठे होते हैं. मैंने पहिले भी तुम्हारी राय के विरुद्ध सजगढ़ ठाकुर के विषय में राजासाहबको कहा तो किंचित् ध्यान नहीं दिया पर अब विलम्ब करना अच्छा नहीं. अपने यदि चुपके बैठेंगे तो वह

लोग अपने को गिराने का फिक्र करेंगे, नहीं तो किसी कदर दवे रहेंगे.

तेजमल—जैसी आज्ञा पर वह तो घर पर पडे हैं.

क्रोडीमल—जा अभी दौडता हुआ ले आ.

क्रोडीमल की आज्ञानुसार तेजमल घर चला गया. क्रोडीमल फिर से चिन्ता मग्न हुआ और विचार करने लगा कि, "अब जब तक मैं कमर कसकर सामने होके लाहोरीमल से नहीं लडूंगा, कदापि वह अपनी बदमाशियोंसे वाज़ नहीं आयगा. लाहोरीमल खुद कह चुका है कि, इसका मज़ा न चखाऊं तो मेरा नाम लाहोरीमल नहीं सो हकीकत में वह नहीं चूकेगा. प्रथम से ही ऐसा उपाय करना चाहिये कि, वह कुछ करने ही न पावे. देखते हैं कि, सांप अपने को काटेगा तो प्रथम ही उसे मार देना चाहिये कि, काटने नहीं पावे. लाहोरीमल एक तरह का सांप है उसको तो मार ही देना अच्छा है. देखें तेजमल क्या मसाला लाता है. इस प्रकार क्रोडीमल अपने कुत्सित विचारों में मग्न हो रहा है इतनेमें तेजमल आ उपस्थित हुआ उसके आते ही क्रोडीमलने प्रश्न किया कि, क्यों तेजमल ! मसाला ले आया ?

तेजमल—(दो पत्र क्रोडीमलके हाथमे देते हुए) हां साहब ले आया लीजिये और देखिये.

क्रोडीमल—(प्रसन्नहोकर) क्या आजतकमें लाहोरीमलने पचीसहज़ार रुपये तथा जसवन्तसिंहने पंदरहज़ार रुपये खाए हैं ?

तेजमल—जीहां

क्रोडीमल—तबतो इन पत्रोंके देखते ही राजासाहब दोनोंको निकाल देंगे.

तेजमल—क्यों नहीं ऐसे रिशवत खोरोंको राजासाहब क्यों

रखने लगे. यदि रक्खेंगे तो दंड किये विनातो कदापि नहीं रहेंगे.

क्रोडीमल—ठीक कहता है पर यदि राजासाहवने इसका सबूत पूछा तो क्या जवाव दिया जावे ?

तेजमल—सबूत के लिये पूछें तो आप कहदेना कि इसमें लिखी आसामियों को पूछ लिया जाय.

क्रोडीमल—(पत्रोंको अपने जेब में रखकर) ठीक है यदि पूछेंगे तो ऐसा ही उत्तर दूंगा.

तेजमल—(क्रोडीमलको चिडानेकी ग़रज से) अभी मैं आ रहाथा तो लाहोरीमलके मकानपर वह, जसवन्तसिंह, आदि मारे खुशी के बाग़ बाग़ हो रहे हैं और आज लाहोरीमल का विचार जसवन्तसिंहको दावत देनेका है.

क्रोडीमल—क्या लाहोरीमल जसवन्तसिंहको दावत देता है ?

तेजमल—हां साहव अवतो आप उनका क्या पूछो लाट साहिव बने हुए हैं.

क्रोडीमल—ठीक है लाट साहिव वनने दो कलही सव ठीक करता हूं.

तेजमल—इनको तो एक दफ़ा सीधे करने ही चाहियें.

क्रोडीमल—देखतो सही एसा ही होगा पर राजगढ़ ठाकुरने जो अर्ज़ी दी उसमें लाहोरीमल की मिलावटथी; ऐसी कोइ साक्षी तू बता सकता है ? यदि वतादेतो मज़ा आजाय.

तेजमल—मैंने वहुत कुछ कोशिशकी मगर कोइ साक्षी नहीं मिला राजगढ़ ठाकुरको भी कहाकि तेरा काम करादें, लाहोरीमल ने तुमको अर्ज़ी देनेकी सलाहदी होतो कहदे, किन्तु इन्कार करता है.

क्रोडीमल—खैर कोइ वात नहीं देखलूंगा. क्योंरे रेवड के जागीरके मामलेको इसी लाहोरीमल तथा जसवन्तसिंहने विगाडाथा न.

तेजमल—हा साहब यहतो लिखना मैं भूल गया इन्होंने ही तो दोहजार रुपये खाकरके मामलेको बिगाडाथा. लाइये यहभी उन पत्रोंमें लिख दूं.

कोडीमल—नहीं २ लिखनेकी कोई जरूरत नहीं है ज़बानी कह दूंगा.

तेजमल—जैसी मर्ज़ी.

अब तेजमलने देखा कि, रात हुए जाती है भोजन करना है, कोडीमलसे घर जानेकी आज्ञा लेकर रवाना हुआ. तेजमलका जाना था कि, घरमेंसे बुद्धिधन सौभाग्यवती तथा सुन्दरी कमरेमें आ दाखिल हुए. दस हज़ारके दंडकी बात सुनकर आज इनके चहरे मलिनसे होरहे हैं और इसी लिये अपनी मलिनता मिटानेको कोडीमलके पास आए हैं. पर कोडीमलतो अपने ध्यानमें बैठा हुआ है. इन लोगोंकी तरफ किंचित् दृष्टिभी नहीं है. बुद्धिधनने देखा कि, पिताश्री हमारी तरफ टुक दृष्टि तक नहीं करते, अपने हाथसे कोडीमलको पकडकर कहने लगा. पिताश्री ! आज ऐसे चिन्ता मग्न क्यों होरहेहो कि, हमारी तरफ टुक दृष्टिभी नहीं ?

कोडीमल—बेटा क्या कहूं बैठे बिठाये दस हज़ारकी ठोकर लगी.

बुद्धिधन—आपने हम लोगोंका कहना नहीं माना उसीका यह परिणाम है, यदि आप मानजाते तो आज यह बात बनने नहीं पाती. इसपर ही क्या अब न मालूम लाहोरीमल आपके विरुद्ध क्या २ करेगा.

कोडीमल—यही तो मुझे विचार हो रहा है कि, इस परसे

कहीं लाहारीमल मुझे धक्का नहीं मारदे, अतएव यही उचित है कि, किसी तरहसे इसीका खातमा कर दूं.

बुद्धिधन—नहीं पिताश्री यह आपको उचित नहीं है. लाहोरीमलपर झूठा कलंक रखकर उस दृढ़ सम्पके नाश करनेका प्रताप है कि, आप पर दस हजार रुपये दंड हुए. आपको उचित है कि, उससे सम्प करलें या चुपके बैठे रहें. जब तक आपके भाग्यमें यह मंत्री पद लिखा है, कोई नहीं ले सकता. यदि लाहोरीमल कोई उपाय करेगा तो निष्फल जायगा. क्या आपने सम्पकी महिमा नहीं देखी है ? सर्व कारोबार सम्पही से ठीक तौरपर चलता है:—

राग सोरठ

प्यारे जन ग्रहोरी, सम्प व्हवार—टेर
सम्पसे धरनी धीर कहावत, सम्पसे गिरिवरधार.
सम्पसे भानुचंद्र प्रकाशे, तारा मंडल सार ॥ १ ॥
राजा शोभत प्रजा जनसे, प्रजा नृपसे धार,
सम्पसे हिल मिल जग सुख पावे, करते जय जय कार ॥२॥
तार तार कर रज्जु बनत है, बांधत गज मतवार,
तूटत नहीं बल करी देखो, सम्प तणी बलिहार ॥ ३ ॥
सम्पसे दुनिया सुख मय लागत, सफल जिवन हरवार,
पद निधान सम्पसे पावत, पावत सत सुख सार ॥ ४ ॥
अचल सम्प कर नित दृढ निजसे, पावे अखन्ड सुखसार,
भवजल व्याधी निकट न आवत, निजसे ह्रीं मस्त अपार ॥५॥"

क्रोडीमल—यह तो सब कुछ है पर वह ऐसा हरामजादा है कि, सम्प न कर शीघ्रही मुझे बदनाम कराएगा.

आपका ग्रह मन्द था जो छोटी सी बात काम कर गई. अब यदि लाहोरीमलका ग्रह बलवान् है तो कुछ नहीं होगा.

क्रोडीमल—मेरेसे उसका ग्रह बलवान् कैसा आखिर वह बढ़ाया हुआ तो मेरा ही है ?

बुद्धिधन—(मन ही मन अपने पिताको मूर्ख कहकर) इस में क्या होगया. क्या आपने कोई पुरुष ऐसा नहीं देखा है जो अपने गुरुसे भी बढ़ गया हो ?

क्रोडीमल—ऐसे तो बहुत देखे हैं पर लाहोरीमल ऐसा चेला नहीं है जो मेरेसे किसी बातमें बढ़ सके.

बुद्धिधन—ऐसा समझनेमें आप भूल करते हैं, इन झगडोंको छोडिये और अपना काम किये जाइये.

क्रोडीमल—नहीं बेटा अब तो जब तक मैं लाहोरीमल आदि को एक दफा अपनी नजरोंसे गिरा हुआ न देखूं मुझे कदापि शान्ति नहीं होगी, मैं जो करूं करने दे.

बुद्धिधन—(घबराता हुआ) नहीं पिताश्री आप ऐसा न करें, शत्रुता बुरी बला है, इससे न तो कोई जीता है न जीतेगा. कभी कोई जीत भी गया तो आखिरको उसका परिणाम बुरा होगा. यदि आप लाहोरीमल आदिके शत्रु बनकर उनको गिरा भी देंगे तो क्या हो गया, वह फिर आपको गिराकर इसी तरहका कष्ट देंगे.

क्रोडीमल—नहीं बेटा एक दफा तो देखने दे, कुछ नहीं होगा. वे तो बिलकुल पानीमें बैठ जाएंगे.

बुद्धिधनने देखा कि, यहांपर मेरा कहना फलीभूत नहीं होगा चुपका बैठा रहा. इतनेमें सौभाग्यवती कहने लगी " बेटा ! पोता जो कहता है ठीक कहता है मान जा.

क्रोडीमल—(अब लगी यह बोलने) बेटा तथा तुम जो कहते हो सब ठीक है, पर मुझे तो शत्रुओंसे बदला लेना है.

सौभाग्यवती—वह तेरे शत्रु कैसे बने जो बदला लेनेको तैयार हुआ है ? उलटा शत्रु तो तू उनका बना जो लाहोरीमलपर झूंठा कलंक रक्खा.

क्रोडीमल—देखो यह हरामजादी जो मुझको शत्रु बनाती है इसको यहतो मालूम नहीं है कि, वह कई बार मेरेसे शत्रुता कर चुका है. तू इन बातोंको नहीं जानती प्रथम कई बार लाहोरीमल मुझसे शत्रुता कर चुका था और इसी कारण मैंने यह कलङ्क उसपर रक्खा था. अब मैं उसका बदला न लूं तो क्या करुं. क्या तुम लोगोंकी राय अनुसार चुपका बैठकर अपना मंत्रीपद गुमा दूं ? कदापि नहीं जाओ अपना काम करो.

सौभाग्यवती—(लाचार होकर) हमारी राय के अनुसार तो मंत्रीपद नहीं जायगा, यदि तू नहीं माने तो तेरी राय ऐसी है कि, शीघ्र ही मंत्रीपद चला जायगा.

क्रोडीमल—(क्रोधित होकर) मंत्रीपद जाय तो भले जाय पर मैं तो मन अपना चाहा करूंगा.

क्रोडीमलकी स्त्री सुन्दरीने देखा कि, " यह समय मेरे कहने का नहीं है (अपने बेटेको खेंचकर) चलो बेटा तुम्हें सबक भी तो याद करना है. " सुन्दरीके इतना कहते ही तीनों वहांसे उठकर नीचे आये और परस्पर यही बातें करने लगे.

बुद्धिधन—मातुश्री ! अपने भाग्यमें कुछ खोटा बदा है जो पिताश्री कहना नहीं मानते.

सुन्दरी—मुझे भी ऐसा ही दीखताहै. यह उस तेजमल की बदमाशी है कि, तुम्हारे पिताकी ऐसी मति करदी.

बुद्धिधन—इसमें तेजमल क्या करे ?

सुन्दरी—हां बेटा जो भावी होना रहा है उसको कौन रोक सकता है.

बुद्धिधन—मातुश्री यह तो है पर आदमीको कुछ विचारना चाहिये कि अन्तमें जाकर उसका परिणाम क्या होगा. मेरे पिता परिणामको नहीं सोचते. यदि लाहोरीमलपर कलङ्क रखनेसे पहिले कुछ विचार करते तो आज दस हज़ार रुपये देने नहीं पडते,

सुन्दरी—न विचारनेके तो यह सब दुःख ही हैं. अभी भी न मालूम क्या होगा.

बुद्धिधन—मुझे तो यह आश्चर्य होता है कि, कन्याशालामें रुपये देनेसे पिताश्रीने चटपे इन्कार कर दियाथा, राज्यमें तो शीघ्रही दसहज़ार रुपये निकाल कर दे आए.

सौभाग्यवती—राज्यमें दसहज़ार रुपये नहीं देता तो शीघ्रही बंदीख़ाने भेजा जाता. कन्याशाला बंदीख़ाने थोडेही भेजती थी.

बुद्धिधन—ठीक कहा पर वह तो किसी समय ऐसा बंदीख़ाने भेजेगी कि, पिताश्रीका छुटना मुश्किल हो जायगा. लोगोंकी आह बुरी होती है और उसीका यह सब परिणाम है. यदि कन्या शाला आदि धर्मके काम पर पिताश्रीकी लागनी होती तो यह कष्ट क्यों आता.

सौभाग्यवती—वास्तवमें तू ठीक कहता है कि, कन्याशाला आदिका एक तरहका बंदीख़ाना ही है कि जिसमें तेरा पिता बैठा-हुआ कष्ट उठाता है और उठाएगा.

बुद्धिधन—खैर माजी होना होगा सो होगा चिन्ता करनेसे क्या फायदा पर यहतो कहो पिताश्रीने भोजन किया कि नहीं.

सुन्दरी—अभी भोजन कहां किया है जा बेटा बुलाला.

मातुश्रीकी आज्ञानुसार बुद्धिधन अपने पिताको बुलाने गया और जाकर उनको भोजन कर लेनेका कहा, उत्तरमें कोडीमलने कहा कि, "आज भोजन पर रुचि नहीं है" अब बुद्धिधनसे रहा नहीं गया शीघ्रही बोल उठा "यह कैसी बात ! हाथोंसे चिन्ता मोल लेना और फिर भोजनसे अरुचि" बुद्धिधनके इतना कहने पर कोडीमल उठ खड़ाहुआ और भोजन करने गया. किन्तु चिन्ता के मारे भोजन पर इसकी बिलकुल रुचि नहीं है. यही विचार कर रहा है कि, भोर कब हो और राजा साहबसे कहकर लाहोरीमलका खातमा कराऊं, दो चार निवाले लेकर रवाना हुआ. बुद्धिधन आदिने बहुत कुछ चाहा कि, कुछ और खाते पर चिन्ता कहां खाने देती थी. कोडीमल जाकर पलङ्ग पर लेट गया उसकी स्त्री सुन्दरी भी कामसे निवृत्त होकर अपने स्वामीके पास गई बुद्धिधन आदिभी अपने स्थान पर गए.

आज सबके मन इस तरहसे दुःख मना रहे हैं जिसको यह लेखनी वर्णन करनेके लिये अशक्त हो रही है. बेचारी सौभाग्यवती मनही मन खाट पर सोती हुई अपने कर्मोंको रो रही है और कहती है कि, "अब मेरा मृत्यु क्यों नहीं होजाता ? यदि मृत्यु होजाय तो मुझे यह दुःख तो देखने न पड़े" बुद्धिधन तथा उसकी स्त्री कनक कुमारी भी पलङ्ग पर लेटे हुए यही चिन्ता कर रहे हैं और कहते हैं कि, क्या हमको कष्ट आना बदा है जो कोडीमल की मति फिरगई है ? वास्तवमें परिणाम कोडीमलकी मतिका

एसाही दीखता है." क्रोडीमलकी स्त्री सुन्दरीका हृदय अपने स्वामीकी ऐसी मति देखकर फटा जा रहा है और कोई युक्ति न पाकर अपने आंखोंसे आंसू बहा रही है तथा मनही मन कह रही है " क्या मुझे स्वप्नमें भी ऐसा ख़याल था कि, मेरा स्वामी मूढ़ मतिका होगा और किसीका कहना तक नहीं मानेगा ? कदापि नहीं. कहने वालेने ठीक कहा है कि, बड़ेघर लड़कीका देना बुरा होता है. यदि मेरे पिता मुझे यहां न देते किसी ग़रीबके घर देते तो आज मुझे इस तरह रोना न पडता पर इसमें मेरा पिता क्या करे, संयोग जो यहांका था " बेचारी सुन्दरी इस तरह अपने मनको दुखाकर रो रही है कि, क्रोडीमलने अपनी चिन्ताका भङ्ग किया और कहने लगा " बैठी २ रो क्यों रही है दसहज़ार रुपये गए तो कोई बात नहीं और कमाळूंगा. देखतो लाहोरीमलकी कैसी ख़बर लेता हूं "

सुन्दरी—कृपानाथ ! दसहज़ार रुपयेकी कोई चिन्ता नहीं. कृपाकर आप अपने मनसे लाहोरीमलको भूलजाओ. वह पूरा लाहोरीमल है, आपको कदापि जीतने नहीं देगा.

क्रोडीमल—नहीं प्यारी ! यह कदापि नहीं होगा देख मैं कल क्या करता हूं. ज़रा धीरज धर.

सुन्दरी—मैं धीरज धरूं तो कैसे धरूं. मेरा मन नहीं कहता कि, आप लाहोरीमलसे जीतने पाओगे कृपाकर इस झगड़ेको छोड़ो और सदैवके लिये सुखी बनो.

क्रोडीमल—(नाराज़ होकर) मुझे सुख नहीं चाहिये दुख पाऊंगा पर लाहोरीमलसे बदला लिये बिना कदापि नहीं रहूंगा.

सुन्दरी—मन चाहे सो करो पर अपनी जीत कदापि नहीं होगी.

क्रोडीमल अपनी स्त्रीकी जबानसे ऐसे बुरे शब्द सुनकर क्रोधित हुआ और बेचारी अबलाके तीन लातें मारी, लाचार सुन्दरी विना बोले पड़ी रही तथा क्रोडीमलभी अपने बुरे ख़यालातोंकी लहरोंमें मस्त हो पड़ा रहा.

पाठकगण! सच है जब बुरे दिन आते हैं बुराही सूझता है. यदि क्रोडीमलके भाग्यमें शुभ वदा होता तो अपने कुटुम्बकी ऐसी उपदेशिक बातोंको माने विना कदापि नहीं रहता.

प्रकरण २७

आनन्द.



त्रिका समय है लगभग दस अग्यारह बजे होंगे. मनुष्यमात्र इस समय अपने २ घरोंमें सोतेहुए आरामकर रहे हैं. कोइ एसेभी होंगे जो कार्यवश अभीतक सोने नहीं पाए हैं. ऐसे समयमें आज लाहोरीमलके मकान पर आनन्द वर्त रहा है लाहोरीमल, जसवन्तसिंह, गणपति, ईश्वरदास, आदि बैठे हुए हँसी मज़ाक कर रहे हैं पास में नायका नाना प्रकार के सुन्दर राग गा रही है:—

(ठुमरी)

जारे सइयां, पडुमें तोरे पइयां, सतावो, काऐ मोको. ॥टेर॥

एसाही दीखता है." क्रोडीमलकी स्त्री सुन्दरीका हृदय अपने स्वामीकी ऐसी मति देखकर फटा जा रहा है और कोई युक्ति न पाकर अपने आंखोंसे आंसू बहा रही है तथा मनही मन कह रही है "क्या मुझे स्वप्नमें भी ऐसा ख़याल था कि, मेरा स्वामी मूढ़ मतिका होगा और किसीका कहना तक नही मानेगा? कदापि नहीं. कहने वालेने ठीक कहा है कि, बड़ेघर लडकीका देना बुरा होता है. यदि मेरे पिता मुझे यहां न देते किसी ग़रीबके घर देते तो आज मुझे इस तरह रोना न पडता पर इसमें मेरा पिता क्या करे, संयोग जो यहांका था" बेचारी सुन्दरी इस तरह अपने मनको दुखाकर रो रही है कि, क्रोडीमलने अपनी चिन्ताका भङ्ग किया और कहने लगा "बैठी २ रो क्यों रही है दसहज़ार रुपये गए तो कोई बात नहीं और कमालूंगा. देखतो लाहोरीमलकी कैसी ख़बर लेता हूं"

सुन्दरी—कृपानाथ! दसहज़ार रुपयेकी कोई चिन्ता नही. कृपाकर आप अपने मनसे लाहोरीमलको भूलजाओ. वह पूरा लाहोरीमल है, आपको कदापि जीतने नहीं देगा.

क्रोडीमल—नहीं प्यारी! यह कदापि नहीं होगा देख मैं कल क्या करता हूं. ज़रा धीरज धर.

सुन्दरी—मैं धीरज धरूं तो कैसे धरूं. मेरा मन नहीं कहता कि, आप लाहोरीमलसे जीतने पाओगे कृपाकर इस झगड़ेको छोड़ो और सदैवके लिये सुखी बनो.

क्रोडीमल—(नाराज़ होकर) मुझे सुख नहीं चाहिये दुख पाऊंगा पर लाहोरीमलसे बदला लिये बिना कदापि नहीं रहूंगा.

सुन्दरी—मन चाहे सो करो पर अपनी जीत कदापि नहीं होगी.

क्रोडीमल अपनी स्त्रीकी जवानसे ऐसे बुरे शब्द सुनकर क्रोधित हुआ और बेचारी अबलाके तीन लातें मारी, लाचार सुन्दरी विना बोले पड़ी रही तथा क्रोडीमलभी अपने बुरे खयालातोंकी लहरोंमें मस्त हो पड़ा रहा.

पाठकगण ! सच है जब बुरे दिन आते हैं बुराही सूझता है. यदि क्रोडीमलके भाग्यमें शुभ वदा होता तो अपने कुटुम्बकी ऐसी उपदेशिक बातोंको माने विना कदापि नहीं रहता.

प्रकरण २७

आनन्द.



त्रिका समय है लगभग दस अग्यारह बजे होंगे. मनुष्यमात्र इस समय अपने २ घरोंमें सोतेहुए आराम कर रहे हैं. कोइ एसेभी होंगे जो कार्यवश अभीतक सोने नहीं पाए हैं. ऐसे समयमें आज लाहोरीमलके मकान पर आनन्द वर्त रहा है लाहोरीमल, जसवन्तसिंह, गणपति, ईश्वरदास, आदि बैठे हुए हँसी मजाक कर रहे हैं पास में नायका नाना प्रकार के सुन्दर राग गा रही है:—

(ठुमरी)

जारे सइयां, पइयां तोरे पड़यां, सतावो, काए मोको. ॥टेर॥

पिया प्यारे सो तनपे जाउं वारी, मोहे ब्रहा की मारो क्यों कठारी;
कठारी मोरे सइयां, क्यों मारो मोरे पइयां;
छलबलीयां, पलपलीयां, रङ्गरलीयां. ॥ जारे ॥
ब्रहा की मारी मैं तो राड करूंगी, कैसे निठुर तुम हाय;
मोहे कछुन सुहाए, पीया बिन जीया जाय,
जी जलाए, तर्साए, तलफाए. ॥ जारे ॥

(गज़ल)

कोइ ऐसी सखी चातुर नामिली, मुझे पीयुके द्वारे बिठा देती,
मैंने राहमदीना तो देखी नहीं, मोरी बइयां पकड के बता देती.
मोरे मनमें है अबतो जोगनिया बनु, और मलके भबूत मदीने चलु.
सखी हिन्दकी नगरीमें नाहीं रहूं, तोरी मितन चैन जरा देती
पीया सात समुन्दर पार बसे, मोरे पग में तो चलनेका जोर नहीं,
नहीं आइ मदीनेकी कोइ हवा, मुझे मुल्क अरब मे उडा देती.
मोरी मेकुमे उम्रतो सगरी कटी, गइ पीयुकी नगरियातो सोच पडी
कोइ गुइयां भी मेरे ना साथ चली, मोहे दानकी रीत बता देती
मैंतो सुनीरी जरिया में तडफत हूं पीया मुल्क अरब में बिराजतहै,
कभीं देते जो सुपने में दर्श दिखा, तो मैं चर्णोंशिश नमादेती.

जब वह यह राग गाचुकी, एक कहता है मलार गाओ, इतने में दूसरा कहता हैकि यह समय मलार गानेका नहीं है माढ गाओ आखिर नायका वही राग गाती है जो सबके मनोरञ्जन हो. इस तरहसे नाना प्रकारके गायन गाते तथा सुनते हुए अर्ध रात्रि हो

आइ विचारी नायका भी गाते २ थक गई उसने देखाकि, कोइ वंस भी नहीं कहता, अपनी तानमान छोड़दी और मामूली तौरसे बैठी २ गाने लगीवंस क्या था, उसको थकी हुइ देखकर शीघ्रही गाना बंद करनेकी आज्ञा हुइ. नायकाने मन भाती बात जानकर तथा विचारकर कि; " कहां तक ठीक तरह से गाती जाऊं. कोइ हदभी तो हो इतनी देरतक गालिया. " गाना बंद कर दिया और इनामकी लालसा में बैठ गइ. लाहोरीमलने चटसे उठकर पचास रुपये लाके उसको देकर विदाकी. फिर सबको भोजन कराने की फिक्र में लगा.

पाठकगण ! इस समय जैन घरमें नायका का गाना तथा भोजन का करना जानकर आपको आश्चर्य होता होगा पर यह केवल लाहोरीमल की अज्ञानता से है.

भोजन की सब सामग्री लाकर खानेवालोंकी नजरों के सामने रक्खीगई. सब अपनी २ जगह बैठकर सहर्ष खाने लगे और साथ में वार्तालाप भी शुरू किया.

गणपति—यार जसवन्त ! खूब किया कामका काम बनाया और भोजन और खिलाया देखो कैसा उत्तम भोजन बना है (पकोडियां को हाथ में लेकर) यार पकोडियां खूब अच्छी बनीं हैं.

ईश्वरदास—यार पकोडियां ही क्या कचोडियां देखो सबको मात कर रही हैं.

जसवन्तसिंह—हां भाइ हकीकत में सब अच्छा बना है पर लाहोरीमल ! नाहक को तुमने यह परिश्रम क्यों उठाया मंत्रीजी सुनेंगे तो जलेंगे ?

ईश्वरदास—जलेंगे तो अपना क्या लेलेंगे, मैंने तो उनके शरिस्तेदार तेजमलको भी कहदिया,

जसवन्तसिंह—नहीं यार तुझे ऐसा नहीं करनाथा जलते हुए को जलाना अच्छा नहीं.

लाहोरीमल—अब क्या! जो हुआ सो हुआ मंत्रीजी तो अपने पर सदैव जला करेंगे.

गणपति—हमने उनका क्या बिगाडा जो जलेंगे उलटा कसूर किया तो उन्होंने किया है जो तुमपर कलङ्क रक्खा जसवन्तसिंहने तो अच्छा किया जो सत्य निकाल लाया.

लाहोरीमल—यह सब कुछ है यदि वह विचार करेतो इस में कुछ नहीं है पर आखिर जसवन्तसिंह की बदौलत दसहजार रुपये दंड लगे हैं सो जले विना कैसे रहेंगे.

जसवन्तसिंह—यही तो मेरा कहना है ईश्वरदासने शीघ्रही उस बदमाश तेजमलको कहदिया, वह मंत्रीजीको कहे विना कदापि नहीं रहेगा, मंत्रीजी नही जलते होंगे तोभी जलेंगे.

ईश्वरदास—क्या होगया मैंनेतो कहदिया जलना हो तो जल जाओ.

गणपति—खैर भाई हुआसो हुआ पर लाहोरीमल पर राजा साहब अति प्रसन्न हैं जो पचास रुपयेकी तरकी दी.

लाहोरीमल—यह अनुग्रह जसवन्तसिंहकी है.

जसवन्तसिंह—नहीं भाई इसमें मैं क्या कर सकता था भाग्यकी बात है.

गणपति—अच्छा हुआ जो अपने मित्रको तरकी मिली पर लाहोरीमल! यहतो कहो मंत्री कब बनोगे. दोस्त कहीं ऐसा न कर जाना कि मंत्री हुए बाद अपने मित्रोंको भूल जाओ.

लाहोरीमल--गणपति ! क्या कहता है वह बुड्ढा जब तक बैठा है मंत्री पद मुझे मिलनेसे रहा. यदि मिल जायतो फिर क्या सबको निहाल कर दूं.

जसवन्तसिंह--यहतो रहने दो लाहोरीमल ! बड़े हुए पीछे सबकी आंखें पीछे आजाती हैं. हरिलालको देखो बचपनमें क्रोडी-मल तथा उसके कितनी प्रीति थी. किन्तु क्रोडीमल जबसे मंत्री हुआ है उलटा उसके पीछे पड़ा है.

लाहोरीमल--यह सब कुछ है पर मैं क्रोडीमल नहीं हूं लाहो-रीमल हूं.

गणपति--ठीक है वह तो अपने नाम विरुद्ध होकर उसके पीछे पड़ा है जब कि तुम लाहोरी २ करके हमको भूल जाओगे.

लाहोरीमल--(अपने नामको बुरा कहकर) नहीं तो मेरा कहनेका ऐसा मतलब नहीं है. क्या करूं नाम ही मेरा ऐसा है जो तुम बुरा मतलब निकालते हो. मैं तुम्हारे साथ कदापि ऐसा बर्ताव नहीं करूंगा.

जसवन्तसिंह--ठीक है समय आए देखेंगे.

ईश्वरदास--कहो लाहोरीमल ! आपने मंत्रीजीको काम परसे हटानेका क्या प्रबंध किया, अब उनसे थोडाही चूकना है.

गणपति--हां भाई वास्तवमें क्रोडीमलने कलङ्क रखनेमें कमी नहीं रक्खी है. यह तो तुम्हारे भाग्य अच्छे थे जो जसवन्तसिंह पता लगा लाया, नहीं तो तुमतो नोकरीसे भी गए गुजरे थे. अव-श्यमेव मंत्रीजीके निकालनेकी युक्ति निकालना चाहिये.

लाहोरीमल--मैं कब चूकने लगा शीघ्रही लो.

जसवन्तसिंह—नहीं तो इतनी जल्दी नहीं करना चाहिये, देखो मंत्रीजी क्या करते हैं.

लाहोरीमल—ठीक है तुम कहोगे वैसा करूंगा पर बातेंही करोगे याकि कुछ खाओगे भी ?

लाहोरीमलका इतना कहना था कि सबने बातोंका करना बंद करदिया और खाने लगे. थोडेही समयमें सब खाचुके, हाथ मुंह धोकर बैठे कि फिर वार्तालाप चला.

गणपति—कितने बजे ?

जसवन्तसिंह—(जेबमेंसे घडी निकाल कर) दो बजने ही वाले हैं.

गणपति—चलो यार घर जाएं बहुत देर हुई.

ईश्वरदास—तुमतो जाते हो पर मेरा क्या किया लाहोरीमलको कहोतो मेरा कुछ करदे, मंत्रीजी पीछे पडा हुआ है.

जसवन्तसिंह—तुम क्या चाहते हो ?

ईश्वरदास—मेरा कुआ मंत्रीजीने खालसे कर दिया है वह वापिस चाहता हूं.

जसवन्तसिंह—यहतो भारी मामला है अभी उसका कुछ नहीं हो सकता. जरा खामोश रहो समय आए सब ठीक होगा.

ईश्वरदास—जैसी मर्जी.

इस तरहकी दो एक बातें इनके परस्पर और हुई फिर सब अपने २ घर चले गए.

आज लाहोरीमल कामसे निपट कर आनन्द मनाता हुआ अपनी प्रियाके साथ पलङ्गपर सोताहुआ है और मनही मन कह

रहा है कि " वाहरे परमात्मा ! मुझको स्वप्नमें भी ख़याल नहीं था, कि मैं इस कष्टसे मुक्त होकर तरक्की पाऊंगा. " लाहोरीमलकी भार्या केतकी अपने स्वामीको आनन्द मग्न देखती हुई कहने लगी " स्वामीनाथ ! जसवन्तसिंह आपका शुभचिन्तक है जिसने अपने प्राणका तनिक भी ख़याल न कर आपपर आए हुए झूठे कलङ्कको दूर किया. "

लाहोरीमल—क्यों नहीं मैं उसका हज़ार वार कृतज्ञ हूं.

केतकी—मैंने सुना है कि आपको पचास रुपयेकी तरक्की मिली, क्या बात सही है ?

लाहोरीमल—हां प्रिये ! वात सही है. मेरे क्या जसवन्तसिंहकेभी तो दस रुपये तनख्वाहमें वढ़े हैं, उसकोतो पांनसौ रुपये इनामके और मिले हैं.

केतकी—क्यों नहीं साहव उसने इनाम जैसाही काम किया है. गुमनाम पत्रका पता लगाना सहल वात नहीं थी.

लाहोरीमल—अच्छाहुआ उसको राजसे मिलगया नहीं तो अपने कुछ देना पडता.

केतकी—हां साहव यदि राजसे नहीं मिलता तो देनाही पडता, आखिर उसने आपके लिये महनत उठाई थी.

लाहोरीमल—लो अब सो जायं रात्रि ज़ियादा गई है सुबह कचहरीभी तो जाना है.

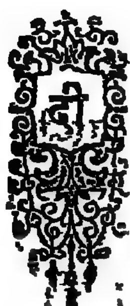
इतना कह दोनो सोगए.

देखिये पाठकवृन्द ! अभीसे लाहोरीमलका भाव बदलने लगा है जो कहता है " अच्छा हुआ उसको राजसे मिलगया नहीं

तो अपने कुछ देना पडता '' फिर अगाडी जाकर नमालूम अपने मित्रोंको क्या फायदा देगा.

प्रकरण २८

क्रोडीमलकी निष्फलता.



दीनका समय है सूर्यनारायणने पूरे तौरसे अपना तेज पृथ्वी पर फैला रक्खा है. लगभग अग्यारह बजे का समय होगा इस समय मनुष्यमात्र अपने २ कार्य में लगेहुए हैं. राजा युगेन्द्रपालसिंह भी यह समय काम का समझकर दरबारमें आ उपस्थित हुए हैं. पास में उनके मंत्री क्रोडीमल तथा प्राईवेट सेक्रेटरी लाहोरीमल बैठे हुए राज्यकार्य कर रहे हैं. क्रोडीमल के दिल में इस बात की खलबली मची हुई है कि, कोई भी समय ऐसा मिलेकि उन पत्रों को शीघ्रही राजासाहब को पेश करूं और इस दुष्ट लाहोरीमल का खातमा हो इतने में राजासाहब क्रोडीमल से कहने लगे " क्यों मंत्री ! कलका न्याय तो ठीक हुआ न ? "

क्रोडीमल—क्या कहूं आपने मुझको तो मारही डाला.

राजा—नहीं मारता तो क्या करता, तूने लाहोरीमल पर झूठा कलङ्क क्यों लगाया मैं झूठे पन को पसंद नही करता

क्रोडीमल—खैर पृथ्वीनाथ की इच्छा, पर लाहोरीमल को आपने तरक्की दी सो कैसे, क्या लाहोरीमल ने कोई ऐसा कार्य किया था ?

राजा---उसने मेरेसे सत्य कहा कि यह कृत्य मेरा नहीं है, तथा परिश्रम उठाकर पता लगवाया, इस कारण तरक़ी दीगई है. यदि तू झूठ नहीं बोलता तो तुझे भीतरक़ी दी जाती.

क्रोडीमल---(पत्रोंको जेब में से निकालकर और राजासाहब के हाथमें देकर) लीजिये और इन पत्रों को देखिये मैं इस में सच्चा हूँ मुझे तरक़ी दीजिये और दुष्टको उचित दंड कीजिये.

राजा---(पत्रों को लेकर) क्या कहता है ? इसमें तू सच्चा है ? और इन लोगों ने इतने रुपये खाये हैं ?

क्रोडीमल---(प्रसन्न होकर) जी हाँ

राजा---पर इसमें तू सच्चा कैसा ?

क्रोडीमल---इसलिये कि इन पत्रोंमें जो कुछ लिखा है सही है.

राजा---(मनही मन विचारकर कि यह कैसा मूर्ख है) यहतो सब कुछ है पर इस तरह सत्यता नहीं मानी जाती कोई बात मैं पूँछूं और उसमें कोई सच झूठ बोल जाए.

क्रोडीमल---अच्छा आप लाहोरीमल तथा जसवन्तसिंहको इस विषयमें पूछिये क्या उत्तर देते हैं.

राजा---उन लोगोंकी सत्यताकी काररवाईसे कलही तुम पर दंड हुआ है. आश्चर्य नहीं तुमने शत्रुता से लिखाकर लाया हो मैं उनसे पूछना उचित नहीं समझता क्या तुम लोगोंसे रिशवत नहीं लेते हो ?

क्रोडीमल---(उदास होकर) हुजूर क्या कहते हैं, मैं लोगों से रिश्वत लेता हूँ ? कदापि नहीं. यही हरामज़ादे हैं जो राजका नुक़सान कर ग़रीबों के गले काटते हैं कृपाकर इनसे पूछिये तो सही.

राजा---मैं अफ़सोस करता हूं कि तू अभीतक झूठ बोल रहा

है दसहज़ार रुपये देनेपरभी नसीहत नहीं हुई क्या तू रिश्वत नहीं खाता ?

मंत्री--(कांपते हुए) हुजूर ! इस तरह से नहीं खाता कि, जिस में राजका हित मारा जाय.

राजा--फिर पहिले ही ऐसा क्यों नहीं कहदिया, नाहक़को झूठ बोलकर मुझे क्यों जलाया. (पत्रों को फाडकर) जा अपना कामकर.

लाहोरीमल इसपरसे ताडगया कि, यह शिकायतें सब मंत्रीजी मेरी कर रहे हैं इतनी देर तकतो इसने बीचमे बोलना उचित नहीं समझा पर जब राजासाहब पत्रोंको फाडने लगे, शीघ्रही अपने स्थान परसे उठा और कहने लगा. " कृपानाथ ! आपने पत्रोंको फाड क्यों दिये ? मंत्रीजीकी सत्यता और निकल आती. "

क्रोडीमल निराश होकर बैठ गया और मनही मन कहने लगा " लाहोरीमल पर राजासाहबकी कैसी कृपा जो पत्रतक फाडदिये. हाय ! अफ़सोस ! मैंने अपने पुत्र आदिका कहना क्यो नहीं माना ? नाहक़ लाहोरीमलको और क्यों जलाया ? न मालूम यह मेरी क्या गति करेगा. " पर फिरभी उससे नहीं रहागया वह रेंवडवाली बात एक कागज़ पर लिखके राजासाहबको दी जिससे राजासाहब और क्रोधित हुए, उसको भी शीघ्रही फाडदिया तब मंत्री कहने लगा " हुजूर यह कैसा न्याय जो मेरी सत्य बात नहीं सुनते यह लोगतो फूलकर कुप्पे हुए जाते हैं. देखिये कलही इन लोगों ने कितना अफंड मचाया, रंडिऐं नचाईं, दावत खाई यह सब काररवाई मुझको चिडानेको ही थी न ? नहींतो ऐसा कौनसा मौक़ा था जो इसतरह खुशी मनाते थे. "

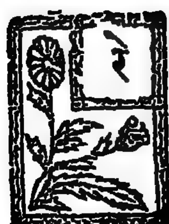
राजासाहबने मंत्रीके इतने कहनेपर किंचित् लक्ष दिया, और लाहोरीमलसे पूछने लगे. " क्योंरे तुम लोगोंने मंत्रीको जलानेकी ग़र्ज़से कल नाच नचाया था, दावत की थी. ख़बरदार आइन्दा ऐसा कभी मत करो. " लाहोरीमलने हानिकारक परिणामको देखकर ज़ियादा न कहते उत्तरमें इतनाही कहा " जो आज्ञा "

कोडीमलने देखाकि इसपरसे कुछ नहीं हुआ कुछ और उपाय सोचना चाहिये. पर मेरा उपाय वृथा है. हक़ीक़तमें लाहोरीमलके भाग्य बलवान् दीखते हैं जो मेरी सच्ची बात भी काम नहीं कर जाती, अजी काम करना तो बडी बात है राजा साहब किंचित लक्ष भी नहीं देते. अब तो मेरे पुत्रके कहे अनुसार ख़ामोश बैठना ही उत्तम है " यह निश्चय कर कोडीमल राज्य कार्यमें लीन हुआ.

पाठकगण ! अब कोडीमलके ख़ामोशी इख़्तियार करनेसें क्या होसकता है. जो बात राजा साहब तथा लाहोरीमल आदितक पहुचने की नहीं थी वह तो पहुंच ही चुकी. अब लाहोरीमल कोडीमलको क्यों छोडने लगा.

प्रकरण २९

कोडीमलका एक और शत्रु.



वडनामी गांवहै जो विश्वेश्वरनगरके इलाक़ेमें हैं यह गांव राजधानीसे पचास मीलकी दूरीपर एकान्तमें वसा हुआ है. उसके चारों तरफ़ पहाड़ने इसतरह घेरा कर रक्खा है, मानों क़ुदरती क़िलेबंदी है. किसी ज़मानेमें यहांके ज़मीनदार राज्यमें बहादुर तथा शूरवीर कह-

छाए जातेथे. पर अब समयके फेरफारसे वे बातें नही रही. इस समय यहाँका ज़मीनदार तेजसिंह है, जो वास्तवमें होनहार पढ़ा लिखा है जिसकी उम्र लगभग बीसवर्षकी होगी. लेकिन इसके पिता इसको बाल्यावस्थामें छोडकर चले गये जिससे पासवाले ज़मीनदारोंने जिनकी हद्द इसके पट्टेके गांवोंसे मिलती है, बेचारेको हैरान कर रक्खा है. किसीने कुंआ दबा लिया है, तो कोई खेत-पर अपनाही हक़ बताता है. कोई कहता है " हमारी हद यहांतक नहीं वहांतक है. " हालही में दो सालसे इसने कामको हाथमें ले रक्खा है. और जिन २ दुशमनोंने इसकी ज़मीन खेत आदि दबाए है उनको छुडानेकी कोसिग कररहा है. कृष्णपुरीके ज़मीनदारने इसकी दो मील ज़मीन दबा ली जिसका इसने सरकारमें दावा पेश किया. दावेके पेश होनेपर इसके तसफ़ियेको लाहोरीमल जस-वन्तसिंह आदि भेजे गये. उन्होंने दोनोंकी हकीकत सुनकरके तथा एक दूसरेका सबूत लेकर कृष्णपुरीके ज़मीनदारको झूठा साबित किया. इतनाज नहीं उस बातको कृष्णपुरीके ज़मीनदारने माना और बाखुशी एक निविस्त इस तरहकी पेश करदी कि, वास्तबमें रेवड ज़मीनदारका दावा सही है. किन्तु उसका फ़ैसला तथा नक़शा अभीतक न पाकर बेचारा तेजसिंह चिन्ता कररहा है और मनही मन कहरहा है " लाहोरीमल तथा जसवन्तसिंह दोहज़ार रुपये लेगये जो भी गये और फ़ैसलाभी नहीं हुआ. उन लोगोंको जा-कर कहताहूं तो यही उत्तर देते हैं कि, हमने तुम्हारा काम बना दिया, फ़ैसला देना मंत्रीजीका काम है उनके पास जाओ. और जब मंत्रीजीके पास जाता हूं तो सुनते तक नहीं. पान सुपारी देने लगातो नाराज़ हुए. न मालूम इसमें क्या भेद है ? मालूम होता है कि, मंत्रीजी कृष्णपुरीवालोंसे मिल गये है. और शत्रुताके कारण

लाहोरीमल तथा जसवन्तसिंहका किया हुआ काम कायम रखना नहीं चाहते, पर इसमें मैं क्या करूं. क्या मैं मंत्रीजीको कुछ नहीं देताथा? एक हज़ार रुपये ले गयाथा इसके सिवाय और क्या देता? कोई बात नहीं अब तो यदि मंत्रीजी एक पैसाभी मांगे तो नहीं दूंगा. देखूं मंत्रीजी मेरा कैसे बिगाडते हैं. यदि वह सिर पटककेभी मरजायें तो मेरा दावा ख़ारिज नहीं होसकता, खुद कृष्णपुरीका ज़मीनदार लिखकर दे चुका है. क्या वह उसकोभी झूंठा साबित करदेंगे? कदापि नहीं पर आश्चर्य नहीं कि, वैसा कर बैठें, क्योंकि अब कृष्णपुरीवाला उससे नटता है और कहता है कि, लाहोरीमल आदिने धोखेमें लाकर मुझसे लिखवा लिया है. इस तरह नटनेसे क्या होगा, अपनी मालकी कासबूतभी तो देना पडेगा. यह सब कुछ है पर न मालूम इसतरह कहां तक मेरा झगडा योंही चलता रहेगा. हाय शोक! यह मेरे हाथसे पहिला काम हुआथा जिसमेंभी विघ्न आ पडा. न मालूम इसतरह विघ्न आ पडेगा तो दूसरे झगडे कैसे तैह होंगे. परमात्मा! इस बालावस्थामें पडती हुई आफ़तोंसे छुटकारा देनेवाला एक तूही है. पर अब मैं क्या युक्ति निकालूं कि मेरा काम शीघ्रही हो जाय? जहांतक क्रोडीमल मंत्रीपदपर है, मेरा काम कदापि होने नहीं पायगा. उसकी मौजूदगीमें दूसरे झगडेभी छेडने वृथा हैं. उचित है कि, कोई ऐसी युक्ति निकालूं कि क्रोडीमलका ख़ातमा होजाय और लाहोरीमल मंत्री होजाय, तो फिर शीघ्रही यहतो क्या मेरे सब काम होजायंगे. किन्तु वह युक्ति कौनसी? मुझे तो मालूम नहीं कामदारसे पूछूं." यह निश्चय कर सेवकको कामदारके बुला लानेकी आज्ञा दी. आज्ञानुसार कामदार आ उपस्थित हुआ. उसके आतेही

तेजसिंह कहने लगा "कहो कामदारजी ! अपने वह कृष्णपुरी वाला झगड़ा तैह नहीं हुआ क्या करना चाहिये.

कामदार—हां साहब अभीतक फ़ैसला नहीं हुआ हुक्म हो तो एक पत्र और लिख भेजूं.

तेजसिंह—पत्र किसको लिखोगे ?

कामदार—मंत्रीजीको और किसको लिखूं उन्हींके पास तो मिसल है.

तेजसिंह—मिसल उनके पास है जो तो मैंभी जानता हूं, पर मंत्रीजी कदापि फ़ैसला नहीं करेंगे वह तो कृष्णपुरी वालोंकी तरफ हो रहे हैं..

कामदार—यह तो मुझेभी मालूम है पर किसी तरहसे कामभी तो कराना है ?

तेजसिंह—काम तो कराना है पर करे कौन. अपने मंत्रीजी को एक हज़ार रुपये कहचुके पर न लें और न करें तो क्या करना !

कामदार—आप कहें तो राजा साहबको एक अर्जी लिखकर भेजी जाय.

तेजसिंह—इस तरह अर्ज़ी या पत्र भेजनेसे कुछ नहीं होगा. कोई ऐसी युक्ति निकालनी चाहिये कि, यह मंत्री ही बदल जाय और अपना काम बन आवे. नहीं तो जबतक क्रोडीमल मंत्री है, कदापि नहीं होगा.

कामदार—न मालूम मंत्रीजी अपने विरुद्ध क्यों होरहे हैं.

तेजमल—और तो कोई कारण नही है, लाहोरीमल आदिसे उनकी शत्रुता है. वह उनका किया हुआ कांम क्यों कायम रखने लगे,

कामदार—एसाही दीखता है किन्तु अपने पास ऐसी युक्ति कहां जो मंत्रीजीका शीघ्रही ख़ातमा करें.

तेजसिंह—तपास करके निकालना चाहिये, नहीं तो अपना काम सब विगड़ जायगा देखो कभीके कृष्णपुरी वाले अपनी ज़मीन का हासिल लेकर खारहे हैं.

कामदारने देखा कि, अब युक्ति बताए विना चलेगा नहीं. थोडीदेर विचार कर कहने लगा कि, अपने दो गांव केरवा तथा आंसीमें राजका आधा लगता है, वह पंद्रह वर्षसे मंत्रीजी ही ले रहे हैं, राज्यमें नही जाता है.

तेजमल—यह कैसे ?

कामदार—आपकी नाबालगीके कारण मुझसे कहा था, कि मैं तुम्हारे ठिकानेमें दखल नहीं दूंगा, तुम इन दो गावोंका आधा मुझे दिया करना. मैंने उसको नाबालगीकी हालत देखकर सहर्ष स्वीकार किया और अभीतक देता जा रहा हूँ.

तेजसिंह—इसका कुछ हिसाब किताब है ?

कामदार—हिसाब किताब क्यों नहीं, सब मौजूद है.

तेजसिंह—अच्छा यही मुझे चाहिये, आजतकमें जितनी पैदा-यश मंत्रीजीके घर गई है उसका हिसाब लादो, शीघ्रही जाकर राजा साहबको कहताहूं और इसीपरसे मंत्रीका खातमा कराता हूं.

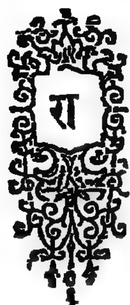
कामदार—जो आज्ञा.

इतना कहकर चलागया. तेजसिंह यह निराली युक्ति देखकर अति प्रसन्न हुआ और अब यह चाहता है कि, कामदार कब हिसाब लाये और मैं विश्वेश्वर नगर जाऊं.



प्रकरण ३०.

कोडीमलके पश्चात्ताप पर बुद्धिधनका उपदेश.



रात्रिका समय है. सूर्यनारायण कभीके अस्ताचलका उल्लंघन कर गये हैं. चन्द्रमाने अपना मंद २ तेज पृथ्वीपर फैलाना शुरू करदिया है चारों ओर वायु चलरही है ऐसे समयमें कोडीमल पलङ्गपर बैठा हुआ विचारकर रहा है " हाय ! मुझे यह क्या सूझी जो एक काभी नही माना और चटसे लाहोरीमल तथा जसवन्तसिंहकी शिकायत करदी. क्यामैं रिशवत नही खाता हूँ ? देखो राजा साहब स्वयं पूछ बैठे ' क्या तू रिश्वत नहीं खाता है ' अहलकार मात्रको मिल जाता है, खाए बिना नहीं रहते. फिर मैंने शिकायत क्यों की ? इससे मुझको क्या मिल गया ? उलटा मैंने अपने शत्रुको जलाया. अब वह मेरी शिकायत न करते होंगे तो करेंगे. किन्तु मैं क्या करता सिवाय इसके और कौनसा उपाय था ? ख़ैर जो हुआ सो हुआ अब इस तरह ताकीद करना मुनासिब नहीं. समय आए बातको करूँगा, ताकि शीघ्र ही मेरा काम बन जायेगा. लाहोरीमल जसवन्तसिंह आदिको छोडूंगा तो नही, जिन्होंने बिना कारण दस हज़ार रुपयेकी बरबादी कराई. एकबार कृतकार्य नहीं हुआ तो दूसरी बार, दूसरी बार नहीं तो तीसरीबार पर इसतरह निष्फलता देखकर हार कदापि नहीं मानूंगा. परिश्रमका फल मीठा होता है. " इस तरहके तर्क वितर्क अपने मनमें कर रहा है.

पाठकगण ! देखिये अभीतक क्रोडीमलको कोई शिक्षा नहीं हुई और यही सूझरही है कि, कब समय आवे और अपने शत्रुओंका खातमा करूं. उसको शिक्षा क्यों होने लगी वास्तवमें शत्रुता ऐसीही हुआ करती है. किन्तु क्रोडीमलका यह कहना उसकी मूर्खतामें दाखिल है. " एकबार कृतकार्य नहीं हुआ तो दूसरीवार, दूसरीवार नहीं तो तीसरीवार पर इसतरह निष्फलता देखकर कदापि हार नहीं मानूंगा. परिश्रमका फल मीठा होता है. " शत्रुताके कार्यमें ऐसे वाक्यों पर अमल करना कष्टदायक होता है. यहतो उत्तम तथा शुभ कार्यके लिये कहा गया हैं, न कि शत्रूता जैसे कुकर्मके लिये. यदि शत्रुता आदि कुकार्योंमें इस तरह किया जायेगा तो शत्रुता बढ़ती जायगी, जो सबसे बुरी बला हैं. जिसका परिणाम अन्तमें यह होगा कि, दोनो धूलमें मिलेंगे और अपने कियेका पश्चात्ताप करेंगे.

इस समय बुद्धिधन अपने पिताकी हार सुनकर मनही मन एक तरहसे आनन्द मानता हुआ कि " हम लोगोंका कहना नहीं माना " और दूसरी तरहसे चिन्ता करता हुआ कि " शत्रु और जले " अपने पिताके पास आ उपस्थित हुआ. जिसे देखकर क्रोडीमलने कहा " मैंने तुम लोगोंका कहना नहीं माना जिसका परिणाम बुरा हुआ. "

बुद्धिधन दरबारकी सर्व हकीकत प्रथमसे ही जान गया था पर अनजान बनकर कहने लगा " पिताश्री क्या हुआ ? "

क्रोडीमल—मैंने उन पत्रोंको राजा साहबके हाथमें दिये, जो लाहोरीमल तथा जसवंन्तसिंहके विरुद्ध थे, वह देखे न देखे करके फाड़ दिये और उलटे मुझे पुछने लगे कि, क्या तू रिश्वत नहीं खाता है.

बुद्धिधन—ठीक कहा. आप कौनसी रिशवत नहीं खाते है, अहङ्कार मात्र इससे अलहदा नहीं है.

क्रोडीमल—(क्रोधित होकर) यहतो ठीक है पर इतनी रिश्वत तो कहीं भी नहीं सुनी, क्या इस तरह रिशवत ले और उसको कोई दंड न हो ? यहतो आश्चर्यकी बात है.

बुद्धिधन—मने आपको कहा नहीं था कि, भाग्य प्रवल हुआ करता है. लाहोरीमलका भाग्य इस समय ऐसा प्रवल है कि, राजा साहवने आपके वे पत्रतक फाडदिये.

क्रोडीमल—हकीकतमें तुमने ठीक कहा था पर मैंने नहीं माना. इसमें क्या विगड़ गया अब नहीं तो बादमें सही, कबतक बचने पायेगा.

बुद्धिधन—(फिरभी वही मति देखकर) अभीतक आपको शिक्षा नहीं हुई, जो उसी उपायमे लग रहे हो कृपाकर मेरा कहना मानिये और इस बलाको छोड़िये.

क्रोडीमलने देखा कि, इस तरह स्पष्ट कहनेमें इन दुष्टोंकी ज़बान फल जाती है. साफ़ बात कहना उचित नही, इतना ही कहा " ठीक है देखूंगा "

बुद्धिधन चतुरतो था ही इतना कहनेमें ही समझ गया कि, अभीतक पिताश्रीका भाव नही वदला है और उपदेशका करना उचित समझ कहने लगा. " देखना वेखना कुछ नहीं मेरा कहना मानिये और आते हुए दुःखको मिटानेके लिये अपने भावोंको शीघ्रही वदलिये नहीं तो आपको कष्ट उठाना पडेगा और हम इससे भी विशेप उठायेंगे. अपने कुटुम्बको इस तरह दुःखरूपी नावमें पटकनेका कार्य मत कीजियेगा. "

क्रोडीमल—क्या तू मेरा संतान हो करके इस तरह आते हुए कष्टसे डरता है ? धिकार है तुझे प्रथमतो मैं ऐसा कार्य करूंगा कि, कोई कष्ट तुम्हें नहीं आयेगा. कभी किंचित् आ भी गया तो क्या होगया, धैर्यधरो और शत्रुओंका वदला लेने दो.

बुद्धिधन—(मनही मन अपने पिताको धिक्कारता हुआ) मं कष्टसे नहीं डरता हूं और न शत्रुओंको पीठ वताने जैसा हूं पर ऐसे बुरे काममें सामना करनेसे, न तो जीत जीतमें कही जाती, न उससे किंचित् लाभ, उलटी हानि होती है, फिर मैं आपकी वातको कैसे मानं , कृपाकर ज़रा विचारिये,

क्रोडीमल—क्या मैं जो काम करता हूं वह बुरा है, ?

बुद्धिधन—बुरा नहीं तो क्या ? आपही कहिये लाहोरीमल आदिने आपका क्या विगाड़ा था जो ख़ामख्वाहको उनके शिर हुए और अव शत्रुताका झंडा लिये हुए फिररहे हो ? इस तरहसे कुछ नहीं होगा हमेशा सत्यकी जय हुआ करती है,

क्रोडीमलने देखा कि, मेरे पुत्रने भविष्यके लियेभी बुरा कह दिया इस समय तो इसका कहना स्वीकार करनाही उचित है और कहने लगा " अव मैं उनके विरुद्ध कोई काम नहीं करूंगा "

बुद्धिधन—(प्रसन्न होकर) वस आपतो ख़ामोश वैठ कर अपना काम किये जाइए, यदि उन लोगोंने कोई बुरा काम आपके विरुद्ध किया है तो उनका कर्म उनको आपसे फल देगा,

क्रोडीमल—ठीक है तुम कहोगे वैसाही करूंगा,

बुद्धिधनने देखा कि, पक्का कर देना अच्छा होगा अपने पिता से कहने लगा " तेजमल वड़ा हरामज़ादा है, उसकी राय आप कदापि नहीं मानें, वह तो अपनी शत्रुता निकालनेके लिये लाहो-

रीमल आदिके विरुद्ध आपको झूंठी २ बातें कहकर चिड़ाता है,वह देखता है कि, मेरा इसमें क्या बिगड़ेगा अलगका अलग और दिल चाहा काम बने ”

क्रोडीमल—ठीक है,

इतना कहना था कि, तेजमल आ उपस्थित हुआ, उसको देखकर बुद्धिधनको प्रथम तो यह खयाल आया कि, ‘ कहीं इसने मेरी बात सुनतो नहीं ली, ’ पर जब, उसने कुछ नहीं कहा, समझ लिया कि ‘ बातको तो सुनने नहीं पाया, ’ बुद्धिधनने यहभी विचार किया कि, ‘ कहीं यह दुष्ट पिताश्रीको कुरास्ते न लेजाय नहीं तो बना बनाया खेल बिगड़ जायगा, मेरा यहां ही बैठे रहना उचित है ’ और ज्योंका त्यों बैठा रहा,

तेजमलको यह मालूम नहीं है कि, आजके विषयमें बुद्धिधन क्रोडीमलको उपदेश करचुका है, वहतो हमेशाकी तरह कहने लगा “ क्या उन पत्रों परसे भी शत्रुओंका खातमा नहीं हुआ ?” क्रोडीमलने प्रथम तो मनही मन विचार किया “ इसका उत्तर दूं या नहीं यदि दूं और कहता हूं कि, शत्रुओंका खातमा नहीं हुआ और उपाय करूंगा, तब तो पुत्र नाराज होता है और यदि न दूं या ऐसा कहूं तो यह मुझे ना हिम्मत बताकर कुछ सुनायेगा, उचित है कि कोई और ही गोल मटोल उत्तर दूं ” यह निश्चय कर कहने लगा राजा साहब न सुनें तो अपने इसमें क्या करें,

तेजमल—क्या उन पत्रोंपर राजा साहबने लक्ष नहीं दिया ?

क्रोडीमल—अरे लक्षका देना तो बडी बात है, देखे न देखे करके शीघ्रही फाड़दिये,

तेजमल—क्या कहते हो, पत्रोंको ही फाड़दिये ?

क्रोडीमल—हां फाड़दिये,

तेजमल---यह आपकी जल्दबाज़ीका कारण है,

कोडीमल---हुआ ऐसाही है ख़ैर अब जाने भी दो ऐसे झगड़ों को,

तेजमल---वाह साहब जाने क्यों दें और लीजिये मेरे पास ख़ज़ाना भरा हुआ है,

अब बुद्धिधनने देखा कि, " लगा मेरे पिताकी मति फिराने शीघ्रही बचिमें बोल उठा " भाई ख़ज़ाना अपने घर रक्खो हमारे यहां न तो उसकी ज़रूरत है न हम चाहते, "

तेजमलने देखा कि, बुद्धिधन ऐसी बातोंको पसंद नहीं करता. लड़का है अभीसे क्यों पसंद करने लगा ? किसीने बहका दिया होगा, इसको यह मालूम नहीं है कि, वह तो परमात्माका बना बनाया एक ज्ञानी पुरुष है, चटसे कह बैठा " तुम अभी नादानहो ऐसी बातोंको नहीं समझ सकते, बैठे सुना करो, "

बुद्धिधन तेजमलके ऐसा कहनेसे प्रथम तो शीघ्रही क्रोधित होगया पर ज़रा अपने ज्ञानको काममे लाकर आए हुए क्रोधको दूर किया और कहने लगा, " हक़ीक़तमें मैं नादान हूं पर अपने घरका मैं मुख़्त्यार हूं न कि तुम, मैं किसीसे शत्रुता करना नहीं चाहता, तुम उसका फल थोड़ेही चखने आओगे ? आख़िर शत्रुताके कारण किसीने कष्ट दिया तो भोगना तो हमें पड़ेगा, कृपाकर भविष्यके लिये ऐसी बात छोड़ो जो काम करनेका है और जिसके लिये राज तुमको तनख़्वाह देता है वह करो जिसमें तुम्हारा भी कल्याण है, "

तेजमल आज बुद्धिधनकी ज़बानसे ऐसी निराली बातें सुनकर लाल पीला होगया पर क्या हो सकता था आख़िर वह मन्त्रीकी

पुत्र है, खामोश बैठा रहा और थोड़ेही समयके बाद क्रोडीमल्लसे आज्ञा लेकर चला गया,

बुद्धिधनने तेजमल्के थोडेसे कहेपर पानी फिराना आवश्यक समझा और अपने पितासे कहने लगा. ' पिताश्री देखी इस बदमाशकी कार्रवाई ? इसके घरका क्या बिगड़ता है नुकसान होतो अपने हो.

क्रोडीमल—नारे इस तरह मुंहपर उसको नहीं फटकारनाथा इससे अपने कई मतलब निकलते है, यह बिचारा क्या करे.

बुद्धिधन—मतलब न निकले तो न सही पर यही बदमाश है जो आपको खोटी सलाह दे रहा है.' आप ऐसा विचार ही न रक्खें कि, इसके बिदन आपका काम नहीं चलेगा आप कहें तो इससेभी उत्तम पुरुष लादूं. मैंने उसको ऐसा क्या बुरा कहा, यदि मेरी बातको माने तो उसके लिये भी भला ही है.

क्रोडीमलने देखा कि, आज बेटा मेरा बिगडकर आया है और इसका कहना सत्य होनेके कारणमैं भी कहनेसे मजबूर हो रहा हूं. इतनाही कहा कि " ठीक है बेटा जाओ अब सो जाओ.

बुद्धिधन उठ खड़ा हुआ और उठते हुए भी इतना कहकर " तेजमलकी बातको आप कदापि न मानना इसीमें आपका कल्याण है. नहीं तो हम सब मर मिटेंगे " आनन्दकी लहरोंमें मस्त होता हुआ चला गया और जाने के साथ ही यह समाचार, जो वास्तवमें किंचित् इन लोगोंके लिये शुभ कहा जा सकता है, अपनी मातुश्री आदिको कह सुनाया. जो सुनकर अति प्रसन्न हुई और कहने लगी कि आजसे भी मान जायतो किसी कदर अच्छा है.

पाठकगण ! आज आप बुद्धिधनको अपने पिताको इतने वलके साथ कहना जानकर आश्चर्य करते होंगे पर कहा गया है कि " मरता क्या न करता " बुद्धिधन आज शामको खेलमें गया हुआथा वहां उसके मित्रोंने ताना देकर कहा " हम लोगोंको उपदेश करता फिरता है. अपने पिताको क्यों नही कहता जो कोरे मूढ़ है. उनको जाकर उपदेश कर जिससे ग़रीबोंका पालन हो. " उस जोशमें साहसी वनकर अपने पितासे यह सब वातें कहने पाया है और क्रोडीमलभी हारकर मानने पाया है.

प्रकरण ३२.

क्रोडीमलको गिरानेकी युक्तिमें लाहोरीमल.



भातका समय है. सूर्यनारायण उदय होचुके हैं. मन्द २ शीतल वायु चल रही है. पक्षीगण मधुरी वाणीसे वोल रहे हैं. ऐसे समयमें आज लाहोरीमल अपने मकान पर वैठा हुआ विचार कररहा है और मनही मन कहरहा है. " अरे क्रोडीमल ! मैंने तेरा क्या विगाड़ा जो इसतरह मेरा कट्टर शत्रु वना, झूंठा कलङ्क रक्खा तथा राजासाहव को मेरी शिकायत और कर वैठा ? अरे इसके सिवाय और मैं क्या विगाड़ता जो मेरे कारण उसको दसहज़ार रुपये दंडके देने पड़े पर इसमें मेरा क्या दोष ? उसने मेरे पर झूंठा कलङ्क लगाया जो दस हज़ार रुपये देने पड़े ? और उसमेंभी यहकि, मैंने कव कहाथा कि, उस पर दसहज़ार रूपये दंडके किये जायें. राजासाहवकर वैठे उसमे मेरा क्या दोष ? फिरभी कभी कुसूर कियाथा तो मैंने

नकि जसवन्तसिंहने, उस वेचारेकी शिकायत क्योंकी ? अरे वह उसको क्यों छोड़ने लगा ? उसीकी वदौलततो यह काम होने पाया है. पर हम पता नहीं लगाते तो क्या करते किसी तरह आए हुए झूठे कलङ्कको दूर करनाथा. तूने मुझ पर जो कलङ्क लगायाथा उसके अनुसार तो शत्रुता पकड़कर मुझे ऐसा करनाथा क्या मैंने शिकायत नहींकी उसीसे तेरा होसला वढ़ने पाया? ठीक है पर इस तरह करनेमें तुझे क्या मिल गया ? नाहक़को अपनी ज़वान क्यों विगाड़ी ? राजासाहवको क्रोधित क्यों किये ? मेरे लियेतो उलटा एक तरहसे अच्छा हुआ नहीतो यदि राजासाहव उन पत्रोंको नहीं फाड़ते और किंचित् लक्ष देतेतो हानि होती पत्रोंके फाड देनेसे तथा लक्षके न देनेसे उलटी राजासाहवकी कृपा समझना चाहिये यदि यह कृपा सदैव वनी रहेगीतो मैं अपने शत्रुओंको मार भगानेमें सफलता प्राप्त करूँगा. देखना कोडीमल अवके कदापि नहीं चूकूंगा इसतरहसे विचार लाहोरीमल कररहा थाकि जसवन्तसिंह तथा गणपति आपहुंचे उनका आनाही थाकि, लाहोरीमल सहर्ष वोल उठा. कहो जसवन्तसिंह रातको क्यों नहीं आए ? मैं तो तुम लोगोंकी राह देखते २ थक गया.

जसवन्तसिंह—क्यों क्या कोई काम था ?

लाहोरीमल—तुमने नहीं सुना है क्या ?

जसवन्तसिंह—भाई मैंतो कल ज़रा पासके गांवमें चला गया था क्या कोई नई वात हुई.

जसवन्तसिंहके इस प्रश्न पर लाहोरीमलने दरवार वाला सारा हाल कह सुनाया. जिसके सुनते ही जसवन्तसिंह प्रथमतो आग वबूला होगया, पर जब उसने सुना कि, राजा साहवने पत्रकों

फाड़दिये, अति प्रसन्न होकर तथा यह निश्चय कर कि, देखूं इन लोगोंकी हिम्मतको, कहने लगा अपना इसमें क्या बिगड़ा रोनेभी दो.

लाहोरीमल--यहतो ठीक है पर देखो क्रोडीमलकी नालायकी जिसने पत्रोंको राजा साहबके सामने रखने तथा अपनी शिकायत करनेमें किंचित् खयाल नहीं किया. अब अपने कब चूकने लगे देखो कैसा रुलाते हैं.

जसवन्तसिंह--इस तरह शिकायत करके अपने पर दोषलेना अच्छा नहीं, परमात्मा उसके कियेका आपसे फल देगा.

गणपति--कहा गया है कि, "करतासे करिये जिसमें पाप दोष न गिनिये." क्रोडीमलने बिना कारण लाहोरीमलपर कलङ्क रक्खा, उसपर भी सब्र नहीं हुआ और तुम दोनोंकी शिकायतकी अब वह अपने हाथसे कैसे छुट सकता है. और इसमें दोष काहेका जब कि प्रथम वह अपनी शिकायत करचुका ?

जसवन्तसिंह--यह तो ठीक है पर मैं अभी कोई काम करना आवश्यक नहीं समझता.

लाहोरीमल--मैं भी अभीसे कोई काम करना थोड़ा ही चाहता हूं, समय आए करूंगा. पर इस मंत्रीको छोड़ना तो नहीं चाहिये नहीं तो वह अपने पर जम रहा है. समय आए अपनेको गिरा देगा.

जसवन्तसिंहने देखा कि, लाहोरीमका साहस तो अच्छा है. कहने लगा कहो क्या उपाय सोचते हो ?

लाहोरीमल--अपने भी वैसाही लिस्ट बनाकर राजा साहबको पेश करना चाहिए.

जसवन्तसिंह—वैसा लिष्ट अपने पास कहां है ?

लाहोरीमल—तुम बनाओ जब है.

जसवन्तसिंह—मैं तो अपना काम कर चुका. अब तुम्हारी वारी है. तुम कुछ करो.

लाहोरीमल—वास्तवमें तुम अपनी वारी निकाल चुके और जिसके लिये मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूं. पर मुझे इतना अवकाश कहां जो कहीं जाकर लिस्ट तैयार करले जाऊँ, मेरे लिये कृपाकर एक बार और तकलीफ़ सहो.

जसवन्तसिंह—नहीं भाई यह मुझसे नहीं होगा और न इसका सम्बन्ध पुलिससे है, यह कार्य तो तुमही लोगोंका है.

गणपति—वाहे इस तरहसे तुम जवाब दोगे तो होचुका ज़रा मेरे पर दया करो और लाहोरीमलके कहनेको स्वीकार करो यदि मेरी सहायताकी ज़रूरत है तो मैं हाज़िर हूं. किसी तरहसे अब इस मंत्रीका ख़ातमा होजाना चाहिये. बहुतसे ग़रीबोंके गले काट रहा है.

जसवन्तसिंहने देखा कि, मित्रका काम किये विना छुटकारा नहीं, जब कि मंत्रीने मुझको कष्ट देनेमें तथा मेरी शिकायत करनेमें कमी नहीं रक्खी, मैं क्यों चूकने लगा ! अच्छा मौक़ा है. इसी तरहसे मंत्रीजीका ख़ातमा कराऊं. यह निश्चय कर कहने लगा कि यदि तुम्हारी यही आज्ञा है तो शिरपर चढ़ाता हूं, पर उस लिस्ट परसे मंत्रीका ख़ातमा नहीं हुआ तब तो वह उलटा जलेगा.

लाहोरीमल—तुम्हारे लाये हुए लिस्टसे उसका शीघ्रही ख़ातमा होजायगा. कभी न भी हुआ तो क्या. किन्तु लिस्ट कृपाकर ऐसा बना कर लाना जो वास्तवमें सही हो और मंत्रीको बचनेका मौक़ा न मिले.

जसवन्तसिंह—मैं लिस्ट ऐसा ही लाऊंगा पर राजा साहबने उस पर मंत्रीके पत्रोंकी तरह लक्ष नहीं दिया और मंत्रीने कोई कष्ट दिया तो क्या करोगे ?

लाहोरीमल—मैं तो नहीं कहूंगा कि, उस लिस्टपर राजा साहब लक्ष न दें, यदि नहीं दिया और उसपरसे मंत्रीने जलकर कोई कष्ट देदिया तो सह लेंगे.

जसवन्तसिंह—ठीक है ऐसीही हिम्मत रखना पर यह तो कहो यदि मेरे उस लिस्टपर राजा साहबने लक्ष देकर मंत्रीको निकाल दिया और मंत्रीपद तुम्हें मिलगया तो मुझे क्या बनाओगे?

लाहोरीमल—राजमें मेरेसे आला २ पड़े हुए हैं मुझको मंत्री कौन बनाने लगा. मैं यही चाहता हूं कि, वर्तमान मंत्रीका खातमा होजाय और तुम्हारे कहे अनुसार मंत्रीपद मुझे मिल जाय, तो तुम कहो सो करूं.

जसवन्तसिंह—क्या मुझे पुलिसका सुपरिण्टेण्डन्ट बनाओगे.

लाहोरीमल—क्यों नहीं ज़रूर लो.

जसवन्तसिंह—देखना गणपति! लाहोरीमल क्या कहते हैं काम पड़े याद रखना.

लाहोरीमल—यह क्या कहते हो विश्वास न होतो लिखा कर लेलो.

जसवन्तसिंह—नहीं तो बड़े आदमियोंके वचन काफ़ी हैं.

इतना कहकर जसवन्तसिंह उठ खडा हुआ, साथमें गणपति भी उठा. फिर दोनों वहांसे चल दियें. लाहोरीमलने देखा कि, दफ़तरमें जानेका समय निकट आगया है, शीघ्रही स्नान भोजन आदि करके चला गया.

प्रकरण ३२

आखेटका भयानक समाचार.



डीमलको थोड़े समयतक यह चिन्ता हो रहीथी कि, न मालूम लाहोरीमल क्या करेगा पर कईदिन व्यतीत हो गये और लाहोरीमलने कोई विरुद्धताकी बात राजासाहबको नहीं कही, जिससे क्रोडीमलके मनको किंचित् शान्ति हो गई है. और दसहज़ार रूपयेकी ठोकर लगजाने तथा की हुई शिकायतका परिणाम ठीक न निकलनेसे उसनेभी कोई शिकायत लाहोरीमलके विरुद्ध करना उचित नहीं समझा बल्कि खा़मोशी अख्तियार करली है. पर क्रोडीमलको यह कहां मालूम हैकि, लाहोरीमल आदि इसी फ़िक्रमें हैं.

मध्याह्नका समय है शरद ऋतु होनेसे सर्दी ज़ोरसे पड़ रही है. सूर्यनारायणकी गर्मी होते हुएभी मनुष्य जानवर आदि थर २ धूज रहे हैं. इस समय किसीकाभी मन नहीं चाहता कि, कोई कार्य करें पर वह मनुष्य जो पराधीन हैं उनको अपना काम किये विना छुटकारा कहां ? तमाम अहलकार आदि अपनी अपनी जगह पर बैठे हुए निज काम कर रहे हैं. ऐसे समयमें मंत्री क्रोडीमलभी अपने दीवानखानेमें बैठा हुआ राज्यकार्य देख रहा है. इतनेमें एक सेवकने आकर ज़ाहिर किया " रामगढ़ तहसीलसे एक सवार ज़रूरी कागज़ लेकर आया हुआ है अन्दर आनेकी इजाज़त चाहता है " मंत्रीके आज्ञा देने पर वह सेवक उस सवारको अन्दर ले आया सवारने प्रथम मंत्रीजीको प्रणाम किया तदनन्तर उस कागज़को

देकर कहने लगा " कृपानाथ बड़ा ग़ज़ब हुआ. आखेड़ ठाकुरके भाईने घरकी तक़रारके कारण बग़ावत अख़्तियारकी है. तीनदिनमें दस मनुष्य मार चुका, बीसको घायल किये और पचास राहगीरों को लूटे. " यह हृदय विदारक समाचार सुनकर क्रोडीमल चिन्ता करने लगा और पत्रको अपने हाथसे खोलकर पढ़ने लगा तो उसमें भी यही समाचार पाये अब क्रोडीमल विचारमें पड़ गया " इसका क्या प्रबन्ध किया जाय. उचित हैकि, पुलिसके पचास जवान भेज दूं. शीघ्रही सबको ठीक करदेंगे. पर यदि पचास जवानोंसे काम नहीं बना और ज़ियादा नुक़सान हो बैठातो कहीं बदनामी होगी. वे आदमी कुल कितने हैं मालूम तो करलूं. " इतना कह काग़ज़को फिरसे देखने लगा पर आदमियोंकी संख्या नहीं पाई. बस क्याथा लगा तहसीलदारको गालियां देने " गधेको इतनीभी नहीं सूझी, अब प्रबन्ध किया जायतो कैसे? पूछूं यदि यह सवार संख्या बतासके" इतना विचारकर क्रोडीमलने उस सवारसे पूछाकि, आखेड़ ठाकुरके भाईके साथमें और कितने लोग हैं ?

सवार—यह मुझे ठीक तौरसे मालूम नहीं है कि, जिसपरसे संख्या बता सकूं. वह तथा दूसरे सर्व राजपूत अपने सेवकों सहित बाग़ी हुए हैं.

मंत्रीने देखा कि, यह भी गधा है जो संख्या नहीं बता सकता. पर इस बिचारेको क्या मालूम होने लगा, जब कि हलकेका अमलदार नहीं जानता है. उचित है कि, एकसौ जवान पुलिसके भेजदिये जायें, बादमें ज़रूरत होगी तो और भेजदियें जायेंगें. इतना सोचकर अपने सरिश्तेदार तेजमलको सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसके नाम सौ जवान शीघ्रही रामगढ़ रवाना करनेके लिये हुक्म लिख देने-

को कहा कि, राजा साहबकी तरफसे हुज़ूरी बुलाने आया. उसका आना था कि, क्रोडीमल उठखड़ा हुआ और शीघ्रही राजा साहब के पास जा उपस्थित हुआ. राजा साहबके पासभी तहसीलदार रामगढ़की वैसी मतलबकी रिपोर्ट आईहुई थी. मंत्रीके आतेही राजा साहबने उस रिपोर्टको मंत्रीके हाथमें दी और कहने लगे " देखो तुम्हारा प्रबन्ध ? जो एक आखेड़ ठाकुरके भाइने बाग़ी होकर इस तरहका फैल किया और कर रहा है. शीघ्रही इसका नबन्ध करो नहीं तो बड़ीभारी बदनामी होगी. "

मंत्रीने सरसरी निगाहसे उस रिपोर्टको देखकर कहा "कृपा-नाथ ! मेरे पासभी तहसीलदारकी रिपोर्ट आई है और इसके प्रबन्धको मैंने एक सौ पुलिसके जवान शीघ्रही रामगढ़को रवाना करनेके लिये सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसको लिख दिया है.

राजा—नहीं २ इस तरह लिखने तथा पुलिसके जवान भेज-नेसे कुछ नहीं होगा, उलटा क्लेश बढ़ेगा. तुम खुद जाओ और समझा बुझा करके दोनों भाइयोंका समाधान करादो.

मंत्री—(सरदीमें जाना उचित न समझकर) प्रथम ही मेरे जानेसे वह कदापि नहीं मानेंगे वरना मुझे जानेमें कोई इन्कार नहीं है.

राजा—नहीं तो तुम्हारे गये विदून काम नहीं बनेगा. शी-घ्रही जाओ और हर तरहसे समझाकर उनका समाधान करादो नहीं तो तुम्हारे हक़में अच्छा नहीं होगा.

मंत्री—जैसी आज्ञा पर मेरी अदम मौजूदगीमें काम कौन देखेगा ?

राजा—अपना काम लाहोरीमलको सुपुर्द कर जाओ.

मंत्रीने विचारा कि, यह नई बला और सिरपर आई. एक

तो ऐसी सरदीमें जाना और दूसरा काम मेरा लाहोरीमल करेगा. पर मामला नौकरीका है इन्कार कैसे किया जाय ? इतनाही कहा कि " जो आज्ञा " और उठ रवाना हुआ.

कुछ दिनोंके लिये क्रोडीमल लाहोरीमलकी शत्रुताको भूल गया था पर आज इस परसे फिर याद आगई और अपने दीवानख़ानेमें बैठा हुआ विचार करने लगा " अब लाहोरीमल अवश्य अपना दाव खेलेगा, जो मेराही काम करनेका उसे मौका मिला है. कहीं न कहीं ज़रूर मेरी गलती पाकर शिकायत करेगा. जिसे राजा साहब शीघ्रही मान जायँगे कारण कि आज कल उसपर पूर्ण कृपा है. देखो मिहरबानीमें कुछ घाटा जो कलके लड़केको मंत्रीका काम सोंपा जाता है. उचित है कि, मैं अपने अहलकारोंको पक्के करजाऊँ. " यह निश्चय कर क्रोडीमलने तेजमलको अपने पास बुलाया और कहने लगा " मैं कुछ दिनोंके लिये रामगढ़की तरफ जाता हूं, अदम मौजूदगीमें मेरा काम लाहोरीमल देखेगा. वह अपनेको कहां तक चाहता है तुम जानते ही हो ? होशियारीसे काम करना. ऐसा नहो कि, वह कहीं अपने विरुद्ध राजा साहब को कोई शिकायत करदे. "

तेजमल—आप इसकी किंचित् चिन्ता न कीजिये वह कुछ नहीं कर सकेगा, आनन्दसे जाइये ! पर मामला टेढ़ा है. होशियारी रखना.

क्रोडीमल—मेरी तो मर्ज़ी जानेकी नहीं थी पर क्या करूं राजा साहबने हुक्म देदिया, जानाही पड़ेगा. वहांका कामतो मैं ठीक करदूंगा तुम यहांका सम्हालते रहना.

तेजमल—जो आज्ञा.

क्रोडीमल इस तरहसे तेजमल आदिको कहकरके तथा ज़रूरी प्रवन्ध क़रके दफतरसे घर आया और शीघ्रही नाश्ता करके रामगढ़को रवाना हुआ.

प्रकरण ३३

विद्यादान.


भातका समय है एतवारकी छुट्टी होनेके कारण बुद्धिधन कोलेजको नहीं गया है, पूजन आदि करके घर परही अपने कमरे में वैठा हुआ है और अपने आपको कहरहा है " जो वात मैंने अपने पिताको कही है उसको वह किसी क़द्र मान गये हैं. यदि इसतरहसे मैं अपने पिताको कहूंगा और पिता मेरे मान जायेंगे तो आशा हैकि विशेष कष्ट भोगना नहीं पड़ेगा. वाहरे मित्रो ! एक तरहसे तुम्हारी ताना ज़नी मेरे लिये अच्छी हुई जो मैं अपने पिताको छाती ठोककर कहने पाया और वह उसको मान गये. पर मेरे पिताने मेरा कहना उत्तम समझकर नहीं माना है, अपनी हार देखकर माना है. फिरभी अच्छाही हुआ. अव भविष्यमेंभी यदि कोई वात कहनेकी होगी तो इसीतरह पिताश्रीको कहा करूंगा ताकि मान जायेंगे. वाहरे ! मैं ! तेजमलको तो आज मैंने ठीक नीचा दिखाया अव न तो वह कभी मुझे कहेगा न मेरे पिताको कोई वुरी सम्मति देगा" इसतरह किंचित् आनन्द मनाता हुआ बुद्धिधन वैठा है कि, पोष्टमैनने एक पत्र लाकर उसके हाथमें दिया. उसने प्रथम तो उस

पत्रको गौरसे (जो लिफाफेमे था) देखा और अक्षर उसके पहिचानमें न आनेसे कहने लगा कि, यह नया पत्र किसका. पोष्ट ऑफिसकी मोहर देखनेसे यह तो मालूम होगया कि, पत्र बोम्बेसे आया है. बुद्धिधनने शीघ्रही उस लिफाफेको खोला और अन्दरका पत्र निकालकर पढ़ने लगा जो मारवाडी भाषामें लिखा हुआथा. उस पत्रके पढ़नेके साथही बुद्धिधन एकदम चिन्तामग्न हो गया और कहने लगा. "यह कैसा समाचार कर्म्मचंद्र फकीरचन्द्रकी बेंकने देवाला निकाल दिया जिसमें हमारे पचास हज़ार रुपये जमा थे."

पाठकगण! देखिये क्या विचित्र गति है. कहां तो बुद्धिधन बैठा हुआ आशारूपी अंकुरसे जाता हुआ कष्ट किंचित् दूर समझकर आनन्द मना रहाथा, और अब कहां उसको इस शोकने आ घेरा. बेचारा बालक इसपत्रको पाकर एकदम बावला हो गयाकि, "हाय यह कैसा! क्या मेरे पिताको रुपये जमाकराते समय किंचित् विचार नहीं आयाकि, इसतरह पचास हज़ार रुपये बेंकमें जमा कराना किसी न किसी समय बुराथा? क्या घरमें रुपये रखनेको जगह नहींथी जो इसतरह बेंकमें जमाकराये थे? क्या कोई ऐसा शुभ खाता नहीं थाकि, जिसमें देकर सदैवके लिये अपना नाम करते? पर यह मैं क्या कहरहा हूं? मेरे पिताको ऐसा विचार कहां? वहतो पूरे लोभी हैं. इसतरह रक़म घरमें रखकर व्याजका नुकसान क्यों करने लगे? और द्रव्यको शुभ मार्गमें क्यों लगाने लगे. पर अब वह लोभ उनका कहांरहा सारीकी सारी रक़म चली गई. सच है विशेष लोभ अच्छा नहीं. वे महाशय जो द्रव्यको अपना समझकर किंचित् शुभ मार्ग आदिमें नहीं लगाते हैं और इसतरह लोगोंको देकर उसको बढ़ानेका यत्न करते हैं, वृथा है. लक्ष्मी नतो किसीकी हुई है और

नहोगी. यहतो चक्र देती रहती है. आज मेरे पास हैतो कल किसी दूसरेके पास. देखो पचासहज़ार रुपये हमारेथे. हमको स्वप्नमेंभी ऐसा ख़याल नथाकि, इसतरहसे चले जायेंगे. और चले गये जोभी बेंकवालेके नहीं रहे, न मालूम किसके हुए. अक्लमंदी तो उसीकी है कि, ज्यों २ द्रव्य बढ़ता जाय शुभ कार्यमें लगाता जाय. किन्तु हाय मेरे यह विचार किस कामके. जबतक मेरे पिता बैठे हैं मैं क्या कर सकता हूं ? सर्व विचार मेरे वृथा हैं. अब इस विषयमें मुझे क्या करना चाहिये ! पिता मेरे यहां पर नहीं रामगढ़ गये हुए हैं. क्या पत्रको वहां भेजदूं ? नहीं तो वहां भेजने में मेरे पिताको दूना दुःख होगा. एक दुःखमें तो वह फंसे हुए हैं. यदि इसपत्रको वहां भेजूंगा तो दूसरा दुःख और होगा. यह कौनसा शुभ समाचार है कि, मैं इसे भेजूं. उचित है कि, यूंही पड़ा रहने दूं. पिताश्रीके आने पर देदूंगा. पर यह हाल मैं अपनी दादी तथा मातुश्रीको कह दूं " यह विचारकर बुद्धिधन उठकर नीचे आया और उक्त समाचार सुनकर सौभाग्यवती तथा सुन्दरी चिन्तारुपी सागरमें डूब गईं. पर क्या हो सकता था ? थोड़ी देर आंसू बहाकर ख़ामोश हो बैठी. और सौभाग्यवती कहने लगी " बेटा ! बुरे रस्तेसे उपार्जन किये हुए द्रव्यका हाल ऐसाही हुआ करता है. परमात्मा बक़ीया द्रव्यको बचावे नहीं तो उसकीभी यह गति हो तो आश्चर्य नही "

बुद्धिधन—माजी ठीक कहती हो. क्या सर्व द्रव्य अपने घरमें ऐसाही है ?

सौभाग्यवती—सबतो क्या ? क़रीब २ सब ऐसाही है. वह क्यों रहने लगा जब कि उसका सदुपयोग नहीं किया जाता. बाप तेरा ऐसा है कि, अनाथोंको एक पैसाभी देना उसे भारी मालूम होता है.

बुद्धिधन—मैं इसमें क्या करूं ?

सुन्दरी—बेटा तेरे लिये माजी ऐसा थोडेही कहते हैं.

बुद्धिधनने देखा कि, वास्तवमें दादीका कहना यथार्थ है. मेरा भी ऐसाही विचार है. पर क्या होसकता है ? चिन्ता करना वृथा है. वहांसे चल देकर वापिस अपने कमरेमें आ बैठा और यही विचार बैठा हुआ कररहा है कि, दो भिक्षुक द्वारपर आ उपस्थित हुए. जो द्वारपालसे कहनेलगे. " हम दोनों बालक हैं, माताएं हमारी विधवा हैं, घरमें खानेको एक दाना अन्नतक नहीं है. सुबहसे मांगते २ थक गये पर चार मनुष्योंका दोनो वक्तका पेटभरजाये उतना नहीं मिला. कृपाकर घरके मालिकको कहो यदि कुछ दे " उन अनाथ बालकोंके कहनेके उत्तरमें द्वारपाल क्रोडीमलके मिज़ाज़को याद लाकर कहने लगा " कहीं ग़रीबके घर जाकर मांगो. बड़े आदमियोंके घर कुछ नहीं मिलता है. "

बालक—क्या कहते हो ? बडे आदमियोंके घर मिलता है याकि ग़रीबके घर. बेचारा ग़रीब क्या देगा ? हमतो जानते हैं कि बड़े आदमियोंके घर पेटभर अन्न मिलता है और इसीलिये आएहैं.

यह वार्तालाप द्वारपाल तथा दोनों अनाथ बालकोंके परस्पर होरहा था उसको बुद्धिधनने सुनलिया और शीघ्रही उठकर नीचे आया. प्रथमतो उन बालकोंकी स्थिति तथा उनके कहे हुए वाक्यों पर दया आई और फिर कहनेलगा. " कहोभाई तुम क्या चाहते हो. "

बालक—चाहने को तो हम बहुत कुछ चाहते हैं, पर आपकी जो श्रद्धा हो सो दो.

बुद्धिधन—यह तो ठीक है हम देंगे तो वही जो हमारी श्रद्धा होगी, पर दिली याचना तुम्हारी क्या है ?

वालक--(यह मनुष्य भागशाली मालूम होता है दिलभी इसका वास्तवमें अच्छा है. कुछ ठीक मांगे जो उम्रभरका दुःख निकल जाय.) कृपानाथ ! हम सबसे पहिले विद्यादान चाहते हैं कि, जिसकी वदौलत यह हमारी स्थिति मिट सकती है वचपनसे ही हमारी मर्ज़ी थी कि, कुछ पढ़ें लिखें पर पिता हमारे हमको इस वाल्यावस्थामें छोड़कर चले गये. माताएं हमारी हैं जो घरमें वैठी हुई हैं. घरमें पेटभर अन्न तक नहीं कहांसे पढ़. अवतो पेटभरना भी मुश्किल होगया है.

बुद्धिधनने देखा कि " सवाल इनका भारी है. प्रथम तो यह विद्यादान मांगते हैं जिसके देनेमें भोजन वस्त्र आदिका खर्चा जव-तक यह वालक ठीक तौरपर पढ़ न लें, रहेगा. और जव ये विद्या पढ़नेमें लग जायंगे तो उनकी माताओंका फिर कौन पालन पोषण करेगा ? उनकाभी मुझेही प्रवन्ध करना पड़ेगा. पर शास्त्रमें कहा-गया है कि, विद्यादान जैसा उत्तम दान कोई नहीं है. क्या है ? यदि परोपकारके खातिरमैं इन दोनों वालकोंको विद्या पठन करने को वोम्वे भेज दूं ? जो खर्चा लगेगा देता रहूंगा. इनकी माता-ओंके लियेभी मुनासिव रकम वांध दूं, जवतक यह वालक कमाने योग्य न हों, देता रहूंगा. पर इतने रुपये मेरे पास कहां है ? कम-से कम इस वक्त एक हज़ार रुपये तो चाहियें जो एक २ सौ तो दोनोंकी माताओंको दूं और आठसौ उनको दूं जो वर्ष दो वर्ष प-ढ़ते रहेंगे. अरे रुपयेका क्या फ़िक्र ? खजानेमें वहुत रुपये हैं. कुञ्जी पिता मेरे देगये हैं. उसमेंसे हज़ार रुपये निकाल कर दोनोंको रवाना कर दूं. खज़ानेमें पड़ा हुआ द्रव्य किस काम आएगा. क-र्मचन्द्र फ़क़ीरचन्द्रकी वेंक पचास हज़ार रुपये खा वैठी इस तरह न मालूम इसको भी कोई खा वैठे. किन्तु खज़ानेमेंका द्रव्य उतना

शुद्ध नहीं है जैसा कि विद्या दानके लिये चाहिये, और मेरे पिता जान जायंगे तो उलटे चिड़ेंगे. मेरे हाथमें हज़ार रुपये की हीरेकी अंगूठी है उसको बेचकर इन अनाथ बालकों तथा इन-की माताओंका पालन पोषण करूं. पर पूछूं यह कौन जातसे हैं"

बुद्धिधन—तुम्हारी ज़ात क्या है ?

बालक—(रोतेहुए) कृपानाथ ! कहलाकर क्यों शर्मिन्दा होते हो.

बुद्धिधन—शर्मिन्दा होनेकी कोई बात नहीं कृपाकर कहोनो, क्या तुम महाजन हो ?

बालक—हां साहब. महाजन ओसवाल.

बुद्धिधन—अरे क्या तुम मेरे ज्ञाति भाई.

इतना कह कर बुद्धिधनने दोनोंको गले लगाए. जब उसने उनको गले लगाना चाहा है बेचारे बालक पीछेको भागे जाते थे कि, हम इनसे कैसे मिलें, किन्तु बुद्धिधनने उनके भिक्षुक होनेका कोई विचार न कर शीघ्रही पकड़ लिये. जब बुद्धिधन मनही मन कहने लगा " मेरे ज्ञाति भाई जो इस तरह टुकड़ा रोटीके खातिर घर २ फिरते हैं क्या उनकी इस शहरमें कोई पुकार सुनने वाला नहीं मिला ? अरे शहरमें एकसे आला पड़े हुए हैं. पर यह तो मेरेही भाग्य शुभ थे जो यहां आकर सवाल करने पाये हैं. अच्छा अब मैं इनका पालन किये विना कदापि नहीं रहूंगा " यह कहकर बुद्धिधन दोनो बालकोंको अन्दर लेगया और एक सेवकको उन्हें स्नान करा लानेकी आज्ञादी. आज्ञानुसार सेवकने लेजाकर उन्हें स्नान कराया और बुद्धिधनके पास लेगया. बुद्धिधनने उनको वस्त्र पहिनाकर भोजन कराया. जब दोनों बालक भोजन कर चुके

घर जानेकी आज्ञा चाही. पर बुद्धिधनने उनको आज्ञा न देकर कहा " मैं तुम्हारी मांगी हुई वस्तु देता हूं तुम यहां ही रहो. "

बालक—हम आपकी आज्ञा सिर चढ़ाते हैं पर हमारी माताएं घर पर बैठी हुई भूखी मरती होंगी. कृपाकर अभी हमें जाने दीजिये.

बुद्धिधन—नहीं बन्धु अब मै तुमको कदापि नहीं छोडूंगा, यदि तुम फिर कर न आओ तो. तुम्हारी माताएं कहां हैं ? मैं उनके लिये भोजन पहुंचा दूं.

बालक—पासके गांव राजपुरीमें हैं.

बुद्धिधन—इसमें क्या राजपुरी तो यहांसे एक मील पर है, वही राजपुरी न ? अभी सेवक जाकर भोजन दे आयेगा.

बालक—जी हां राजपुरी वही है पर सेवक हमारी माताओंको कैसे पहिचान सकेगा. कृपाकर हमको जाने दीजिये शीघ्रही वापिस आजायेंगे.

बुद्धिधनने विचारा " मुझे इनको आज ही बोम्बेको रवाना करने हैं, पिताके आजाने बादमें इनको भेजने नहीं पाऊंगा. युंभी इनको इनकी माताओंसे मिलने तथा उनका प्रबन्ध करनेके लिये भेजना होगा, अभीसे रुपयेका प्रबन्ध कर दोसौ रुपये देकर इनको क्यों नहीं भेज दूं ? इनकी माताओंको रुपये देकर तथा मिलकर आजावेंगे " और कहने लगा अच्छा बैठो अभी भेजता हूं. तथा किशोरीलालको बुलालानेके लिये एक सेवकको आज्ञा दी. आज्ञाका देना था कि, किशोरीलाल आ उपस्थित हुआ. किशोरीलालके आते ही बुद्धिधनने अपने हाथकी अंगूठी उसे दी तथा अंगूठीको बाज़ारमें जाकर उसे बेचकर एक हज़ार रुपये लेआनेको कहा.

किशोरीलाल—आज अंगूठी क्यों बेचते हो ? (और उन दोनों लड़कोंकी तरफ दृष्टिकर) यह कौन हैं ?

बुद्धिधन—यह दोनों अपने ज्ञाति भाई हैं. इस समय अनाथ होरहे हैं. इनकी लालसा विद्या पठन करनेकी है, मैं इनको इसीलिये बोम्बे भेजता हूं. अतएव रुपयोंके लिये तुम्हें अंगूठी दी है.

किशोरीलालने फिर उन दोनों बालकोंकी तरफ देखकर पूछा कि, भाई तुम्हारा नाम क्या है ? कहांके रहनेवाले हो ? तुम्हारे पिताका नाम क्या है ?

बालक—हम दोनों राजपुरीके रहने वाले हैं. एक कहता है, मैं मोहनलाल भगवतीलालका पुत्र. दुसरा कहता है, मैं कर्म्मठोक कन्हैयालालका पुत्र हूं.

बुद्धिधन—(कर्म्मठोकका नाम सुनकर आश्चर्य करते हुए) यह नाम तुम्हारा कैसा ?

कर्म्मठोक—क्या कहूं साहब ! मेरा जन्म हुआ कि, मेरे पिता मरगये जिससे मेरी माताने मेरा नाम कर्म्मठोक रखदिया. बुरा ही क्या रक्खा है ? मैं वास्तवमें कर्म्मठोक ही हुआ जो मेरे जन्मतेही मेरा पालन पोषण करनेवाला मर गया.

बुद्धिधन—ठीक है. पर यह नाम तुमारा अच्छा नहीं, आजसे तुम अपना नाम विद्यासागर रक्खो.

कर्म्मठोक—वाह सांहब ! आपनेभी ख़ूब कहा. मैं एक अक्षर भी पढ़ा नहीं फिर मैं अपना नाम विद्यासागर कैसे रख सकता हूं.

बुद्धिधन—ज़रा मेरा कहना मानो अर्हन्तदेव तुम्हें खूब विद्या देगा. सरस्वती तुम्हारे पर तुष्टमान होगी.

कम्मठोक—जो आज्ञा, अब हमे कृपाकर जानें दीजिये.

बुद्धिधनने इनकी तरफ़से इतनी ताकीद देखकर किशोरीलालको शीघ्रही बाज़ारमें जानेको कहा. पर उसके न जानेमें कुछ भेद था और इसी कारण इतनी देर रुका हुआ था. अब कहनेलगा आप इन लड़कोंको यहां ही क्यों नही रखते जो अंगूठी बेचनी न पड़े और आप अंगूठी क्यों बेच रहे हैं ? क्या आपके घरमें रुपये नहीं हैं ?

बुद्धिधन—यहां रखनेमें कोई हर्ज़ नहीं पर पिता मेरे इनका खर्च देखकर जलेंगे, इनको तो बोम्बेमें ही रखना उचित है मैं यह बात अपने पिताको मालूम करना नहीं चाहता और इसी लिये ख़ज़ानेमेंसे रुपये न देकर अंगूठी बिकवाता हूं.

किशोरीलाल—क्या अंगूठीका बेचना मंत्रीजीको मालूम नहीं होगा ?

बुद्धिधन—वह तो होगा जब होगा किन्तु रुपयोंकी तरहसे शीघ्रही तो मालूम नही होगा तुम कृपाकर जाओ और इसे बेच आओ.

किशोरीलाल—लो जाता हूं पर कोई पूछेगा कि, यह किसकी है तो क्या उत्तर दिया जाये ?

बुद्धिधन—कहदेना कि, मेरी है,

किशोरीलाल—बहुत अच्छा कहकर चला गया.

बुद्धिधन चाहता है कि किशोरीलाल शीघ्रही आवे और इन दोनों बालकोंको विदाकर अपना कल्याण करूं.

किशोरीलाल उस अंगूठीको लेकर जोहरीकी दुकान पर पहुंचा और अंगूठी उसे देकर कहने लगा " यह बिकनेकी है कहो क्या दोगे ? "

जोहरी--(अंगूठीको देखकर) यह किसकी है ? ऐसी ज़ि-यादा तो क़ीमती नहीं है.

किशोरीलाल--यह अंगूठी बुद्धिधनकी है. यह एक हज़ार की है.

जोहरीने देखा कि, अंगूठी अच्छी है. लेनेमें फ़ायदा रहेगा. प्रथम छः सौ रुपये क़ीमतके कहे. आख़िर आठ सौ कहे पर एक हज़ार दरकार थे.

किशोरीलाल शीघ्रही बुद्धिधनके पास आया और उसकी सम्मति लेकर जोहरीकी दुकानपर गया. अंगूठी उसे देकर रुपये ले आया और बुद्धिधनके हवाले किये. उन रुपयोंमेंसे दोसौ रुपये बुद्धिधनने किशोरीलालको देकर कहा "कल्याणका काम है. कृपाकर इन लड़कोंके साथ जाओ और इनकी माताओंको दे आओ ? अन्तमें उनको यहभी कह आना कि इन रुपयोंसे तुम अपना गुज़र करना. ज़रूरत हो तब और मांग लेना. लड़के तु-म्हारे पढ़ाईके लिये बोम्बे भेजे जाते हैं. सब तरहका प्रबन्ध कर लिया जायगा घबराना मत ! ? किशोरीलालने सहर्ष इस आज्ञाको स्वी-कार की और उन दोनों लड़कोंके साथ रामपुरीको रवाना हुआ. साथमें एक सेवकभी उनकी माताओंके लिये दो वक़्तका भोजन लेकर गया. किशोरीलाल आदि रामपुरी जाकर जो काम कर-नेका था कर आये. साथमे मोहनलाल तथा कर्म्मठोकभी आए. उनका आना था कि, बुद्धिधनने दोनों लडकोंको अपने ससुरके नाम हरतरहका बंदोबस्त कर देनेको पत्र लिखकर तथा आठसौ रुपये देकर किशोरीलालद्वारा बोम्बेको रवाना किये.

पाठकगण ! देखिये बुद्धिधनकी बुद्धि तथा धनका सदुपयो-गकि आए हुए कष्टका तनिकभी विचार न कर अपने हाथकी

हीरेकी अंगुठी, जो एक हज़ारकी क़ीमतकी थी, विकवाकर तथा हज़ारके स्थानपर आठसौ आए उसका तनिकभी ख़याल न कर, पासके दोसौ रुपये और मिलाकर दोनों अनाथ वालकोंको विद्या पठन करने वोम्बे भेज दिये. धन्य है ऐसी आत्माको.

प्रकरण ३४.

कुकार्यमें सहायता.



ईदिनोंसे मुसाफ़िरी करता हुआ मंत्री क्रोडीमळ आज रामगढ़के तहसीलदार सहित आ पहूंचा है, परन्तु उसने आखेड़के ज़मीनदारके भाईको वहां नहीं पाया, दरियाफ्तपर अपने साथियोंके साथ उसका पहाड़में होना मालूम हुआ. आखेड़के ज़मीनदारसे पूछने पर तक़रारका कारण यह ज़ाहिर हुआ कि, आखेड़ ज़मीनदारके सेवकिनमें की एक सेवकिननी जवान वाला जो सुन्दरतामें किसी तरहसे कम नहींथी वल्कि अति रूपवती नवयौवना वालाथी, उसपर आखेड ठाकुर मोहित हो गया और परदेनशीन कर दीया. यह वात उसके भाई तथा दूसरे कुटुंवियोंको नहीं भाई प्रथमतो उन्होंने आखेड़ ठाकुरको वहुत कुछ समझाया कि, यह करना तुम्हें उचित नहीं हैं. न आज पहिले कभी ऐसा हुआ है कि, इसतरह ख़ुदकी सेवकिन को किसीने परदेनशीन की हो, इसको छोड़दो किन्तु नहीं माना. लाचार एक अपनी इज्ज़तके ख़यालसे उन्होंने वग़ावत अख़्तियारकी है. और इसीलियें हरएक को कष्ट दे रहे हैं कि, यातो ख़ुद आखेड़ ठाकुर

उस सेवकिन से अपना वासता छोड़देगा, या राज आकर छुड़ाएगा पर आखेड ठाकुरको किसी तरहसेभी उस नव यौवना वाला को छोड़ना मंजूर नहीं है. मंत्री तथा तहसीलदार आदिने यह हाल सुनकर प्रथम तो मनही मन विचार किया कि, वास्तवमें ऐसा कभी भी नहीं हुआ है और इसतरह होना भी बुरा है कि, अपनी पाली हुई सेवकिनको परदे नशीन की जाय. उसको तो एक तरह की अपनी संतान समझनी चाहिये. इतनाज नहीं वलिक ऐसा करने में इज्जत में फर्क आता है. आखेड ठाकुरने जो किया है बुरा है. और मंत्री क्रोडीमल इस आशा में कि, कुछ मिलेगा. आखेड़के ज़मीनदार नत्थुसिंहसे कहने लगा " हक़ीक़त में तुमने सेवकिन को परदे नशीन करने में भूल की है. तुम जैसे कुलीन राजपूत को यह उचित नहीं है. शीघ्रही उसे छोड़ो और अपने भाइयोंको मनाकर ले आओ ताकि झगड़ा मिट जाय. "

नत्थुसिंहने देखाकि, मंत्रीजी भी मेरे विरुद्ध हो रहे हैं. क्या किया जाय ? मैं अपनी वातको तो कदापि नहीं छोडूंगा. जान क्यों नहीं चली जाय ? किन्तु कुछ दिये विना यह कब मानने लगे, जाऊं जरा घरसे कुछ ले आऊं इतना निश्चयकर कहने लगा अच्छा साहव घर जाता हूं, विचार कर उत्तर दूंगा."

मंत्री—जाओ और उस सेवकिनकोभी समझाओ, झगड़ा तोड़ो, इसीमें तुम्हारा भला है.

नत्थुसिंह वहांसे विदा होकर अपने घर आया और यह निश्चय कर कि " देखूं मेरी प्रिया मुझको छोडना स्वीकार करती है कि नहीं " प्रथम सेवकिनको यह सव वातें कह सुनाई जिसके उत्तरमें सेवकिन कहने लगी कि " अव यदि तुम मुझे छोड़ोगे तो

मैं अपने प्राण खो दूंगी, क्या मोहब्बत करते समय नहीं सूझीथी? किसी तरहसे मंत्रीजीको कुछ देकर अपना काम बनाओ." नत्थु-सिंहने विचारा कि, आखिर दिये बिदून काम नहीं होगा और ख़ज़ानेमेंसे एक हज़ार रुपये लेकर मंत्रीजीके पास पहुंचा.

मंत्री—(रुपयेको देखकर) कहो क्या जवाब देतेहो ?

इस प्रश्नके उत्तरमें नत्थुसिंह हज़ार रुपयेकी थैली सामने रख कर कहने लगा मेरी बात रखना आप लोगोंके हाथमें है, कृपाकर इसे स्वीकार करिये और मेरी बात रखिये वास्तवमें कहनेवालेने ठीक कहा है " देखी मोहर और मन हुआ और " मंत्रीजीने रुप-येकी थैली अपने सामने देखकर अपना भाव बदल दिया और उसे लेकर कहने लगा अच्छा ऐसाही होगा. तुम यहांही रहो. मैं उन बदमाशोंके पास जाता हूं. देखो क्या करता हूं. उनको ख़ा-नगी बातोंमें दख़ल देनेका क्या अख़्तियार है ? मनुष्य अपना खुद मुख्तियार है. जो चाहे सो कर सकता है. सेवकिनको परदे-नशोन करदी तो क्या होगया ज़मीनदारोंके होता आया है. वह बुरा मालूम करनेवाले कौन ? यदि बुराही लगता है तो इस " (नत्थुसिंह) से अपना सम्बन्ध न रक्खे. बस होचुका. क्यों तह-सीलदार ठीक है न ?"

तहसीलदार मंत्रीके विरुद्ध कब कहने लगा और उस हाल-तमें जबकि हज़ार रुपयेकी थैली सामने रक्खी हुई है, कुछ न कुछ मिलेगाही, उसने केवल इतनाही कहा " क्यों नहीं साहब आपका कहना यथार्थ है. वे कौन जो बुरा मालूम करने लगे. "

अब मंत्री उन बदमाशोंके पास जाना उचित समझ नत्थु-... पूछने लगे कि, वह लोग इससमय कहां होंगे ?

नत्थुसिंह—यहांही पासके पहाड़में बैठे हुए हैं.

मंत्री—वह पहाड़ यहांसे कितनीं दूर है ?

नत्थुसिंह—तीन मील होगा.

मंत्री—तब तो पैदलही जावें.

यह कहकर मंत्री तहसीलदार तथा पुलिसके आदमी जाने लगे. इतनेमें तहसीलदारने कहा कि, पुलिसके आदमी साथ लोगे तो वे लोग भाग जायेंगे या, मुक़ाबला कर बैठेंगे. अपने दोनों तथा एक दो सिपाही जावें तो ठीक होगा, सिपाहियों को अपनी वरदी इस समय उतार देनी चाहिए.

मंत्री—ठीक कहते हो एसाही करो.

मंत्री की आज्ञा अनुसार दो पुलिसके जवान वरदी उतारकर तथा हाथमें लाठी लेकर आए. उनका आना था कि, सब रवाना हुए.

एक बड़ा भारी पहाड़ है उस में पृथक २ स्थान पर गुफाएं ऐसी आई हुई हैं कि, यदि कोई उसमें घुस जाय तो फिर मिलना मुश्किल हो जाय. इसी पहाड़में एक गुप्त गुफ़ा में आखेड़ ज़मीनदारका भाई कानसिंह तथा उसके साथी, जो संख्यामें एक सौ के होंगे, बैठे हुए हैं और चाहते है कि, रात्रि कब आवे और लूटमार का काम आरंभ करें. इस समय इन लोगोंके परस्पर यों बातें हो रही हैं.

कानसिंह—अपने लोगोंने कई आदमी मारे, कईयों को ज़ख्मी किये, कईयों को लूटे पर अभीतक राज नहीं आया. क्या परस्पर की तक़रार है इस कारण तो राजने ढ़ीला नहीं छोड़ रक्खा है.

बहादुरसिंह—नहीं साहब ऐसा कभी हो सकता है. परस्परकी तक़रार हुई तो क्या ? आख़िर जो लूटमार अपन करते हैं उस में बदनामी तो राजकी हैन. कोई न कोई आता ही होगा.

नन्दकिशोर—अरे यार आता तो कभीका आजाता ? अब कब आवेगा दौडते २ पैर थक गये ?

बहादुरसिंह—क्या अभीसे थक गये. इस तरहसे थक जाओगे तो अपने मनकी याचना कैसे सिद्ध होगी. ज़रा हिम्मत रक्खो.. देखो आता ही होगा.

इतनेमें उनके साथियोंमेंका डरपोकसिंह बोल उठा अपने लोगोंने नाहक़ यह बला सिर क्यों ली ? जो आज बालबच्चों को छोड़कर पहाड़में बैठे हुए अनर्थ कर रहे हैं. सुबह खानेको है तो शाम को नहीं. नत्थुसिंहने सेवकिनको घरमें रख ली तो अपना इसमें क्या बिगड़ा ! फूटे उसके कर्म. अब यदि राजवालोंने आकर अपने को पकड़कर बंदीखाने भेजदिये तो क्या करोगे ? मेरी सलाह मानो तो चलो अपने घरोंमें जाकर बैठ जावें.

बहादुरसिंह—खरा डरपोकसिंह ही रहा. वास्तवमें तेरा नाम भी ठीक रक्खा गया है. यदि ऐसा ही था तो यहां आता क्यों था ! तेरी सलाहके माफ़िक़ यदि घर चले जावें तो शीघ्रही पकड़े न जावेंगे ?

डरपोकसिंह—कैसे पकड़े जावेंगे ! हमतो इस कामको छोड़ते हैं न.

बहादुरसिंह—अबतो तुम इस कामको छोड़ढोगे पर आज पहिले जो जो कृत्य किये हैं उसका दंडतो राज देगा न.

डरपोकसिंह—दंडका नाम सुनकर कांपने लगा, इतनेमें मंत्री कोडीमल आदि आपहुंचे, बस क्या था उनको देखते ही डरपोकसिंहतो रोदिया और कहीं छिपगया,

.बहादुरसिंह आदिने प्रथमतो उन्हें आते देखकर अपने शस्त्र आदि हाथमें लिये कि, कहीं हमें पकड़नेको तो नहीं आते हैं, पर

जब केवल चारही आदमी देखे, विश्वास आया कि, पकड़ने तो नहीं आते हैं और शस्त्र आदि रखदिये,

क्रोडीमल उनको कहने लगा, क्योंरे तुम लोगोंने यह क्या बखेड़ा कर रक्खा है ? ग़रीबोंको क्यो सतारहे हो उनको प्राणके क्यों ले रहे हो ? नत्थुसिंहने सेवकिनको परदे नशीन करदी तो इसमें क्या होगया ? तुम लोगोंमें होती वात है, सीधेमान जाओ नहीं तो तुम्हारे हक़में अच्छा नहीं है,

कानसिंह—(क्रोधित होकर) क्या आपकी भी कमवख्ती आई है कि, " तुम लोगोंमें होतीवात है " जो ऐसा कहते हैं ज़रा बताओ तो किसने ऐसा किया है,

क्रोडीमल कानसिंहको इस तरह क्रोधित देखकर प्रथम तो चुपका होगया और मन ही मन विचार करने लगा कि, इस तरह कहनेमें यह लोग जलते हैं, उचित है कि, कुछ और ढङ्गसे कहूं और कहने लगा कि, अच्छा अब तुम क्या चाहते हो?

कानसिंह—वस यही कि, नत्थूसिंह उस चाण्डालको निकालदे,

क्रोडीमल—यह तो ठीक है पर राज्य उसके ऐसे ख़ानगी मामलेमें कैसे दख़ल दे सकता है ?

कानसिंह—जब राज्यकी ऐसी सामर्थ्य नहीं है तो फिर यहां-तक क्यों आए हो ? अपना रस्ता लो ? हम आपसे निपट लेंगे. देखें नत्थुसिंह कहांतक उसको रखकर सुख पासकता है.

क्रोडीमल—यदि तुम नहीं मानोगे तो हम तो जावें हींगे नाहक़ को तुमने यँह सब बखेड़ा क्यो खड़ा किया ?

बहादुरसिंह—अभीतक आप हमारा बखेड़ा ऐसा ही बतलाते हैं ? क्या आप यदि अपनी पुत्रीको अपनी जोरू बनावें तो आपके बिरादरी वाले उज़र नहीं लेंगे ?

कोडीमल—बेशक यदि कोई पुत्रीको अपनी जोरू बनावे तो जरूर उजर लेंगे पर वह नत्थुसिंहकी पुत्री कहां ! वहतो एक सेवकिन दूसरेकी पुत्री है.

बहादुरसिंह—भले मंत्री हुए, क्या कोई पाली पोषी पुत्री समान नहीं होती है ? यह वही सेवकिन है जिसको नत्थुसिंहने पालन पोषण कर बड़ीकी क्या वह इसतरह अपनी पाली हुई बालाको जो शास्त्रानुसार पुत्री समान होगई, परदे नशीन करना उचित था ? नत्थुसिंहने तो हमारा नाक काट दिया हम ज्ञाति भाइयोंको क्या मुंह बतावेंगे और अब वह हमारेसे संबन्ध क्यों करने लगे जब कि घरमें यह हाल देखेंगे !

मंत्रीने देखा कि, ये किसी तरहसे नहीं मानेंगे इनको तो पकड़ कर सज़ाका देनाही उचित होगा, यह विचार कर कहने लगा, " मेरा कहना मान जाओ नही तो तुम्हारे बुरे हाल होंगे, "

कोडीमलका इतना कहना था कि, उनमेंका जड़ावसिंह तमंचा लेकर खडा हुआ और कहने लगा " आपतो हमारे बुरे हाल करोगे जब करोगे, लो ! मैं तो आपको स्वर्ग यात्रा कराइता हूं, " और तमंचेको चलाने लगा, इतने मे कानसिंहने उसके हाथमेंसे तमंचेको यह कहकर खोसलिया, " क्या करता है इन बेचारोंका क्या दोष ? यह तो एसाही कहेंगे " फिर कोडीमलको कहनेलगा कि, जबतक नत्थुसिंह उस बद मिज़ाज हरामखोर औरतको न निकाले हम नहीं मानेंगे, नाहक अपना समय क्यों खोते हो रास्ता लो.

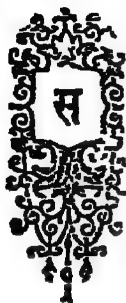
कोडीमलने देखाकि, यह लोग जोरों में आए हुए हैं. कदापि इसतरह नहीं मानेंगे वापिस लौट आया उसका लौटना थाकि, वे लोग लगे लूट खोस करने. रास्ते में दो राहगीर जाते थे उनको

प्रथम मारकर उनके पासका सब माल लूट लिया. जब क्रोडीमल आखेड़ में आया इस हालकी उसको इत्तिला हुई जिसके होते ही विचारमें पड़ा. " यह उलटा मामला बढ़ा कहां तो मैं उनको समझाने गया था कहां उन्होंने दो खून और करदिये. इस परसे राजासाहब क्या समझेंगे कि मंत्री कुछ नहीं कर सका तथा वह मेरा कट्टा शत्रु लाहोरीमल इस मौके कि, राजासाहबको भिडानेमें क्या कमी रक्खेगा. हाय मैंने बहुत ही बुरा किया जो नत्थुसिंह की भेट स्वीकार करली. उचित है कि, उसे वापिस करके कोई और युक्ति निकालूं. पर वाह मैं आई हुई भेट कैसे वापिस करने लगा! क्या है लिख दूंगा कि, इधर तो नत्थुसिंह उस सेवकिन को नहीं छोड़ता उधर जबतक नत्थुसिंह उसको न छोड़े, वे मानने के नहीं. उचित हो वैसा किया जाय. वहांसे यही उत्तर आएगा कि, सबको पकड़ो मारो फिर क्या ? वैसाकर दूंगा. " यह निश्चय कर क्रोडीमलने इसतरहका पत्र लिखकर राजासाहबको रवाना किया और उसके उत्तरकी इन्तिज़ार में आखेड़में ही ठहरा हुआ है.

पाठकगण ! देखिए बुद्धिधनका वह उपदेश किसी काम नहीं आया. क्रोडीमलने रुपये देखते ही अपना भाव बदल दिया.

प्रकरण ३५.

विश्वेश्वर नगरमें भूपालसिंह.



न्ध्याका समय है सूर्य भगवान् अस्ताचलका उल्लंघन कर गये हैं, रात्रिने अपनी काली चांदनी पृथ्वीपर फैलानी शुरू करदी है, थोड़ेही समयमें सितारोंका झुंड दिखाई पड़ेगा. ऐसे समयमें आज भूपालसिंह क्रोडीमलका खातमा करनेकी गरजसे विश्वेश्वर नगरमें आ पहुंचा है. पर लोगोंकी जबानी यह सुनकर कि, क्रोडीमल तो यहाँपर नहीं है, रामगढ़को गया हुआ है, निराश हो गया. और मन ही मन विचार कर रहा है कि, " अब क्या किया जावे. क्रोडीमल तो यहांपर है नहीं. यदि मैं शुरूमें कोई भी बात राजा साहबको कहूंगा तो सफलता नहीं होगी कारणकि मैं जो कहूंगा उसके विषयमें उसका जवाबभी तो लेना पड़ेगा इस समय मेरे कहनेके परिणाममें यही उत्तर मिलेगा कि, क्रोडीमल यहांपर नहीं है, उसके आनेपर देखेंगे. और उसका फिर वह मजा नहीं रहेगा. अतएव यह निश्चय है कि, अभी कोईभी कार्य क्रोडीमलके विरुद्ध करना उचित नहीं पर किसी तरहसे मुझे वैसे ऑफिसरसेभी मिलना चाहिये कि, जो क्रोडीमलका शत्रु हो, और समय आए मेरी मदद करे. नहीं तो यदि राजा साहबने मेरे कहनेपर लक्ष नहीं दिया तो उलटा नुकसान उठाऊंगा. किन्तु ऐसा कौन है जो मंत्रीके विरुद्ध हो और मेरा सहायक बने ? पूछूं इस घरवालेको

यदि कोई पता लगे. ” इतना विचार कर पासके घरवाले रूपना-थसे पूछने लगा कहो भाई आज काल मंत्री कौन है.

रूपनाथ—क्रोडीमल.

भूपालसिंह—क्या वह यहां है ?

रूपनाथ—नहीं तो वह तो रामगढ़ गये हुए हैं.

भूपालसिंह—उनका काम कौन देखता है ?

रूपनाथ—लाहोरीमल देखता है.

भूपालसिंह—क्रोडीमल तथा लाहोरीमलके परस्पर कैसा मेल है ?

रूपनाथ—आप मेलका पूछते हो दोनों एक दूसरेके कट्टर शत्रु हो रहे हैं.

भूपालसिंह—वह कैसे ?

भूपालसिंहके इस प्रश्नपर रूपनाथने, तमाम हाल जो आज तक सुनाथा, भूपालसिंहको कह सुनाया. भूपालसिंहने उस परसे देखा कि, लाहोरीमलसे मिलनेपर मेरा शीघ्रही काम हो सकता है और उसी समय जानेका विचार कर, रूपनाथसे पूछने लगा. क्या इस वक्त लाहोरीमल घरपर होंगे ?

रूपनाथ—इस समय वहतो घर परही होंगे. रातको कहांजा-वेंगे. भूपालसिंहने यही समय लाहोरीमलको मिलनेका उत्तम समझा और लाहोरीमलके मकानपर गया. पर लाहोरीमलको घर पर नहीं पाया. भूपालसिंहने सेवक द्वारा मालूम किया कि वह हवा खोरीको गये हुए हैं. शीघ्रही आ जावेंगे और वहांही बैठा रहा. थोड़ेही समयमें लाहोरीमल हवाखोरीसे लौटा. उसके आतेही भूपालसिंहने प्रणाम किया. लाहोरीमल प्रणामका उत्तर देकर पूछने लगा, कहो भूपालसिंह कैसे आना हुआ.

भूपालसिंह—योंही आपके दर्शनार्थ. ज़रा कामभी है.

लाहोरीमल—कहो क्या काम है ?

भूपालसिंह—वह एकान्तमें कहनेका है.

भूपालसिंहके इतना कहने पर लाहोरीमल उसे अपने प्राईवेट कमरेमें ले गया और पूछने लगा, कहो भूपालसिंह कैसे आना हुआ ?

भूपालसिंह—क्या कहूं मंत्रीजी मेरे पीछे पड़े हुए हैं एक कुंआ तथा दस घरका शतकारोंके खालसे किये. अबके मेरा दूसरा विवाह था, बरात गैर इलाकेमें जानेकी थी. इस कारण राज्यका हाथी मंगाया था जिसकाभी प्रबन्ध नहीं किया. कहिये मेरे ससु-रालवालोंमें कितना हलका लगा होगा.

लाहोरीमल—हां क्यों नहीं ? पर अब क्या चाहते हो ?

भूपालसिंह—मैं कुछ नहीं चाहता. केवल कोडीमलका खातमा चाहता हूं.

लाहोरीमल—(मनही मन प्रसन्न होकर) मंत्रीजीसे इतने नाराज़ क्यों ?

भूपालसिंह—नाराज़ न होऊं तो क्या करूं. उम्रभर खिला-या पिलाया, जो कहा सो किया, जिसके लिये हाथी तक नहीं. अरे साहब हाथी की तो बड़ी बात, मेरे आदमीको रोटीतक नहीं.

लाहोरीमल—क्या कहते हो आदमीको रोटी तक नहीं खिलाई

भूपालसिंह—जी हां नहीं खिलाई तबही तो आग सुलग रही है, अब तो आप मेंहा तको बुझाओ जब है,

लाहोरीमल—बुझेतकुसान मैं बुझा सकता हूं पर मेरे पास मसाला तैयार नहीं है.

भूपालसिंह—मसालेका आप फ़िक्र न कीजिये मेरे पास तैयार है. इतना कहकर भूपालसिंहने वह फ़ेहरिस्त, जो अपने कामदारको भेज तैयार कराई थी, लाहोरीमलके हाथमें दी. जिसको देखकर लाहोरीमल अति प्रसन्न हुआ और कहने लगा, इस परसे मैं शीघ्रही मंत्रीजीका ख़ातमा करा दूंगा पर अभीतो मंत्रीजी रामगढ़की तरफ़ गये हुए हैं, उनको वहांसे लौटने दो.

भूपालसिंह—अभी मंत्रीजीका काम आपही करते हैं न ? यदि यह फ़हरिस्त राजा साहबको मेरी मौजूदगीमें पेश करदी जाय तो क्या हर्ज़ है ?

लाहोरीमल—इस समय मंत्रीका काम मैं करता हूं तुम्हारी मौज़ूदगीमें इसे पेशकरनेमें कोई हर्ज़ नहीं पर मंत्रीके सामने पेश करनेमें श्रेष्ट काम होगा.

भूपालसिंह—न मालूम मंत्रीजी कब आवेंगे मैं तो ज़ियादा दिनोंतक ठहर नहीं सकता

लाहोरीमल—तुम जा सकते हो. यह फ़हरिस्त मुझे दे जाओ समय आए मैं उसका सदुपयोग करदूंगा और ज़रूरत हुई तो तुम्हेंभी बुला लूंगा.

भूपालसिंहने देखा कि, लाहोरीमल ठीक कहते हैं, उस फ़हरिस्तको लाहोरीमलको देकर, अपने मुक़ाम पर चला आया और प्रभातके समय अपने गांवको वापिस लौट गया.

पाठकगण ! आज लाहोरीमल उस फ़हरिस्तको पाकर अति प्रसन्न होरहा है. क्यों नहीं मन मांगी वस्तु हाथ लगी.



प्रकरण ३६

आखेड़का मामला लाहोरीमलके सुपुर्द.



दिनका समय है. मनुष्यमात्र इस समय अपना २ काम-कर रहे हैं. ऐसे समयमें महाराजाधिराज युगेंद्रपालसिंह भी अपने दरवारी हॉलमें बैठे हुए राज्यकार्य देख रहे हैं. पासमें लाहोरीमल बैठा हुआ कागज़ातकी पेशी कर रहा है. इतनेमें आखेड़से एक सवारके आनेकी पहिरेगीरने इत्तिला की. राजासाहवने आखेड़का सवार सुनकर उसे अन्दर बुला लानेकी आज्ञादी आज्ञानुसार पहिरेगीर उसे अन्दर बुला ले आया. सवारने दंडवत् करके मंत्री क्रोडीमलके पत्रको राजा साहवके हाथमें दिया और अर्ज़ की, कि पृथ्वीनाथ ! इसका उत्तर मंत्रीजीने मेरे साथ ही माँगा है.

राजासाहवने पत्रको उस सवारसे लेकर वाहिर वैठनेकी आज्ञा दी. तदनन्तर खुदलिफ़ाफेको खोलकर उस पत्रको पढ़ने लगे. पत्रके पढ़ते ही राजासाहव मंत्री पर क्रोधित हो गये और कहने लगे कि, " कैसा नालायक़ है जो छोटेसे जागीरदार तथा उसके राजपूतोंको समझा नहीं सका. ऐसा मंत्री किस कामका. इसके लिखनेके अनुसार यदि किया जावेगा तो जरूर है कि, मामला वढ़ेगा कईयों के ख़ून होंगे. वे सहल थोड़े ही पकडने देंगे. उनको तो किसी तरहसे समझा कर ही वैठाना चाहिये. पर अव मंत्रीसे तो इस कामके होनेकी आशा नहीं यदि वह कर सकता होता तो करलेता, अव किसे भेजूं जो इस कामको मेरे संतोषकारक कर आवे ? रहा सहा लाहोरीमल है. पर आज पहिले ऐसा काम इसको कभी सोंपा नहीं गया है, न मालूम यह उसको कर सकेगा कि नहीं, फिरभी भेज

ही दूं. जबतक ऐसे कार्य इसके हाथसे नहीं होंगे वह कैसे बनेगा ? यदि इससे नहीं होगा तो वापिस आजावेगा'' इतना विचार मन ही मन कहके राजासाहबने उस पत्रको लाहोरीमलके हाथमें दिया और कहने लगे देख मंत्री कुछ नहीं कर सका.

लाहोरीमल—(पत्रको पढ़कर) इसमें कौनसी कठिनताथी जो मंत्रीजी नहीं कर सके. आज्ञा होतो मैं कर आऊँ ?

राजा—(अति प्रसन्न होकर) हां तुम जा सकते हो पर क्या करोगे ?

लाहोरीमल—सबको समझाकर ठीक कर दूंगा.

राजा—मंत्रीके लिखने अनुसार पुलिसकी तो जरूरत नहीं रहेगी.

लाहोरीमल—पुलिसका वहां क्या काम है ? यदि पुलिस जावेगी या उनको पकड़ने जावेंगे तो उलटा मामला बढ़ेगा.

राजा—ठीक कहता है. यही तो मैं इतनी देर विचार कररहा था, उनको गिरफ़तार करनेमें तो उलटी हानि होगी. देख मंत्री का जानाही था कि, दो ख़ून और करदिये तो भला जब उनको पुलिस पकड़ने जावेगी, वे कब चुकने लगे.

लाहोरीमल—यह तो है. ही वह कब चुकने लगे ? उलटे जलेंगे.

राजा—ठीक है. अब तुम शीघ्रही जाओ और उनको समझा कर ठीक कर आओ.

लाहोरीमल—जो आज्ञा. पर मेरा काम किसको दे जाऊं.

राजा—अपने सरिस्तेदारको दे जाओ और जातेही क्रोडीमलको भेज देना.

लाहोरीमल—जो आज्ञा. इतना कहकर लाहोरीमल दरबारी हॉलसे बाहिर आया और अपना काम सरिस्तेदारको सुपुर्द कर रवानगीमें लगा.

पाठकगण ! आज लाहोरीमल क्रोडीमलकी निष्फलताको देख-कर अति प्रसन्न हो रहा है और चाहता है कि, कितना जल्दी जाऊं और सफलता प्राप्त कर आऊं.

प्रकरण ३७

बुद्धिधनको अशुभ समाचार.



दिनभरका थका हुआ सूर्य आकाशके पश्चिमी किनारोंकी ओर बेतौर झुक पड़ा है. आशा है कि दो या तीन घंटोंमें नीले आसमानी समुद्रमें गिरकर बिलकुल डूब जायेगा वायु छोटे २ कीडे तथा सुरीले पक्षियोंके बोलनेसे आनन्दमय हो रहा है. ऐसे समयमें हम आपको यमुना किनारे ले जाते हैं जहां बुद्धिधन तथा उसका मित्र किशोरीलाल एक बेंचपर बैठे हुए वार्तालाप कर रहे हैं:—

बुद्धिधन—कहो किशोरीलाल उनके ठहरने तथा पढ़ने आदिका प्रबन्ध तो ठीक हो गया है ?

किशोरीलाल—आपके ससुर साहबभी बडे दयालु मनके हैं. उन्होंने हमारे जातेही बड़ी खातिरदारी कि उन दो बालकोंको तो बिलकुल अपनेही समझ लिये. अपनी दुकानमेंही उतरने आदिका प्रबन्ध कर दिया है. वस्तुपाल तेजपालकी स्कूलमें दोनों लड़कोंको हिन्दी तथा अंग्रेजी पढ़ानेको दाखिल कर दिये हैं.

बुद्धिधन—(अति प्रसन्न होकर) ठीक हुआ. अब शीघ्रही लड़के विद्या पठन करेंगे.

किशोरीलाल—क्यों नहीं साहब ? पर वह कर्मठोक बड़ा तीव्र बुद्धिका है. उसने तो जातेही बहुतसी बातें सीख ली ?

बुधिद्धन—तभी तो मैंने उसका नाम विद्यासागर रखनेको कहा था. उसने स्कूलमें अपना क्या नाम लिखाया है ?

किशोरीलाल—वही विद्यासागर जो आपने रक्खा है.

बुद्धिधन—(आनन्दित होकर) ठीक किया.

किशोरीलाल—यह तो सब कुछ है पर मैंने वहां सुना है कि, कर्मचंद्र फकीरचन्द्रकी बेंकने देवाला निकाल दिया जिसमें आपके पचास हज़ार रुपये जमा थे

बुद्धिधन—हां मित्र ? बात सही है.

किशोरीलाल—तब तो आपको बड़ा भारी नुकसान हुआ ?

बुद्धिधन—नुकसान साफ़ तौर पर दीख रहा है.

किशोरीलाल—देखिये साहब ! मैं नहीं कहता था कि, बेंकमें रुपये जमा कराना बुरा है.

बुद्धिधन—यहतो मैं भी जानता हूं पर क्या हो सकता था ? पिताश्रीने जो किया सो किया. अब पश्चात्ताप वृथा है.

किशोरीलाल—क्या कहूं आपके पिताश्रीको उलटाही सूझ रहा है.

बुद्धिधन—क्या फिर कोई उलटा काम किया.

किशोरीलाल—आपके पिताश्री सुलटा कब करने लगे. मैंने सुना है कि, आखेड़के ज़मीनदारसे मंत्रीजीने मिलकर बटमारोंका कोई प्रबन्ध नहीं किया और इस कारण यहांसे लाहोरीमल गया है. कहिये अब कितनी भारी बदनामी होगी. लाहोरीमल ऐसे मौके क्यों चूकने लगा.

बुद्धिधन—क्या कहते हो मित्र ? मेरेपर तो पिताश्रीका आज-तक कोई पत्र भी नहीं. तुमने यह बात कैसे जानी ?

किशोरीलाल—लाहोरीमलके घरमें यह बातें हो रहींथीं.

बुद्धिधन अपने पिताको फिटकारें देकर मनही मन कहने लगा " यह फिर आपने बीचमें क्या कर दिया ? क्या मेरे उपदेशका कोई असर नहीं हुआ ? क्या मैंने नाहक़को इतने दिन शिर पटका? अब यदि एसाही है तो देखना लाहोरीमल आपके कैसे दांत खट्टे करता है पर यह बात कैसे हुई समझमें नहीं आता ? ज़रा फिरसे पूछूं तो " इतना विचारकर कहने लगा किशोरीलाल ! यह क्या बात है ? क्या मेरे पिता उस कामको नहीं कर सके ?

किशोरीलाल—कर सकनेको तो वह कर सकते थे पर उन्होंने आखेड़के ज़मीनदारसे एक हज़ारकी थैली लेली.

बुद्धिधन—हाय यह कैसा नीच काम ! चौरको पनाह देना ! उस बदमाश नत्थुसिंहने अपनी सेवकिनको जो एक तरहकी पुत्री समान है, परदे नशीनकी. उससे रुपये लेकर सच बात पर लड़नेवालों को तङ्ग करना !

किशोरीलाल—यहतो ऐसाही हुआ. मंत्रीजीने राजासाहबको लिखाथा कि, इधर नत्थुसिंह उस सेवकिनको छोड़ता नहीं. उधर नत्थुसिंहके भाई आदि, जबतक नत्थुसिंह उस सेवकिनको न निकाले मानते नहीं. उचित है कि, उनको पकड़मार ठीक किये जायें. राजासाहबने यह राय मंत्रीजीकी उत्तम नहीं समझी और लाहोरीमलको प्रबन्ध करानेको भेजा है.

बुद्धिधन—राजासाहब ऐसी सम्मतिको क्यों पसंद करने लगे ? वैसा करने में तो बदनामी है. न मालूम मेरे पिताको यह क्या सूझी ? इसका परिणाम क्या होगा ?

किशोरीलाल—इसका परिणाम बुरा ही होगा. लाहोरीमल बदला लिये विदून कदापि नहीं रहेगा.

बुद्धिधन—सच कहते हो, परिणाम बुरा ही होगा पर मित्र! मैं क्या करूं न कहनेकाथा जो उनको कह दिया.

किशोरीलाल—आप इसमें क्या करो. होनहार टल नहीं सकता.

इतना कहकर किशोरीलालने घर चलनेका कहा. प्रथम तो बुद्धिधनने चिन्ता के कारण कोई लक्ष नहीं दिया पर उसने देखा कि, भोजन करना है रात होनेवाली है, उठ खड़ा हुआ. फिर दोनों वहांसे चल दिये.

पाठकवृन्द! आप किशोरीलालको यहां देखकर आश्चर्य करते होंगे कि, यह तो बम्बई गया हुआ था, कहांसे आया किन्तु किशोरीलाल उन बालकोंको पहुंचाकर शीघ्रही आगया है.

प्रकरण ३८

लाहोरीमलकी जय.



भातका समय है. सूर्यनारायण उदय हो चुके हैं. ऐसे समयमें आज लाहोरीमल आखेड़में आपहुंचा है. जिसको देखकर क्रोडीमल प्रथम तो यह विचार करने लगा कि, यह यहां कैसे आया. पर जब मालूम हुआ कि, वह झगड़ेको मिटाने आया है, एकदम क्रोधित हुआ. और मनही मन कहने लगा " राजा साहबने इस बदमाशको यहां क्यों भेजा ! क्या मैं काम नहीं कर सकता था ? अब यह आकर

फिर क्या करलेगा ! इसके दादासेभी वे माननेके नहीं. चाहे यह शिर पटक कर मरजाये. पर यदि हज़ार रुपये वाली वात इसे मालूम हो, तो ग़ज़ब कर देगा, प्रथम इसका प्रबन्ध करदेना चाहियें कि, वह बात इसे मालूम ही न होने पावे, और शीघ्रही नत्थुसिंहसे मिलकर पक्का कर दिया कि, वह उस बातको लाहोरी-मलसे न कहे. " किन्तु पाठकवृन्द ! यह बात लाहोरीमलसे कैसे गुप्त रह सकती थी ? लाहोरीमलके आतेही मंत्री राजा साहबकी आज्ञानुसार विश्वेश्वर नगरको रवाना हुआ. उसका वहांसे रवाना होना था कि, लाहोरीमलने कामको हाथमें लिया, प्रथम मनही मन कहने लगा कौनसी युक्ति ठीक होगी कि, काम आसानीसे बन जावे. इसमें संदेह नहीं कि, नत्थुसिंहने जो काम किया है बुराहै तथा, उसके भाई आदि उस बात परसे बिगड़कर बाग़ी हुए हैं जो बेजा नहीं है, अतएव मैं नत्थुसिंहको बुलाकर डराऊं, धमकाऊं कि, वह उस सेवकिनको छोड़दे और काम बन आवे." और न-त्थुसिंहको बुलाया, नत्थुसिंहके आतेही लाहोरीमल कहने लगा, " क्योंजी अब मानना है कि नहीं, सीधे मान जाओ सेवकिनको छोड़ दो नहीं तो तुम्हारे लिये बंदीख़ाना तैयार है," नत्थुसिंहने देखा कि. यह ग़ज़बका आदमी है जो आते ही ज़ेलख़ाना बताता है, इसका ज़ेलख़ाना बताना कुछ लेनेकी गर्ज़से हो, उचित है कि, मंत्रीजीकी तरह एक हज़ारकी भेट कर दूं, आपसे ठंडे होजावेंगे," यह विचार कर एक हज़ारकी थैली लाकर सामने रक्खी.

लाहोरीमल ऐसे समय भेटको क्योंकर स्वीकार करने लगा ? धुतकार कर शीघ्रही कहने लगा " तुम मंत्रीजी मत जानना जो उनकी तरह तुम्हारी इस भेटकी लालचमें आकर तुम्हारा होजाऊं,

तुम नहीं जानते मैं लाहोरीमल हूं ? क्या मंत्रीजीको इसी तरह देकर अपने बनालिये ?

नत्थुसिंह--(शर्मिन्दा होकर) नहीं तो साहब.

लाहोरीमल---नहीं २ मैं सब समझता हुं. जब कि मुझको देने लगे तो उनको दिये बिना कदापि नहीं रहे होंगे. शीघ्र ही कह दो नहीं तो अभी तुम्हारा बुरा हाल करता हूं.

नत्थुसिंह--(अपने आपको फंसा हुआ जानकर) हां साहब एक हज़ार रुपये उनको दिये हैं. कृपाकर आप भी इसे स्वीकारिये और मेरा काम बनाइये.

लाहोरीमलने इस समय उसका बयान लेना उचित समझा और काग़ज़ कलम लेकर बयान लिख दिया तदनन्तर उसको ह-स्ताक्षर करनेको कहा. प्रथम तो नत्थुसिंहने हस्ताक्षर करनेसे इ-न्कार किया किन्तु जब लाहोरीमलने काम बिगाडनेका डर बताया चटसे उसपर हस्ताक्षर कर दिये. लाहोरीमलने एक काममें अपनी सफलता देखकर काग़ज़को जेबमें रक्खा और फिर उस विषयमे तहक़ीक़ात करना शुरू किया.

लाहोरीमल---कहो अब तुम क्या चाहते हो ? यह रुपये तो ले लो और शीघ्रही कहो. ?

नत्थुसिंह---(रुपयेको लेकर) मैं यही चाहता हूं कि, उस सेवकिनको निकालने के लिये मुझे दबाया न जाए और मेर भाइयों को बैठा दिये जाएं.

लाहोरीमल---यहतो ठीक है पर तुमने समझदार होकरके यह क्या कृत्य किया ?

नत्थुसिंह---मुझे नहीं करना था और कर लिया. अब तो आप दया लाकर मेरी बात रक्खो.

लाहोरीमल—एसी न्यायविरुद्ध दया कदापि नहीं रह सकती. यदि तुम अपना भला चाहते हो तो उसे छोड़दो और झगड़ेको तोड़ो.

नत्थुसिंह—वह तो अब कदापि नहीं छुट सकती.

लाहोरीमल—यह तुम्हारी हट नहीं चलनेकी. सीधे मान जाओ नहीं तो बेड़ियाँ तैयार हैं. ?

इतना कहकर पुलिस वालोंको बेड़ियें लानेकी आज्ञादी कि, एक जवान फ़ुरतीसे बेड़ियें ले आया. नत्थुसिंह उन्हेंने देखकर घबरा गया किन्तु साहसी बनकर कहने लगा " कौन है जो मुझे बेड़ियें पहिनाता है ! मैं ने क्या बिगाड़ा है ? राज किस रूलसे मेरे पर यह सख्ती कर रहा है ? " नत्थुसिंहके ऐसा कहने पर लाहोरीमल विचारमें पड़ गया और मन ही मन कहने लगा "वास्तवमें न्यायानुसार इसका कोई दोष नहीं है. पर मैंने बेड़ियें कौनसी उसके पैर डलवानेको मंगवाईथी. मैं तो यह देखताथा कि, इस तरहसे डरकर मानजाय तो अच्छा है. पर नहीं मानता है उलटा सरज़ोरी करता है. न्यायानुसार मैं इसको सख्ती नहीं कर सकता पर किसी तरहसे कामभी तो करना है, कौनसी युक्ति निकाली जाय ? यदि उस सेवकिनको किसी तरहसे बहका कर अपनी कपट क्रियामें लूंतो हो सकता है. पर यह उसके पास मुझे जानेदेगा कि नहीं, देखूं नत्थुसिंहसे पूंछतो लूं. " यह निश्चयकर पुलिसवाले को बेड़ियें लेजानेकी आज्ञा दी और उसे पूछने लगाकि, खैर कोई बात नहीं. यदि तुम उस सेवकिनको न छोड़ो न सही पर मैं ज़रा उससे वार्तालाप करना चाहता हूं कहो इसमें तो कोई हर्ज तो नहीं है ?

नत्थुसिंह—हर्ज क्यों नहीं ? वह अब मेरे परदे नशीन है. आप उसको कैसे मिल सकते हैं. ?

लाहोरीमल—परदा लगाकर वार्तालाप किया जायतो क्या हर्ज है. ?

नत्थुसिंह—नहीं आप परदा लगाकर भी बातें नहीं कर सकते. आपके करना होसो कीजिये.

लाहोरीमल—(क्रोधित होकर) क्या बिलकुल तुमने मज़ा कही समझ लिया है " है पुलिसवाला कोई हाज़िर ? इसको पकड़ लो ? "

लाहोरीमलका इतना कहना था कि, दस पुलिसवालोंने उसको आकर घेर लिया. फिरतो नत्थुसिंहने बहुतेरा चाहा कि, मुझे छोड़दे और उस सेवकिनके पासभी जानेकी आज्ञा दी, किन्तु जवान लाहोरीमलने एक नहीं सुनी. नत्थुसिंहको पहिरेमें बैठाकर लाहोरीमल चार पुलिसके जवान साथ लेकर शीघ्रही उस सेवकिनके पास पहुंचा और दासीद्वारा अपना आगमन ज़ाहिर करा मिलनेका प्रबन्ध चाहा. प्रथमतो उस सेवकिनने कहलाया कि, मुझे क्या पूछना है ? पूछना हो जो ठाकुरसाहबसे पूछलिया जाय. परन्तु लाहोरीमलके यह कहलाने पर कि " कोई बात तुम्हींसे पूंछनेकी है " कनात खिचवाकर लाहोरीमलको अन्दर बुलवाया. लाहोरीमलने जाकर प्रथम यही पुछा " क्या तुम नत्थुसिंहको किसी तरहसे नहीं छोड़ोगी ? "

सेवकिन—नहीं तो कभीभी नहीं छोडूंगी. यदि छोड़ना होता तो मैं उनके परदेनशीन क्यों होती ?

लाहोरीमल—यह हठ तुम्हारी अच्छी नहीं मान जाओ.

सेवकिन--आप क्या करोगे अन्तमें जाकर मेरा प्राण लोगे ? ले लो ! पर मैंतो उनको कदापि नहीं छोडूंगी.

लाहारीमलने देखा कि, औरतभी जबरदस्त है जो प्राणपर खेलनेको तैयार है. इसको इस तरह डरानेमें काम नहीं बनेगा कोई दूसरा उपाय निकालूं. और कहने लगा अच्छा न छोड़ो तो न सही पर ज़रा विचारो तो सही तुम्हारे ऐसा करनेमें कितना नुक़सान हो रहा है. नत्थुसिंहके भाई आदि तुम्हारे कट्टर शत्रु बन गए वे भला तुमको कब छोड़ेंगे ?

सेवकिन—वे मेरा क्याकर लेंगे मेरा प्राण लेंगे और करनेसे रहे.

लाहोरीमल—ऐसा कहने में तुम भूल करती हो. वे तुम्हारा प्राण नहीं लेंगे बलिक समय आए तुम्हारा नाक कान काटकर, बद शक्ल बनाकर तथा नत्थुसिंहको मारकर, तमाम जागीर पर कब्जा करेंगे. जरा विचारो और मेरा कहना मानो. तुम्हारे थोड़ेसे सुखके लिये सदैवकी जागीरका नाश करना, नत्थुसिंहके असली कुटुम्बको दुखी बनाना तुम्हें उचित नहीं है. आगे जैसी तुम्हारी इच्छा. मेरा काम समझानेका है सो समझा दिया

लाहोरीमलके इतने कहने पर किंचित् ख्याल हुआ और विचारने लगीकि, " वास्तवमें मेरे परदे नशीन होनेमे बहुतही बुरा हुआ और होगा. देखो उन दुष्ट हृदय राजपूतोने कितनोंकी जानली, कितनोंको घायल किये, कितनोंको लूटे. वह मात्र मेरे ही लिये. और अबभी यदि मैं रहूंगी नो ज़रूर है कि, ठाकुरसाहब तथा मुझकोभी मारेंगे. उचित है कि, में ठाकुर साहबको छोड़दूं और झगड़ेको तोडूं. किन्तु फिर विचार बदल गया और कहने लगी यदि मैं ठाकुरसाहबको छोडूंगीतो मेरा फिर कौन ? और लोग क्या कहेंगे, उनको मैं अपना मुंह कैसे बताऊँगी ? अबतो

उनको छोनाड़ उचित नहीं वे चाहे रक्खें या मारदें या नाक कांन काटदें. " यह निश्चयकर कहने लगी. आप कहते हैं जो सब ठीक है पर ठाकुरसाहबको छोडनेमें मेरे कोई आधार नहीं रहता है. लोग भी इसमें बुरा समझेंगे अतएव मैं आपकी बातको मान नहीं सकती हूं.

लाहोरीमल—इसमें लोग क्यों बुरामानने लगे ? वे तो झगड़ा मिटजानेसे तुम्हें शाबाशी देंगे, और आधार तुम किसका चाहती हो ! सबसे बड़ा आधार परमात्माका है, तुमने किसी नीचसे तो कोई वास्ता रक्खा नहीं है जो तुम्हें दूसरा कोई ग्रहण न करे, नाहक़ इस तरह हठ करके इस होते हुए पापकी भागीदार क्यों बनती हो, कृपाकर मेरा कहना मानो.

सेवकिन—ठीक है मैं मानूंगी पर ठाकुर साहब कहां ? उनको बुलाकर ज़रा पूछ देखूं.

लाहोरीमल—इसमें ठाकुर साहबको क्या पूछना है ? वह ऐसा कब कहेंगे ?

सेवकिन—यह सब कुछ है पर वह कहां हैं पूंछतो लूं,

इतना कहकर दासीको उन्हें बुलालानेको कहा कि, लाहोरीमल कह बैठा वह तो हवालात किये गये हैं, सीधी तरहसे मान जाओ नहीं तो तुम्हारी भी वैसी ही दशा होगी,

सेवकिनने देखा कि, यह तो बुरा हुआ वे तो तकलीफ़ देंगे जब देंगे राजही बीचमें देने लगा, अबतो मुझे मान जाना ही उचित है, और किसी तरहसे ठाकुर साहबको छुड़ाने चाहियें, यह विचार कर कहने लगी " अच्छा मैं मानती हूं पर आप ठाकुर साहबको छोड़ दीजिये, "

लाहोरीमल---ठाकुर साहबको छोड़ दूंगा किन्तु प्रथम तुम मेरे साथ वचन देकर चलो ताकि उन लोगोंको ले आवें जो पहाड़ोंमें बैठे हुए लूट मार कर रहे हैं,

सेवकिन---मैं वहां क्यों आने लगी,

लाहोरीमल---जब तुम आकर नही कहोगी तो उन्हें विश्वास कैसे होगा ?

सेवकिन---तुम कहोतो मैं पत्र लिख दूं वह उन्हें बतादेना ?

लाहोरीमल---अच्छा लिख दो,

लाहोरीमलके ऐसा कहने पर सेवकिनने पत्र लिख दिया कि, " मैंने नत्थुसिंहके परदे नशीन होनेमें भूलकी है, आप क्षमा करें, अब मैं उनसे अपना सम्बन्ध नहीं रक्खुंगी, सहर्ष आजाओ " और लाहोरीमलके हाथमें दिया, लाहोरीमलने उस पत्रको लेकर वहां एक गार्ड बैठा दी और शीघ्रही उन लोगोंके पास पहाड़में गया जहां वे बैठे हुए थे, लाहोरीमलके जातेही वे लोग प्रथम तो डर गये कि, कोई पकड़ने आता है और सम्हल बैठे पर जब देखा कि, लाहोरीमल केवल दो सिपाहियोंको लेकर आता है, डरको दूर किया, लाहोरीमलने उस पत्रको कानसिंहके हाथमें दिया जिसको कानसिंहने पढ़ा और कहने लगा कि, यह पत्र उस चांडालीने लिखा है इसकी हमें क्या ख़ातिरी ?

लाहोरीमल---क्या तुम उसके अक्षर नहीं पहिचानते ?

कानसिंह---नहीं तो,

लाहोरीमल---ख़ातिरीमें क्या कराऊं लिखा हुआ तो उसीका है, मैं तो उन दोनोंको हवालात कर आया हूं, तुम सबलोग आओ मैं तुम्हारे सामने सब ठीक कर देता हूं,

कानसिंह बहादुरसिंहसे कहने लगा "कहो भाई अब क्या करें. यह अपने सामने उस चांडालीको निकाल दें. फिर क्या चाहिये?"

बहादुरसिंह---यह तो ठीक है पर कहो इसमें चालतो नहींहुई.

कानसिंहने यह बात फिर लाहोरीमलको कही, लाहोरीमलने यह कहकर कि, धोका नहीं है, वचन दिये. बस क्या था. सबके सब उसके साथ गांवमें आए. उनका गांवमें आना था कि, सब लोग आश्चर्य करने लगे. अचानक यह क्या हुआ ? कहीं वे लोग गांवको लूटनेको तो नहीं आए ! बल्कि सब मकानके दरवाजे बन्द करने लगे, जब उन्होंने देखा कि, किसीका कुछ नहीं बिगाड़ा तसल्ली हुई और दरवाजे खोल दिये.

अब लाहोरीमल सीधा नत्थुसिंहके पास पहुंचा और उस पत्रको उसके हाथमें दिया जिसको पढ़ते ही नत्थुसिंहने बहुतसी गाली उस सेवकिनको सुनाई और कहने लगा " यदि ऐसा था तो इतने दिन मेरे पीछे क्यों पड़ी थी ? " मेरे कुलको यह कलङ्क क्यों लगाया, मुझे अपने भाइयोंका शत्रु बनाकर यह झगड़ा क्यों कराया? जा चांडाली अपना मुंह काला कर. मैं भी नहीं रक्खूंगा. और लाहोरीमलसे कहने लगा. कृपाकर माफ़करो और उस चांडालीको मेरे घरमेंसे निकाल दो तथा मेरे भाईयोंको लाओ जिनके शरणमें पड़कर माफ़ी मांगुं. लाहोरीमल सबको गांवमेंतो लेही आया था. एक स्थानपर बैठा रक्खे थे जहांसे नत्थुसिंहके पास बुला लिये. जिनको देखते ही पैरोंमें पड़गया और हाथ जोड़कर कहने लगा कि, यह मेरी नादानी हुई जो तुम बन्धुओंका न मानकर उस चांडालीको परदे नशीन की. अब आप मेरे कसूरको क्षमा

करें. बस क्याथा तमाम बन्धु खुश होगये. शीघ्रही उस सेवकिनको बुलाकर पट्टेके बाहिर कर दी. लाहोरीमलभी विजयके डंके बजाता हुआ अपने नगरको रवाना हुआ.

प्रकरण ३९.

कोडीमल अत्यन्त चिंतामग्न.



रात्रिका समय है लगभग आठ बजे होंगे. अभितक मनुष्य सोने नहीं पाये हैं. वही छोटे २ बच्चे केवल निद्रादेवीके शरणागत हुये हैं. ऐसे समयमें आज कोडीमल चिन्तारूपी सागरमें हिलोरे खाता हुआ अपने मकानपर आपहुंचा है हाथ मुंह धोकर तथा थकानको दूर कर आराम कुर्सी पर लेटा हुआ है और मनही मन विचार कर रहा है कि, " हाय ! मुझे यह क्या सूझी जो कामकी तरफ़ किंचित् ख़याल न कर नत्थुसिंहकी भेट स्वीकारकर ली ! हाय मैंने अपने प्रिय पुत्रके उपदेशको क्यों नहीं मान लिया ? अब मैं राजासाहबको क्या उत्तर दूंगा ? तथा राजासाहब अपने मनमें क्या समझेंगे कि, क्या मंत्री मेरा ऐसा वैसा है जो कामको नहीं कर सका ? पर वह काम ऐसा वैसा नहीं था, बड़ा भारी था. मैं बाग़ियोंको कैसे बैठाता ? नत्थुसिंहको कैसे कहताकि, उस सेवकिनको छोड़दे तथा वह सेवकिन नत्थुसिंहको कैसे छोड़ती ? क्या है ऐसाही उत्तर राजासाहबको दे दूंगा किन्तु यदि मैं नत्थुसिंहकी भेट स्वीकार न करता तो कार्यका होना संभव था. किसी तरहसे उस सेवकिनको फ़ुसला

बहका कर उनका सम्बन्ध तुडवा देता और काम बन जाता. पर अब क्या हो सकता है ? कहीं लाहोरीमल इस काम कोनकर आवे वरना ग़ज़ब हो जायगा. नीचा देखना पडेगा. इसतरह क्रोडीमल वैठा हुआ पश्चात्ताप कर रहा था कि बुद्धिधन लाल पीला होकर आ उपस्थित हुआ और अपने पितासे कहने लगाकि, मेरे कहनेका आपको किंचित् उपदेश नहीं हुआ उसीका कारण है कि, मुंह उतार कर आना पड़ा और आपका कट्टर शत्रु लाहोरीमल गया. अब देखना वह कामको कैसी चतुराईसे कर लाता है और आपको शर्मिन्दा बनाता है.

क्रोडीमल प्रथम तो अपने पुत्र के ऐसे वचनोंसे क्रोधित हो गया. पर जब उसने मनमें किंचित् विचारा तो उत्तरमें वैसा कुछ कहने नहीं पाया, केवल इतनाही कहने लगा कि, मैंने तुम्हारी नसीहत कैसे नहीं मानी ? कोई न माने उसका तो मैं क्या करूं?

बुद्धिधन--क्या मुझे मालूम नहीं है कि, आपने एक हज़ार रुपये लेकर नत्थुसिंहको उस सेवकिनके छोड़ानेको दवायाही नहीं. वरना ऐसा कौनसा मुश्किल काम था और नत्थुसिंहकी क्या मजाल थी जो न मानता ? पर अफ़सोस कि, आपने धर्म्मको न देखकर केवल अपना लाभ ही चाहा.

क्रोडीमल--(आश्चर्यमें होकर) क्या कहता है ? कहतो तुझे यह कैसे मालूम हुआ कि, मैंने नत्थुसिंहसे एक हज़ार रुपये लिये है.

बुद्धिधन--भला बात कहीं छिपी रह सकती है. क्या कहलाते हो ! लाहोरीमलके घरकी औरतें तक यह सब बातें जानती हैं.

यह हाल अपने बेटेकी ज़बानसे सुनकर क्रोडीमल एकदम पानीमें बैठ गया और कहने लगाकि, “हाय ! मैं मरा अब मैं कभीभी

बच नहीं सकता. लाहोरीमल अब मुझको गिरानेमें कभीभी नहीं चूकेगा, वह आतेही यह बात राजासाहबको कहेगा उस परसे राजासाहब क्रोधित होकर मुझे निकाल देंग. पर अब क्या हो सकता है जो होना होगा सो हो जायगा. " ऐसी ढाढ़स बांधकर अपने पुत्रसे कहने लगा बेटा अब मैं तेरे कहे बिना या तेरी सलाहके विरुद्ध कोई कार्य नहीं करूंगा.

बुद्धिधन--अब करो या न करो बिगड़ना है बिगड़ जायगा पापका घड़ा भर आया.

क्रोडीमल--क्या कहता है बेटा ! मैंने ऐसा कौनसा पाप किया जिससे पापका घड़ा भर आया ?

बुद्धिधन--क्या पिताश्री आपने कोई पाप नहीं किया ? झूंठ क्यों बोलते हो ? कर आए हो सो क्या है ?

क्रोडीमल--मैं कर आया उसमें पाप कैसा ? नत्थुसिंहने बिना कहे रुपये रक्खे और मैंने लिये. उसका कहना यह था कि, मुझे सेवकिनके छोड़नेको मजबूर नहीं किया जाय वैसा ही किया.

बुद्धिधन--(दिलमें अफ़सोस कर) इतनी ही तो ख़ामी है. कृपाकर यह तो सोचो राजा साहबका क्या हुकम था जिसकी रोटियां खाते हो. उनकी आज्ञाके विरुद्ध तो हुआ न ?

क्रोडीमल--हां बेटा आज्ञा विरुद्ध तो हुआ. उनकी आज्ञा तो बाग़ियोंको किसी तरह बैठानेकी थी जो मैंने नहीं किया पर बेटा वह नहीं माने तो मैं क्या करता ! वह उलटे मुझे मारने उठे थे.

बुद्धिधन--मारने तो उठेही होंगे. आपने उनका पक्ष क्यों नहीं लिया जो सत्यपर थे ! क्या यह नीतिके अनुसार है कि, कोई

मनुष्य अपनी सेवकिनको परदे नशीन करे ? क्या यह किसी धर्म्ममें लिखा हुआ है कि, अपनी पुत्री समान सेवकिनसे कुव्यवहार रक्खे ?

क्रोडीमल—नहीं तो नीति या शास्त्र तो इस बातकी आज्ञा नहीं देता.

बुद्धिधन—तो फिर आपने नत्थुसिंहकी भेटको क्यों स्वीकार की ? आपके भेट स्वीकार करनेसे उन बागियोंनें जितने लोगोंको जानसे मारे होंगे, जितनोंको लूटे होंगे, उनका पाप आपके सिर हुआ कि नहीं ?

क्रोडीमल—मेरे पर वह पाप कैसा ? किया तो उन्होंने किया न कि मैंनें.

बुद्धिधन—शास्त्रमें कहा गया है कि जो करे, कराये, या उसका अनुमोदन करे, वे सब पापके भागी होते हैं. बताईए आप उस अनुसार पापके भागीदार बनेन जो एक हज़ार रुपये लेकर नत्थुसिंहके बने, कि जिससे बाग़ी लोगोंने कुकर्म करनेमें ज़ोर पकड़ा ? गोया उसमें आपकी सम्मति हुई और कुकर्म होनेको अच्छा ही समझा.

क्रोडीमल—मैंने कोई सम्मति नहीं दी. न कुकर्म होतेको अच्छा समझा. मुझे तो उनके कृत्य पर उलटी घृणा आती थी.

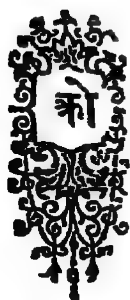
बुद्धिधन—वास्तवमें आपने अपनी ज़बानसे कोई सम्मति नहीं दी. ज्यों उनके कृत्यको देखकर दिलमें घृणा हो लाए होंगे. पर वह आपके हज़ार रुपये लेना उसमें दाखि़ल हो चुके. जैसे कोई झूंठा ख़त लिखता है उसमें कोई झूठी साक्षी (गवाही) डालता है तो कहिये उसमें पाप हुआ कि नहीं हुआ ? उसी तरहसे आपने

हज़ार रुपये लेकर खोटे खतमें साख डालनेका मज़मून किया है. इतनाज नहीं आप मालिकके आज्ञाहीन और वने.

क्रोडीमलके दिलमें यह बात जच गई और मान लिया कि, वास्तवमें मैं पापका भागीदार बना बल्कि इस परसे पहिले वाले कामभी इसी तरहके समझने लगा और मनमें अति पश्चाताप करने लगा. तथा साथमें अपने पुत्रको उसके ऐसे उत्तम विचारोंको देखकर धन्यवाद देने लगा. पर कहा गया है " कि, गया सो गया " अब वह थोड़ेही हाथ आ सकता है, क्रोडीमलतो अब यही सोच रहा है कि, राजा साहबको जाकर कल क्या उत्तर दूंगा और शीघ्रही पलङ्ग पर लेट गया. बुद्धिधन भी अपने कमरेमें जाकर सो गया.

प्रकरण ४०.

क्रोडीमलके पापका घड़ा फुट गया.



डीमल प्रभातके समय उठकर प्रथम तो स्नान आदिमें लीन हुआ तत्पश्चात् भोजन करके जब दस बज गये कचहरीको रवाना हुआ. रास्तेमें चलते २ यही सोच रहा है कि, राजा साहबको मैं क्या जवाब दूंगा ? क्या वह मेरी बातको जान जाएंगे ? कदापि नहीं. पर अच्छा है अभीतक लाहोरीमल नही आया. वहतो कुछ कहने या सुननेसे रहा. जो राजा साहब कहेंगे सुन लूंगा. यह निश्चय कर अपने दीवान-

खानेमें जा बैठा. राजा साहबको क्रोडीमलके आनेकी खबर हो चुकीथी. शीघ्रही नियत समय पर एक सेवकको बुला लानेके आज्ञा दी. सेवकके आतेही क्रोडीमल उठ रवाना हुआ और राजा साहबके सामने जाउपस्थित हुआ. क्रोडीमलको देखते ही राजा साहब उस पर आग बबूला हो गये और कहने लगे. क्यों क्रोडी-मल ! तुझसे ज़रासा भी काम नहीं हो सका ऐसेको रखनेसे क्या लाभ ?

क्रोडीमल--कृपानाथ ! आपका कहना यथार्थ है पर मेरा इसमें दोष नहीं. मैंने तो बहुतेरा चाहा कि, काम बन जाय पर किसीने नहीं माना.

राजा--क्या नहीं माना ? वहां कौनसे ऐसे दिलावर तथा बहादुर पड़े थे जो राजका सामना करते और न मानते.

क्रोडीमल--क्या कहूं पुलिसके साथ तो मुझे आने ही नहीं दिया. अकेला जाकर समझाने लगातो मारने दौड़े.

राजा--कौन मारने दौड़ा क्या वे बाग़ी लोग ?

क्रोडीमल--जीहां वे बाग़ी लोगही और कौन मारने दौड़ता.

राजा--बाग़ी लोगोंका क्या दोष था जो समझाने गया था ? आखेड़के ज़मीनदारको ही ठीक क्यों नहीं किया जिसने पुत्री समान सेवकिनको अपनी प्रिया बना ली ?

क्रोडीमल--(दिलमें अफ़सोस लाकर) वह भी हरामजादा कहां मानता था. उसीकी बदौलत तो यह सब बखेड़ा हुआ है और होरहा है.

राजा--(क्रोधित होकर) वह आसानीसे क्यों मानने लगा ?

शीघ्रही उसको कैदकर उस सेवकिनको लात मारकर क्यों नहीं निकाल दी ?

क्रोडीमल—(मनही मन राजासाहबका कहना यथार्थ मानकर) ऐसा कौनसे क़ानूनमें लिखा हुआ है कि, जिस परसे मैं नत्थुसिंहको कैद करता.

राजा—रहने दे तेरे क़ानूनको. क्या तेरा क़ानून ऐसाही है कि नीतीके विरुद्ध करने वालेको कुछ कहा नहीं जाय. और सामने वाले लूटमार करते रहें ! अनाथों के प्राण लेते रहें ?

क्रोडीमल—(दयाके शब्दका स्मरण करके) वास्तव में उन लोगोंकी लूटमार तथा अनाथोंका प्राण हरना बुरा है.

राजा—तो फिर उस वक्त ऐसा विचार क्यों नहीं किया ?

क्रोडीमल—मैंने चाहातो बहुत था कि, किसी तरहसे अनर्थ होना मिट जाय. पर क्या कहूं किसीने माना ही नहीं. नत्थुसिंहको कहा तो न मानते कहने लगा कि, यदि मुझे इस कामके लिये तङ्ग करोगे तो मैंभी बग़ावत अख़्तियार कर लूंगा. उधर उन लोगोंको समझाया तो कहने लगे कि, ज़ियादा कहोगे तो और अनर्थ करेंगे फिर पृथ्वीनाथ मैं क्या करता ?

राजा—कुछ नहीं तुझमें काम करनेकी लियाक़त नहीं है. देखना अब लाहोरीमल कामको कैसी होशियारीसे कर आता है.

क्रोडीमल—कृपानाथ ! वहभी इस कामको करने नहीं पाएगा.

राजा—ठीक है उसे आने दे फिर बताऊंगा कि, करके आया कि नहीं.

राजासाहबका इतना कहनाही था कि, लाहोरीमल आ उप-

स्थित हुआ और हाथ जोड़कर कहने लगा " हुज़ूर के इक़बालसे सब तरहसे आनन्द है. अब कोई बखेड़ा आखेड़ में नहीं रहा. "

क्रोडीमल लाहोरीमलको देखकर तथा उसकी ज़बानसे यह समाचार सुनकर शर्मिन्दा हो गया और मनही मन पश्चात्ताप करने लगा.

राजासाहब लाहोरीमलसे तमाम वृत्तान्त सुनकर क्रोडीमलसे कहने लगे कि, देख यह कामको कर आया कि नहीं ?

क्रोडीमल—(शर्मिन्दा होकर) हां हुज़ूर कर आया न मालूम मेरेसे यह काम क्यों नहीं हुआ.

लाहोरीमलने यह समय शिकायतका उत्तम समझा और कहने लगा पृथ्वीनाथ ! इनसे होता कहांसे यह तो नत्थुसिंहसे मिल गये थे. देखिये यह पत्र ! इतना कहकर उस पत्रको राजा साहबके हाथमें दिया जो नत्थुसिंहसे लिखवा लाया था. राजा साहब उस पत्रको पढ़नेही क्रोडीमल पर जल उठे और कहने लगे, क्योंरे ऐसा नीच काम ? क्या तू आज्ञाहीन ? रुपये लेनेके समय मेरे हुक्मका ख़याल तक नहीं किया ? क्या तुझे और कोई मौक़ा नहीं था जो ऐसे काममें रुपये लिये ? क्या इस समय तक तूने जो बातें कही हैं असत्य हैं ?

क्रोडीमल राजा साहबके इन प्रश्नोंसे पानीमें बैठ गया यानि कुल शरीर उसका पानी समान होगया. उत्तर तक देने नहीं पाया नीचा सिर किये बैठा रहा. इतनेमें लाहोरीमलने भूपालसिंह वाले पत्रोंको तथा जसवन्तसिंह तेजसिंह, आदिके लाए हुए पत्र राजा साहबके हाथमें दिये बल्कि कहने लगा कि, इन पत्रोंके देने वाले हाज़िर हैं, आज्ञा हो तो अन्दर बुलाए जाएं. राजा साहबने शीघ्रही

उन पत्रोंको लेकर पढ़ना शुरू किया उधर कोडीमल यह विचित्र हाल देखकर और घबराने लगा मनही मन कहने लगा कि, अब मेरा. पापका घडा फूटा जाता है. कोई सहारा नहीं और प्रभो २ भजने लगा. पर क्या हो सकता था ? राजा साहब पत्रोंको पढ़कर शीघ्रही क्रोधित हुए और कहने लगे, कोडीमल क्या मैंने तुझको ऐसा समझकर अपना मंत्री बनाया था ? क्या सब काम तूने ऐसेही किये हैं ? क्या तूने रिश्वतको ही अपना मित्र बना रक्खा था ? क्या तुझे यह ख़याल तनिकभी नहीं हुआ कि, गुरु तेरा सिरपर बैठा हुआ है ? क्या सांवलदासका पुत्र होकरके तुझे यह उचित था कि, राजाकी आमदको गड़प कर जाय ? क्या यह तेरी नमक़हरामी ? क्या उस गुमनाम पत्रके लिखने वालोंने तुझे नमकहराम असत्य लिखा था ? जा दुष्ट अपना मुंह काला कर ऐसा मंत्री मुझे नहीं चाहिये.

कोडीमलने देखा कि, अब मुझे राजा साहब रक्खेंगे तो नहीं कहनेसे क्यों चुकूं. ज़रा साहसी बनकर कहने लगा. क्या है हुजूर ! मैंने ऐसा कौनसा काम बिगाड़ जो क्रोधित हुए जाते हैं. कृपाकर कहें तो बात क्या है ?

कोडीमलके ऐसा कहनेपर राजा साहबने उन तमाम काग़ज़ात को कोडीमलके सामने फेंके. और कहने लगे, देख यह क्या है ? कोडीमलने उन काग़ज़ातोंको पढ़े जिसमें तीन लाख रुपये रिश्वत के दर्ज थे और कहने लगा कि, कृपानाथ, यह सब झूंठ है. आसामियोंको मेरे सामने लाई जाएं.

कोडीमलका इतना कहना था कि, लाहोरीमल बाहिर जाकर भूपालसिंह, तेजसिंह तथा जसवन्तसिंहको मय थोडी बहुत आसामी

यंके अन्दर ले आया, जिनको देखकर क्रोडीमल और रोने लगा कि, हाय ! यह कैसा समय. दुशमनने हरएक मसाला तैयार कर बल्कि पक्का पकाया लाया है. बोलने तक की जगह नहीं है. पर देखूं पूछूं तो सही और आसामियोंसे पूछने लगा तो सामने होनेको तैयार हुई. लाचार क्रोडीमल हार मानकर चुपका हो बैठा और मनही मन कहने लगा कि, अब राजा साहब न मालूम क्या करेंगे.

इधर राजा साहब विचारमें पड़े कि, अब क्या करना उचित होगा ? शास्त्रानुसार क्रोडीमलको रखना उचित नहीः—

स्वदेशजं कुलाचारं विशुद्धं सुपथा सुचिम् ।
मन्त्र ज्ञमव्यसनिनं व्यभिचारविवर्जितम् ॥
अधीत व्यवहाराङ्गं मौलं ख्यातं विपश्चितम् ।
अर्थस्योत्पादकं सम्यग्विदध्यान्मन्त्रिणं नृपः ॥

इसमें तो संदेह नहीं कि, क्रोडीमल यहां ही का रहने वाला है और उसका कुलभी उत्तम है, किन्तु दूसरे गुण इसमें नहीं हैं. इससे तो लाहोरीमलही ठीक है जो समयको देखता है. समझता है. कामको कर सकता है. देखो क्रोडीमलकी नाईं रुपये न लेकर मेरी आज्ञाका पालन किया. लाहोरीमल मंत्रीका काम कर सकता है इसीको मंत्रीपद देना उचित है पर क्रोडीमलपर दंड क्या ? जिसने तीन लाख रुपये लोगोंसे खाकर न्यायको पानीमें मिलाया राजकी आमदको रूाकर नुकसान किया. उचित दंड देना ही चाहिये, यह निश्चय कर तथा दंडके विषयमें विचार कर कहने लगे.

" मैं अति खेदके साथ कहता हूं कि, क्रोडीमल जिसपर मेरा

पूर्ण विश्वास था और जिसको मैं एक अपने बन्धु समान समझता था और जो वह कहता था वही मैं करता था, वह आज मेरी नज़रोंके सामने नमकहराम ठहरा. न्यायका अन्याय करके अपना घर भरा गरीबोंके गले काटे, केवल इतनाही नहीं बल्कि राजकी आमद तकको गाड़प कर गया. मैंने वह काम जिसमें कईयोंके गले काटे जा रहे थे, कई लूटे जारहे थे, सुपुर्द किया. उसका किंचित् विचार न कर रुपये खाकर गोलमाल कर दिया कि जिसके कारण दो चार अनाथोंकी जान गई. मेरा आज्ञाहीन बना. ऐसे पुरुषको यदि प्राण रहितकी सजा दीजाय तो क्या बेजा है ? पर मुझे उस सांवलशाहकी नमकहलालीपर किंचित् ख्याल आता है जिसकाकि यह पुत्र है. अतएव वैसी सजाका देना मैं उचित नहीं समझता. इसके घरमें जितने रुपये हैं सब राजकोषमें मंगा लिये जावें तथा इसको सदैवके लिये मंत्रीपदसे हटा दिया जाय और वही मंत्रीपद उस नमकहलाल लाहोरीमलको दिया जाय जिसने मेरी आज्ञाका पालन किया. रिश्वतको ठोकर मारी. ”

बस राजा साहबका इतना कहना था कि, कोडीमल तो रोने जैसा होगया तथा नाना प्रकारसे पश्चात्ताप करने लगा. राजा साहबकी आज्ञानुसार लाहोरीमलने सहर्ष मंत्रीपद सम्हाला तथा पुलिस शीघ्रही कोडीमलकीके मकानपर पहुंची और जिस कदर रुपये थे ले आकर राजकोषमें दाखिल कर दिये जो लगभग दश लाख के होंगे.

पाठकगण ! आप भूपालसिंह, जसवन्तसिंह तथा तेजसिंह आदिको एक साथ दरबारमे देखकर आश्चर्य करते होगे पर लाहोरीमलने आखेड़ के काममें अपनी जय समझ भूपालसिंहको आते

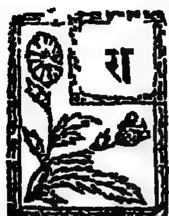
हुए बुला लाया था. जसवन्तसिंह तथा तेजसिंह पहिलेसेही अपना काम बनाकर नगरमें लाहोरीमलकी इंतजारीमें आकर बैठे हुए थे जिन्हेंभी यह समय क्रोडीमलके विरुद्ध शिकायत करनेका उत्तम समझकर साथ ले आया था. कर्मने वह ज़ोर मारा कि, लाहोरीमल शीघ्रही अपने कार्यमें सफलता प्राप्त कर सका और आज वह तथा उसके साथी आनन्द मना रहे हैं.

आहा ! कर्मकी क्या विचित्र गति है. कहां तो क्रोडीमल मंत्री कहलाता था और कहां अब लाहोरीमल मंत्री कहलाने लगा. क्या क्रोडीमलको स्वप्नमें भी ऐसा ख्याल था कि मंत्री पद आज ही चला जायगा और इस तरहसे घर मेरा लूटा जायगा तथा क्यां लाहोरीमलको ऐसा ख्याल था कि, क्रोडीमलको मैं हराकर इस तरह ज़रासी देरमें मंत्रीपद लेने पाऊंगा ? किन्तु कहा गया है कि, जब पापका घड़ा भर आता है तो फूटते देर नहीं लगती त्यों ही जब धर्मका घड़ा ज़ोर मारता है तो लाभ होते देर नही लगती इसी प्रकार क्रोडीमलका पापका घड़ा भर आया और लाहोरीमल के धर्मके घड़ेने ज़ोर मारा जो एकसे अनेक शत्रु क्रोडीमलके विरुद्ध दरबारमें आखड़े हुए और शीघ्रही पापका घड़ा फूटकर लाहोरीमल उसको नीचा दिखाने पाया.



प्रकरण ४१.

शोकानन्द



जा साहबकी आज्ञानुसार क्रोडीमलके कोषमेंके रुपये ले आनेको जब पुलिस क्रोडीमलके मकान पर पहुंची है, प्रथम तो बुद्धिधन आदि उसे देखकर आश्चर्य करने लगे कि, हमारे यहां पुलिस कैसी! किन्तु जब वारेन्ट पढ़कर सुनाया, बुद्धिधन आदि एकदम रोकर हाहाकार मचाने लगे. उनका हाहाकार मचाना था कि, अडोसी पड़ोसी भी आकर एकत्र हुए. उस समय उनके मुखसे यही शब्द निकल रहे थे कि, हाय यह कैसा समय! राजा साहबका यह कैसा कोप! हमने ऐसा क्या बिगाडा जो घर लूटा जाता है? बल्कि पासके खड़े हुए मनुष्य भी इस हालको देखकर मनमें दया लाते थे. पर पुलिसवालोंको दया कहां. एक नहीं सुनी. शीघ्रही अपना काम करके चलेगए. जब पुलिसने तमाम रुपये ले जाकर राज्य कोषमें दाखिल कर दिये, क्रोडीमलको घर आनेकी आज्ञा हुई.

बुद्धिधन आदि यह नवीन दुःख देखकर रोरहे थे और विचार कर रहे थे कि, आज मंत्रीजीने ऐसा राजका कौनसा काम बिगाड़ा कि, जो राजा साहब क्रोधित हुए और घर लुटवा लिया. क्या कहीं आग्वेड़के मामलेने तो ग़ज़ब नहीं किया? क्या कहीं लाहोरीमल तो अपनी शत्रुता कर नहीं गया? इतनेमें बुद्धिधनने अपने पिताको नीचा सिर किये आता हुआ देखा बुद्धिधनने चाहा कि, शीघ्रही मेरे पिता यहां आवें और कारण मालूम करूं इतनेमें क्रोडीमल आकर एकदम रोपडा और अपने खज़ानेकी ऐसी स्थिति देखकर

मूर्च्छा खाकर गिरपड़ा. उसका गिरना था कि, क्रोडीमलका कुटुम्ब और फुट २ कर रोने लगा. पर बुद्धिधन समझदार था, अपने पिताके दुःखके सामने अपना दुःख दूर रक्खा तथा सबको वहांसे हटाकर अपने पिताको हवा करने लगा. जब उसने देखा कि, हवा करनेसे कुछ नहीं होता, नाक पकड़ सिरपर पानी छिड़का कि, शीघ्रही क्रोडीमल सचैतन्य हुआ. और टक टकी बांधकर इसतरह आंखें फिराने लगा कि, मानो वह किसी खोई हुई वस्तुकी तलाशमें है. जब उसका मन कुछ शान्त हुआ और बोलनेकी श्रद्धा हुई अपने पुत्रको नजरोंके सामने देखकर कहने लगा, बेटा मेरेपर राजा साहबका यह कैसा जुल्म ? जो मेरा कोष बिलकुल खाली करवा लिया ?

बुद्धिधनने देखा कि, यह समय पुरानी बातोंको याददिलानेका नहीं है. अपने पिताके उत्तरमें केवल इतनाही कहा कि, इसमें राजासाहब क्या करें. भाग्यकी बलिहारी है. अब आप चिन्ता मत कीजिये.

क्रोडीमल--(लेटा हुआ) मेरी चिन्ता अब कदापि दूर नहीं हो सकती. मैं इसतरह चिन्ता करता हुआ मर जाऊंगा. हाय ! मेरा कोष खाली. आज मेरा कुटुम्ब एक पैसेकाभी मोहताज़. क्या मुझे स्वप्नमेंभी ऐसा ख़याल था कि मेरे कोषकी यह दशा होगी ? क्या अब मेरा कुटुम्ब एक पैसेके लिये मांगता फिरेगा ? क्या कोषमेंके सब रुपये मेरेही कमाए हुए थे जो सब राजा साहबने मंगा लिये ! बेटा यह राजाका कैसा जुल्म ? यदि मुझे ऐसा मालूम होता कि, धन मेरा इस तरहसे नाश होगा तो मैं उसको तितर बितर करनेमें कदापि नहीं चूकता. अब बेटा अपनी क्या गति होगी ! मेरेसे तो यह दुःख देखा नहीं जाता, मर जाऊंगा.

क्रोडीमलके यह अन्तके वाक्य बुद्धिधन, सौभाग्यवती, सुन्दरी तथा कनककुमारी आदिके दिलमें कांटा समान चुभ गये. और फूट २ कर रोने लगे "हाय! यह क्या कह रहे हैं धनका धन गया साथमें मुसीवत और." पर बुद्धिधन यह समय साहसी वननेका उत्तम समझ अपने पिताको ढाढ़स देने लगा "अब आपका पश्चात्ताप सब वृथा है. इसमें कोई नवीनता नहीं हैं. कइयोंके ऐसा हुआ है और होता है. आप किसके लिये ऐसी चिन्ता कर रहे हैं. आप जहांतक बैठे हैं खानेसे मोहताज कदापि नहीं रहेंगे. अभी तो जेवरभी वहुत पड़ा हुआ है. कृपाकर चिन्ताको छोड़िये."

क्रोडीमल---यह तो है वेटा! पर तेरी क्या दशा होगी? तू अब अपनी कैसे गुजारेगा? लाहोरीमल आदि तुझको सुखसे रोटी खाने नहीं देंगे.

बुद्धिधन---क्या यह कष्ट लाहोरीमलने दिया है?

क्रोडीमल---उसीकी तो यह सव वदौलत है. प्रथम तो राजा साहवको आखेड़का काम कर आनेकी खुश खवरी सुनाई तदनन्तर मैंने आखेड़के ज़मीनदारसे एक हज़ार रुपये लेकर कामको नहीं वनाया उसकी शिकायत की. उस वातपरसे राजासाहव केवल मेरेपर नाराज़ ही हुए पर आज तकमें मैंने जितने रुपये मारे, उसके लिस्ट और पेश किये. वस क्या था! राजासाहव आग ववूला हो गये और लाहोरीमलको मंत्रीपद देकर मेरे घरकी यह दशा की. वेटा जव लाहोरीमल मेरेसे नहीं चूका तो तुझसे कव चूकने लगा?

बुद्धिधन घर लूटनेके साथमें, मंत्रीपदका और जाना सुनकर चिन्तारूपी सागरमें डूव गया और मनही मन कहने लगा. "यह

सब दुःख एक साथही कैसा" पर अपनी चिन्ताको ज़ाहिरा छिपाकर कहने लगा. कोई बात नहीं मेरी मैं भुगतूंगा. आप किंचित् चिन्ता न कीजिये. नहीं तो कहीं बीमार पड़जाएंगे.

क्रोडीमल—बेटा क्या कहूं अधमरा तो आजही हो चुका. एक प्राण निकलनेकी देर है जो भी निकल जाए तो अच्छा है. मुझसे यह दुःख देखा नहीं जाता. तूही कह कि, कहां तो अपना वह घर था कि मांगा हुआ रुपिया हाज़िर मिलता था. तमाम लोग मेरी खुशामद करते थे. और अब कहां यह वक्त आया कि, हर तरहसे गया गुज़रा ऐसे जीनेसे तो मरना अच्छा है.

बुद्धिधन—शास्त्रमें कहा हुआ है कि, जितने कर्म किये हैं. भोगे बिदून छुटकारा नहीं. आप लाख यत्न कीजिये जो दुःख आपको भोगना बदा है भोगे बिना कैसे छुटकारा हो सकता है.

यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा ।
इति चिन्ताविषघ्नोऽयमगदः किं न पीयते ॥

क्रोडीमल—यह सत्य है. इसमें किसीका दोष नहीं. यदि पूछा जाय तो मेराही दोष है कि, तेरा कहा नहीं माना और हाथों बलाली.

बुद्धिधन—यहतो है ही . पर पिताजी आप मेरा कहना कैसे मानसकते थे जबकि यह दुःख भोगना बदाथा. अब कृपाकर चिन्ता को दूर कीजिये और भोजन करलीजिये.

क्रोडीमल—आज भोजन कैसा ? दुःखसे इतना धपा हूं कि, भोजन करनेको स्थान तक नहीं है.

इस समय सौभाग्यवतीसे कहे बिदून रहा नहीं गया. शीघ्रही

बोल उठी बेटा ! तेरसे विशेष दुःख मुझे है. मेरे दुःखकी किसको कहूं. जिसदिनसे तूने धर्म्म छोड़ा, बुरे रास्ते चढ़ा अनाथोंके गले काटने लगा, तबहीसे दुःख मान रही हूं. फिरभी भोजन दोनों समय कर लेती हूं. इस तरह कब तक भोजन नहीं करेगा, भोजन तो कर ले.

अपनी मातुश्रीके इन वाक्यों पर क्रोडीमलको बहुत पश्चात्ताप होने लगा और कहने लगा मातुश्री ! वास्तवमें तेरा कहना यथार्थ है. मैंने निज धर्मको छोड़ा रुपये कमानेमें किसीकी अनाथ स्थिति पर दया नहीं लाई. यह सब उसीका परिणाम है कि, भारी दुःख आ पड़ा है. पर रोटी खाऊं तो कैसे ? मुझे तो किंचित् भूख नहीं है

सौभाग्यवती—खैर यदि बेटा न खाए तो न सही पर बुद्धिधन आदि तुम तो भोजन कर लो ?

बुद्धिधन—मातुश्री ! रात्रि होचुकी अब मैं तो भोजन करनेसे रहा. जिस किसीको करना हो कर ले.

इतना कहकर बुद्धिधन विचारमें पड़गया और अपने पिताके पाससे उठकर निजके कमरेमें जा बैठा और मनही मन कहने लगा " क्या कोई ऐसा कह सकता था कि यह आनन्द भुवन इस तरहसे लूटा जायगा ? और जो भी राजा साहबके हाथसे. क्या हमको ऐसा ख़याल था कि, इस तरह हम पर संकट आ पड़ेगा ? और क्या मेरे पिताको ऐसा ख़याल था कि, इस तरह लाहोरीमल शत्रु बनकर जीतने पायेगा और मंत्री पद ले बैठेगा ? कदापि नहीं; मेरे पिताने बहुतेरा चाहा कि, लाहोरीमलकाही ख़ातमा करा दूं कि, वह गिराने न पावे. पर आख़िर जीत उसकी वदी थी, कौन रोक सकता था, उलटा मेरे पिताने बुरा किया जो इस तरह लाहोरीमल

पर दोष लगा कर उसे अपना शत्रु बनाया, जो आज मारने दौड़ा मेरे पिताको मैंने तथा मातुश्री आदिने हरतरहसे समझाया कि, शत्रुता अच्छी नहीं, परिणाम उसका बुरा होगा, इस बातको छोड़ो, किन्तु मेरी एक न मानी और अन्तमें जाकर वही हुआ. पर कर्ममें जो होनी बदी थी उसको कौन रोक सकता था. यह सब कुछ है पर अब मुझे क्या करना चाहिये ? पिता मेरे इस दुःखसे बावले होगये. किसीने घरमें भोजन नहीं किया. हाय कर्म ! यह कैसा दुःख. हम लोगोंने ऐसा कौनसा पाप किया था, जिसका फल हमको जा करके यह मिला है कि, एक पैसा तक घरमें नहीं. अपने पिताको धीरज दूं तो कैसे दूं ? वह मनुष्य जिसके पास लाखों रुपये थे, अपना कोष बिलकुल खाली पाये तो भला उसको दुःख क्यों नहीं हो ? और वह धीरज कैसे धरने लगा ? पचास हज़ार वाली बात तो अभीतक मेरे पिताको मालूम ही होने नहीं पाई है यदि वह मालूम होजाय तो और बुरा होगा, किन्तु यही हाल मेरे पिताका रहातो थोड़ेही समयमें मृत्यु उनको आ घेरेगी. मुझे उचित है कि, किसी तरहसे भोजन करा लूं और धीरज दूं " यह निश्चय कर वापिस उठा कि, इसका प्रिय मित्र किशोरीलाल मुंह उतारे हुए आ उपस्थित हुआ और बुद्धिधनको चिन्ता मग्न देखकर रो-दिया. उसका रोना था कि, बुद्धिधनभी रो गया. जब दोनोंके आंसू बह गए, किशोरीलाल कहने लगा. भाई आजका हाल देख कर मेरा दिल फटा जा रहा है. आता तो मैं कभीका था किन्तु फ़िक्रने मुझे उठने नहीं दिया.

बुद्धिधन—दुःखमें घाटा नहीं है. पर क्या किया जाय इसपर क्या अब न मालूम हम पर क्या कष्ट आन गिरेंगे ? लाहोरीमल थोड़ाही चुकने पाएगा.

किशोरीलाल—अरे साहब वह क्या चुके ? अभीसे और कष्ट देनेकी युक्ति सोच रहा है.

बुद्धिधन—जो करे करने दो अपने तो कुछ नही करना. मैं तो कर्म पर आधार रखता हूं. किन्तु मैं अपने पितासे तङ्ग आगया देखो भोजनभी नही करते

किशोरीलाल—क्या कहते हो भोजन भी नहीं करते चलो अपने दोनों जाकर करा दें. पर यह तो कहो तेजमल आज यहां आयाथा ?

बुद्धिधन—नही तो और अपने उसको क्या करना है मरनेभी दो बदमाशको उसीकी तो यह सब बातें हैं जो हम पर भारी दुःख आ पड़ा.

किशोरीलाल—ठीक कहते हो. मेरे कहनेका यह मतलब नहीं है कि, वह यहां आते ही पर आज इसको मैंने लाहोरीमलके यहां बैठा पाया इससे पूछा है.

बुद्धिधन—वह बड़ा ख़ुशामदी टट्टू है. जहां अपना मतलब देखता है वहां होजाता है. अब वह हमारे घर क्यों आने लगा. लो इन बातोंको छोड़ो. पिताश्रीको भोजन करा आवें. फिर बातें करें गे.

बुद्धिधनके इतना कहने पर दोनों वहांसे उठकर क्रोडीमलके पास गए.

इस समय क्रोडीमल चिन्तारूपी शय्यापर सोता हुआ पश्चात्तापमें डूब रहा है और मनही मन कह रहा है. "मैंने उन अनाथोंको कष्ट देकर अन्नहीन क्यों किये जिनके कोई आधार नहीं

था जो मेरेपर गुमनाम पत्र देने पाये ? मैंने लाहोरीमल पर उस पत्रका झूंठा दोष क्यों रक्खा जो शत्रु बनकर दाव खेलने पाया ? मैंने वसन्तगढ़के ज़मीनदारके लिये हाथीका प्रबन्ध क्यों नहीं कर दिया जो आज शिकायत करने न आता ? मैंने जसवन्तसिंहको कष्ट क्यों दिया जो शत्रुता पकड़नेमें हिम्मत करने पाता? मैं तेजसिंहका नमक् हराम क्यों बना कि, उसका ज़रासा कामभी नहीं किया ? मं नत्थुसिंहसे रुपये लेकर राजा साहबका आज्ञाहीन क्यों बना ? मैं तेजमलकी हर एक बात क्यों मान गया ? यह सब कृपा तेजमलकी है कि, जिसकी सलाहसे मैंने इन कामोंको किये और आज दुःखका भागी बना. यदि मैं उस हरामज़ादे पर विश्वास न करता और उसका कहा न करता तो कदापि यह दुःख नहीं आता. वास्तवमें कहनेवालोंने ठीक कहा है, कि, हदसे ज़ियादा विश्वास किसी पर अच्छा नहीं. ज़मानेकी क्या ख़ूबी है, कि मेरे दुःखका प्रथम दिन होते हुए भी कोई आकर इतना भी नहीं कहता है कि चिन्ता मत करो. अरे दूसरे तो क्यों आने लगे तेजमल जैसा कि, जिसका कहा करता था और जो मुझसे एक पल भी अलग नहीं रहता था, वही आज चिराग़ करने पर नहीं दीखता है, क्या उस मंत्रीपदके पीछे ही लोगोंका आना जाना था ? वास्तवमें दीखता तो ऐसा ही है नाहक् मैंने मंत्रीपदका अभिमान किया, ग़रीबोंके गले काटे अपने सामने दूसरेको कुछ नहीं समझा. पर हाय अफ़सोस ! प्रथम ही यह बातें मुझे क्यों नहीं सूझी ? अरे पहिलेसे कहांसे सूझती. यह बातें तो अनुभवसे सम्बन्ध रखती हैं. अब मैं कदापि ऐसा नहीं करूंगा. ”

पाठकगण ! देखिए कहां तो वह समय था कि, यही कोडी-

अल भली बात पर किंचित् लक्ष नही देता था, और कहां आज दुःख पड़े उत्तम २ बातें लेटा हुआ सोच रहा है. पर अब क्या हो सकता है " गया वक्त फिर हाथ आता नहीं " अलबत्ता संसार इस परसे शिक्षा ले सकता है.

बुद्धिधन तथा किशोरीलालने जाकर देखा कि, पिताश्री सो गये हैं. बुद्धिधन हाथ पकड़कर हिलाने लगा कि, क्रोडीमलने आंखे खोली. आंखे खोलनेके साथही बुद्धिधनने कहा कि, भोजन तैयार है.

क्रोडीमल—मैंने कह जो दिया कि, आज मुझे भुख नहीं है फिर नाहकको भोजन क्यों लाया.

किशोरीलाल—कृपानाथ ! थोड़ा बहुत खा लीजिये, भूखा सोना अच्छा नही.

क्रोडीमल—भाई जन्म भरतो मैं कृपानाथ हुआ नहीं फिर अब मुझे कृपानाथ क्यों कहते हो. मैं तो एक तरहका जुलमनाथ हूं जो लोगों पर जुलम किया

किशोरीलाल—यह क्या कहते हैं ?

क्रोडीमल—हां मैं ठीक कहता हूं.

बुद्धिधन अपने पिताके भाव एकदम बदले हुए देखकर आश्चर्य करने लगा कि, यह केसा ज्ञान. पर उसने देखा कि, अब क्या हो सकता है बुराईयों जो शिरपर आनीथीं वहतो आचुकी और अपने पितासे कहने लगा कि, आप हम लोगोंके तो कृपानाथ ही हैं कृपाकर भोजनकर लीजिये.

दोनोंके आग्रह पर क्रोडीमल चारपाई परसे उठ बैठा और भोजन किया. फिरसो गया.

बुद्धिधन किशोरीलाल वहांसे निपटकर अपने कमरेमें जा बैठे और यही बातें मुसीबतकी करने लगे. किशोरीलालने देखाकि, अग्यारह बजे जाते हैं उठ रवाना हुआ. बुद्धिधनभी लेटकर करवटें लेने लगा.

पाठकवृन्द ! देखिये थोड़ेही समयमें कर्मने क्या करदिया. क्रोडीमलके लिये एक वहदिन था कि, वह हरतरहसे अपने आपको सुखी मानता था. राज्यमदमें मस्त रहता था. कोप उसका भरापड़ा था. हर मनुष्य उसकी ख़ुशामद तथा आदर करता था. और कहां आज वहदिन आया कि, वही क्रोडीमल चिन्तारूपी शय्या पर सोता हुआ है. लोग उससे मुंह मोड़े हुए हैं. कोप उसका ख़ाली हो गया. तमाम कुटुम्ब उसका आनन्दके स्थानपर दुःख मनारहा है. पर यदि आप लाहोरीमलके घर चलकर देखेंगे तो वहां आनन्द वर्तरहा है. शहरके तमाम गाने बजानेवाले इनाम की लालसामें दौड़ २ कर लाहोरीमलके घरपर आए हैं. और नानाप्रकारके राग रागनी गाते हैं. कोई यशोगान कर रहा है. तो कोई कुछ औरही गा रहा है. शहरके मनुष्यभी जा जाकर एक स्वार्थके ख़ातिर सलाम कर रहे हैं और इस तरहकी बातें बना रहे हैं कि, लाहोरीमल उनपर कृपादृष्टि रक्खे. आहा ! कर्मकी क्या विचित्र गति है कि, अपने देखते२ ग़रीबको अमीर बनादिया और अमीरको ग़रीब बनादिया. कहांतो क्रोडीमल धनाढय कहलाता था कि, जिसके घरमें आज एक पैसाभी नहीहै कहां लाहोरीमल अनाथ स्थितिमें था कि, जो आज मंत्रीपदके आसन पर विराजमान है सच है ईश्वरकी गहनगति है. कभी रङ्कको राव बनादेता है और राज्यगद्दी पर बैठाकर चमर ढुलवाता है. कभी रावको रङ्क बनाकर मारा २ फिराता है क्या क्रोडीमलको

स्वप्नमेंभी आशाथी कि, आखिरमें जाकर उसकी यह दशा होगी? और क्या लाहोरीमलको आशाथी कि, चटसे मंत्रीपद प्राप्तकर लेगा? कदापि नहीं. किन्तु कर्म अपना काम किया करता है और उसके अनुसार फलदिया करता है.

प्रकरण ४२

लाहोरीमलका अभिमान.



होरीमलको मंत्रीका कार्य करते हुए आज कईदिन व्यतीत हो गए. यह कहनेमें तो शङ्का लानेका कोई कारण नहीं है कि, लाहोरीमल राजा युगेन्द्रपालसिंहका कृपापात्र हो रहा है. उन्हींकी कृपाके कारण वह इस सौभाग्यको प्राप्तकर सका है कि, छोटीसी अवस्थामें विश्वेश्वर राज्यका मंत्री कहलाता है. किन्तु हम खेदके साथ कहते हैं कि, वह उस अमूल्य कृपाका सदुपयोग नहीं करता है और मोहमायाके जालमें फंसकर राजासाहवके अनुग्रहके कारण मनचाहा करता है. कार्यको करते समय इस वातको नहीं देखता कि, जो कार्यमैं करता हूं भला है कि बुरा. केवल इसी विचारमें रहता है कि, कितना जल्दी धनाढय् वनूं. आपको ज्ञात होगा कि, जो पुरुष मोहमायाके लोभमें फंस जाता है फिर उसका धर्मसे सम्बन्ध ही क्या?

इसी प्रकार लाहोरीमलका हाल हो रहा है. वह धर्म्मकी तरफ किंचित् लक्ष नहीं देता और उसका यही कहना रहता हैः—

" करे धर्म्मतो फूटे कर्म, करे पापतो रोटी खाय धाप. " इस बातका लाहोरीमलको ननिक भी विचार नहीं आता कि, संसार असार है. वह नानाप्रकारसे उपार्जन किया हुआ धन अन्तको छोड़कर खाली हाथ जानेका है. केवल पाप और पुण्य ही साथ चलने वाले हैं. इस संसारके मायावी पदार्थोंके सुख सर्व वृथा हैं. सच्चा सुख केवल धर्म्म ही है. अरे ! ऐसे कर्म ठोक अधर्म्मी पुरुष को ऐसा विचार क्यों होने लगा ? वहतो मज़ेसे अपने वही धनोपार्जन आदिके बुरे काम हाथमें लिये हुए अभिमानमें फूला फिरता है और रातदिन मोज शौकमें मस्त रहता है.

क्रोडीमलके हाथसे काम छुटनेके बाद प्रजावर्गको किंचित् आशा हुई थी कि, लाहोरीमल हमारे सुखका मूल होगा धीरे २ अब उनकी वह आशा नाश हो रही है और सर्वके मुखसे यही निकल रहा है " लाहोरीमलसे क्रोडीमल फिरभी ठीक था. "

रात्रिका समय है. लगभग आठ बजेका शुमार होगा. इस समय मनुष्य मात्र अपने २ कार्यसे निवृत्त होकर सोनेकी तैयारी कर रहे हं. ऐसे समयमें लाहोरीमल अपने एकाग्र कमरेमें बैठा हुआ है. पासमें तेजमल उसका सरिश्तेदार बैठा हुआ काम कर रहा है. इतनेमें वही रातदिन शामिल बैठने वाले तथा सहायता करने वाले जसवन्तसिंह, ईश्वरदास, गणपति आ पहुंचे और प्रणाम किया. किन्तु लाहोरीमलने या तो अपने कार्यमें लीन होने अथवा किसी विचारमें लीन होने या अभिमानसे प्रणाम तकका उत्तर नहीं दिया. जिससे तीनों एकदम बिगड़ गए और उनमेंसे जसवन्तसिंह

बोल उठा. क्यों साहब ! आज हम प्रणामका उत्तर तक पानेके पात्र नहीं रहे ?

लाहोरीमल—तुम कौन हो ? माफ करना. मैं भूलगया. तुम्हारा नाम क्या है ?

जसवन्तसिंह—(अपने दिलमें रञ्ज लाकर) बस होचुका. नाम तक भुलगए. वाहरे दुनियाकी ख़ूबी !

इतना कह कर अपने दोनों साथियोंको चलनेका इशारा कर जाने लगा कि, तेजमलने कहा. " क्या आप इनको भूल गए ? यह वही जसवन्तसिंह ख़ुफिया पुलिसके इन्सपेक्टर हैं. "

लाहोरीमल—ओ ठीक ! अब पहिचाना माफ़ करना. बहुत दिनोंसे मिलना हुआ है इस कारण पहिचान नहीं सका.

जसवन्तसिंह—हां साहब अब आप क्यों पहिचानने लगे.

लाहोरीमल—(अपने विचारको पलट कर) पहिचाननेको तो क्यों नहीं पहिचानूं, पर हां भूल होगई. कृपाकर यहभी बता दीजिये कि आपके ये दोनों साथी कौन हैं ?

इतना कहना था कि गणपति बोल उठा " मैंभी वही गणपति हूं जिसको आप देव समान मानते थे "

लाहोरीमल—ओ ठीक याद आया. आप तीसरे साहब कौन हैं ?

इस प्रश्नके उत्तरमें स्वयं ईश्वरदास बोल उठा " मैंभी वही ईश्वरदास हूं कृपाकर ज़रा बतलाइए तो आज आप इतने अनजान क्यों बनगए ?

इस प्रश्नका उत्तर लाहोरीमल देनेही नहीं पाया था कि, जस-

वन्नासिंह बीचमें बोल उठा " भाई ! अब अनजान क्यों न बनें ? राज्य मंत्री कहलाते हैं. इस वक्त इनको राज्य मद चढ़ा हुआ है. यह मद ऐसा है कि, सबको भुला देता है "

लाहोरीमल—(नाराज़ होकर) इन बातोंमें क्या धरा है. राज्य मद तुम्हारे कहनेसे थोड़ाही दूर हो सकता है. वहतो जो कोई राज्य कार्य करता है समयानुसार सबमें रहता है. तुम्हारे जो मतलब हो सो कहो ?

जसवन्तसिंह—बस साहब ! अब हम अपना मतलब कहचुके माफ़ कीजिये हमें जाने दीजिये.

इतनेमें ईश्वरदास बोल उठा. क्यों साहब आप हमारा मतलब कथनानुसार करवाओगे ? कहिए आपने मेरा कुंआ क्रोडीमलने जो खाल्से किया है, वह वापिस दिलानेका कहा था ! अब दिलाईए ?

लाहोरीमल—भाई ऐसा काम मेरेसे बन नहीं आवेगा मैं तो उलटा खालसे करना चाहता हूं फिर भी देखूंगा. एकान्तमें मिलना.

लाहोरीमलके इस कहने पर जसवन्तसिंहको क्रोध चढ़ आया और कहने लगा, क्या एकान्तमें मिलकरके ईश्वरदाससे रिश्वत लेना चाहते हो ? क्या करूं मैं आपका शाहतेत हूं कह नहीं सकता नहीं तो कुछ सुनाता.

तेजमलने देखा कि, जसवन्तसिंह आग बबूला हुआ जाता है हाथोंसे उसको रोका और कहने लगा. " ज़रा धीरज धरिए. मंत्रीजी आपका सब सुनेंगे. इस समय आवश्यकीय विचारमें लीन थे और आप लोगोंके आनेसे उनके विचारमें भङ्ग हुआ है, जिस कारण चिड़े हैं. ज़रा शान्त रहिए. सब ठीक होगा. " किन्तु जसवन्तसिंह क्यों रुकने लगा. उसने तेजमलको भी फटकारें सुनानी

शुरूकीं, "यह तेरीही बदमाशी है कि, एक उत्तम आदमीकी मति फिराली; बेचारे कोडीमलको रोता किया और इसकोभी रोता करेगा. पर याद रखना तेरा भी भला नहीं होगा. हमी लोगोंके हाथसे बुरी मोत मरेगा."

जसवन्तसिंहको उत्तर देनेका साहस तेजमलको कैसे होसकताथा वह तो जसवन्तसिंहका इतना कहना था कि, पानीमें बैठ गया. किन्तु लाहोरीमलसे रहा नही गया. आंखोंमें ललाई लाकर कहने लगा. तेजमल्ल पर भोंऐं क्यों चढ़ाता है तेरे कहनेसे मैं तेजमलको नहीं निकालूंगा. तू हमारे क्या मांगता है जो लेने आया है? मांगता हो सो कह दे अभी दे दूंगा'

जसवन्तसिंहने विचारा अब यह अपना शत्रु तो बन ही गया कहते क्यों चूकूं और भर भर कर कहने लगा.

"हमें आपकी ज़ातसे यह उम्मेद हरगिज़ न थी कि, आप मंत्रीपद पाकर अपने मित्रोंके साथ ऐसा वर्ताव करेंगे. यदि हम ऐसा जानते तो न तो हम आपको मदद करते न आपको मंत्रीपद मिलता. किन्तु इसमें आपका कोई दोप नहीं है.यह सब राज्य मदका मताप है. हकीकतमें कहनेवालेने ठीक कहा कि, आज कलके मनुष्य राज्य कार्य आदिमें ज़रासे बढ़ जाते हैं तो उनकी आंखे पीछेको आजाती हैं. वह अपने सामने दूसरेको तुच्छ गिनते हैं और वह मनुष्य, जिसने मुसीबतके समय किंचित् सहायता की है, उसके तो मित्रके बजाये शत्रु बन जाते हैं. केवल उनका यही काम रहता है कि, किसी तरहसे लक्ष्मी इकट्ठा करें. चाहे उसमें पाप क्यों न होता हो. किन्तु मंत्री साहब ! किसी ज़मानेमें आपके साथ मेरी मित्रता रही है और लोगोंके सामने मैं आपका एक

मित्र गिना जाता हूं इस कारण मुझे आपकी यह मति देखकर दुःख हो रहा है. अत एव मुझसे कहे विना रहा नहीं जाता. देखिए! यह जो आप अभिमान करके उत्तर दे रहे हैं उसको मैं सहन कर लूंगा किन्तु यह उत्तर आपका वृथा है. हमारे सामने तो क्या किसीके साथमें यह आपका अभिमान अच्छा नहीं. साथमें आप मंत्रीके पदपर विराजमान् हैं. भला आपको ऐसा अभिमान? आपको तो हर मनुष्यके साथ शकरकी तरह मीठे बनकर उसको प्रफुल्लित रखनेका यत्न करना चाहिये. क्या आपको राजा साहबकी पोलिसीका उपदेश नही हुआ? देखिये हमारे सूर्यप्रतापी महाराजाको! वह अपनी पुत्रवत् प्रजाको प्रसन्न रखनेके लिये कितने यत्न करते हैं. उनकी पोलिसीके विरुद्ध आप यदि अभिमानको अपना मित्र बनाकर केवल धनोपार्जन करनेमें लगे रहेंगे तो कदापि आपका कल्याण नहीं होगा. मनुष्य इस संसारमें सद्गति प्राप्त करनेके लिये जन्म लेता है इसके अनुसार आपको ऐसे उत्तमोत्तम कार्य करने चाहियें कि, तमाम बन्धु प्रसन्न रहें और आपकी सद्गति हो अभी जो आप मोह मायाके जालमें फंसकर इस तरह अपना अभिमान बताकर द्रव्योपार्जन करनेका यत्न करते हैं और सब मेरा ही मेरा समझ रहे हं वृथा है. क्या आपने एक गजल नहीं सुनी है.

(चाल आशक तो हो चुका हूं चाहे बोलो)

चेतन तुं चेत जेरे, जगमें न कोई तेरा,
नाहक तू क्यो फंसा है, करता है मेरा मेरा. ॥१॥

मिथ्या है मोह माया, चाचा न बाप ताया,
बेलीन कोई भाया, इनसे तुं कर निबेरा. ॥२॥
कोई न साथ संगी, दुनिया हैये दुरंगी,
फिरता है काल जंगी, कर लेगा ग्रास तेरा. ॥३॥
जीवन जगतमें ऐसा, सावनका मेघ जैसा,
फिर मान तुझको कैसा, तनभी न यार तेरा. ॥४॥
क्रोध और मान मारो, माया और लोभ जारो,
है जो ये कषाय चारो, इनसे तुं कर किनेरा. ॥५॥
करले तूंनेक करनी, जिनवरने जो है वरनी,
पूजाहै दुःख हरनी, घटमें जो हो उजेरा. ॥६॥
करता है कर्म जैसा, पाता है फलवो वैसा,
ध्याले जिनेश ऐसा, हट जावे फंद फेरा. ॥७॥
आतमका ध्यान धर तूं, शिव लक्ष्मी यार वरतुं,
वल्लभ दीदार करतूं, विलम जन्म है तेरा. ॥८॥

जरा नीतिका स्मरण कीजिये और अपने मुख्य कर्तव्यको समझिये आपकी कईएक बुरी बातें मेरे कांन तक आई. कई दिनोंसे इस विचारमें था कि, आपको आकर कुछ कहूं. किन्तु आपने प्रबन्धभी तो ऐसा किया है कि, कोई यहांतक आनेभी नहीं पाता. आजतो हम तीनों आपको अपना मित्र समझकर और आपके ऐसे बुरे बर्तावसे परिणामके भ्रष्ट होनेका भयजानकर हिम्मत बांधकर पहिरेवालेके रोकते हुए आ गये. अपको बुरा मालूम हुआ होगा पर उसके लिये हम तीनों माफ़ी चाहते हैं और आखिरमें जाकर यही प्रार्थना करते हैं कि, जरा निज धर्मको पहिचानिये. नीतिका स्मरण कीजिये."

जसवन्तसिंहके इस क़दर कहने पर लाहोरीमलकी कुछ आंखें खुलीं और विचारकर कहने लगा कि, आपने उस बातका उत्तरतो दियाही नहीं ? आप मेरेसे क्या चाहते हैं कृपाकर कहें ?

जसवन्तसिंह—बस नहीं कहना चाहता माफ़ करें. यदि कहूंगा तो होनातो कुछ है नहीं और यह सब उपदेश स्वार्थका समझा जायगा.

लाहोरीमल—नहीं तो कहो तो सही क्या हर्ज़ है ?

जसवन्तसिंह—लीजिये आप कहलाना चाहते हैं तो मुझे फिर क्या हर्ज़ है ! कहिये आपने मुझे सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसकी जगह दिलानेका वायदा जो किया था ?

लाहोरीमल—(सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसका नाम सुनते ही फिर क्रोधित होकर) धरी है यहां सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस. तुमने कौनसा मेरा घरका काम किया था. राजका काम था किया तो तनख़्वाह कौनसी नहीं मिली. फिरभी तरक़्क़ी तथा इनाम दिला दिया.

जसवन्तसिंह—हां साहब ठीक है. इसी उम्मेद पर मैंने इतना परिश्रम उठाकर अपनी जान जोखममें डाली थी. किसी कहने वालेने ठीक कहा है:—

" न साथी मात भ्राता है, न कोई तात दारा है.
ग़रज़ है तब तलक़ तेरी, तभी तक दोस्ताना है "

अब आप हमको क्यों याद करने लगे. जबतक ग़रज़ थी तब ही तक याद आते थे.

इतना कहकर तीनों वहांसे चल दिये.

जसवन्तसिंह आदिके जानेके पश्चात् लाहोरीमल तेजमलसे

कहने लगा. देखे हरामखोरोंको इतना खिलाया पिलाया तरक्की तथा इनाम दिलाया और आज सामने बोलनेको तैयार होगये.

तेजमल—(मन भाती बात पाकर) नीच जो ठहरे, ऐसोंको तो समय आए ठीक करने चाहिये.

लाहोरीमल—वाह मैं क्यों चूकने लगा. पर देखतो सही मैं सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसकी जगह रखकर अपना नुकसान क्यों करने लगा! वह बारह महीनेमें दो चार हज़ार रुपये देता है. जसवन्तसिंह थोड़े ही देगा ?

तेजमल—नहीं साहब ऐसा नुकसान क्यों किया जाय पैसा होगा तो हरतरहसे ठीक है.

लाहोरीमल—यह सिर पटककर मर जाय पर मैं अपना नुकसान कदापि नहीं करूंगा पर यहतो कह बजे कितने है ?

तेजमल—(घड़ीको देखकर) बारह बजने वाले हैं.

तेजमलका इतना कहना था कि, लाहोरीमलने उसको घर जानेकी आज्ञा दी और ख़ुद उठकर पलङ्ग पर लेट गया.

पाठकवृन्द ! देखिये संसारका यह हाल होरहा है. थोड़ेसे समयमें लाहोरीमलको कितना अभिमान आगया कि, ऐसे उत्तम पुरुष जसवन्तसिंह आदिको जिन्होंने ज़रूरतके वक्त सहायता देनेमें कमी नहीं रक्खी थी बिलकुल भुल गया और अपने वायदे पर कायम नहीं रहा.

प्रकरण ४३

दुःखमें दुःख.



भोरका समय है. इस समय मनुष्य मात्र सुखकी निद्रा ले रहे हैं. केवल वही स्त्री जिनको आवश्यक काम करनेका है, निद्रादेवीसे जागृत हो गई हैं. अथवा वे वृद्ध पुरुष जागृत होकर पथारीमें पड़े हुए हैं, जिनपर निद्रादेवीका कोप है. और यह समय ईश्वर स्तुतिका अमूल्य समझकर ज़ोर २ से प्रभाती आदि राग गा रहे हैं. और मनही मन समझ रहे हैं कि, हमारे बराबर इस पृथ्वीपर ईश्वरका कोई भक्त नहीं है. इस बातका इनको तनिकभी ज्ञान नहीं है कि, इसतरह ज़ोरसे गानेसे ईश्वरके भक्त नहीं कहलाते हैं. इस तरह ज़ोरसे गानेमें पड़ोसीकी निद्राका भङ्ग होता है और उसके कारण शास्त्रकारोंने इसको एक तरहका पाप मान रक्खा है. ऐसे समयमें एक पड़ोसनने आकर क्रोडीमलको जागृत किया और कहने लगी कि, उत्तर दिशाकी चार दीवारीमें किसीने नकब लगाया है. उस पड़ोसनका इतना कहना था कि, तमाम कुटुम्ब उसका जागृत हो गया. बुद्धिंधनभी अपने कमरेमेंसे जागृत होकर नीचे आया और चिराग़ जलाकर प्रथम तो उस नकबको देखा कि, जो एक मनुष्य दाख़िल हो सके उतना था तथा उसपरसे अनर्थका होना मानकर अपना घर सम्हालने लगे. घर सम्हालने पर मालूम हुआ कि, कोपके किवाड़ बिलकुल टूटे पडे हैं. तिज़ोरीका ताला लटक रहा है. तिज़ोरीमें जो ज़ेवर रत्नादि, हीरा, पन्ना, माणिक्य, मुक्ता,

सोना, चांदी, आदिका था सब जाता रहा. क्रोडीमल बुद्धिधन आदि इस हालको देखकर फूट २ कर रोने लगे. यहांतककि, क्रोडीमल तो धमसे गश खाकर ज़मीनपर गिर पड़ा. बस क्या था इतना होना था कि, कानोंकान बात पहुंचने लगी. सारे मोहल्लेके लोग जाग्रत हो गए. बल्कि तमाम तमाशबीनके तौरपर क्रोडीमलके मकानपर आ आकर देखने लगे ज़रासी देरमें क्रोडीमलके घरमें इतनी भीड़ हो गई कि, उनकी गिनती करना असंभव था. सौभाग्यवती आदिको ज़ेवर चोरी जानेका फ़िक्र तो थाही किन्तु क्रोडीमलके गश खाकर गिरनेसे विशेष फ़िक्र होने लगा और सबके सब बावले बन गए. क्यों न हो एक तो मुसीबतके समय यह ज़ेवर उनका सहायताकारक हो रहाथा जो जाता रहा. दूसरे क्रोडीमल बेहोशीकी हालतमें पृथ्वीपर पड़ा हुआ है. इस समय बुद्धिधन नाना प्रकारसे अपने पिताको सचैतन्य करनेका यत्न कर रहा है किन्तु भीड़भाड़के कारण सफलता प्राप्त नहीं होती. अतएव वह उनको एक दुःखका मूल समझकर मनही मन कहता है कि, "ये लोग सब क्यों जमा हुए हैं ? अपने २ घर क्यों नहीं चले जाते ? कौन सा धन कहीं गाड़कर रक्खा है जो निकालकर दे देंगे ? नाहक़ भीड़ करके मेरे दुःखको क्यों बढ़ा रहे हैं ? इसमें तो संदेह नहीं कि, यह सब इस समय मेरे दुःखोंके मूल बनकर आए हैं. नही तो कभी पहिलेभी आते. और यदि सहायताके अर्थ आते तो अपनी सहायता कर दिखाते. सबके सब लकड़ेकी तरह खड़े हुए तमाशा देख रहे हैं. कोई इस बातकाभी विचार नहीं करता कि, चोरी हुई है. इस तरह आने जमा होने तथा चलने फिरनेसे खोज बेपत्ता हो जाएंगे. पिता मेरा बेहोश पड़ा हुआ है. पुलिसमें जाकर ख़बर दें और इस भीड़भाड़को मिटा दें कि,

पिताश्री होशमें आ जाएं. यदि कुछ चले जानेको कहता हूं तो उलटे गले पड़ते हैं. उत्तम यही है कि, चुपका बैठा रहूं. " किन्तु ऐसी मुसीबतके समय धीरज क्यों होने लगी? ज्यों २ बुद्धिधन अपने पिताकी अवस्था देखता गया त्यों २ उसकी धीरजका नाश होता गया और दुःखरूपी आग उसके हृदयमें भड़कने लगी. लाचार सर्वको चले जानेका कहा. उसके इतना कहनेपर लोग हट तो गए किन्तु वे नहीं तो दूसरे आकर एकत्र होने लगे. और नाना प्रकारसे प्रश्न करने लगे, कि, इस तरह चोरी कैसे हुई? क्रोडीमलकी यह दशा कैसे हो गई? एक कहता है इस तरह गाफिल कैसे सोतेथे कि, चोर आकर चोरी करने पाया. जबकि दूसरा कुछ औरही बात दर्याफ्त कर रहा ह किन्तु उनमें जो भला है वह कोइ बात न पूछते केवल इतनाही कहता है कि, बेचारे दुखियाको दुःख पड़ा. पर आज कलके समयमें सब भले कहां? इस समय अपने परस्पर यह कहनेवाले बहुत हैं कि, लूटका माल एकत्र कर रक्खा था वह भला क्यों रहने लगा? जो २ पाप किये हैं उसके अनुसार यह दशा होनी ही चाहिये. इनको इस बातका तनिकभी विचार नहीं आता कि यह समय ठहरने और ऐसी बातें कहनेका नहीं है. बल्कि धीरज देकर सहायता करनेका है.

जब सूर्य निकल आया और बुद्धिधनने देखाकि, और लोग जमा हो रहे हैं शर्मको अलहदा रखकर सबसे कहाकि, "भाई माल गया है तो हमारा गया है. दुःख है तो हमको है. आप लोग नाहक बड़ी२ बातें बनाकर अपना समय क्यों गुमाते हैं? अपने घरका रास्ता लीजिये." बुद्धिधनका इतना कहना था कि, एक२ करके रही सही सुनाकर जाने लगे. थोड़ेही समयमें सब अदृश्य हो गये और वह स्थान ऐसा बन गया कि मानों वहां कोई खड़ाही नहीं था.

पाठकवृन्द ! देखिये यह कैसे मनुष्य कि, जो शक्कर देनेसे नहीं गए और ज़हरको पाकर सबके सब चले गए. ठीक है समय ही ऐसा रह गया है. पर यदि ज्ञानरूपी चक्षुसे देखा जायतो यह उनकी नादानी है. मुसीबतके समय क्रोडीमलके कुटुम्बको तङ्ग न कर यथा साध्य सहायता करना था. अरे वे सहायता क्यों करने लगे ? ज़माना जो ख़ुदग़र्ज़ोंका ठहरा.

जब तमाम भीडभाड़ मिट गई बुद्धिधन आदिने क्रोडीमलको सचैतन्य करनेका यत्न किया और शीघ्रही सफल हो गए क्यों न हो वहतो होनाही था. केवल लोगोंकी भीड़भाड़से गर्मी रहनेके कारण सचैतन्य नहीं हुआ था. उनके जाने पर थोड़ी देर पंखा किया गया, गुलाबजल आदि सुगन्धित तथा शीतल पदार्थोंका छिटकाव किया गया कि, शीघ्रही आंखे खुली, और इसतरह टिक टिकी बांधकर देखने लगा कि, मानो वह किसी खोई हुई वस्तुको तलाशकर रहा है और बुरी आह लेने लगा. बुद्धिधन अपने पितासे और कोई वार्तालाप न करते शीघ्रही पुलिसमें पहुंचा और चोरी होनेकी रीपोर्टकी. रीपोर्टके पातेही पुलिस मौके पर पहुंची और मौका देखकर चोरके खोजोंको तलाशकी किन्तु लोगोंके फिर जानेसे कोई पता नहीं चला. अतएव और कोई कार्रवाई उस स्थान पर करनेकी थी नहीं. बुद्धिधनसे मालकी फहरिस्त लेकर और यह कहकर कि " पता लगाएंगे " पुलिस वापिस लौट गई.

वाचकवृन्द ! जो फहरिस्त बुद्धिधनने पुलिसवालोंको दी है उसके देखनेसे ज्ञात होगा कि, तीन लाख रूपयेका ज़ेवर चोरी जाता रहा. केवल वही रहा है जो वदन पर था.

क्रोडीमल आध मरा बनकर एक टूटी फूटी खाटपर लेटा हुआ है, उसके दिखावपरसे ऐसा ज्ञात होता है कि, मानों एक

सदैवका रोगी संग्रहणी रोगसे भरा हुआ मृत्युखाटपर सोता हुआ है. इस समय क्रोडीमलके पश्चात्तापका पार नहीं है. मनही मन लेटा हुआ कह रहा है कि, " क्या आज मेरा ज़ेवर भी चोरी जाता रहा ? ईश्वरके घरमें यह अन्याय कैसा कि सर्वका सर्व चला गया. कुल ज़ेवर मेरे बुज़ुर्गोंका बनाया हुआ था. केवल थोड़ाही मेरा बनाया हुआ था मेर बनाए हुए ज़ेवरके लिये मैं यह ख़याल कर लूं कि, उसको मैंने बुरी तरहसे उपार्जन किया हो पर मेरे बुज़ुर्गों का बनाया हुआ ज़ेवर ऐसा नहीं था वह फिर कैसे चला गया ? अरे ईश्वर ! न्याय करते समय ज़रातो विचार करता. अब हम अपना गुज़र कैसे करेंगे इसी ज़ेवर पर आधार था जो भी जाता रहा. अबतो केवल जागीर तथा मेरी माका वेतन रहा है जो काफ़ी नहीं है. " इसतरह तर्क वितर्क विचार क्रोडीमल मनही मन कर रहा था कि, बुद्धिधन आया और अपने पिताको शोक ग्रस्त देखकर कहने लगा " पिताश्री भोजन तैयार है " थोड़ा बहुत खा लीजिये.

क्रोडीमल अपने पुत्रको नज़रोंके सामने देखकर आह भरने लगा और उसके प्रश्नका कोई उत्तर न देकर अपनाही गाने लगा कि, आहा मेरे घरकी यह दशा ? क्या मेरा कोष बिलकुल ख़ाली? हाय अफ़सोस ! मैं जन्म तेही क्यों नही मर गया कि, आज इस आनन्द भुवनकी यह दशा नहीं होती. यह मेरे ही अनिष्ट कर्मोंका फल है कि, आनन्दभुवन शोकभुवन कहलानेके पात्र हुआ है.

बुद्धिधन---कोई हर्ज़ नहीं कर्मकी गति है. इसमें पश्चात्तापका कारण नहीं. आख़िर जोर दुःख भोगने बदे हैं भोगे बिदून छुटकारा नही कृपाकर भोजन कर लीजिये ठण्डा हुआ जाता है.

क्रोडीमल—बेटा यह क्या कर्मकी गतिकि, सबका सब चला जाए और रोटी टुकडेके मोहताज बनें ?

बुद्धिधन—अरे साहब इसीके समझनेमें त्रुटी है. अनिष्ट कर्मका फल ऐसाभी होता है कि, एक राज्याधिपतिको भिक्षुक बनाकर घर २ फिराता है सो वहतो नहीं आप इतना फिक्र क्यों करते हैं.

क्रोडीमल—अपने लिये भिक्षुक होनेमें कौनसी कमी रही है. तूही बता कि, अब अपने गुज़ारेका क्या साधन है ?

बुद्धिधन—सबसे उत्तम साधन उसपर पूज्य वीतराग प्रभुका है. उसकी भक्ति करनेसे कर्मोंका क्षय होकर सुख प्राप्त होसकता हैं.

क्रोडीमल—अरे आजकल तो ईश्वरके घरमेंभी अन्याय है. इसी विषयमें देखो तमामका तमाम ज़ेवर चोरी जाता रहा. सबतो मेरा बनाया हुआ था ही नहीं, मेरे पिता आदिका भी बनाया हुआ था. वे ईश्वरके पूरे भक्त थे. भला उनका बनाया हुआ ज़ेवर फिर कैसे जाता रहा ?

बुद्धिधन—(अपने पिताके इन वचनों पर मनही मन क्रोधित होकर कहने लगा कि दुःख पर दुःख पड़ता जाता है फिरभी आंखें नही खुलीं. वैसीकी वैसी मति होरही है. इसको किसी तरहसे समझाऊं. मूर्ख रीतिसे समझानेसे यह समझ सकेगा.) पिताश्री इसमें तो कोई संदेह नहीं कि, एक गन्धी मछली सारे सरोवरके पानीको गन्धा कर देती है. इसी प्रकार वह आपका ज़ेवर अशुभ मार्गसे उपार्जन किया हुआ नापाक मछलीके समान था. जिसने शुभमार्गसे उपार्जन किये हुए ज़ेवरको गन्धा बना दिया और जाने पाया. ईश्वरका इसमें कोई दोष नहीं है. वह इसमें क्या करे. यहतो कर्मोंका फल है. अबभी समझे कि नही ?

बुद्धिधनका इतना कहना था कि, एक चपरासी क्रोडीमलके नामका बंध लिफ़ाफ़ा लेकर आया. जिसको देखकर क्रोडीमलका मनोभ्रम कहने लगा कि, शायद मंत्रीपदका परवाना न हो किन्तु बुद्धिधन ऐसा क्यों मानने लगा ? वह और चिन्तामें पड़गया और समझने लगा कि, कोई बला और आई. क्रोडीमलने उस पत्रको चपरासीके हाथमेंसे प्रसन्न होकर लिया किन्तु जब उसको खोलकर देखा तो बिलकुल विरुद्ध बात पाई और पत्रको फेंककर रोनेलगा. बुद्धिधनने उस पत्रको उठाया और पढ़ने लगा उसमें यह लिखाथा.

क्रोडीमल साहब,

महाराजा धिराजकी आज्ञानुसार, आपकी मातुश्रीको वेतनके सालियाना रुपये ५००) पांचसो मिलते थे, वह आजसे बन्द किये गए हैं तथा जो जागीर मिली हुई थी वह खालसा सर्कार की गई है. सो मालूम रहे.

राज्य महल — लाहोरीमल

तारीख १७-५-१८७५ — मंत्री राज विश्वेश्वर नगर.

इस समाचारको पाकर बुद्धिधनभी चिन्ता करने लगा. इतनेमें क्रोडीमल अपने हाथकी अंगूठी देखता हुआ बोल उठा हाय ! आज मेरी वह हीरेकी अंगूठीभी नहीं रही कि, उसको चूसकर अपना प्राण निकाल देता. मैंने उसको अपने हाथमें ही क्यों नहीं रक्खी जो आज समय पर काम देती और चोरी न जाती ? पर अब मेरा इस संसारमें जीवित रहना वृथा है. किसी न किसी तरह प्राण रहित होना ही उत्तम है. आहा मेरे लिये कहां तो एक वह समय था कि, इस नगरका मंत्री कहलाता था. राजा साहबका कृपा पात्र हो रहा था. इतनाही नहीं बुजुर्गोंकी पुण्याईसे ज्ञातिमें

श्रेष्ठ गिना जाता था. सर्व मनुष्य मेरे स्वाधीन थे. जो मैं कहता वही होता था. कोईभी मेरी आज्ञा उल्लंघन करनेवाला नहीं था. दिन रात आनन्द रूपी लहरोंमें मस्त रहता था. किसी तरहकी कमी नहीं थी. यह मेरा आनन्द भुवन, यह मेरा घर वार, सव भराही भरा नज़र आता था. एकको वुलाता था तो अग्यारह आकर खड़े होते थे. और हुजूर २ पुकारते उनकी जवान थक जाती थी. किसीकी भी हिम्मत मेरे सामने वोलनेकी नहीं होती थी. कहां आज मेरे लिये यह दिन आया कि, यही मेरा आनन्द भुवन शोक भुवन जैसा नज़र आरहा है, दीप करने परभी कोई अन्य पुरुष नज़र नहीं आता. कोष मेरा वीलकुल ख़ाली पड़ा है. आमदनी मेरी विलकुल जाती रही. उन्ही राजा साहवका प्रचण्ड कोप कि, जिनका मैं किसी समय विश्वास पात्र होरहा था और मुझे एक पलभी अलहदा न छोड़ते थे. वही लाहोरीमल कि, जिसको मैंने हाथोंसे पालपोपकर वडा किया, राज्यमें नौकर कराके प्राईवेट सेक्रेटरीके पद तक वढ़ाया, आज मेरा कट्टर शत्रु वनकर वदला ले रहा है. वही तेजमल, जिसको मैंने अपना समझा था वेतन वंद करनेका हुक्म खुद क़लमसे लिखकर भेज रहा है. ऐसी अवस्थामें क्या मुझे उचित है कि, जिन्दा रहकर उनको और कष्ट देनेका मौक़ा दूं ? और इस अनाथ अवस्थामें रहकर सर्वके समीप शर्मिन्दा वनूं ? कदापि नहीं इतने दिन तक तो ज्यों त्यों जे़वर आदिपर आधार रखकर अपनी मान मर्यादा क़ायम रक्खी. अव तो कोई साहरा नहीं है कि, मैं इस संसारमें इज्ज़तसे जीवित रह सकूं. इस तरह अनाथ अवस्थामें दिन व्यतीत करनेसे तो उत्तम रास्ता यही है कि, आत्महत्या कर लूं. वस वेटा हो चुका. दुनियाको ख़ुब देख ली और शीघ्रही इस तहरसे उठकर वंदूककी तलाशमे अपने कम-

रेमें जाने लगा, मानो उसमें चौगुनी ताकृत आ गई. क्रोडीमलका उठना था कि, बुद्धिधनने शीघ्रही उसको हाथसे पकड़ लिया. और कहने लगा कि, आप ज़रा धीरज धरिये और मेरी वातको सुनिये.

क्रोडीमल अपने सपूत वेटेके इतना कहनेपर फिरसे खाटपर वैठ गया और कहने लगा कि, यह अन्त समय है जो २ वातें कहनेकी हों कह दो मैं सहर्ष सुनूंगा.

बुद्धिधन—प्रथम आप यह जो कालरूपी क्रोध आपपर चढ़ आया है उसका नाश कर धीरज पकड़िये और इस वातकी माफी दीजिये कि, मेरे कहनेपर आप किंचित्‌भी बुरा नहीं मानेंगे.

क्रोडीमल—अब मैं बुरा क्यों मानने लगा. आखिर मुझे सदेवके लिये इस संसारको छोड़कर जाना है. वेटा ! जो कहना हो आनन्दसे कह.

बुद्धिधन—यह जो आप अपनी ऐसी स्थिति देखते हैं, वह क्यों ! प्रथम आप इसका स्मरण कीजिये. बुरा नहीं मानिये. यह सब आपहीके कर्मोंका प्रताप है कि, यह आनन्दभुवन इस स्थितिको प्राप्त हुआ है. आप अपने उन कर्मोंको याद कीजिये कि, आपने अपना कोप भरनेके लिये कैसे २ अनिष्ट कार्य किये थे. उस समय आपने अपने धर्म्मको एक कौनेमें रख दियाथा. दयाने आपके हृदयमें स्थान नहीं पायाथा. अभिमानको आपने अपना मित्र वनायाथा. अनाथका गला काटनेमें, हरएकसे शत्रुता करनेमें, सदैव लीन रहतेथे. कोईभी शुभ कार्य आपको प्रिय नहीं लगता था. केवल उन्हीं वातोंमें आपका ध्यान रहता था जो वास्तवमें वृथा और नरककी पात्र थीं. कृपानिधान ! यह उसीका परिणाम

है कि, अपने इस अवस्थाको प्राप्त हुए हैं और इसी कारण कोई आकर अपना सहायक नहीं बनता. मैने आपको पहिलेही ना कह दियाथा कि, यह कार्य आपके अच्छे नहीं. अन्तमें जाकर दुःखोंके मूल होंगे. आख़िर वैसाही हुआ और आज सबके सामने अपने ज़हरीले सांपकी तरह दिखाई देते हैं. इस समय सबका यह ख्याल हो रहा है कि, यदि जाएं और कोई सहायता तो न मांग ले. जब आप अपनी आंखोंके सामने प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि, पहिले आपकी स्थिति ठीक थी और उन अनिष्ट कर्मोंके कारण यह अनाथ स्थिति हुई है तो फिर अब आप और ऐसे कर्म क्यों कर रहे हैं. "आत्मघाती महा पापी." पिताश्री यह पाप जो आप और करनेको तत्पर हुए हैं उसको छोड़िये और यह संसार असार है जिसका स्मरण कीजिये. क्या वह पुरुष, जिसके पास सुबह खानेको है और शामको नहीं है, इस तरहसे चिन्ता करता होगा? क्या वह भूखा रहता होगा? ऐसे समय जब कि उसका सब कुछ चला जाए, आत्महत्या करनेको तत्पर होता होगा? कदापि नहीं. यदि आपकी तरहसे पश्चात्ताप करके आत्महत्या करते हों तो फिर कोई मनुष्यभी दीखने नहीं पाए. कारण कि मनुष्यके लिये एक न एक वक्त़ दुःखकाभी आता है. उस समय केवल उनका यही सिद्धान्त रहता है कि, वे धीरजको बलवान् समझते हैं. और उसके अनुसार अपने अनिष्ट कर्मोंसे शिक्षा लेकर अपना कार्य किये जाते हैं. वे दुःखसे कायर नहीं होते.

"सुख देख के हंसना नहीं, दुःख देख के रोना नहीं"

आपने सुख के समय इस बातका तनिक विचार नहीं किया कि, भविष्यमें क्या होनेवाला है. और मोह माया के जालमें फंसकर आनन्द मनाया, उसीका फल है कि, आप इस दुःखके पात्र हुए.

और इसको सहन नहीं कर सकते. किन्तु यह पश्चात्ताप सब आपका वृथा है.

" रहा क्यों भूल ऐ ग़ाफ़िल करो क्यो रंज खोएका,
कि एकदिन सबको उस पथसे पड़े होना रवाना है "

आप फिर खोएका इतना रंज क्यों कर रहे हैं? कुछ साथ नहीं चलनेका है. केवल पाप और पुण्यही साथ आवेंगे. यह जो संसारके उस सुखको आप सुख समझ रहे हैं और उसके उपार्जन करनेका यत्न किया है और करनेके लिये पश्चात्ताप कर रहे हैं सच्चा सुख नहीं है. क्यों कि, इसके प्राप्त करनेमें कर्म बन्धन होते हैं इसके प्राप्त करनेमें अनिष्ट कर्म किये विना छुटकारा नहीं. सच्चा सुख वही है कि, निज आत्माको पहिचाने और सद्गति प्राप्त करनेके लिये ईश्वर भक्तिमें लीन रहे:—

" चेतनजी चेतो झूठी आ दुनीयानी बाजी,
रह्यो शुं तेमां राची माची रे । चेतनजी ।
अज्ञाने अंध थई जोयुं न जोवड़ा,
अंते तो कांई नथी तारू.
हस्तां हें. हें. करतो ओ मानवी,
फाटी जाशे ताहरु ड़ाचु रे । चेतनजी ।
महल चणाया बाग बनाया,
लक्ष्मीना थांभा तणाया.
एकदिन अण धार्यो उठीस देहथी,
कोई न जाणे रे क्यां जाया रे । चेतनजी ।
मनमां आवे तेवुं मानीले मानवी,
एले जशे जन्मारो,

बुद्धिसागर सदा गुरुजीने शरणे,
रहीने आत्म झट तारो. रे । चेतनजी । ”

पिताश्री ! यह आपका आनन्दभुवन, धन, माया, आदि सब यहां ही पड़े रहनेके हैं. जब कालचक्र आपको आघेरेगा, हाथ पसारकर जाना होगा. आपकी उम्रभी बहुत हो चुकी. अब आप इस मोहमायाको छोड़िये और केवल ईश्वर भक्तिकी तरफ लक्ष दीजिये.

क्रोडीमल—हकीक़तमें तेरा कहना यथार्थ है. इस उपदेशके लिये मैं तेरा अति कृतज्ञ हूं. किन्तु इसमें तो कोई संदेह नहीं कि, आज कल ईश्वरके घरमें अंधेरा हो रहा है. नहीं तो भला अनिष्ट कर्म किये थे तो मैंने किये थे, मेरी यह दशा होती. सबकी क्यों हुई ?जहां तक मैं ख्याल करता हूं उसने ऐसा कोई अनिष्ट कर्म नहीं किया हैफिर उसका वेतन क्यों बंद हुआ ?

बुद्धिधन—(उसी बातको अपने सामने पाकर जिसको पहिले छोड़ गया था, इस लिये प्रसन्न होकर कि, किसी तरहसे पिताश्री को उपदेश लगे और आत्म हत्याकी बातको भूल जाएं) ईश्वरको आप नाहक़ दोष दे रहे हैं. वहतो निरञ्जन निराकार है केवल अपने घरमें अंधेरा है कि, उसके रूपको नहीं जान सकते हैं. यदि दीर्घ दृष्टिसे देखा जाय तो कोईभी कार्य प्रारब्धके विरूद्ध नहीं होता है बल्कि कर्मानुसार ही होता है. केवल अपने समझनेमें त्रुटी है. उस समय, जब कि सुखके दिन थे, आपको कभीभी ईश्वरका स्मरण हुआ था ? और क्या कभी ऐसा कहने पाए थे कि, कर्मानुसार सुख प्राप्त हो रहा है ? कदापि नहीं. आज मुसीबत पड़ी जब लगे ईश्वरको दोष देने. आपका यह प्रश्न कि, आपकी माता

आदिके ऐसे अनिष्ट कर्म नहीं थे उनको दुःख क्यों पड़ने लगा? सो यह तो हो ही नहीं सकता कि, अनिष्ट कर्म हुए विदून उसको अनिष्ट फल मिले. वह आपकी माता है. क्या आपके बुरी तरहसे उपार्जन हुए धनका अंश उसके पेटमें नहीं गया है? उस अंशका प्रताप है कि, उसको तथा हमको कष्ट भोगना पड़ता है. खेद इस बातका है कि, आपको सत्संगति नहीं मिला है या कि, आपने ऐसी उत्तम बातें मालूम करनेकी चेष्टा नहीं की है. नहीं तो इसको तो एक साधारण मनुष्यभी जानता है. कहिये अब कोई शङ्का रहती है. ?

क्रोडीमल—धन्य बेटा! भली भांति मेरे मनका समाधान किया. अब कोई शङ्का नहीं रही, केवल कुसंगतिके प्रतापसे इतने दिन में इन बातोंको जानने नहीं पाया. और सबको अपना मान कर केवल धनोपार्जन करनाही अपना मुख्य कर्तव्य समझा. ईश्वरको दोष दिये. अब मुझे भारीसे भारी कष्ट सहना मंजूर है. चाहे मैं भूखा क्यो न मरूं? कदापि आत्म हत्या नहीं करूंगा और यह मेरा अन्त समय ईश्वर भक्तिमें व्यतीत करूंगा.

बुद्धिधन—इसीमें आपका कल्याण है.

इतनेमें सौभाग्यवती आ उपस्थित हुई और कहने लगी "क्या बेटा अभीतक भोजन क्यों नहीं किया? बिलकुल ठण्डा होगया. आज बाप बेटे इतनी क्या बातें करने लग गये?"

बुद्धिधन—ना माजी! पिताश्री चोरी होनेका पश्चात्ताप करते थे सो ज़रा समझाता था कि, नाहक़ आप चिन्ता क्यों कर रहे हैं. कर्ममे जो होना बदा था होचुका.

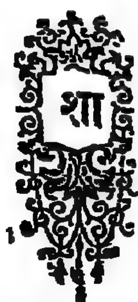
सौभाग्यवती—होनी कौन रोक सकता है. चलो अब भोजन करलें.

सौभाग्यवतीका इतना कहना था कि, दोनों उठ खड़े हुए और भोजनादि कार्यमें लीन हुए.

पाठकवृन्द ! देखिये कर्मकी क्या विचित्र गति है कि, बिचारे क्रोडीमल आदि पर दुःख पर दुःख आने लगा है किन्तु धन्य है उस साहसी पुरुष बुद्धिधनको जो हर तरहसे अपने पिताको समझाकर धीरज देता है और आए हुए कष्टकी किंचित् चिन्ता नहीं करता.

प्रकरण ४४.

मित्र मण्डलमें जसवन्तसिंह.



मका समय है सूर्यनारायणके अदृष्य होनेमें अभी दो ही घड़ीकी देर है. गर्मीकी ऋतु होनेसे यह समय मनुष्य मात्र वायु सेवनका उत्तम समझकर इधरसे उधर घूम रहे है. और ऐसे स्थानकी तलाशमें हैं-कि, जहां ठण्डी हवा आती हो. जसवन्तसिंह, गणपति तथा ईश्वरदास इसी हेतु राज्य बागमें आकर एक बेंच पर बैठे हुए हैं. चारों तरफ उसके नाना प्रकारके वृक्ष खड़े हुए उत्तमोत्तम सुगंधी दे रहे हैं. वह जुईका फुल जो दीखनेमें छोटासा मालूम होता है किन्तु उसकी सुगंधि दूर २ तक फैल रही है. वह चमेलीका फुल भी अपनी शोभा दिखानेमें कम नहीं है, इस समय वह गुलाबका फुलतो सबका

शिरोमणि होरहा है. पासमें पानीका फुंआरा चल कर ठण्डी २ हवा दे रहा है, वह स्थान पानीके छिड़कावसे ऐसा ठण्डा हो रहा है कि, मामूलीसे मामूली फुलभी अपनी सुगंधि दिखाए बिना नहीं रहता. और यदि अशक्त मनुष्य घंटा भरतक वहां बैठा रहे तो शीघ्रही सर्दी अपना प्रभाव दिखा जाय. पर वैसे पुरुष जो कायर और बलहीन है, इस स्थानको क्यों पसंद करने लगे ? ऐसा स्थान केवल उन्हींको प्रिय लग सकता है जो उसके गुणको जानते हों और वैसी सर्दी बर्दाश्त करनेके आदी हों, इसमें तो कोई संदेह नहीं कि, जसवन्तसिंह आदिको इस समय यह स्थान बहुत रमणीक मालूम हो रहा है और नंगे शिर होकर तथा पैर फैलाकर बैंच पर बैठे हुए हैं, और नाना प्रकारकी आनन्द जनक वार्तालाप तथा गायन कर रहे हैं.

चलो पाठकवृन्द ! अपनेभी उनके निकट जाकर सुनें और देखें कि, वे सब कैसे आनन्द मना रहे हैं.

गणपति—यार जसवन्त ! वह मोरछलीका फुल कैसा सुन्दर दीख रहा है ?

जसवन्तसिंह—वाह क्यों नहीं, मोरछलीभी दुनियामें एक चीज़ है, किन्तु उस दाउदीके फुलको देखो ! नाना प्रकारके फुल हैं और उसकी छोटी २ पाखड़ियां कितनी हैं और वे कैसी सूर्यकी क़िरणकी तरह लगी हुई हैं ?

ईश्वरदास—हां भाई यह फुलभी कुछ कम नहीं हैं किन्तु इससेभी उत्तम फुल सूर्यकिरणका होता है जो सूर्यके तापसे खिलता है और ज्योंही सूर्य अदृश्य होता है कुमला जाता है.

गणपति—उसका तो क्या कहना पर कण्डीरका फुलभी आपने देखा है ? (हाथसे बताकर) देखो दूरसे कैसा सुन्दर मालूम होता है पर यदि तोड़कर सुगंधि ली जाय तो कुछ नहीं है, ऐसे पुष्पभी होते है कि, जो निरी सुन्दरता ही दिखाते हैं और उनमें कोई गुण नहीं होता.

जसवन्तसिंह—तो क्या तुम्हारा यह मानना है कि, सब श्रेष्ट ही हों ?

गणपति—नहीं तो यह तो मैंभी जानता हूं कि, कई-तरहके ऐसे पुष्प होते है जो केवल देखनेकेही हैं, पर इस समय लाहोरीमलका स्मरण हुआ और उस पुष्प पर नज़र पड़ी जिससे ऐसे रूपमें कहना पड़ा,

जसवन्तसिंह—लाहोरीमल और कण्डीरके पुष्पका क्या सम्वन्ध ?

गणपति—वाह सम्बन्ध क्यों नहीं ? लाहोरीमल कहलानेको तो कण्डीरके पुष्पकी सुन्दरताकी तरह मंत्री कहलाता है किन्तु जिस तरह कण्डीरके फुलमें कोई गुण नहीं है, उसी तरह उसमें भी नहीं है.

जसवन्तसिंह—लाहोरीमलमें गुण क्यों नहीं, यदि गुण न हो तो फिर वह राज्य कार्य कैसे करता है ?

गणपति—यों तो गुण है जो राज्य कार्य करता है, किन्तु दूसरे पुष्पोंकी सुगंधिकी तरहके गुण नही है कि, जिससे जय जय कहलाए.

ईश्वरदास—ऐसे गुण क्यों होने लगे जब कि उसके कर्म अनिष्ट हैं. देखो अपने जैसे मित्रोंको मंत्री पद पाकर भूल गया.

गणपति—तभी तो ऐसे कहता हूं. अपनने उसका कौनसा कार्य बिगाड़ा था जो अच्छी तरहसे मिलता तक नहीं.

जसवन्तसिंह—नहीं बोलता तो अपना क्या ले लेगा !

गणपति—लेनेको तो क्या लेगा ! पर ऐसे पुरुषका बदला लिये विना कदापि नहीं रहना चाहिये जिसने सहायता करनेवालों को कुछ नहीं समझा.

जसवन्तसिंह—उसने नहीं समझा तो यह उसकी इच्छा. अपने को इस विषयमें कुछ नहीं करना चाहिये. मैं तो अब धाप गया. देखो मैंने लाहोरीमलका पक्ष लेकर नाहक क्रोडीमलको अपना शत्रु बनाया. इसमें मेरा यह मतलब नहीं था कि, मैं लाहोरीमलका सहायक बनकर कोई फायदा हासिल करूं. केवल क्रोडीमलका ज़ुल्म प्रजा वर्गपर बढ़ गयाथा और लाहोरीमलपर लगाया हुआ कलङ्क झूठा था वह मेरा मित्र था इस कारण उसका सहायक बनाथा. क्या अब मुझे उचित है कि, उसी मित्रका शत्रु बनूं ?

ईश्वरदास—शत्रु क्यों नहीं बनें जब कि वह स्वयम् अपनेको शत्रु समझ रहा है.

जसवन्तसिंह—वह भलेही मेरा शत्रु बन जाए. पर मैंतो उसको अपना शत्रु नहीं समझूंगा. तुम्हीं ख़याल करो कि, इस तरह शत्रु बनकर उसको गिरानेमें प्रजावर्गको क्या फ़ायदा ? जो जाता है उससेभी बुरा आता है.

गणपति—इसमें तो संदेह नहीं कि, लाहोरीमल क्रोडीमलसेभी विशेष ज़ुल्म करता है. वह बेचारा फिरभी भलाथा. पर यदि क्रोडीमलकोही फिरसे मंत्रीपद दिला दिया जाए तो क्या हर्ज है ?

जसवन्तसिंह—वाह ख़ूब कहा. क्या मंत्रीपद दिलाना सहल बात है ? देखो लाहोरीमलको मंत्रीपद दिलानेमें मेरी जान तक चली गईथी. यह तो मेरी ज़िन्दगी थी कि, बचने पाया.

ईश्वरदास—मंत्रीपदका दिलाना सहल बात नहीं है. पर वही पुरुष जिसके लिये तुमने अपनी जान जोखममें डाली थी आज मुंह तक नहीं बोलता और अभिमानमें फूला फिरता है. क्या उसके लिये कोई उपाय नहीं ?

जसवन्तसिंह—क्यों नहीं ? एक छोटासा लड़का यदि कङ्करसे घड़ा फोड़ना चाहे तो फोड़ सकता है. तो उस लाहोरीमलको जो ज़ुल्मपर कमरकसे हुए है, मंत्रीपदसे हटाना क्या मुशकिल है ? यदि चाहूं तो शीघ्रही उपाय कर सकता हूं, पर मैं उस शख्सका शत्रु बनना नहीं चाहता जिसका मित्र बन चुका. क्या मित्रता इसीको कहते हैं ? कदापि नहीं. वह मेरा शत्रु बनकर मुझे भारीसे भारी कष्ट क्यों न दे ? पर मैं उसका शत्रु नहीं बनूंगा. बल्कि यथा साध्य उसका मित्रही रहकर नाना प्रकारसे उसको समझाकर उसका उपदेशक बनूंगा फिरभी न माने तो उसकी इच्छा.

ईश्वरदास—वाहरे तुम्हारी बुद्धि क्या तुमने इस वाक्यको नहीं सुना है.

"करतासे करिये जिसमें पाप दोष न गिनिये."

उस हालतमें कि, वह तुमको तनिकभी नहीं समझता है, अपने तांई नाहकको मित्र बने रहें और बदला लेनेका यत्न न करें. यह तो तुम्हारी नादानी है. क्या कोई तुम्हारे दसजूते मारेगा और तुम यौंही मूंह ताकते बैठे रहोगे ? पुलिसके अमलदार ख़ूब हुए.

जसवन्तसिंह—दूसरेकी तो मजाल क्या है ? जो मेरे सामने अंगुली करले और यदि करेतो मैं क्यों चुपका बैठने लगा ? सेरका सवासेर तोल न दूं. पर अपने मित्रके सामने लाचार हूं. यदि वह दस जूते भी मारदे तो सहन करलूंगा. क्रोडीमल मेरा कोई मित्र नहीं था इस कारण कार्यको हाथ में लेकर जान जोखममें डालीथी नहींतो मैं कदापि ऐसा नहीं करता. तुम्हीं बताओ कि, तुम मेरे मित्र हो क्या मैं तुम्हारा शत्रु बनूं ?

ईश्वरदास—जब कि हम तुम्हारे शत्रु नहीं फिर क्यों शत्रु बनने लगे ? पर यदि हम तुम्हारे शत्रु बन जाएँ तो क्या चुपके बैठे रहोगे ?

जसवन्तसिंह—क्यों नहीं जरूर.

ईश्वरदास—इसका कारण ?

जसवन्तसिंह—यही कि, इसतरह करनेमें शत्रुता फैल जाती है और मित्रताका नाश होता है.

ईश्वरदास—लाहोरीमलके साथकी मित्रताका नाशतो हो चुका. क्या नाश होना बाकी है ?

जसवन्तसिंह—बाकी क्यों नहीं. यदि मैं चाहूंतो नाना प्रकारके उपदेशकर बिगड़ी बातको सुधार सकता हूं.

गणपति—पर ऐसा क्यों किया जाय जबकि वह अपनेको कुछ समझता भी नहीं.

जसवन्तसिंह—क्या तुम लोग अबभी नहीं समझे ? तुम्हारे कहनेके अनुसार करनेका परिणाम अन्तमें यह होगा कि, पुश्तदर पुश्त उस मित्रताके स्थान पर शत्रुता बनी रहेगी. यदि मैं मेरे प्रिय मित्र लाहोरीमलका शत्रु बनकर बदला लूंगा तो क्या वह मुझसे चूकेगा ? कदापि नहीं. यदि उसको किसी समय बदला लेनेका

मौका नहीं मिलातो उसका पुत्र मेरेसे अथवा मेरे पुत्रसे वदला लेगा. फिर मैं अथवा मेरा पुत्र वदला लेनेका यत्न करेंगे जिससे दोनों तरफ़ी नुक़सान होकर मित्रताका नाश होगा. फिर मैं हाथों से ऐसा दुःख क्यों लेने लगा ? यह उम्म शत्रुताका ही प्रताप है कि, नाना प्रकारके झगड़े इस पृथ्वी पर फैले हैं और फैलते हैं. इसको करके किसीने नतो सुख पाया है न पावेगा. ऐसे समय तो बुर्दवारी रखनाही उत्तम है. क्या हो गया यदि उसने अपनेको इस मौक़े नहीं समझा वही वादमें समझेगा. कभी नहींभी समझा तो इसमें अपना क्या गया ? उल्टी अपनी टांग ऊँची रहेगी नहीं तो वदला लेनेमें फिर वह मर्यादा नहीं रहेगी लोग हँसी करेंगे.

गणपति—लोग हंसी करेंगे तो उसकी न कि अपनी.

जसवन्तसिंह—उसकीभी करेंगे पर साथमें भले आदमी यहभी कहनेमें नहीं चुकेंगे कि, यदि वह किसी कारण मित्रता तोड़ने पाया पर तूतो विचार करता फिर कहो अपनी हंसी होगी कि नहीं.

गणपति—मेरे ख़्यालमें तो अपनी हंसी कदापि नहीं होगी. आजभी लोग उसीको बुरा कहकर दांत दिखाते हैं.

जसवन्तसिंह—जबतक अपने उसके शत्रु वनकर वदला न लें, लोग उसीको बुरा कहें गे. यदि अपनने कोई वदला लिया तो फिर उसको छोड़कर अपनेको बुरा कहकर दांत दिखाएं गे.

ईश्वरदास—गणपति ! एक तरहसे तो जसवन्तसिंहका कहना उत्तम है पर इस तरह चुपके वैठनेसे कोई अपनी क़दरभी नहीं करे गा.

जसवन्तसिंह—क़दर हो या न हो मैं उस शख्सको, जिसके यहां कई दफा अन्नजल लिया और जिसको भ्राता कहकर पुकारा,

इस ज़बानसे तो शत्रु नहीं पुकारूंगा. बल्कि जहांतक मुझसे बन सका समय २ पर उसके वहां जाकर नाना प्रकारसे उपदेश करूंगा, मानना न मानना उसकी इच्छा पर है.

गणपति—वास्तवमें आपके विचार उत्तम हैं. मित्र एसाही होना चाहिये कि, सामने वाला अपना शत्रु क्यों न बने ? पर वह शत्रु न बनकर मित्रका ही सम्बन्ध रक्खे. पर जसवन्तसिंह ! इसमें तो कोई संदेह नहीं कि, लाहोरीमल स्वार्थका मित्र है.

जसवन्तसिंह—बेशक मैं इस बातको मानता हूं. पर अपने इस में क्या ? अपनेको तो मुख्य कर्तव्य समझना चाहिये.

गणपति—खैर इस बातको छोड़ो कहो तुमने कोई नवीन बात सुनी है ?

जसवन्तसिंह—नहीं तो.

गणपति—क्रोडीमलके घरमेंसे तीन लाख रुपयेका ज़ेवर चोरी जाता रहा.

जसवन्तसिंह—(आश्चर्यमें होकर) क्या बेचारेका ज़ेवर भी जाता रहा ?

ईश्वरदास—क्या तुमको मालूम नहीं है ?

जसवन्तसिंह—नहीं तो अभी गणपतिने कहा तब जाना.

ईश्वरदास—इतनीभी पोल कि, पुलिस अमलदारको इसकी ख़बर तक नहीं.

जसवन्तसिंह—अरे भाई हमारे महकमेकी आजकल क्या पूछते हो, लाहोरीमलने उस हरामज़ादे सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसको मुंह लगा रक्खा है, वह अपना मन चाहा करता है, पर यहतो बहुतही बुरा हुआ, बेचारेको अन्त समय भारी दुःख पड़ा अब उस बुद्धि-

धनकी पढ़ाईका क्या हाल होगा ? देखो वह लड़का कैसा गुणी तथा सुन्दर है, मुझे दीखता है कि, वह इस नगरको दिपाएगा पर (आह लेकर) हाय अफ़सोस ! उसका साधन विद्या थी जिसका उपार्जन करना कठिन होगया,

गणपति—वास्तवमें तुम्हारा कहना यथार्थ है पर क्या पता लगानेकी हिम्मत करोगे ?

जसवन्तसिंह—वाह क्यों नहीं ? यहतो हमारा कामही है,

गणपति—एकका पता लगाया उसका फलतो यह हुआ कि वही पुरुष शत्रु बना, फिर पता लगानेको तत्पर होते हो,

जसवन्तसिंह—क्रोडीमलके लक्षण देखते हुए मुझे उचित नहीं कि, पता लगाऊं, पर यह समय उनकी मुसीबतका है तथा इस तरह सर्वका सर्व चोरी जानेसे बुद्धिधन जैसे गुणी लड़केके लिये विद्योपार्जन करनेमें विघ्न पड़ता है, इस कारण यदि लगाऊं तो क्या हर्ज़ है ?

गणपति—ख़ूब कहा अब शत्रुके मित्र बनने लगे,

जसवन्तसिंह—यही तो मज़ा है शत्रुको मित्र बनाना और मित्रको सदैव मित्रही समझना,

गणपति—यह कैसे ज़रा समझाओतो.

जसवन्तसिंह—महात्मा लोगोंका कथन है कि, शत्रुकी गिरी हुई दशा देखो तो उसे देखकर कदापि आनन्द मत मनाओ बल्कि यथा साध्य मददो (यदि वहले). उस अनुसार अपनेको यह हाल सुनकर प्रसन्न हो तो होनाही नहीं चाहिये, उल्टी साहायता करनी चाहिये. यदि मैं इस चोरीका पता लगा दूं तो क्या उत्तम नही होगा ? क्रोडीमल कैसा प्रसन्न होगा कि, वह मेरा शत्रु आज

मुसीवतके समय सहायक बना और उस परसे शत्रुताका भी नाश हो जाएगा. मैं मित्रका सहायक बननेसे क्रोडीमल मेरा शत्रु बना, नहीं तो ज्ञाति कोई शत्रुता उससे नहींथी. और न मैंने उसका ऐसा बिगाड़ा है कि, वह बुरा माने. केवल सच्चेका सहायक बना था जिसमें कोई दोप नही. मैं इस चोरीका पता कहां लगा सकता हूं पर जिस किसीसे किंचित् शत्रुता हो तो उसका समाधान करना तथा मैत्री भावसे रहना ही उत्तम है.

ईश्वरदास—वाहरे जसवन्त तेरी बुद्धि ! तू ये ज्ञानकी बातें कहां सीखा. पुलिस महकमेमें नौकरी करता है उसके अनुसारतो तेरे ऐसे विचार नहीं होने चाहियें.

गणपति—सब बराबर थोड़े ही होते हैं ? कई भले भी हैं. पर जसवन्तसिंहके मेलका इस वक्त पुलिसमें कोई नहीं है.

जसवन्तसिंह—ना रे मित्र मेरेसे भी आला पड़े हैं, मैं तो एक तुच्छ हूं.

गणपति—नहीं तो तुम्हारे विचार बहुत ही उत्तम हैं. परमात्मा तुम्हारा कल्याण करे.

ईश्वरदास—चलो अब दिन अस्त होने लगा.

ईश्वरदासका इतना कहना था कि, तीनों उठ रवाना हुए.

पाठकवृन्द ! देखिये जसवन्तसिंहके उत्तम विचार. कहांतो लाहोरीमल इसको गिरानेका यत्न कररहा है और कहां जसवन्तसिंह उसको अपना मित्र समझ रहा है. पर वास्तवमें देखा जाएतो मित्र ऐसाही होना चाहिये जो शत्रुको भी मित्र समझे और बदला लेनेका यत्न

न करे. लाहोरीमलकी यह नादानी है कि, ऐसे उत्तम मित्रको मित्र न समझकर कष्ट देनेको तैयार हो रहा है.

प्रकरण ४५.

सुखमें सुख.



ध्यान्हका समय है. गर्मीका समय होनेसे मनुष्य मात्र इस समय इधरसे उधर न फिरते एक स्थानपर बैठे हुए हैं. कोई काम कर रहा है तो कोई हाथोंमें पङ्खा लिये हुए बैठा है. जबकि कोई पलङ्गपर लेटा हुआ निद्राही ले रहा है. भाग्यवश कोई चलता फिरता नजर आता है. वही बेचारे दुःखिये अथवा लोभी स्वार्थके लिये गर्मीका तनिकभी ख़याल न कर इधरसे उधर फिरते हैं और अपना काम किये जाते हैं. ऐसे समयमें राज्यबाग़में राजा युगेन्द्रपालसिंहके निकट लाहोरीमल आदि बैठे हुए राज्य कार्य कर रहे हैं. इतनेमें सुपरिण्टण्डेण्ट पुलिस हनुवन्तसिंह दरबारमें आ उपस्थित हुआ और दण्डवत करके कहने लगा कि क्रोडीमलकी जागीर ख़ालसे सर्कार करनेका हुक्म प्रजावर्गको सुना दिया गया है.

राजा—बहुत ठीक किया.

हनुवन्तसिंह—यह जागीर तो जो मंत्री कहलाता है उसीके रहा करती है.

राजा युगेन्द्रपालसिंह हनुवन्तसिंहके इतना कहनेपर विचारमें पड़ गये और मनही मन कहने लगे कि, "क्या यह जागीर लाहोरीमल पानेका पात्र है ? इसकी नमकहलाली तथा चतुराईको देखते हुए यह उससेभी विशेष पानेका पात्र है. पर जागीर उसीको मिला करती है जो सदैवका नौकर हो. लाहोरीमल कौनसा सदैवका नौकर है."

राजासाहब कोई उत्तर नहीं देने पाएथे कि, हनुवन्तसिंह फिरसे बोल उठा. कि, लाहोरीमलने कैसे २ उत्तम काम किये हैं और करता है, जो पृथ्वीनाथसे गुप्त नहीं है. दिन रात इसी फिक्रमें रहते हैं कि, किसी तरहसे रियासतका नमकहलाल कहलाऊं. देखिये ! धनेश्रीका काम कैसी चतुराईसे किया कि, प्रजा जय जय मना रही है. फिर ऐसे पुरुषकी कदर क्यों नहीं की जाय ?

लाहोरीमल—भाई हनुवन्तसिंह ! यह जो पेटभर अन्न मिलता है पृथ्वीनाथकाही प्रताप है. जो कुछ मिलता है काफी है. पर तुमने देखा होगा कि, धनेश्रीकी प्रजाको क्रोडीमलने कैसी बहका रक्खी थी. यह तो अपनेही थे जो कामको कर सके.

इन दोनोंके इतना कहनेपर राजा साहब और विचारमग्न हुए तथा मनही मन कहने लगे "क्या उस पुरुष की जिसने धनेश्री जैसे मामले को तैह किया और जो रियासतका एक नमकहलाल सेवक कहलानेका पात्र है, उसकी कदर न करूं ? क्या लाहोरीमल मंत्री नहीं है जो जागीरको न पासके ? वह मंत्री क्रोडीमल जो इस रियासतका नमकहराम ठहरा और जो अभीतक घर बैठे २ खटपट कर रहा है, उसके जागीर रही तो लाहोरीमल जैसे नमकहलालको क्यों न दूं ? क्रोडीमलकी बदमाशीको देखते हुए लाहोरीमलको

उससेभी विशेप जागीर देना उचित है. पर इस समय कोई उत्तर देना ठीक नहीं." और खामोश बैठे रहे.

हनुवन्तसिंहको महाराजाका खामोश बैठना क्यों भाने लगा लाहोरीमलके पक्षमें और बोलना आरम्भ किया. आप हमारे मालिक हैं. आप हमारी कद्र नहीं करेंगे तो फिर हो चुका. कलका मामला लाहोरीमलने ऐसी चतुराईसे तैह किया है कि, यह सेवक उसको वर्णन करनेमें अशक्त है. आहा कहां तो ज़मीनदार ज़रासा भी नहीं मानता था और कहां उसको नाना प्रकारसे समझाकर मना लिया और सदैवका झगड़ा मिटा दिया. ऐसे पुरुषकी कद्र करनाहा चाहिये ताकि, वह दिल तोड़कर काम करे.

राजा—(उत्तरका देना मुनासिब समझकर) क्या मेरी कृपा लाहोरीमलपर कम है ? देखो छोटीसी उम्रमें राज्यमंत्री बना दिया यह केवल उसकी चतुराईका बदला है.

हनुवन्तसिंह—क्यों नहीं साहब ? ऐसा होनाही चाहिये. यदि ऐसा नहीं होता तो इनकी चतुराई इस उच्च पद्धतिको कैसे प्राप्त कर सकती थी, किन्तु यह इससेभी विशेष पानेके पात्र हैं. यह राजमंत्री कहलाते हैं. मानमर्यादाभी रखनी पड़ती है. जो पैदावारपर रक्खी जा सकती है, इनके ऊपरकी पैदावार तो कोई है ही नहीं, केवल तनख्वाहपर गुज़र है, आपको इनकी अवस्थापर विचार करना चाहिये, क्रोडीमल तो आसूदा हालतका था साथमें जागीर भी मिली हुई थी, उसपर अपनी मानमर्यादा रखने पाया था, लाहोरीमलके वह बात थोड़ी ही है.

राजा—ठीक है देखेंगे.

हनुवन्तसिंह—जो आज्ञा.

इतना कहकर चला गया. लाहोरीमलभी आज हनुवन्तसिंहकी कृपाका धन्यवाद देता हुआ शीघ्रही अपने कार्यसे निवृत्त होकर घरको लौटा.

शामका समय है. लाहोरीमल बाहिर पानीका छिड़काव कराके चांदनीविछाकर उसपर गद्दी तकिया लगाए हुए बैठा है. पासमें दफ्तरकी पेटी, उगालदान, पानदान, आदि जरूरी चीजें रक्खी हुई हैं. तथा एक चांदीका हुक्काभी भराहुआ पड़ा है और उसको लाहोरीमल सहर्ष गुड़गुड़ा रहा है. इतनेमें वही हनुवन्तसिंह पहुंचा और आनेके साथही कहने लगा "क्यों साहब ठीक कहा न?"

लाहोरीमल---आपके अनुग्रहका क्या कहना मैं उसको वर्णन नहीं कर सकता पर विना कहे यह बात आपको कहांसे सूझी?

हनुवन्तसिंह---क्या मैं आपका मित्र यूंही होने लगा? हरवक्त आपहीका फिक्र लगा रहता है. आजही इस विषयको हाथमें लेनेका कारण मात्र यही है कि, क्रोडीमलके चोरी होजानेसे राजा साहब कहीं उसको जागीर वापिस न दे दें. वह दयालु जो ठहरे.

लाहोरीमल—ठीक किया पर भाई राजा साहब जागीर वर्से जब हैं.

हनुवन्तसिंह---शीघ्रही लो.

हनुवन्तसिंहका इतना कहना था कि, राजा साहबका प्रधान स्वयं परवाना लेकर आया और सहर्ष उसे लाहोरीमलके हाथमें दिया. लाहोरीमलने उसको खोलकर देखातो अपने भाग्यको शुभ समझकर वही परवाना धन्यवाद सहीत हनुवन्तसिंहको दिया. हनुवन्तसिंहनेभी उसको सहर्ष पढ़ा जो यूं लिखा हुआ था:—

मंत्री लाहोरीमल,

आज तकमें तुमने जो जो काम किये हैं मेरे संतोष कारक हैं. अतएव मैं तुम्हारे उन कामोंको देखकर प्रसन्न होकर मंत्रीपदकी जागीर २०००) तथा विशेषमें कृष्णपुरी गांव ३०००) इनाअत करता हूं. आशा है कि इसी प्रकार रियासतके नमक हलाल बने रहकर राज्य कार्य किया करोगे.

राज्य.बाग़
ता० २१-५-१८७० } युगेन्द्रपालसिंह.

हनुवन्तसिंह अपने कार्यमें सफलता पाकर सहर्ष कहने लगा क्यों साहब मेरा कहना सत्य निकला कि नहीं ? राजा साहब बड़े गुणी, विचारवान्, दयालु तथा जानकारकी क़द्र करने वाले हैं. देखो ज़रासीभी देर नहीं लगाई.

लाहोरीमल—(मुसकराते हुए) पर भाई उसवक़ तो कुछ कहाभी नहीं.

हनुवन्तसिंह—वह अपने समक्ष कैसे कहते ? आखिर उनको करना था सो कर दिया. लाओ भाई अब दावत दो ? प्रधानजीभी बैठे हुए हैं.

लाहोरीमल—वाह क्यों नहीं. क्या आजही दावत लोगे ?

लाहोरीमलका इतना दर्याफ्त करना था कि, चिठीरंसा डाक लेकर आया और लाहोरीमलके हाथमें दी लाहोरीमलने डाकसे आए हुए पत्रको पढ़ना शुरू किया. पढ़ते २ एक पत्र ऐसा पाया कि, जिसको पढ़ते हुए उसके चहरेपरसे प्रसन्नता प्रगट होने लगी जिसे हनुवन्तसिंहने मालूम करके कारण पूछा और कहनें लगा " क्या कोई और माल हाथ लगा ? "

लाहोरीमल—हां दीखता तो ऐसाही है. रुईके सौदेमें पंदरह हज़ारका नफ़ा रहा.

हनुवन्तसिंह—तब तो हम डबल दावत पानेके पात्र हुए.

लाहोरीमल—क्यों नहीं.

हनुवन्तसिंह—कहनेको तो कहदेते हो पर देते कहां हो. "क्यों नहीं क्यों नहीं किये जाते हो." देखो प्रधानजी अभीतक वही अपना मामूली दुपट्टा सिरपर बांधे हुए बैठे हैं. मन्दील बंधवाया नहीं जाता. मेरे जैसा होता तो कभीका बंधवा देता.

लाहोरीमल—वाह इनके सिरपर मामुली दुपट्टा क्यों रहने लगा ?

इतना कहकर लाहोरीमल उठा और बाज़ारसे एक मन्दील तथा दुशाला मंगवाकर प्रधानजीके समीप रक्खे जिनको प्रधानजीने सहर्ष स्वीकार कर तथा प्रणाम कर अपना रास्ता लिया. प्रधानजी के चले जाने बाद हनुवन्तसिंहने अपनी पख लगानी शुरू की और लाहोरीमलसे कहने लगा, क्यों साहब प्रधानजीको मन्दील दुशाला और हमें कुछभी नहीं ?

लाहोरीमल—वाह ! आपको क्यों नहीं ? आप जो मांगें सो तैयार है. भला आपहीके अनुग्रहसे यह सब होने पाया है.

हनुवन्तसिंह—लाईये फिर लेनेमें कौनसी देर है.

लाहोरीमल—तसल्ली रक्खो मिल जायगा. कहिये आप क्या चाहते हैं ?

हनुवन्तसिंह—चाहनेको केवल आपकी कृपा चाहता हूं बस आज दावत दीजिये होचुका.

लाहोरीमल---क्या आजही दावत दूं समय थोड़ासा रहा है.

हनुवन्तसिंह---आज नहीं तो फिर कब दोगे ? आनन्दका समयतो आजही है, बादको तो बातमी पुरानी बन जायगी फिर वह लुत्फ़ नहीं रहेगा.

लाहोरीमल---राजा साहबतो बुरा नहीं मानेंगे ?

हनुवन्तसिंह---वह क्यों बुरा मानने लगे उन्होंने हाथोंसे आनन्दका समय दिया है.

लाहोरीमल---अरे साहब आप नहीं जानते क्रोडीमलके लगाए हुए कलङ्कमें मेरी जय हुई और राजा साहबने मुझे तरक्की दी तब जसवन्तसिंह आदिको दावत दीथी उस समय राजा साहब किंचित क्रोधित हुए थे आश्चर्य नहीं आजभी वैसाही हो ?

हनुवन्तसिंह---मुझे कौनसा मालूम नहीं है. आपने उस रोज़ मुझे आमन्त्रण नहीं भेजा पर हालतो सब मालूम होचुका था. उस रोज़ तो क्रोडीमलने शिकायत कीथी जिससे उसको ढाढस देनेके कारण केवल इतनाही कहा था " ऐसा न किया जाय "

लाहोरीमल---हां बात तो यही थी. क्रोडीमलने इस रूपमें शिकायत कीथी " लाहोरीमलने चिड़ानेकी ग़र्ज़से आनन्द मनाया था "

हनुवन्तसिंह---फिर क्या है तैयारी कराओ पर एसा न हो कि, आजभी आप मुझे भूल जाएं.

लाहोरीमल---वाह आज आपको क्यों भूलने लगा. उस रोज़ भी मैंने तो जसवन्तसिंहको आपके बुला लानेको कहदिया था किन्तु उसने नहीं बुलाए.

हनुवन्तसिंह—वह हरामज़ादा क्यों बुलाने लगा ? वहतो मेरी जगह लेना चाहता था, क्या करूं आपने मुंह लगा रक्खा था नहींतो कभीका उखेड़ मारता.

लाहोरीमल—हां साहब वाततो ऐसी ही थी. पर अब शीघ्रही उसको उसकी कर्तूतीका फल मिल जाएगा. धीरज रखिये.

हनुवन्तसिंह—अबतो मिलेगा ही.

इतना कहकर हनुवन्तसिंह उठ खड़ा हुआ. लाहोरीमलभी उठा. हनुवन्तसिंहने अपने घरका रास्ता लिया तथा लाहोरीमल दावतके प्रबन्धमें लगा.

तेजमलभी आउपस्थित हुआ और यह शुभ समाचार पाकर नाना प्रकारकी चापलुसीकी बातें करने लगा.

रात्रिका समय है. शुक्लपक्ष होनेसे चंद्रमाका प्रकाश चारों तरफ़ फैल रहा है और उस प्रकाशसे सुफ़ेद चीज़ चांदनी समान सुन्दर मालूम होरही है वह यमुनाका सफ़ेद पानीभी इस समय अपनी सुन्दरता बतानेमें कम नहीं है. ज्यों हवाके जोरसे उसकी लहरें बनकर ऐसी आनन्द दे रही हैं, जिसको यह लेख नीवर्णन करनेमें अशक्त होरही है. ऐसे आनन्दमय समयमें मंत्री लाहोरीमलके मकान पर जलसा हो रहा है चलो पाठकगण ! अपने भी जाकर देखें कि, किस प्रकार आनन्द मनाया जारहा है !

एक बड़ा भारी दालान है. जहां सफ़ेद चांदनी बिछा रक्खी है. और उसमें क्रमवार चौकियें रक्खी हुई हैं. पासमें स्थान २ पर जलूस जल रहे हैं. वे जलसेमें बैठने वाले अभी आकर अपने स्थान पर नहीं बैठे हैं वलिक अन्दरके भागमें भोजन कर रहे हैं. जब सर्व

भोजनकर चुके उठ २ कर हाथ धोने लगे तत्पश्चात् पान सुपारी मुंह-में डालकर तथा सिगरेट जलाकर अपने २ स्थान पर आकर बैठ गए.

पाठकगण! उनको देखने पर विदित होगा कि, ऊपरको बीचमें दाई जानिवकी चौकीपर मंत्री लाहोरीमल तथा बांई तरफकी चौकीपर हनुवन्तसिंह बैठे हुए हैं. दोनों तरफकी चौकियोंपर लाहोरीमलके रिश्तेदार, नगरके सद्गृहस्थ तथा रातदिनके आने जाने वाले बैठे हुए हैं. किन्तु खेदकी बात है कि, लाहोरीमलके प्रिय मित्र जसवन्तसिंह आदि इसमें नहीं हैं.

सबोंका आ आकर अपने २ स्थानपर बैठना था कि, नायकाओंने अपना गाना शुरू किया. प्रथम ललिता नामकी नायका उठी और इस तरहसे मुबारिकबादी गाने लगी.

आज है आनन्द आनन्द, आज है आनन्द आनन्द,
हो मुबारिक सज्जन आप, आज है आनन्द आनन्द.
सानुग्रह आज पाए, पृथ्वीको आनन्द लाए,
हर्ष उर लाए लाए, कहो सभी आनन्द आनन्द.
धन आप सुमति, आ करि कृपा अति,
पामो आप सुमति, यह हमें आनन्द आनन्द.
विघ्नरहित सभा काज, हो समाप्त सज्जन आज,
यह है उरमें उल्लास, कहो सबही आनन्द आनन्द.

जब ललिता गा चुकी, केतकी नामकी दूसरी नायका उठी और इस तरहसे एक ठुमरी गाने लगीः—

वारी जाऊंरे सांवरीया, तोपे वारणारे.
तन धन मन सब तोपे वारूं, घर दर ज़र सब तोपे निसारूं
कब तक क़ातिल बनकर खञ्जर मारनारे ॥ वारि ॥

केतकीके वैठ जानेपर दूसरीभी वारी २ उठी और जो मनमें आया गाने लगी. किसीने मलार गाया तो किसीने मांड़ही गाया. कोई ऐसीभी थी कि, जिसने पनिहारी गा ली. उस समय सभाको वर्षाका ऋतु न होनेसे वह राग पसंद नहीं आया. पर जब उसके पनिहारी गानेसे एकदम वादल घुमडकर मन्द २ वूंदे वरसाने लगे, उसको ईश्वर समान मानने लगे और उसके राग तथा गायनकी वाह २ करने लगे. किन्तु साथमें वर्षाके वरसनेसे दौड़ भागभी शुरू हुई और मंत्रीसाहवने आज्ञा दी कि, शीघ्रही यहांसे सामान उठाया जाकर अन्दरके भागमें वैठक की जाए. आज्ञानुसार वैसाही हुआ और फिर उसी प्रकार गाना वजाना शुरू होकर उसी पनिहारी गानेवाली वेण्याको और गानेकी आज्ञा हुई. इस आज्ञासे दूसरी उच्च वर्गकी नायकाओंको वहुत वुरा मालूम हुआ पर क्या हो सकता था. आज्ञानुसार उसने अपना गाना आरम्भ कियाः--

आग तन मन लागी, कैसे वुझावूं टेर

क्या दिखाऊं क्या सुनाऊं, तन तपाऊं किसके जाऊं,
ऐ किसको दिखलाऊं, ॥ आग ॥
हार गई मैं हार, पास नहीं वह यार, कन्था कैसे करूं मन मार,
कन्थ विनाकी कामनि गेली सुनए मेरी दिलदार,
है आजा जलदी औ प्यारे औ नियारे नेनों वीच सारे
मैं तुमपर वल जाउं, मैं तुमपर मर जाउं ॥ आग ॥

पनिहारीके इस गानेपर लाहोरीमलने कहा कि, यह गाना तेरा कैसा. कहां तो ठण्डी २ पनिहारी गातीथी कि, जिससें मेघ वरसने लगा और कहां आग २ गाने लगी.

पनिहारी—वाह साहब ! खुब कहा ! यह वह-आग नहीं है जैसा कि, आप समझ रहे हैं. यह परमात्माके वियोगकी आग है जिसको बुझाकर दर्शन देनेके लिये एक स्त्री कह रही है.

लाहोरीमल—यहां ऐसे गायनका क्या काम है ? उत्तम २ रङ्गीले छबीले इश्कके गायन गाओ कि तमाम जलसा प्रसन्न हो.

पनिहारीने जो आज्ञा कहकर उसी तरहका गायन गाना शुरू किया:—

दिलदार यार छेलासे नेणां लगाएंगे, नेणां लगाएंगे सेणां लगाएंगे.
॥ दिलदार यार ॥
यार मेरा आला जोबन मेरा बाला, सुरन मारे सईयांकी मन कोन मारेर. ॥ दिलदार यार ॥
बात मोरी भोली उमर मोरी कवली, आंखमार गवरूसे नेणां लगाएंगे.
॥ दिलदार यार ॥

लाहोरीमल—वाहरे पनिहारी ! खूब कहा इसवक्त तो तूने कम्हाल कर दिया. इसीको गायन कहते हैं.

ज्योंही लाहोरीमल यह कहने पाया कि, किसी औरके गानेकी सुरीली आवाज सबके कांनोंमे आने लगी. अतएव पनिहारीको बैठनेकी आज्ञा देकर सुनने लगे:—

(रागः पिया बिना रतीयां हमारी कटे ना)

प्रभु भजन बिन जीवन अकारा, मानले मन मेरा दुलारा. टेर
रटो सत्य नाम प्यारे, प्रेम उर लाए-लाए;
मिथ्या संसार लखी, त्यागो उरे छाए छाए;
तुही तुहीसे नेह बांध प्यारा. ॥ मानले ॥ १ ॥

सभी सवारथके साथी, अपना ना कोई भाई;
वेगाना करके रक्खे, जहां ना अर्थ भाई,
काय आंख मीचपड़ो कुप अंधारा ॥ मानले ॥ २ ॥
जाते नहीं देर लगे, दोलतो राज प्यारे;
जोबना छीनमें जावे, वहे ज्यों नारे धारे;
मिथ्या समझ सुख यह संसारा ॥ मानले ॥ ३ ॥
सखुन देहनमें गीरी, बोल्हो हरबार तोता;
कलाम सख्त प्यारे, दहनसे दूर तोता;
निजको पहिचान प्यारे वीर हमारा ॥ मानले ॥ ४ ॥
दीदार निजका देखो, अंतरमें जाके तोती,
वहीं दिलदार मिले, वहीं माशुक मोती;
दिलमें दिदार प्यारी देखले भारा ॥ मानले ॥ ५ ॥
समा माशुकमें निजको, तरफ कर दुर प्यारे;
में हरशेमें हाजीर, नहींको उससे न्यारे,
हो एजा अचल मस्त निजमें प्यारा ॥ मानले ॥ ६ ॥

जब वह गाना गा चुका लाहोरीमल आदि कहने लगे कि, यह औपदेशिक गाना गाने वाला फिर कौन है, रोनेभी दो. पनिहारी उठो. तुम अपना काम किये जाओ ?

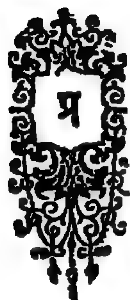
पनिहारीने आज्ञानुसार दो एक गायन और गाये फिर ज़लसा बर्ख़ास्त किया गया.

पाठकगण ! वह सुरीली आवाज़से औपदेशिक गाना गाने वाला जसवन्तसिंह था पर अब उसकी वहां गिनती क्यों होने लगी और उसके कहे अनुसार लाहोरीमल क्यों करने लगा ? वहतो आजकल मोह मायाके जालमें फंसकर इश्कसे भरे हुए गायन पसंद करता है और वैसेही उसके आचार विचार हो रहे हैं. किन्तु धि-

कार है उसको जो इस तरहसे नायकाओंका नाच गायन कराके पैसे उड़ाता है. पर कर्मकी क्या खूबी है कि, ऐसे पुरुषको सुखपर सुख मिल रहा है और आनन्द रूपी लहरोंमें मस्त रहता है.

प्रकरण ४६.

अन्ते मति सा गति.



करण ४३ में हम आपको बताआए हैं कि, क्रोडीमलने अपने सपूत पुत्र बुद्धिधनका उपदेश मानकर आत्महत्या नहींकी और ईश्वरभक्तिमें लीन होनेकी प्रतिज्ञाकी. किन्तु वास्तवमें देखा जाय, तो यह उसकी प्रतिज्ञा वृथा थी. उसने बहुतेरा चाहा कि, मैं किसी न किसी प्रकार ईश्वरभक्ति करके सद्गति प्राप्त करूं पर यह काम करना कोई सहल बात नहीं है. बड़े २ ऋषिमुनि जिन्होंने इसी हेतु संसारको त्याग किया, नाना प्रकारके दुःख उठाये, फिरभी सद्गतिको प्राप्त नहीं करसके बल्कि नर्कके भागी बने. केवल वही सद्गतिको प्राप्तकर सके हैं और करते जाते हैं, जिन्होंने अपने मनको जीतलिया है. क्रोडीमलने अपना मनतो जीता ही नहीं है जो सद्गतिके पात्रहो. वह जिव्हासे ईश्वरका रटन करता है जब कि मन उसका मोहमायाके जालमें फंसकर औरही विचार कररहा है मनका जीतना बहुत ही कठिन है. देखिये उन महात्माओंको जिन्होंने अन्तःकरणसे सद्गति प्राप्त करनेका यत्न किया है, अपने मनको किस तरहसे समझाया है:

जिया तो हे किस विध समझाऊं, मनातो हे किसविध समझाऊं (टेर.)
हाथी होय तो पकड़ मंगाउं, जंजीर पांव नखाऊं,
कर असवारी मावत हो बैठूं, अंकुश दे समझाऊं ॥१॥ । मना ।
घोड़ा होयतो पकड़ मंगाऊं, करड़ी वाग देराऊं,
कर असवारी शहरमे फेरूं, चाबुक दे समझाऊं ॥२॥ । मना ।
सोना होयतो सोहगी मंगाऊं, करड़ा ताप देराऊं,
ले फुकरणी फुंकण लागूं, पाणी ज्यूं पिघलाऊं ॥३॥ । मना ।
लोहा होय तो एरण मंगाऊं, दोड़ धमण धमाऊं,
मार घणोंका घमघोर लगाऊं, जंत्रीमें तार कढाऊं ॥४॥ । मना ।
ज्ञानी होयतो ज्ञान सिखाऊं, अंतर बीन वजाऊं,
'आनन्दघन'कहे सुनभाई मनवा, ज्योतिमें ज्योत मिलाऊं॥५॥।मना॥

वास्तवमें मनकी माया ऐसी ही है. इसका वश करना सहल बात नहीं है. बड़े २ महात्मा लोग इससे हार गए. अन्तमें कायर होकर सद्गतिके यत्नको छोड़दिया. यहतो धीरज रखकर शुरूसे ही वश करनेका यत्न किया जाय, उन मोहमाया आदि दुश्मनोंका क्षय किया जाय, ससारको असार समझा जाय, और बादमेंभी उसको विचलितन किया जाय, तभी जीता जासकता है फिर कोडीमलकी ऐसी शक्ति कहांसे होने लगी जो जन्मतेही मोह मायाके जालमें फंसकर मस्त हो पडा रहा अनिष्ट करनेमें लीन रहा, धर्म्मको कुछ नहीं समझा, और अभीतक खोई हुई वस्तुका पश्चाताप कर रहा है. हकीकतमें देखा जाए तो आज कलके मनुष्य जो ईश्वरभक्ति करते हैं अपने सिरपर एक तरहका बोझ समझकर बाहरी दिलसे करते हैं. मनको वश नहीं करते. अतएव उसीका प्रताप है कि, उनकी सद्गति नहीं होती जिसका प्रत्यक्ष दाखिला आप अपनी नजरोंके सामने देखेंगे.

शिरपे वाधता पागा, सोहीशिर ठिनक लगावत कागा ॥२॥
कौड़ी कौड़ी करने रे ....जी.
हंसे जोड़ी थी मायां, सोही माया होगइ वादलियेरी छाया॥३॥
धीयां दुधां थी हो................जी.
हंसे सिंची थी काया, सोही काया सुख तरवर केरी छाया॥४॥
आंगासु अडताहो. ....जी.
सेणा सु मिलता, सोही नर देख्यामें अगनिमें जलता ॥५॥
वोलिया गोरख नाथ हो.........जी.
सुणले मन मेरा, एसाही हवाल होयेगा जीव तेरा ॥६॥

इस तरह भजनको कहकर क्रोडीमल फिर विचारमें लीन हुआ और मनही मन कहने लगा " वास्तवमें मेरे शरीरकीभी यही गति होनेकी है. पर अरे भजन ! तू मुझे युवाऽवस्थामें याद क्यों नहीं आया. यदि उस समय याद आता तो मैं शीघ्रही चेत जाता और इस शरीरका अभिमान न करता. अरे भजन याद नहीं आया तो क्या होगया, मेरे कुटुम्बने अनर्थ करते समय उपदेश देनेमें कौनसी कमी रक्खीथी. पर भावी वलवान् है उसको कौन रोक सकता है. हाय मन ! मैंने नाहकको अभिमानकर धनादि मायावी पदार्थोंको अपना समझा और उसके उपार्जन करनेमें पापको नहीं गिना. धर्म्म जैसी अमूल्य वस्तुको दूर छोड़ी. अव यदि यह मेरा शरीर छुट जायगा तो कौनसी उसमेंकी कोईभी चीज साथ चलनेकी है, हकीकतमें मेरे वेटेके उपदेशानुसार केवल पाप और पुण्यही साथ चलनेके हैं. पुण्यतो मैंने कियाही नहीं है. जो साथ चलकर पापका नाश करे. पाप किया है जो साथ आवेगा. वह क्या भला करेगा. यहां भी नर्कमें फेंका है और देह छुट जानेके वादभी नर्कमें लेजाकर डाल देगा. आहा ! मनुष्यमात्र

आंखें, जो मुररवी वतलाती थीं, जर्द नजर आ रही हैं और किसी चीज़को ठीक तौरपर देखभी नहीं सकती. वही छाती, जो लोहूसे फूली हुई दीखती थी, उसके स्थानपर हड्डियें दिखाई दे रही हैं. वही हाथ, जो नाना प्रकारकी वज़नी चीजें उठा लेतेथे, इधरसे उधरभी नहीं हो सकते. वही पांव, जो कोसों चल सकते थे, आज खाटसे नीचेभी रक्खे नहीं जाते. इतनाज नहीं अन्दर उसके ऐसा रोग भरा हुआ है कि, बुरी दुर्गंधि देरहा है. इस समय वेचारा क्रोडीमल मृत्यु खाट पर सोता हुआ अपने शरीरकी अवस्थाको देखकर मनही मन पश्चात्ताप कर रहा है " क्या मैंने इसी शरीरका अभिमान किया था ? क्या इसी शरीरके लिये मैंने अनिष्ट कर्म किये थे जो आज इस गतिको प्राप्त हुआ ? क्या मैंने यह जानकर इसको नाना प्रकारके भोजन खिलाए थे और नाना प्रकारके वस्त्र आभूषण आदि पहिनाए थे ? क्या उन नाना प्रकारके सुगंधित तेलकी यूं ही मालिश कीथा कि, आज यही शरीर सुगंधिके वजाए दुर्गंधि दे रहा है ? हे शरीर ! मुझे स्वप्नमेंभी ख्याल नहीं था कि, तू अन्तमें जाकर इसतरहसे निर्गुणी व र कर कष्ट देगा. यदि मैं ऐसा जानता तो कदापि तेरा यत्न न करता और उन अनिष्ट कर्मोंका भोगी न वनता. " इस प्रकार क्रोडीमल विचार कररहा था कि, उसको वचपनमें सीखा हुआ एक भजन याद आया जो धीरे २ यूं कहने लगाः—

जाय गंधी देरली हो ....जी.
तेरो क्या गुण गावुं, रचिया देवलियामें रहने न पावु ।।जाय।।टेर
गुरू महारा लावींग सोपारी हो....जी.
जिण मुख चावता विड़ा, वोही मुखड़ेमें निकल रहिया किड़ा।।१।।
गुरू महारा पहरता वाघा हो...जी.

मेरा यह शरीर किस अवस्थाको प्राप्त हुआ है. क्या मुझे स्वप्नमें भी आशा थी कि मेरे शरीरकी यह बुरी गति होगी ? कदापि नहीं केवल जिस वस्तुमें सार था उसका रहस्य न जानने तथा सर्वको शत्रु समान समझकर अनाथोंके गले काटनेमें लीन रहने आदि कारणोंसे यह मेरा सुन्दर शरीर इस गतिको प्राप्त हुआ है. न मालूम जीवकी क्या गति होगी. वास्तवमें इस संसारके मनुष्य जो असली रहस्यको न जानकर इस गांधि देहको प्रसन्न रखनेके लिये नाना प्रकारके यत्न करते हैं सर्व वृथा हैं. इस तरह करनेसे उनका कोई कल्याण नहीं हो सकता. अतएव बेटा ! तू अपनी गंधिदेहका अभिमान मत करना. सदैव इस संसारमें किम हेतु जन्म लेना पड़ा है उसके रहस्यको जानकर, उत्तम २ कार्य करनेका यत्न करना कि, जिससे यह तेरी आत्मा सद्गतिकी प्राप्त हो. मनुष्य मात्रको अपना बन्धु समान समझना. किसीको कोईभी कष्ट न देते यथा साध्य मदद करना. दयाको अपने हृदयमेंसे कदापि दूर मत करना. अपना अमूल्य समय सदैव ईश्वर स्तुतिमें व्यतीत करना यदि कोई शत्रु अपनी शत्रुताका स्मरण करके कोई कष्ट दे तो उसको सहन करजाना, कदापि बदला लेनेका यत्न न करना. बल्कि उनको मित्र समान समझना. क्रोध, मान, मोह, मायाको अपनी इस पवित्र आत्मामें कदापि स्थान मत देना. जो धन सद्गतिसे प्राप्त हो उसीको काफ़ी समझकर अपना गुज़र करना. विशेष धनकी लालच मत करना. मैं तुमको इस विषयमें विशेष उपदेश नहीं कर सकता कारण कि, जब कि मैंने इन बातोंको नहीं समझा तो फिर दूसरेको क्या उपदेश करने लगा और इस तरह करनेमें क्या मुझे लज्जा मालूम नहीं होगी ? मैं और कहनेमें लजाता हूं तुम ख़ुद विद्वान हो समझ जाओ,

जो इस शरीरका अभिमान करके सब अपनाही अपना बनानेका यत्न करते हैं सर्व वृथा है. उसमें कोई सार नहीं है. केवल ईश्वर भक्तिमें ही सार है. किन्तु यह सर्व विचार मेरे लिये किस कामके मैं तो नर्कका पात्रहो चुका. यह मेरा शत्रु समान दुर्बल शरीर शीघ्रही छुट जायगा. उचित है कि, अन्त समय अपने पुत्रको उपदेश कर जाऊं कि, वह मायावी जालमें फंसकर कोई अनिष्ट कर्म न करे. " और बुद्धिधनको आवाज़ दी क्रोडीमलका आवाज़ देना था कि, बुद्धिधन शीघ्रही आ उपस्थित हुआ जो पासके कमरेमें बैठा हुआ पुस्तक पढ़ रहाथा. बुद्धिधनका आना था कि, शीघ्रही क्रोडीमलने तुतली ज़बानमें अपना भाषण आरम्भ किया.

" बेटा ! इस अनित्य देहका कुछ भरोसा नहीं है आज है न मालूम कल छुट जाय. अतएव मैं उचित समझता हूं कि, अन्त समय तुझे कुछ उपदेश कर जाऊं, तुम जैसे बुद्धिमानको यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि, मेरी यह गति क्यों हुई ? तुम स्वयम् इस बातको जान सकते हो. यह केवल मेरे उन अनिष्ट कर्मोंका प्रताप है कि, मैं इस दुर्गतिका पात्र हुआ हूं. इसमें कोई संदेह नहीं कि, तुमने मुझे स्थान २ पर उपदेश देनेमें कमी नहीं रक्खी. मैंही कर्म ठोक था जो उसको मानने नहीं पाया. पर बेटा ! जब कि मेरी गति इस तरहसे होनी बदी थी, तो फिर मैं तेरे उन उत्तम उपदेशों को कैसे मानता. इस समय मुझे बहुत कुछ पश्चात्ताप होता है. किन्तु अब मेरा यह पश्चात्ताप वृथा है. यही मेरा पिञ्जर शरीर शीघ्रही छुट जायगा और दोनों हाथोंसे पापकी गठड़ी उठाकर तथा सिरपर रखकर चलता बनूंगा, बेटा ! अब मैं इस बातको जानगया कि, मैंने इस अनित्यदेहका अभिमान करके केवल उसको प्रसन्न तथा सुन्दर रखनेके लिये जो २ यत्न किये, सब वृथा थे. देखो !

तका शोक है कि, तुम लोगोंको दुःखित अवस्थामें छोड़कर सदैवके लिये इस संसारसे विदा होता हूं. इस घरमें मैंही था कि, जिसके कारण इस भुवनकी यह अवस्था हुई. पर अब क्या हो सकता है ? कृपा कर मुझे क्षमा करो, " और इतना कहकर अपने कुटुम्बकी तरफ़ मोह लाकर आंखोंमेंसे आंसू गिराने लगा, क्रोडीमलकी यह स्थिति देखकर सबके सब हाहाकार मचाने लगे, थोड़ीही देरमें उनके देखते २ क्रोडीमलकी आंखोंने रूप बदल दिया, उसके आंखोंका रूप बदलना था कि, उसको खाटसे पृथ्वीपर लिया गया, पृथ्वीपर लेतेही उसकी वह आत्मा शरीररूपी पिञ्जरको छोड़कर न मालूम कहीं चली गई,

क्रोडीमलका हंस निकलना था कि, उसकी मातुश्री तथा प्रियपत्नीने रोना शुरू किया तथा बुद्धिधनभी अपने पिताके सिरको गोदमें लेकर आंसू बहाने लगा और मनही मन कहने लगा " पिताश्री ! जानेमें इतनी जल्दी क्यों की ! थोड़ी देर और ठहर कर आपके इस पुत्रको विशेष उपदेश क्यों नहीं किया जो सदैव काम आता ? आहा ! मेरे पिताके अन्त समयके वाक्य कैसे उत्तम थे जो सदैव मेरे शिरोमणि बने रहेंगे. किन्तु पिताश्री आपने इन उत्तम विचारोंको इतने दिन कहां छिपा रक्खे थे, पहिले यदि कहते तो आपके लियेभी फलदायक होते न मालूम आपकी क्या गति होगी, "

सौभाग्यवती तथा सुन्दरीका रोना पीटना था कि, अडोसी, पड़ोसी, सगे, सोई आ आ कर वहां एकत्र होने लगे और उनमें से कई क्रोडीमलको अग्नि संस्कार करनेके अर्थ उन पदार्थोंके लानेमें लगे जो दर्कार थे. ज़रासी देरमें सब सामग्री तैयार हुई और शीघ्रही क्रोडीमलकी लाशको उसमें रखकर शान्ति-भुवनमें लेगए और फूक फांक कर चले आए,

बुद्धिधन—पिताश्री लजानेका कोई कारण नहीं है. यह बातें अनुभवसे ही मालूम होने पाती हैं. मैं आपकी आज्ञाको पुष्पाञ्जलिके तौर पर सिर चढ़ाता हूं और इस बातकी आपके समीप प्रतिज्ञाकर कहता हूं कि, मैं अपनी इस कोमल आत्मामें अनिष्ट कर्मको कदापि स्थान नहीं दूंगा. बल्कि जहांतक मुझसे बन आएगा अपना समय धर्म्म, ध्यान, आदि उत्तम कार्यों में व्यतीत करूंगा. आप निश्चय रखिये. पर धन्य है आपको कि, अन्तमें जाकर सत्य मार्गको जानने पाए.

क्रोडीमल—यह सब तेरे ही उपदेशका प्रताप है कि, अन्त समय इतना समझने पाया. खेद केवल इस बातका है कि, शुरूमें इसको जानने नहीं पाया नहीं तो आज मेरी यह गति न होते उद्धार होता.

बुद्धिधन—मैं आपको क्या उपदेश करने लगा ? अनुभवसे जो बात जानने पाया वही केवल आपको समय समय पर कह दी थी. अब आप कोई पश्चात्ताप न करते अपने भावको बदल कर केवल अर्हन् रटन करनेमें लीन रहिये कि, जिससे आपकी सद्गति हो.

क्रोडीमल—बेटा ! अब मेरी सद्गति हो चुकी, मुझे तो काल-रूपी शत्रुने आ घेरा. इस समय यह मेरे शरीरमें रम रहा है. देख ! यह मेरे पांवकी नसें तान मार रही हैं, बोलनेकी श्रद्धा धीरे २ कम होती जाती है, जा मातुश्री आदिको बुला ला. उन्हेंभी कह-नेकी बातें हैं जो कह दूं, अब मैं घड़ी भरका महमान हूं.

क्रोडीमलका इतना कहना था कि, बुद्धिधन घबराने लगा और शीघ्रही जाकर अपनी दादी तथा मातुश्रीको ले आया. उ-नका आना था कि, क्रोडीमल कहने लगा " आज मुझे इस बा-

भोजन वस्त्र आदिकी इतनी सहायता नहीं होती है. जिनकी इस ऋतुमें पूरी आवश्यकता रहती है. किन्तु वह अनाथ काश्तकार लोग इसकी तनिकभी परवाह नकर केवल अन्न पैदा करनेके अर्थ रात्रिके समय भी अपना काम किये जाते हैं. ऐसे समयमें चम्पापुरीमें जो विश्वेश्वर नगरके ही इलाक़ेमें बारह मीलकी दूरी पर है. पुरुप तथा स्त्री एक घरमें आगके पास चार पाई बिछाकर बैठे हुए आनन्दकी बातें कर रहे हैं,

स्त्री—कहो यार? आजकल तो आप आतेभी नहीं. क्या कृपा कम है ? मैं तो आपके विरहसे ऐसी बावरी बनी रहती हूं कि, ज़रासाभी चैन नहीं पड़ता और यह मेरा सुन्दर मन आपहीमें लग-कर मेरे शरीरमें नाना प्रकारके कौतक करता है आप ऐसे निर्मोही कहांसे होगए जो मेरी सुधतक नहीं लेते ?

पुरुष—प्यारी! क्या कहूं रोज़गारमें फंसा हुआ हूं इस कारण आनेमें विलम्ब हुई, कृपाकर माफ़ करो. नहींतो (गलेमें हाथ रखकर तथा चुम्बन लेते हुए) तुझ जैसी प्राणप्रियाको मैं कब भूलने लगा ? कहो आज ऐसे मैले वस्त्र पहिने हुए क्यों बैठी हो ? क्या मेरे आनेकी तुमको ख़बर नहींथी याकि कोई नाराज़गी है ?

स्त्री—(कुछ मिलनेकी आशामें) नाराज़गी में तो पूंछना ही क्या ? जो महीनों बाद शकल दिखलाते हो. ज्यों आपके आनेकी ख़बर भी हो चुकीथी, पर रोज़ २ नये वस्त्र कहांसे लाकर पहनूं ? आप मेरी स्थिति तो जानते ही हो.

पुरुष—कहो प्यारी क्या चाहती हो ?

स्त्री—चाहनेको तो वस्त्र आभूषण सभी चाहतीहूं.

पुरुष—मुझे फिर देनेमें कौनसा उज्र है (जेबमेंसे निकालकर)

पाठकगण! देखिये ज़रासी देरमें क्रोडीमलकी मृत्यु होकर सुन्द-रीके सौभाग्यका नाश होगया और बुद्धिधन आदि सब चिन्तारूपी सागरमें डूबे हुए हैं. आहा मृत्युभी एक अज़ीब चीज़ है जिसके लिये प्रथमसे कोई नहीं कह सकता कि, वह कब आवेगा. केवल ज्ञानी पुरुषही इसको जानने पाते हैं. किन्तु इसमें तो कोई संदेह नहीं कि, क्रोडीमलकी जैसी मतिथी उसी प्रकार अन्तमें जाकर बुरी मौत मरा और सद्गतिके लिये कुछ नहीं कर सका. अन्तमेंभी ज़ा कर अपने कुटुम्बकी तरफ मोह पैदाकर लिया. क्रोडीमलके जीवकी क्या गति हुई होगी उसके लिये मेरे जैसा अज्ञानी पुरुष क्या कह सकता है. किन्तु इसके रोग, मृत्यु, आदिके समाचार जिन २ ने पाए हैं, वे सब यही कह रहे हैं कि "आख़िर किया जैसा भुगता और भुगते गा" सो वास्तवमें उनका कहना यथार्थ है. उसके कार्य ऐसे ही थे. अनिष्ट कर्म्मानुसार उसकी सद्गति क्यों होनेलगी?



प्रकरण ४७

कन्या विक्रयका आरम्भ.



त्रिका समय है. अभी आठ नही बजे हैं किन्तु शरद ऋतु होनेके कारण मनुष्यमात्र अपने२ घरोंमें अग्नि देवीका शरण लेकर बैठे हुए सुख दुःखकी बातें कर रहे हैं. यह ऋतुभी अजीब है. इसको अमीर लोग पसंद करते हैं जबकि बेचारे ग़रीब बुरा कहकर गर्मीके ऋतुको ही पसंद करते हैं, जिसका कारण केवल यही है कि, ग़रीबोंके पास

इतनेमें वाहिरसे किसीने दरवाज़ा खोलनेकी आवाज़ मारी. यह आवाज़ उनके कान तक पड़नी थी कि, दोनों चौंक उठे वह पुरुष तो थर २ कांपने लगा और उस स्त्रीसे कहने लगा "तेरा भला होगा यदि मुझे कहीं छिपादे या मकानसे वाहिर करदे, नहीं तो मेरा काला मुंह हो जाएगा, क्या कहीं पिछाडी होकर जानेको नहीं है ?" किन्तु वह स्त्री उसकी तरह न वनकर साहसी हो कहने लगी "आप घवराईये मत शीघ्रही उपाय सोचती हूं" और अपने मनमें विचार कर कहने लगी "देखिये ! मैं दरवाज़ा खोलनेसे पहिले चिराग़ तथा आगकी रोशनी कम-कर दूंगी, वस फिर क्या है आप दरवाज़ेके पीछे खड़े रहना, ज्यों ही मेरा पति अन्दर आजाय, आप वाहिर होजाना इतना कहकर स्त्री अपने यत्नमें लगी. प्रथम आग पर पानी डाला कि, आग वुझ गई. तदनन्तर चिराग़ वुझा दिया और अपने मित्रको दरवाज़ेके पीछे खड़ाकर इस तरहसे दरवाज़ा खोलने लगी मानो भर निद्रामें थी दरवाज़ा खुलतेही उसका पति अन्दर आया किन्तु वह स्त्री इस ख़यालसे दरवाज़ेके पासही खड़ी रही कि, कहीं उसका पति उसे बंद न करले और चटसे अपने पतिके दाख़िल होतेही उस पुरुषको वाहिर निकालकर दरवाज़ा वंद कर दिया.

उस स्त्रीके दरवाज़ा वंद कर जातेही उसके पतिने प्रश्न किया अभी तो आग जल रही थी वुझा कैसे दी और दरवाज़ा वंदकरनेसे पहिले अन्दरसे कौन निकला ?

अपने पतिके इस प्रश्न पर स्त्री प्रथम तो घवरा गई और मनही मन विचारने लगी कि, इसका क्या उत्तर दूं पर कुलटा जो ठहरी शीघ्रही अपनी कपट क्रियाको काममें लाकर कहने लगी " यहांसे

लो यह सुवर्णका गज़रा तथा एक सौ रुपयेका नोट.

स्त्री—(अति प्रसन्न होकर उन्हें न लेनेके रूपमें) इन्हें मैं क्या करूं, मेरा पति जान जायगा ?

पुरुष—वह क्यों जानने लगा ?

स्त्री—नोट तो जानने नहीं पायगा पर यह गज़रा कैसे गुप्त रहेगा ! देखकर शीघ्रही प्रश्न करेगा फिर क्या उत्तर दूंगी ?

पुरुष—इसमें क्या ? यदि देखले और पूंछ बैठे तो कह देना कि, " मेरे बापने बनाकर दिया है. " पर यह तो कह आज सरस्वती कहां है ?

स्त्री—उस चाण्डालीको तो आज पड़ोसनके घर सोनेको भेज दी. मैं जानती जो थी कि, आज आप आने वाले हैं.

इतना कहकर वह स्त्री सहर्ष उन दोनों चीज़ोंको लेकर खाट परसे इस तरह उठी मानों उसके हृदयमें काम रूपी अग्नि सुलग उठी हो और उसको शान्त करनेका यत्न कर रही हो. शीघ्रही दूसरे कमरेमें जाकर नये वस्त्र आभूषण पहिन आई. बल्कि वही कञ्चन गज़रा हाथमें डाल इस तरहसे बन ठन कर आई मानों पृथ्वीपरकी सर्व स्त्रियोंका सौन्दर्य उसीमें आगया. वह उसका कोमल मुख चंद्र समान दृष्टिगोचर होने लगा. वह उसके कटाक्ष कामधनुष समान मालूम होने लगे. वह उसकी काली भौएं, कमान जैसी दृष्टिगत होने लगीं, वह शिरके केश, काली नागन जैसे दिखाई देने लगे. और शीघ्रही उसके इस तरहके हाव, भाव तथा कटाक्षसे वह पुरुष घायल होकर बावलासा बन गया और नाना प्रकारके आनन्द मानने लगा.

पति—क्या करूं ठण्डक मालूम होती है तब लकड़ियों जलानी पड़ती हैं. रोज़गारके लिये क्या कहती हो ? मैंतो बहुतेरा चाहता हूं कि, कोई रोज़गार हाथ लगे पर भाग्य ऐसे हैं कि, मिलता ही नहीं.

पत्नी—इस तरहसे तुमको ठण्ड कभी मालूम नहीं हुई न लकड़ियां जलवाईं. क्या घरमेंसे आदमी निकलनेकी शङ्कामें आज इस तरह ठण्डकका बहानाकर आग जलवाई है ?

पति—नहींतो पूछनेका कारण मात्र यही था कि, मैंने घरमेंसे जाते हुए किसीको देखा, जिसके लिये तुम ख़ुद कह रही होकि, कुत्ता निकला था.

पत्नी इस प्रश्नके उत्तरमें इतना कहकर "हां वह कुत्ता ही था" विचार मग्न हुई " इसको कोई शङ्का तो नहीं हुई पर फिरभी डर बताना उचित है कि, कहीं यदि जानताभी होतो बोलने नहीं पावे. तथा उस चांडाली सरस्वतीको जिससे मेरे प्रिय मित्रको मिलनेमें विघ्न पड़ता है, काला मुंह करके शीघ्रही यहांसे निकालनेका यत्न करना चाहिये. नहींतो कभी न कभी बात फूट जायेगी. यदि वह आज यहां होतीतो बात फुट जाती " और उसी रोज़गारके विषयको लेकर कहने लगी कि, तुमकोतो कभीभी रोज़गार नहीं मिलेगा. कहांतक भीख मांग कर लालाको खिलाने लगी ? आजभी बड़ी मुशकिलसे पड़ोसन गुलाबसे थोड़ेसे चावल दाल मांगकर लाईथी जो पकाकर खिलादिये. बताओ अब कल क्या खिलाऊंगी ? क्या तुम्हारी माका सिर खिलाऊंगी ? जबसे मैं इस घरमें आई हूं दुःख ही दुःख देख रही हूं, कमानेकी हिम्मत नहीथी तो मुझे विवाहकर क्यों लाते थे ? कौनसे कुंआरे रह जाते थे ? तुम्हारा ज़ेवर घड़ाकर देनातो दूर रहा, खानेतकको नहीं मिलता ?

और कौन निकलता ! दरवाज़ेके पीछे कुत्ता बैठा था जो निकलाहै. लकड़ियां कहांतक जलने लगी ? तुम तो आधी रातको आओगे. निद्रासे जाग्रत हुई और देखा कि, आग अभीतक जल रही है, ऊपर पानी रेड़दिया "

पति—यदि ऐसा था तो ज़रासी देरमें कौनसी लकड़ियें जल जाती थी ! मेरे आनेके बादही पानी रेड़ती प्रथम क्यों रेड़ा ?

स्त्री—केवल इसी लिये रेड़ा है कि, कहीं तुम बहुत देर तक बैठे २ लकड़ियां न जलाओ.

पति—अच्छा ठीक है इतना कहकर अपनी स्त्रीका कहना यथार्थ मानकर चारपाईपर लेट गया पर वृद्धावस्थाके कारण तथा शरदऋतु होनेसे उसको अति ठण्ड मालूम होने लगी और शीघ्रही अपनी प्रियासे आग करनेको कहा किन्तु वह शीघ्रही आग क्यों करने लगी ? यदि करेतो वह नये वस्त्र तथा वह नया कञ्चन गज़रा दीख जाए और यह उत्तर देकर अन्दरको चली गई. "ऐसी जल्दी क्या है अभी आकर कर देती हूं पर यह खर्च सब कैसे पार पड़ेगा ? और वस्त्र आदि उतार कर वही मैले वस्त्र पहिनकर आई तदनन्तर आग जलाई फिर दोनों पति पत्नी बैठकर तापने लगे. उस स्त्रीके मनमें यह आया कि, आज बात क्या है जो इस तरहसे प्रश्न पूंछकर काम बता रहा है ? अवश्य इसको कुछ शङ्का होगई है किसी न किसी तरह इसकी शङ्काको मिटाना चाहिये. और अपना भाषण आरम्भ किया.

पत्नी—लकड़ियोंतो इस तरह जलवाते हो और धंधा कुछ नहीं करते. घरका कारोबार कैसे चलेगा ?

नहीं वनेगी. तुम बुड्ढे हो गए हो तुम्हारे नहीं चाहिये मैं बुड्ढी थोड़ेही हुई हूं ?

पति—यह तू जो कहती है यथार्थ है पर ज़ेवर घड़ाऊं कहांसे तू कह रही है. खानेको तो हैही नहीं.

पत्नी—क्या कहते हो, जेवर घड़ाऊं कहांसे ? तुम्हारी वह चांडाली सरस्वती जो वैठी है उसको वेचकर घड़ा नहीं दोगे ?

पति—अरे क्या मैं उस भोली भाली तथा पढ़ी लिखी चतुर पुत्रीको वेचूं ? क्या मेरे कुलको कलङ्क नहीं लगेगा ?

पत्नी—कलङ्क लगना क्या वाकी है, तुम जो मेरे लिये रुपये दे चुके. यदि अपने आपको कुलीन समझते थे तो फिर रुपये क्यों दिये (मुंह फिरा कर) खानेको तो है नहीं और कुलीन बनने जाते हैं.

पति—वास्तवमें देखा जाय तो हुआ ऐसाही है. पर इसमें तो कोई संदेह नहीं कि, यह घर मेरा कुलीन है. केवल समयके फेर फारसे इसकी ऐसी दशा हो रही है.

पत्नी—जव कि हमारी अनाथ स्थिति होगई तो फिर रुपये लेनेमें कोई हर्ज़ नहीं है. मेरा वापका घरभी कुलीन था पर अनाथ स्थितिको प्राप्त होनेके कारण मुझे देकर दस हज़ार रुपये तुमसे लिये हैं.

पति—सत्य है. पर यदि मैं युवा पुरुषको मेरी लड़की देने जाऊंगा तो वह तो रुपये देगा नहीं. वृद्धावस्था वालेको दूंगा तब ही रुपये मिल सकते हैं. किन्तु उसमें वेचारी सरस्वतीको कितना दुःख होगा ?

पति—(शर्मिन्दा होकर) तुम जो कहती हो सब ठीक है. वास्तवमें यदि मैं इस वृद्धावस्थामें तुमको विवाहकर नहीं लातातो चल सकता था. नाहक़को मैं दसहज़ार रुपये व्ययकर तुमको लाया और मैं अनाथ स्थितिको प्राप्त हुआ. यदि मैं दसहज़ार रुपये देकर तुमको न लाताता कदापि मेरी यह दशा नहीं होती. पहिलेवालीने मरते समय मुझे दूसरा विवाह करनेसे इन्कार किया था. किन्तु उसके कहनेको न मानकर केवल इस लालचसे कि, तुम सरस्वतीको सम्हाललोगी पुत्रभी होजाएगा, तुमको लाया. पर न मालूम क्या बात हुई कि, न तो कोई पुत्र हुआ न सरस्वतीको तुमने सम्हाला. उसका दुःखतो अभीतक मेरे ही शिर है.

पत्नी—(क्रोधित होकर) तुम्हें कौन कहने आया था कि, मेरे माता पिताको दश हज़ार रुपये देकर लाते. यदि ऐसा था और कमानेकी श्रद्धा नहीं थी तो नहीं लाना था. बार २ दस हज़ार क्या सुनाते हो ? मुझे लेकर दस हज़ार रुपये दिये हैं मुफ्त के थोड़ेही दिये हैं.

पति—मैं कब कहता हूं कि, मुफ्तके दिये हैं. तुम जैसे रत्न को लेकर दिये हैं. पर कहनेका तात्पर्य यह है कि, यदि मैं रुपये न देता तो मेरी यह दशा न आती जो आज घरकी स्त्रीभी ताने मारती है. क्या करूं बल, धन, आदि सबसे रहित हूं इस कारण कह नहीं सकता वरना बताता.

पत्नी—जभी तो मैंभी कहती हूं. यदि तुम बलवान्, धनवान् होते तो कहनेकी क्या ज़रूरत थी. अब मैं कदापि इस अवस्थामें नहीं रहूंगी. बहुत दिनोंतक लोगोंके ताने सहन किये, उनके सामने शर्मिन्दा बनी, अबतो मेरे ज़ेवर घड़वा दो नहीं तो तुम्हारे हमारे

पत्नी—इसका उपाय शीघ्रही करना चाहिये. देखिये ! अभी बारह वर्षकी नहीं हुई और कुचाल सीख गई.

पति—नहीं २ अब मैं कदापि अपने घरमें नहीं रक्खूंगा. शीघ्रही तेरे कहे अनुसार कर दूंगा.

वह स्त्री अपने पतिका यह उत्तर पाकर मनही मन प्रसन्न हो कहने लगी "बस अब क्या है. सरस्वती चली जायगी और मालदार बन जाऊंगी. नाना प्रकारके वस्त्र आभूषण पहिननेको मिलेंगे. फिरतो क्या थोड़े दिन अपने प्रियमित्रको घरमें लेकर आनन्द मनाऊंगी. सरस्वती ही एक विघ्न कर्ता है. पर इसको कहीं कम रुपयेमें न देदे." और अपने पतिसे कहने लगी कि, कमसे कम पंद्रह हजार तो सरस्वतीके बटें ही गें वह पढ़ी लिखी जो ठहरी ?

पति—इससे कममें क्यों देने लगा ?

तदनन्तर दोनों सो गए.

वाचकवृन्द ! अब आप ज़रा मालूमकर लीजिये कि, ये पति पत्नी कौन हैं ? यह दोनों जैनी हैं. पति मूर्ख दत्त है, पत्नी कुटिला उसकी स्त्री है. मूर्खदत्तके पहिलेकी स्त्री मर जानेसे तथा कोई पुत्र न होनेसे पचास वर्षकी अवस्थामें इस कुटिलाके मातापिताको दस हज़ार रुपये देकर पांच छ वर्षसे विवाहकर लाया है. किन्तु मूर्खदत्त वृद्ध होने तथा घरमें अन्न जलका साधन न होने आदि कारणों से कुटिला व्यभिचार करने लग गई है. वह पुरुष जिसको आप कुटिलाके साथ आनन्द मनाते हुए देख आए हैं, और जो मूर्खदत्तके आतेही घरमेंसे निकल पड़ा, इसी चम्पापुरीके नगरसेठका बेटा है. न मालूम किस पुण्याईसे बहुत साधन मिला है उसको वह इस तरहसे उड़ा रहा है. किन्तु आप कुटिलाको देखिये कि, यह किस

पत्नी--इसमें दुःख काहेका ? देखिये ! मैभी तो-तुम जैसे वृद्धसे विवाह कर अपना निर्वाह करती हूं

पति--ठीक है पर यह तेरा निर्वाह निर्वाहमें नहीं है. तूही जो अभी कह रही है "इस तरह अनाथा वस्थामें कबतक रहने लगी" तो भला उसको फिर कौनसा आनन्द मिलनेका है. मैं अनाथ अ-वस्थामें रहना सहन करलूंगा पर अपनी पुत्रीका वृद्ध पुरुषके साथ कदापि विवाह नहीं करूंगा. यहतो कह आज सरस्वती कहां गई? क्या सोगई ? यहां तो नहीं है.

पत्नी--वह यहां क्यों सोने लगी ? अपना मन चाहा करती है. इससे तो मैं हार गई. इसके तो अब पीले हाथ करके भेज दो तो ठीक है नहीं तो अपने कुलको कलङ्क लगाएगी ?

पति--क्यों क्या उसने कोई अनर्थ किया ?

पत्नी--अरे अनर्थ क्या ? मैं लिहाज़की मारी कुछ कह नहीं सकती. नाना प्रकारके अनिष्ट कर्म करती है. आजही देखो न मा-लूम कहां गई है.

पति अपनी पत्नीसे यह निराला हाल सुनकर चिन्ता रूपी सागरमें हिलोरे खाने लगा और मनही मन कहने लगा " क्या मेरी पुत्री सरस्वती ऐसी ? क्या उसको मैंने ऐसी समझकर विद्या-दान दिया ? क्या उसके लिये मैं अच्छे वरकी खोज जो करता था सब वृथा है? जब कि वह ऐसी निकली तो फिर इसको कुलीन के घर देकर उसका कुल फिर क्यों लजवाऊं. किसी वृद्धको ही देकर रुपये न लूं जो मेरी यह अनाथ स्थितिभी मिटजाए?" और अपनी स्त्रीसे कहने लगा कि, ठीक है अबमें इसका किसी वृद्धके साथ सम्बन्ध करके रुपये लूंगा.

न्तसिंहकी सोहवत अच्छी नहीं. उसकी सोहवतसे मेरे प्रिय मित्रका साराका सारा काम उलट पुलट होजावेगा. जिन २ ने उससे मित्रताकी है, आख़िरमें जाकर पश्चातापही किया है. अतएव मुझे उचित है कि, इस समय जाकर कुछ उपदेश कर आउं." तदनन्तर जाना उचित समझ कर गया और एक उपदेशका भजन गुप्त रीति से सुनाया. पर लाहोरीमलको उसका उपदेश क्यों होने लगा उसने तो इसकी खवर तक नहीं निकलवाई कि, वह गाने वाला कौन है जिसको पाठकगण स्वयम् देख आए हैं.

जसवन्तसिंहको इससे बहुत बुरा मालूम हुआ और नाना प्रकारसे मनही मन कहने लगा कि "आज मैं लाहोरीमलकी नज़र में तुच्छभी नहीं ? क्या उसने मेरे रागको नहीं पहिचाना ? यदि पहिचाना होता तो शीघ्रही बुला लेता. ऐसा तो वह नहीं है कि, इस तरह मेरा आना जानकरभी नहीं बुलावे. वाहरे मन ! तू कैसा बावला हुआ है ? अपने रसीले छबीले गायन बंध कराके मेरा भजन सुना और फिर रागको नहीं पहिचाना हो ? कौनसा उसने मेरा गाना पहिले नहीं सुना है ? कई दफ़ा सुन चुका है. रागके पहिचाननेमें तो कोई संदेह नहीं. उसने जान बूझकरही मुझे नहीं बुलाया. पर अरे लाहोरीमल ! मैंने तेरा ऐसा कौनसा बिगाड किया था कि, ऐसे आनन्द युक्त समयमें मुझे भूल गया. क्या मैंने तेरे साथ योंही नेकी की थी ? क्या मुझे यह आशा थी कि, आख़िरको तू मुझे इस तरह भूल जायगा ? कदापि नहीं अच्छा समझकर नेकी की थी. उस नेकीका बदला ऐसा क्यों ? अरे इसमें लाहोरीमलका कोई दोष नहीं, ज़मानेकी ख़ूबी ही ऐसी हो रही है. वास्तवमें मनुष्य मात्र वढ़ जाने पर ऐसा ही करते हैं, किन्तु कोई नहीं, मैं तो अपना कार्य किसी तरह करता ही रहुंगा. इस

चतुराईसे अनिष्ट काम करती है और स्वार्थके लिये, जो वास्तवमें देखा जाएतो कुछभी नहीं है, सरस्वती जैसी पवित्र लड़कीको किस तरह कलङ्कित करके अपने पतिसे झूठी बातें कहकर वृद्धके साथ देनेका यत्नकर रही है और मूर्ख दत्तभी अपनी प्रियाका दास बनकर मानने पाया है. धिक्कार है ऐसे पुरुषोंको.

प्रकरण ४८.

नेकीका बदला बद.



वाचकवृन्द ! यह तो आपको भली प्रकार विदित होगा कि, जिस रोज लाहोरीमलने जागीर मिलनेकी ख़ुशालीमें अपने मित्रोंको दावत दी. जसवन्तसिंहको उसमें नहीं बुलाया. आप स्वयम् इस बातको जान सकते हैं कि, जसवन्तसिंह जैसे उत्तम मित्रको लाहोरीमलने नहीं बुलाया तो भला उस समय जसवन्तसिंहके शोकका क्या पार होगा: प्रथम तो उसने नाना प्रकारसे अपने मनको ऐसे ख़ुशहालीके जलसेमें न बुलानेका कारण जाननेको इधरसे उधर दौड़ाया और मनही मन कहने लगा " क्या लाहोरीमल भूल गया ! भूले जैसा तो नहीं, जान बूझकर ही नहीं बुलाया होगा. पर मैंने ऐसा क्या अपराध किया जो न बुलाता. अजब नहीं हनुवन्तसिंहके कारण मुझे न बुलाया हो. पर हनुवन्तसिंह तो आजका मित्र है. क्या उसके लिये मुझ पुराने मित्रको दूर रक्खा ? अरे ! लाहोरीमल तुझे यह तो उचित नहीं था. अब यदि मैं आपसे आजाऊं तो तेरी क्या शोभा रहेगी ! वाह मैं यों क्यों जाने लगा. पर हनुव-

शक नहीं कि, बेचारा क्रोडीमल हजारहा दर्जे ठीक था. जब कि मैं उस पत्रकी टोहमें लगा था जो उसके दुःखका मूल था, केवल उसने मेरी तनख्वाहमें पांच रुपये ही कम किये थे. यह दुष्ट तो अजब ही निकला कि, मेरी बदौलत मंत्री पद लेने पाया और बिलकुल मौक़ूफ़ ही कर दिया. पर अरे दुष्ट ! मैंने ऐसा कौनसा कुसूर किया कि, शीघ्रही मौक़ूफ कर दिया जरा हुक्मको अच्छी तरहसे देख तो लूं " यों विचार कर उस हुक्मको पढ़ने लगा.

बनाम जसवन्तसिंह इन्सपेक्टर खुफिया पुलिस.

मालूम हुआ है कि, तुमने धनेश्री की रिआयाको बहकाई थी, कि, जिससे राजको उसके तैह करनेमें बहुत कुछ मुशकिल उठानी पड़ी है. अतएव राजा साहबकी आज्ञानुसार तुम नमक हराम ठहराकर आजकी तारीख़से मौक़ूफ किये गये हो. उचित है कि, अपने हस्तेका चार्ज सुपरिण्टेण्डेण्टके लड़के बलवतसिंहको देदो.

राज महल — लाहोरीमल.
ता०२५-८-१८७५ — मंत्री विश्वेश्वर नगर.

पत्रको पढ़कर जसवन्तसिंह कहने लगा " अरे इसमें तो लिखा है कि, मैंने धनेश्रीकी प्रजाको बहकाया. और इस कारण राजा साहबकी आज्ञानुसार मुझे मौकूफ़ किया है. पर मैंने धनेश्रीकी प्रजाको कब बहकाया ! जब कि धनेश्रीका मामला हुआ मैं यहां थाही नहीं. न मालूम ऐसी झूठी शिकायत किसने की. पर अरे मित्र जरा तू इसकी तपास तो करता कि बात कहांतक सही है. बगैर तहकीक़ात किये यह दोष मेरे पर कैसे रख दिया ? जरा तू मेरी उस पुरानी मित्रता तथा ग़रीबीको याद लाकर राजा साहबको कहता तो सही. वाह मैं कैसा बावला हुआ हूं, वह मेरा

समय मजलिसमें जाना उचित नहीं " यह निश्चय कर अपने घर लौट आया और इसी चिन्तामें रहा कि, कोई न कोई समय ऐसा हाथ लगे कि, लाहोरीमलको उपदेश करने पाउं, और वह मेरे उपदेशको मान जाय. नहीं तो इसमें संदेह नहीं कि, आज कल हनुवन्तसिंहसे मित्रता करके जो जो कार्य आरंभ किये हैं और करता जाता है, नुकसान कारक होंगे. मुझे उचित नहीं कि, मैं अपने उस प्रिय मित्रको दुःखित अवस्थामें देखूं.

दोपहरका समय है. इस समय मनुष्य मात्र अपने २ कार्यमें लगे हुए है. किन्तु वह पुलिसके अमलदार जो रातको अपनी ड्यूटी पर रहते हैं, और जिनको रात्रिके समय निद्रा करनेका अवकाश नहीं मिलता है, इस समय अपने घरोंमें आराम कर रहे हैं. ऐसे समयमें जसवन्तसिंह अपने घर सोता हुआ है. इतनेंमें एक चपरासीने उसको आवाज़ देकर जगाया और एक लिफ़ाफ़ा हस्तगत किया, जिसे जसवन्तसिंहने खोलकर पढ़ा और पढ़नेके साथही आंखें लाल करके न कहने जैसी बात लाहोरीमलको सुनाने लगा. " अरे दुष्ट ! ऐसा अनिष्ट हुक्म लिखते समय मित्रका तनिकभी स्मरण नहीं हुआ कि, ऐसे पुरुषके लिये कि, जिसने मेरे लिये अपनी जान जोखममें डालकर वह कलङ्क दूर किया और जिसके कारण उस मंत्रीपदको लेने पाया हूं, अपने हाथसे मौक़ूफ़ीका हुक्म लिखूं. क्या वह दिन भूलगया कि, नौकरीके लिये घर २ मारा फिरता था, और मुझ जैसेको वार २ आकर दिक़ करता था ? क्या यह तुझे मालूम नहीं है कि, मेरे ही कारण तू इस मंत्री पदको प्राप्तकर सका है ? अरे उस दुष्टको ऐसे विचार क्यों आने लगे ? यदि आते तो फिर मौक़ूफ़ीका हुक्म क्यों भेजता ? इसमें तो कोई

मौत मरा. फिर मे नौकरीका फ़िक्र क्यों करने लगा. एक नौकरीके लिये अपनी प्रतिज्ञाका भङ्ग क्यों करने लगा ? खाने जीतना मेरे पास मोजूद है कभी कमभी हुआ तो भीख मांगूंगा पर अपनी ज़बानसे जाकर नौकरीके लिये न तो कहूंगा, न उन दुश्मनोंका बदला लेनेका यत्न करूंगा. अब तो इस देहके कल्याणके अर्थ यही उचित है कि, इस झगड़ेको छोडूं और अपना यह अमूल्य समय उपदेश आदि कार्योंमें लगाउं. पर क्या मुझे यह उचित है कि, लाहोरीमलको भी जाकर उपदेश करूं. वाह क्यों नहीं. उसकोतो उपदेश करना इस समय ज़रूरी हो रहा है. मानना न मानना उसकी मर्ज़ी पर है " और ईश्वर स्तुति करने लगा.

जब रात्रि आई और जसवन्तसिंहने देखा कि, अब लाहोरीमल एकान्तमें अपने घर बैठा होगा, यह समय उपदेशका उत्तम है, और हाथमें लकड़ीले उठ रवाना हुआ. जब वह लाहोरीमलके मकान पर पहुंचा, देखाव परसे मालूम हुआ कि, वह उपरको बैठा हुआ है. प्रथम तो उसने चाहा कि, ऊपरही चला जाऊं. पर विचार आने पर कि, वह ऐसा समझ न ले कि, नौकरीके लिये खुशामद करने आया है, नीचेही खड़ा रहना उत्तम समझा और सङ्गीत द्वारा मधुर रागमें इस तरह मस्त होकर उपदेश करने लगाः—

(गज़ल)

अधर्म ज़ुल्मत अपने दिलमें छोड़दे,
नाहक ग़रिबोंको सताना छोड़दे. } ३ टेर.

तेरीसी आतम वेभी रखते सुन भला,
एसोंका निश्वास लेना छोड़दे ॥ १ ॥

पक्ष क्यों लेने लगा ? आज कलमें वह हनुवन्तसिंहका जो हो रहा है. मेरा चार्ज उसीके बेटेको देनेका हुक्म किया है इसे देखते मालूम होता है कि, इन्हीं लोगोंकी खटपट है. उचित है कि, कल राजा साहबको जाकर यह सारा हाल ज़ाहिर करूं. पर इस तरह करनेमें फिर इनके पैर टिके नहीं रहेंगे, मैं जसवन्तसिंह जो ठहरा. कोई काम हाथमें लेता नहीं हूं और जब लेता हूं तो फिर सामने वालेकी धूल उड़ाए विना कदापि नहीं रहता. हनुवन्तसिंहका सामना करनेमें तो मुझे कोई हर्ज़ नहीं है पर साथमें मेरा मित्र लाहोरीमल जो ठहरा. अरे लाहोरीमल हुआ तो क्या हुआ उसने मेरे साथ बदी करनेमें कौनसी कमी रक्खी है ? अब मैं उसको अपना मित्र क्यों समझ रहा हूं ? उचित है कि, दोनोंका पीछा करूं. पर नहीं मैं अपने मित्र मंडलमें कह चुका कि, उस शख्सको जिसको कि मैं एक दफ़ा अपना मित्र कह चुका हूं, कदापि शत्रु कहकर नहीं पुकारूंगा. यह तो नामा मौक़ूफ़ किया है, कल वह जानसे मार दे तो क्या, ? कदापि बदला लेनेकी कोशिश नहीं करूंगा.

इतना कहकर जसवन्तसिंह फिर विचार मग्न हुआ और मनही मन कहने लगा " ठीक है मैं इसका बदला लाहोरीमलसे नहीं लूंगा पर अब मेरे गुज़ारेका क्या साधन रहेगा ! पर वाह इसका मैं क्यों फ़िक्र करने लगा. मैं अपने पेटके ख़ातिर नीचसे नीच काम करलूंगा पर मित्रको शत्रु समझकर कदापि बदला नहीं लूंगा. किन्तु आज मैं इस बातको समझने पाया कि, सारा जगत गर्ज़का यार है. मनुष्य मात्र जो मायाकी जालमें फंसकर सब अपना २ कर रहे हैं. वृथा है. आह देखो ! उस कोडीमलको उस बेचारेने सारी उम्र राज्य कारोबार चलाया अन्तमें जाते मंत्री पदसे गया. और बुरी

नहीं रहेगा तेरा जोबन, बुरी-दानतसे खोता है, ॥ ३ ॥
बुरे ख्यालोंसे रे नादान, ख़ुशीका रङ्ग लाता है;
नहिं अंधेर दुनियामें, गुन्हेगारोंही रोता है ॥ ४ ॥
वृथा तकलीफ उठाता है, इलम झूठा चलाता है;
शिव सुखके लिये मूरख, दिलको क्यों न धोता है ॥ ५ ॥

यह दूसरा गायन सुनकर लाहोरीमलका मन उस तरफ लगा. किन्तु यह ख़याल कर कि, कोई फकीर रास्तेमें चलता हुआ गा रहा है. जसवन्तसिंहकी ख़बर नही ली और अपने कार्यमें लीन रहा.

जसवन्तसिंह आज क्यों ख़ामोश होने लगा, शीघ्रही उसने और गाना आरम्भ किया:—

(कव्वाली)

बने मशगूल दुनियामे, प्रभु दिलमें न लाते हो;
सुंदर नर देह पाकर तुम, वृथा बोझ उठाते हो ॥ १ ॥
हरगीज़ यह समय तुमको, फीर फीरके ना मीलीयेगा;
करके तुम मजे़दारी, मीटीमें क्युं मिलाते रहो ॥ २ ॥
ज़ीग़रसे नेकीको तजके, बने गुलतान बदीमें तुम;
न लाते याद मालीकको, काला मुंह बताते हो ॥ ३ ॥
ख़ंजरकी धार जैसा है, अगम रास्ता यह संतोंका;
दिलसे छोड़ इतबारी, शिव सुखको गुमाते हो ॥ ४ ॥

इस गायनको सुनते ही लाहोरीमलको भ्रम हुआ कि, कोई न कोई मेरे मकानके नीचे ही गा रहा है. और एक सेवकको बुलाकर उसकी ख़बर निकाल ले आनेको कहा. आज्ञानुसार सेवक

गर हो भलाई तुझसे, करले वीर नर,
गर नहीं तो ज़ुल्म करना छोड़दे ॥ २ ॥
रोते हुवे मिसकिन पर तु महर कर,
रोते हुवेको फिर रूलाना छोड़दे ॥ ३ ॥
भूखे पियासोंकी मिटादे तू क्षुधा,
मरते हुवे को मारना तू छोड़दे ॥ ४ ॥
तेरेसे वन्दे हैं प्रभुके सब कोई,
निज जातको दुःखाना प्यारे छोड़दे ॥ ५ ॥
अबभी न माने तो ख़ता खावेगा तूं,
सुख की आशा सर्वदा तू छोड़दे ॥ ६ ॥
कर दया मिसकिन पर तू अे अचल,
प्रभु भरोसे आपको नित छोड़दे ॥ ७ ॥

इस ग़ज़लके समाप्त होने पर जब जसवन्तसिंहने देखा कि, किसीने ध्यान दिया हो मालूम नहीं होता, प्रथम तो भाषामें ही यों कहने लगा कि, यह ज़िन्दगी चार रोज़ा है अे ग़ाफिल ! तू बेखबर क्यों सोता है? निज आत्माको पहिचान और ग़रिबोंको सताना छोड़दे. नहीं तो तेरा कदापि भला नहीं होगा. फिर इस तरह गाने लगाः—

(कव्वाली)

अरे धोके की बाज़ी है, मगन दिलमें क्या होता है;
ज़ीगरमें है बुरी आदत, सफ़ाई से क्या होता है ॥ १ ॥
इरादा झूठ है तेरा, दग़ाबाज़ी तू करता है;
बुरी हालत तेरी होगी, फिक्र तजके क्या सोता है ॥ २ ॥
वफ़ादारी न रखता है, मतलबसे तु लड़ता है,

क्रोधित देख " जो आज्ञा " कहकर चला गया, उसका जाना था कि, तेजमल बोलउठा जो पास बैठा हुआ था, " देखा न साहब ख़ुशामद और करनी और फिर लताड़ोंमें, "

लाहोरीमल अरे मैं जानता हूं वह बड़ा हरामज़ादा है, यह मन चाहे उतना बका करे मैं कदापि पिघलनेका नहीं.

तेजमल--वाह आप एक छोटे आदमीके कहनेसे क्यों पिघलने लगे. नहीं आज आपने किया तो ठीक है, कभी घमंड करता रह जायगा.

लाहोरीमल--यह तो क्या हुआ है. थोड़े दिनोंके बाद देखना इसकी क्या गति होतो है. बिलकुल अभिमानमें ही फुला फिरता है और अपने अफ़सरको गिनता तक नहीं.

तेजमल--हां साहब जैसेको तैसा होनाभी चाहिये.

वाचकवृन्द ! देखिये कहां तो लाहोरीमलने जसवन्तसिंहको बिना क़ुसूर उसकी नेकीका तनिकभी ख़याल न कर मौक़ूफ़ किया और कहां जसवन्तसिंह उसका तनिकभी विचार न कर, लाहोरी-मलको अपना मित्र समझ कर उपदेश करने गया. फिरभी लाहोरी-मल आदिके ऐसे अनिष्ट विचार. सच है नेकीका बदला बदही मिलता है.

नीचे आया और जसवन्तसिंहको खड़ा देखकर उससे उपर मंत्रीजीके पास चलनेको कहा. किन्तु वह क्यों जाने लगा. वहीं खड़ा हुआ ज़ोर २ से कहने लगा "अब तुम्हारे मंत्रीजीकी हमें कोई परवाह नहीं है, जाकर कह दे कि, यदि तुम अपना भला चाहते हो तो मेरे इन कहे हुए उपदेशोंका पालन करो. नहीं तो याद रखना तुम्हारी बुरी गति होगी." और इतना कहकर फिर गाने लगाः—

(कव्वाली)

बने मस्तान अब हमतो, प्रभुके पास जायेंगे;
बदीका रास्ता तजके, नेकीको दिलमें लायेंगे ॥ १ ॥
किस्मतकी मुसीबतको, आनन्दसे उठायेंगे;
झूठा यह मोह दुनियाका, जिगरमें हम न चाहेंगे ॥ २ ॥
दग़ाबाज़ी तजेंगे हम, बदमाशी बीसारेंगे;
दीवाना बनके भक्तिमें, अनुभव रंग उठायेंगे ॥ ३ ॥
धोकेकी यह जग जंजाल, घड़ी भर चेन नाहिं है;
बने प्रभु नाममें आशक, हमेशा गुनको गायेंगे ॥ ४ ॥
उमीदो झूठी दुनियांकी, रखेंग नहीं जिगरमें हम;
बने मस्तान भक्तिसें, सन्मारग बतायेंगे ॥ ५ ॥
सिद्धारथ नंदके फरमान, उठाके प्रेमसे शिरपर;
संतोकी मददसें हम, शिव पदको मिलायेंगे ॥ ६ ॥

इतना गाकर जसवन्तसिंह वहांसे चल दिया.

सेवकने जाकर गाने वाला जसवन्तसिंह होना ज़ाहिर किया. उसका नाम सुनतेही लाहोरीमल जलकर ख़ाक होगया और सेवकको कहने लगा कि, आइन्दा वह कभी यहां आकर इस तरह गाने नहीं पावे, नहीं तो तुम्हारी बुरी गति होगी. सेवक लाहोरीमलको

सारको त्याग कर हम दुःखियोंको दुःखित अवस्थामें छोड़कर चला गया. अब हम दुःखियोंके साथ ऐसा वर्ताव क्यों? क्या मेरे पिताने किसीका भला नहीं किया था? क्या सबको उसने दुःख ही दुःख दिया था? कदापि नहीं कई पुरुष ऐसेभी होंगे जिनका भला किया होगा. पर आज वेभी शत्रु बन रहे हैं सच है संसार स्वार्थका है. जबकि घरमें बहुत धन था, तमाम दुनिया वाह २ करके इस लालसामें रहती थी कि कोई काम बतावे. ज्यों ही धनका नाश हुआ सबके सब शत्रु समान बन गए. कहने वालेने ठीक कहा है:—

सब मतलबके यार, जगतमें सब मतलबके यार
मात पिता भ्राता भगिनी, सुता और निज नार । जगतमें ।
स्वजन कुटुम्बी मित्र प्राण प्रीय, दास दासी परिवार,
राजा प्रजा गरिब तवंगर, पंडित और गमार । जगतमें ।
जोगी भोगी अरू वैरागी, चोर अरू साहुकार;
पतिव्रता अरु कुलटा नारी, वर्णाश्रम शुभ आचार ।जगतमें।
पशुपंखी जलजंतु कीट मृग, जीवा योनी अपार;
स्वारथ विन को पास न आवे, करे न कछु उपकार ।जगतमें।
निःस्वार्थ कोई हरिके प्यारे, जिनको हृदय उदार;
जिनको पर उपकार सदा प्रिय, तिन पर मैं बलिहार ।जगतमें।

पर बन्धुओ! यह धनका अभिमान तुम्हारा वृथा है. यह किसीका होके नहीं रहा है. आज तुम्हारा है तो कल मेरा हो जायगा इसकातो सदुपयोग करना ही उत्तम है. कृपाकर मेरी इस करूणा जनक स्थिति पर दया करो. पर अरे मन! वह ऐसा क्यों करने लगे, जबकि मेरे भाग्यमें दुःख बदा है और उन्होंने मेरे पिताके कृत्योंका सब बदला मेरेको देना विचार रक्खा है. यदि ऐसा

प्रकरण ४९.

सौभाग्यवतीका मृत्यु.



वसे क्रोडीमलका मृत्यु हुआ है घरका तमाम बोझा बुद्धिधन पर आगिरा है और नाना प्रकारके दुःख भोग रहा है, घरमें गुज़ारेका कोई साधन नहीं होने तथा घरके सङ्कटके कारण उसने अपनी पढ़ाई तो कभीकी छोड़ रक्खी है अवतो वह केवल इस चिन्तामें है " घरका कारोबार किस तरहसे चलेगा " बुद्धिधनने क्रोडीमलके मरने बाद बहुतेरा चाहा कि कोई छोटीसी नौकरी मिले और गुज़ारेका साधन हो, बल्कि कई दफा लाहोरीमलके पासभी गया किन्तु उसको दया कहां जब कभी बुद्धिधन उसके वहां गया है दया लानेके स्थानपर उलटा क्रोधित हुआ, लाहोरीमल जैसा कट्टर शत्रु क्यों दया लाने लगा जबकि बुद्धिधनके रिश्तेदार स्वयम् उसकी सुध नहीं लेते हैं.बेचारा बुद्धिधन रातदिन इस फ़िक्रमें लगा हुआ है और नाना प्रकारके तर्क वितर्क कर रहा है कभी कहता है "अहा ! कहां तो मेरे लिये एक वह दिन था कि एक रुपया मांगता था तो उसके स्थान पर हज़ार देनेको तैयार थे. कहां आज वह दिन है कि रुपयेके स्थानपर एक पैसाभी देने वाला नहीं है और सब मुंह छिपाते फिरते हैं. पर वास्तवमें देखा जाय तो इसमें उनका कोई दोष नहीं है सर्व यह मेरे पिताकी शत्रुताका कारण है. पर बन्धुओ ! ज़रा तो तुम अपने मनमें विचार करो. मैंने तो कोई शत्रुता तुम्हारे साथ की नहीं है जो शत्रुताका करनेवाला था. वह इस सं-

है इसका तनिकभी विचार नहीं करना चाहिये. यदि तुम इस दुःखका किंचित विचार न कर धैर्यसे अपना समय व्यतीत किये जाओगे तो शीघ्रही तुमको वह सुखका समयभी नसीब होगा. मैं जानती हूं कि तुम्हारे लिये वही सुखका दिन आनेवाला है पर बेटा उसके लिये मेरे इस अन्त समयका उपदेश है कि, तू उस सुखको प्राप्तकर फूलमत जाना, अपने धैर्यको मत छोड़ना, ग़रिबोंकी आह कोन लेकर उनको यथा साध्य सहायता देना, बल्कि नाना प्रकारके उत्तमोत्तम कार्य करना कि जिससे तेरी इस देहका कल्याण हो. बेटा! तू क्रोडीमल जैसा मत होना. मैं जानती हूं कि आजकलके मनुष्य ज़रासा सुख मिलने पर फूल जाते हैं और नाना प्रकारके अनिष्ट कर्म करते हैं पर यदि तू अपनी आत्माका कल्याण चाहता है तो मेरे समीप प्रतिज्ञाकर कहकि "मैं कदापि अनिष्ट कर्म नहीं करूंगा!"

बुद्धिधन—माजी! यह आप क्या कहरही हो एक दफ़ा क्या सौ दफा आपके समीप प्रतिज्ञा कर कहता हूं कि "मैं कदापि अनिष्ट कर्म नहीं करूंगा" और यह मेरा अमूल्य समय सदैव औपदेशिक कार्यमें व्यतीत करूंगा पर माजी! क्या आप हम दुःखियोंको छोड़कर चली जाओगी?

सौभाग्यवती—आयु व्यतीत होजानेके बाद किसकी मजाल है जो ठहराने पाए. बस मेरा आयु समाप्त होचुका घण्टे दो घण्टेकी महमान हूं. वास्तवमें तुमको दुःखित अवस्थामें छोड़कर जाती हूं पर यह पश्चाताप मेरे तथा तुम्हारे लिये वृथा है. कर्मानुसार जो होना है होता रहेगा इसका किंचित् फ़िक्र मत् करो और मेरे उपदेशका पालन करो इसीमें तुम्हारा कल्याण है. साथमें मैं तुमको यहभी कह जाती हूं कि तुमकोभी एक रोज़ जानेका है उसका स-

नहीं होता तो मैं इस अवस्थाको न पाता. कोई ने कोई ज़रूर सहायता करता पर इसमें तो कोइ शक नहीं कि धीरज बलवान् है और अपने मनमें धैर्य धरकर तथा अपने भाग्य पर आधार रखकर यह दुःखका समय व्यतीत कर रहा है. किन्तु न मालूम क्या बात है कि बेचारे बालकको दुःख पर दुःख पड़रहा है. एक सप्ताहसे उसकी दादी सौभाग्यवती ज्वर रोगसे पीड़ित हो रही है बुद्धिधनने नाना प्रकारसे जेवर आदि बेचकर दवा कराई किन्तु कोई आराम नहीं हुआ और दिन बदिन उसकी बीमारी बढ़ती गई.

सन्ध्याका समय है. यह समय संध्या आदिके लिये बहुत ही उत्तमोत्तम है बुद्धिधन इस समय अपने नित्य कार्यके लिये एकान्त में जारहा था कि उसकी मातुश्रीने आवाज़ देकर बुलाया जिसे विपरीत जानकर बुद्धिधन शीघ्रही नीचे आया आकर देखता क्या है कि सौभाग्यवती मरण पथारी पर सोती हुई है, और संसारको सदैवके लिये छोड़नेको तत्पर होरही है. उसकी आंखें बिलकुल फिरी हुई मालूम होरही हैं और सांस पर सांस ले रही है. वह चाहती है कि कोई बात अपने बेटेको कहूं पर सांसके कारण ठीक तौर परकहने नहीं पाती. जब उसने बुद्धिधनको अपने सामने पाया धीरे २ कहने लगी "इस समय बेटा तुझे बहुत दुःख है तुही है जो इसका तनिक विचार नहीं करता. आज मैं तुझको और कष्ट देनेको तैयार हुई हूं पर मुझे आशा है कि तू अपनी विद्वत्ताको काममें लाकर इसकी तनिकभी चिन्ता नहीं करेगा और सदैव धैर्यको अपना मित्र समझकर यह दुःखका समय व्यतीत करेगा. आजकलके समयमें मनुष्यमात्र जो ऐसे दुःखोंका पश्चात्ताप करके कायर हो जाते हैं, और अपने यत्नको छोड़ देते हैं, यह उनकी मूर्खता है. दुःखतो सर्व पर आताही रहता

उस सुखके समय बुद्धिधन अपनी मति क्रोडीमलकी तरह फिरा न ले.

सुन्दरी—जो आज्ञा. पर क्या मैं तवतक जीवित रहूंगी ?

सौभाग्यवती—क्यों नहीं तेरे भाग्यमें वह सुख देखना जो वदा है.

सुन्दरी—(हाथ जोड़कर) जो आज्ञा.

सौभाग्यवतीकी यह वातें बुद्धिधन तथा सुन्दरीको अजीव सी मालूम होने लगीं. किन्तु उसके धर्म्म कर्मका स्मरण होते ही उनको सत्य मालूम होने लगीं और दोनो हाथ जोड़कर इस आशा में खड़े हैं रहे कि सौभाग्यवती और कुछ कहे पर उसने कुछ नहीं कहा केवल इतना कह कर " शान्ति ! शान्ति ! ! शान्ति ! ! !" देहको छोड़ दी.

उधर सौभाग्यवतीका देह छोड़ना था कि रीतिके अनुसार सुन्दरीने रोना शुरू किया तथा बुद्धिधनभी शोक मनाने लगा. सौभाग्वतीके मृत्युकी खबर होते २ सारे शहरमें फैलगई और रिश्तेदार सगे सम्वंधी आ आकर जमा होने लगे तथा रोना पीटना औरभी विशेप शुरू हुआ. यह वात बुद्धिधनको क्यों भाने लगी मनही मन कहने लगा " यह सब हा हा कर रोते क्यों हैं ? देखनेको तो आंखसे एक आंसूभी नहीं आता है." पर अपनी दुःखित अवस्था तथा स्त्रीको देखकर कुछ न कहते खामोश वैठा रहा. सारी रात सब लोग सौभाग्यवतीकी लाशको लेकर वैठे रहे. प्रभात होते ही शान्तिभुवनमें लेजाकर अग्नि संस्कार कर आए और फिर अपने २ घरका रास्ता लिया. इसका दुःख वेचारे बुद्धिधन तथा सुन्दरीको है जो अकेले घरमें वैठे २ दुःख मना रहे हैं. सबने आकर हा हा कर रोना शुरू किया पर बुद्धिधनको पैसेकी कितनी

दैव स्मरण रखना और जहाँ तक होसके शीघ्रही इस आत्माके कल्याणके अर्थ अपना कार्य किये जाना. इस विचारमें कदापि मत रहना कि युवा अवस्था मौज शौकके लिये है, वृद्धावस्थामें यत्न करूंगा. यदि ऐसा किया तो फिर वृद्धावस्थामें तुम कुछ करने नही पाओगे.

बुद्धिधन—आपका उपदेश सिर चढ़ाता हूं. मैं कदापि आजका कामं कलपर नहीं छोडूंगा. हमेशाह कुछ न कुछ करता ही रहुंगा. यह तो मैंभी जानता हूं कि वृद्धावस्थामें तमाम इन्द्रियें शिथिल होजानेसे मैं कुछभी नहीं कर सकूंगा. साथमें यहभी है कि न मालूम काल कब आ घेरे. माजी ? यह तो कहो आप कुछ खाओगी.

सौभाग्यवती—नहीं बेटा ! मैंने तीन रोज़से कालका आना जानकर अन्न जल त्याग कर रक्खा है और केवल वीतराग प्रभुके रटनमें लीन हूं.

बुद्धिधन—धन्य है आपकी आत्माको.

सौभाग्यवतीने देखा कि पौत्रके साथका भाषण समाप्त होचुका. उसे विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं, उसको छोड़कर सुन्दरीसे कहने लगी " बहू यह खाली घर तुझे सोंप जाती हूं. आशा है कि तु इसके अनुसार घरका कारोबार चलाएगी और बुद्धिधन कभी कुरास्ते न चले जिसका उपदेश करती रहेगी. परमात्माने वह सुखका दिन मुझे नहीं बताया वह तुम्हारे भाग्यमें देखना बदा है सहर्ष देखना.

सुन्दरी—माजी ! क्या कहती हो, हमारे लिये सुखका दिन ?

सौभाग्यवती—वाह क्यों नहीं जब कि तुम अभी दुःख देख रही हो तो सुखभी मिलेगा. पर इसका सदैव विचार रखना-कि

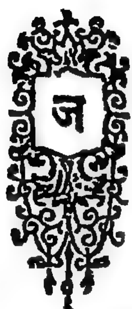
हज़ार रुपये लेकर सरस्वतीका सम्बन्ध नक्की करादिया, केवल उसकी रीत भांत होनी बाकी है.

प्रभातका समय है अभी आठ नहीं बजे हैं ऐसे समयमें वसन्तगढ़से उसी वृद्ध पुरुष जीर्णसेठकी तरफ़से दो युवा पुरुष रीत भांत लेकर चम्पापुरीमें आ पहुंचे हैं और मूर्खदत्तका घर पूछ रहे हैं नगरके लोग उन नये मनुष्योंको देखकर प्रश्न कर रहे हैं. कोई कहता है क्यों साहब आज यहां कैसे आना हुआ ? जबकि दूसरा उन्हींकी तरफ़से उत्तर दे रहा है कि अरे यह तो जीर्णसेठका सम्बन्ध करने आए हैं. इस परसे तीसरा प्रश्न उठाता है कि, किसके यहां आए हैं ? तो मूर्खदत्तके यहां आनेका उत्तर मिलता है. यह हाल देखकर सारा नगर कह रहा है कि, यह कैसा जीर्णसेठ और कैसा मूर्खदत्त कि जो सरस्वती जैसी नव यौवन बालाकी हत्या करनेको तैयार हुए हैं. इस तरह उत्तर देते हुए, लताड़ें सुनते हुए, मूर्खदत्तके घरको पूछते हुए वे दोनों युवा मूर्खदत्तके घर पर पहुंचे. उन्हें देखते ही मूर्खदत्त तथा उसकी स्त्री कुटिला आनन्द मनाने लगे और कुटिला तो ऐसी फ़ुरतीसे काम काजमें लगी कि, कितना जल्दी इन्हें भोजन कराऊं. मूर्खदत्त उनकी आगत स्वागतमें लगा. किन्तु बेचारी सरस्वती इस बातको अभीतक जानने नहीं पाई है, और यह ख़याल कर कि कोई महमान आए हुए हैं, ख़ामोश बैठी हुई है. और अपनी माताको भोजन आदि काममें सहायता कररही है. जब दोनों युवाओंको भोजन करादिया गया, और मूर्खदत्त आदि अपने कार्यसे निवृत्त हुए, दोनों युवाओंकी तरफ़से रीत भांत करनेकी ताक़ीद होनेलगी. प्रथमतो मूर्खदत्तने यह कहा "अरे साहब ऐसी जल्दी क्या है

तकलीफ़ है उसका ज़िक्र किसीने नहीं किया फिरभी ठीक हुआ जो ऐसे समय आगये, नहींतो बेचारे बुद्धिधनको तो यहभी चिन्ता होरही थी कि कोई नहीं आया तो सौभाग्यवतीकी लाशको अग्नि संस्कार अकेले कैसे दिया जायगा.

प्रकरण ५०.

सरस्वतीका विक्रय.



वसे कुटिलाने मूर्खदत्तको सरस्वतीके अपवित्र होने की सुझा रक्खी है तभीसे मूर्खदत्त इसी तलाशमें था कि, कोई ऐसा वृद्ध वर हाथ लगे जिसको देकर रुपये लूं और शीघ्रही मालदार बनूं. दुनियामें किसी बातकी नास्ति नहीं है कि मूर्खदत्तको सरस्वतीका सम्बन्ध करनेको वृद्धवर नहीं मिले और जो सम्बन्ध करके मन चाहे रुपये न दे. केवल देखने और जाननेकी खामी है. यदि अच्छी तरहसे देखा जाय तो कई ऐसे वृद्ध पुरुष होंगे कि जिसका वह शरीर पिञ्जर होकर चले जानेकी तैयारी कर रहा है, जिनके मुहमें दांत बिलकुल नहीं हैं, मुंह बिलकुल बैठा हुआ है और लकड़ीके साहरे चलते हैं, एक नव यौवन बालाको वरनेकी लालसा कर रहे हैं. केवल उनकी लालसाका नाश जबही होता है, कि उनको कन्या नहीं मिलती है और मर जाते हैं. इसी प्रकार खोजते २ एक ऐसाही वृद्ध पुरुष, जिसकी उम्र लगभग साठ वर्षके होगी,. मूर्खदत्तको सरस्वतीके लिये पासके गांव बसन्तगढ़में मिल गया. उसके साथ मूर्खदत्तने बीस-

पुत्री—मातुश्री क्या वही जीर्णसेठकि, जिसकी उम्र साठ वर्षकी है ? और पैरोंमें चलनेका बलतक नहीं है ?

माता—हां पुत्री वही पर वह इतनातो वृद्ध नहीं है, केवल उसके शिर तथा डाढ़ीके वाल सफ़ेद हो जानेसे वृद्ध दीखता है वरना एक हट्टा कट्टा मनुष्य है.

पुत्री—रहने दे तेरे इन वस्त्र आभूषणोंको तथा तेरे उस हट्टे कट्टे पुरुषको, मुझे नहीं चाहियें.

माता—पुत्री क्या कह रही है ? वह हट्टा कट्टा पुरुष अब तेरा हुआ मेरा क्यों होने लगा ?

पुत्री—वह मेरा क्यों होने लगा ऐसे वृद्ध पतिसे तो विना पति रहना उत्तम है.

माता—(फिटकारें वताती हुई) क्यों क्या ऐसा कहते ज़राभी शरम मालूम नहीं होती अवतो वह तेरा पति हो चुका इन वस्त्र आभूषणोंको ले और पहिनकर विरादरीवालोंको वताओ.

पुत्री—मैं ने कह जो दियाकि मैं इन्हें कदापि स्वीकार नहीं करुंगी नाहक़ भौंए क्यों चढ़ाती हो ?

माता—(समझाती हुई) अरे अब ऐसा थोड़ा ही हो सकता है जो होना था सो होचुका ज़रा समझ और मेरा कहना मान तू पढ़ी लिखी हो करके ऐसी नादानीकी वातें क्या कर रही है.

पुत्री—पढ़ी लिखी हूं जभी तो इनको स्वीकार नहीं करती तुमने सम्बन्ध करनेसे प्रथम कौनसी मेरी सम्मति लीथी जो अब नादान वताकर मुंह बनाती हो मैं कदापि इन्हें नहीं पहिनूंगी.

माता—अरे क्या आज पहिले कभी ऐसा हुआ भी है कि माता पिता सम्बन्ध करनेसे पहिले पुत्रीकी सम्मति लेते हों,

आएतो आप आजही हो ” उसके उत्तरमें दोनों युवा कहने लगे “ आजका दिन अच्छा है रीतभांत करली जाए फिर आप कहेंगे तो एक आध दिन और ठहरेंगे ” उन युवाओंके इस तरह कहने पर मूर्खदत्त विरादरीवालोंको बुलानेमें लीन हुआ. विरादरीवालोंके एकत्र होने पर वे वस्त्र आभूषण, जो दोनों युवा सरस्वतीके लिये ले आए हैं, उनके समीप रक्खे गए. इससे पहिले विरादरीवालोंको सरस्वतीके सम्बन्धकी कोई ख़बर नहींथी, अभी जानने पाए हैं. इस समय सर्व इस वातको जानकर कि, वर साठ वर्षका है दिलमें वहुत पश्चात्ताप कररहे हैं. उनके दिलमें इस वातका भी निश्चय हो गया है कि यह सम्बन्ध रुपये लिये दिये विना नहीं हुआ है. पर ये वेचारे क्या कर सकते थे, जवकि ख़ुद पुत्रीका पिता एक अपनी भोलीभाली वालाकी हत्या करनेको तत्पर हुआ है. उन्होंने वस्त्र और आभूषण आदि देखकर उत्तरमें केवल इतना ही कहा “ ठीक है इसमें क्या देखना है ” जव विरादरीवाले उनको देख चुके, मूर्खदत्तने सव अन्दर लेजाकर कुटिलाको दिये. और विरादरीवाले उठ रवाना हुए. कुटिलाने वे वस्त्र आभूषण सरस्वतीके समीप रखकर पहिननेको कहा, जिनको देखते ही सरस्वती बोल उठी “ मातुश्री ! यह सव क्या है ? कहांसे आए हैं ? कि जिन्हें पहिननेको मुझे कहरही हो. ”

माता—क्या तुझे मालूम नहीं है ? आज तेरा सम्वन्ध वसन्तगढ़के जीर्णसेठके साथ किया गया है. वाहरी पुत्री ? तू है तो भाग्यशाली (हाथों में लेकर तथा निरखती हुई) देख कैसे उत्तम२ वस्त्र आभूषण आए हैं न मालूम तेरा विवाह होजाने तथा उसके घर जाने पर तू कैसे२ उत्तम वस्त्र आभूषण पहिनेगी ?

पुत्री—मैं चतुर नहीं तो न सही पर मेरे मनकी मैं मुख्तियार हूं यह सम्बन्ध तो कदापि स्वीकार नहीं करूंगी.

पुत्रीका इतना उत्तर देना था कि, मूर्खदत्त आया और कुटिलासे कहने लगा. सरस्वतीने कपड़े पहिने कि नहीं ? कपड़े पहिना कर बिरादरी वालोंके यहां क्यों नहीं ले जाती ? शाम तो होने आई. फिर घरका काम काजभी करेगी कि नहीं ? कि, योंही बातें बनाती रहेगी ? देखती नहीं है कि घरपर तो महमान आए हुए हैं क्या आज उनको भूखा रखना है.

कुटिला—(क्रोधित होकर) मुझे इतनी बातें क्यों सुनाते हो देखो न तुम्हारी पुत्री जो नहीं मानती समझाते २ नाकमें दम आगया.

मूर्खदत्त—यह क्या कहरही है ?

कुटिला—तुम्हीं पूछलो क्या कहती है ?

मूर्खदत्त—अरे मैं इसको कैसे पूछने लगा कहो तो वह क्या कहती है ?

कुटिला—यह कहती है कि " मुझे तो यह सम्बन्ध जीर्णसेठके वृद्ध होनेके कारण मंज़ूर नहीं है "

मूर्खदत्त—अरे बेटा यह कभी हो सकता है मैं जो पहिले जा कर आया यदि ऐसा था तो प्रथम मुझे मना कर देती.

सरस्वतीने अपने पितासे शरम लाकर इस बातका कोई उत्तर नहीं दिया कि मूर्खदत्तने और कहना आरम्भ किया " पुत्री ज़रा तू मेरी इस अवस्था पर विचार कर मेरा किया हुआ क़ायम रख देख मैंने तेरे लिये कितने परिश्रम उठाए हैं. " किन्तु फिरभी सरस्वतीने कोई उत्तर नहीं दिया और आंसू भर लाकर रोने लगी.

पुत्री—मेरी यह मंशा नहीं है कि, तुम मेरी सम्मति लेकर ही मेरा सम्बन्ध करते पर जब कि, तुमने मेरे सौभाग्यका तनिक भी विचार न कर एक वृद्ध पुरुषसे मेरा सम्बन्ध करदिया, तो भला मैं उसको कैसे स्वीकार करने लगी.

माता—पुत्री क्या कहती हो क्या हमने तेरे सौभाग्यको नहीं देखा ?

पुत्री—जी नहीं यदि आप देखते तो कदापि ऐसे वृद्धके साथ मेरा सम्बन्ध न करते.

माता—सौभाग्य देखना कर्मके हाथ है क्या तुमने ऐसा नहीं देखा है कि वे बालाएं जिनका विवाह युवा पुरुषके साथ किया गया विधवा हो रही हैं यदि तेरा कर्म बलवान् है तो वृद्ध होते हुए भी तेरा सौभाग्य एक समयतक बना रहेगा मूर्ख न बन ज़रा विचार कर.

पुत्री—मैं सब समझी हुई हूं वह मेरा युवा पति लग्न होते ही क्यों नहीं मरजाय पर मैं वृद्ध पतिकोतो कदापि अच्छा नहीं कहूंगी.

माता—अरे मूर्ख क्या कह रही है ? तेरा पिता फिर कौनसा युवा है, मं ने उसको कैसे स्वीकार किया ?

पुत्री—(और कहना उचित न समझ) इस विषयमें मैं कुछ नहीं कह सकती, यहतो अपने मनकी बात है.

माता—(हारकर) देखा तेरा मन और देखी तेरी चतुराई. इस तरह माता पिताकी आज्ञाका उल्लंघन करना अच्छा नहीं. तू मेरे पेटकी नहीं इसलिये विशेष नहीं कह सकती पर ऐसी बेटीतो कहीं नहीं देखी.

आज आपही मेरा रक्षण करनेके स्थानपर अनर्थ कर रहे हैं ? क्या आज आपही मेरा सम्बन्ध एक नव युवासे न करते वृद्धके साथ करनेको तत्पर हुए हैं आपको स्वयम् इसका विचार करना चाहिये कि इस तरह मेरा सम्बन्ध एक वृद्ध पुरुषसे करनेमें कितना भारी अनर्थ होगा और मुझे क्या २ कष्ट सहने पड़ेंगे. वह बलहीन जीर्ण-सेठ जो उम्रमेंभी आपसे कम नहीं है और एक मेरे पिता तुल्य हैं भला मैं अपना सम्बन्ध उसके साथ कैसे कबूल करने लगी ?

पिता—पुत्री इसमें अनर्थ काहेका वह बड़ा मालदार है तुझे उसके वहां जाकर केवल ऐश आराम है.

पुत्री—पिताश्री आप समझते हुए ऐसी बातें क्या कर रहे हैं ? क्या मैं उसके धनको काट खाऊंगी ? जबकि मेरा सौभाग्यहीन रहकर शीघ्रही नाश होजायगा.

पिता—अरे सौभाग्य क्यों न रहने लगा पुत्री ऐसा अशुभ क्या बोल रही है परमात्मा सदैव तेरा सौभाग्य क़ायम रक्खे.

पुत्री—पिताश्री वह आपका ज्ञान आज कहांचला गयाकि जो उलटी बातों पर जा रहे हो क्या यह कभी हो सकता है कि, वह साठ वर्षका मनुष्य मेरे सौभाग्यको रख कर बीस पचीस वर्ष और जीने पायेगा और मेरे सुखका मूल होगा कदापि नहीं.

पिता—(नाराज़ होकर) वाह क्यो नहीं यदि तेरे भाग्यमें सौभाग्य लिखा है तो उसको कोई नहीं तोड़ सकता.

पुत्री—पिताश्री क्या उत्तर दूं शरमकी मारी कुछ नहीं कह सकती कहिये उस सौभाग्यको क्या करूं जब कि जीर्णसेठ बलहीन हो रहा है.

पिना—अरे वह बलहीन कहां है ?

मूर्खदत्तने देखा कि कुटिलाने इससे कुछ भला बुरा कहा है जिससे नहीं बोलती है और शीघ्रही हाथसे उठाकर ऊपर ले गया वहां जाकर तथा सिरपर हाथ फेरकर कहने लगा " बेटी घबरा मत और मेरी इज्ज़त रखकर वस्त्र आभूषण पहिन ले नही तो जगतमें मेरा काला मुंह होजाएगा. "

पुत्री—पिताश्री क्या कहूं आपको कहते हुए शरम मालूम होती है नहीं तो आपका मुंह तो जबसे एक वृद्ध पुरुषसे मेरा सम्बन्ध करना ठाना है तबहीसे काला होचुका है काला मुंह होनेमें कौनसी बाक़ी रही है पर यह आपको क्या सूझी क्या करूं मेरी जन्मकी माता नहीं, नहीं तो आपको बताती.

इतना कहकर सरस्वती रोने लगी साथमें मूर्खदत्तभी आंखोंमें आंसू भरलाया और सरस्वतीको प्यार करता हुआ कहने लगा पुत्री इसमें तो संदेह नहीं कि इस समय तेरी जन्मकी माता नहीं है पर मैंने तुझको कदापि कोई कष्ट नहीं दिया हर तरहसे तेरी जन्मकी माताको भुलानेका यत्न किया है. अभीतक मेरा काला मुंह नहीं हुआ है. यदि तू इस सम्बन्धको स्वीकार नहीं करेगी तो शीघ्रही होजाएगा. (ड़ाढीपर हाथ रखता हुआ) मेरे इन सफ़ेद बालोंकी लज्जा रख और मान जा. पर सरस्वती जैसी विद्वान् बाला मूर्खदत्तके धोखेमें क्यों आने लगी प्रथमतो मनही मन यह विचार किया कि अब लज्जा रखनेसे काम बन नहीं आवेगा और शीघ्रही पलटी देना आरंभ किया.

" आप रक्षा करने वाले पिता हैं इस समय मेरी जन्मकी माता नहीं जो मेरे भले बुरेका विचार करै और इस विषयमें आपको कुछ कहे जो कुछ मेरा आधार है अकेले आपही पर आके रहा है क्या

गुज़ारेका और कोई साधन नहीं मिला जो कसाई बनकर अपनी पुत्रीका वध करनेको तत्पर हुए हो यदि ऐसा था तो आपने मुझको प्रथम ही क्यों नहीं कह दिया? मैं अपने हुनर आदिसे कमाकर आपके गुज़ारेका साधन निकालती अब मैं समझी केवल आपने रुपयेके लोभमें आकर मेरा अनर्थ किया है पर पिताश्री क्या आपको यह आशा नहीं थी कि, यह सरस्वती युवाके साथ जाकर आपके दुःखोंको नहीं भूलेगी क्या आपको यह मालूम नहीं है कि कन्याविक्रय करना बहुतही बुरा है (आह भरती हुई) हाय अफ़सोस यह आपने क्या किया करते समय ख़ुदकी अवस्थापर विचार क्यों नहीं किया आप अपने घरमें प्रत्यक्ष वृद्धविवाह करके अनर्थोंको देख रहे हैं क्या उसका आपको सम्बन्ध करते समय तनिकभी स्मरण नहीं हुआ देखिये! आप दसहज़ार रुपये देकर धनहीन बने और अन्तमें जाकर वे रुपये उसकेभी नहीं रहे दूसरे आपके वृद्ध होनेसे मेरी माता कुआचरण सीखी क्या आप वृद्धको देकर मुझेभी कुआचार सिखाना चाहते हैं क्या आप मेरे पिता सुशिक्षा देनेके बजाए उल्टे अनर्थ करनेका रास्ता बता रहे हैं. धिक्कार है आपको और वह एक दफ़ा नहीं बल्कि सौ दफ़ा. पिताश्री ऐसी आशा तो मुझे स्वप्नमेंभी नहीं थी पर इस तरह करने परभी वह आपकी अनाथ स्थिति तो कदापि मिट नहीं सकती नाहक़को मेरा वध क्यों कररहे हो ज़रा ज्ञानी बनो.

पिता—(अपनी स्त्रीका कुआचरण जानकर तथा क्रोधित होकर) रहने दे तेरी बातें उसने तो कहींभी कुआचरण नहीं सीखा तूही इस घरमें कुपुत्री निकली जो कुआचरण सीखी और कुलको लजाया.

पुत्री—बस माफ़ कीजिये होचूका क्या वह बलहीन नहीं वह पुरुष जिसकी तमाम इन्द्रियां शान्त होगई हैं जिसके मुंहमें एक दांत तक नहीं जिसका मुंह विलकुल बैठा हुआ है जिसकी हड्डियों दूर खड़े हुए गिनी जाती हैं और जो लकड़ी विना चल नहीं सकता उसके साथ मेरा सम्बन्ध ! पिताश्री इससे तो उत्तम रास्ता यही है कि, आप मुझे जीवित कुंऐमें फैंक दो या जानसे मार दो पर मैं वृद्धके साथ तो अपना सम्बन्ध कदापि स्वीकार नहीं करूंगी.

पिता—अरे पुत्री यह तू क्या कह रही है ? मैं तुझको मारने लगा.

पुत्री—पिताश्री हां हां आप मुझे मारने चले हैं जो भी एक वार नहीं कसाई जिस तरहसे बकरेको हलाल २ कर मारता है उस तरहसे मारना चाहते हैं अरे पिताश्री यदि एसाही था तो आपने मुझे प्रथमही क्यों नहीं मारदी अबभी जैसा कि आप करआए हैं उससे तो उत्तम रास्ता यही है कि आप मुझे शीघ्रही प्राण रहित करदें नाहक़ रिबा २ कर क्यों मारते हैं. इतना कहकर सरस्वती रोने लगी कि मूर्खदत्त फिर प्यार तथा लोभ बताकर कहने लगा देख तेरा सम्बन्ध जीर्णसेठसे करनेमें अपनेको कितना फ़ायदा हुआ है बेचारेने वीस हज़ार रुपये निकाल कर दिये हैं तेरे उनमेंसे कुछ और लेना हो तो भलेही ले लेना मैंने यह केवल अपनी अनाथ स्थितिके कारण किया है कृपाकर मानजा.

पुत्री—(क्रोधित होकर तथा शरमके परदेको खोलकर) अरे पिता क्या आपने अपने एक पापी पेटके ख़ातिर सरस्वतीको वीस हज़ारमें बेची क्या मेरा रक्षण करनेके स्थान पर उलटा दुःख देनेको ख़ुद तैयार हुए हो ? क्या आपको अपने

वही हरामज़ादा नगर सेठका पुत्र बिहारीलाल यदि आपको मेरे कहनेका विश्वास न होतो वह उसको उस रात एक सुवर्ण गजरा तथा एकसौ रुपयेका नोट दे गया है जो उसकी सन्दूकमें रक्खे हुए हैं देख लीजिये.

पुत्रीके इतना कहने पर मूर्खदत्तके एकदम भाव बदल गए और विचार मग्न होकर मनही मन कहने लगा वास्तवमें पुत्री मेरी पवित्र है. वह चाण्डाली ही ऐसी हो रही उसी रोज़ रातको मैंने एक पुरुषको निकलते हुए देखा था अब मानता हूं कि, वह वही बिहारीलाल था जिसको चाण्डालीने कुत्ता कहकर टाल दिया. जरूर बिहारीलालसे इसने मित्रताकर रक्खी है जो वह उसे दे जाता है नहीं तो भला रोज़२ कोई यों खानेको क्यों देने लगा! मैं तो कमाकर लाता ही नहीं कि, जो कुटिला मुझे खिलाती हो इस तरह, वह करके घरका कारोबार चलाती है पर हे कुटिला धिक्कार है तुझे नाहक़को मैंने तेरा कहना सत्य मानकर अपनी पवित्र सरस्वतीका नाश किया अब पश्चात्तापसे क्या हो सकता है होना था हो सो हो चुका पर सरस्वती कहांतक सही है कुटिलाकी संदूक खोलकर देखतो लूं यहां ही जो पड़ी हुई है और शीघ्रही उठकर तथा ताला तोड़कर संदूक़को खोली तो उसमें दोनों चीज़े मौजूद पाईं बस क्या था ज़रासी देरमें पवित्र बालाकी जय हो गई. पर मूर्खदत्त उस अनिष्ट बातका नाश क्यों करने लगा और कुटिलाको कोई बात क्यों कहने लगा. मूर्खदत्त जो ठहरा और शीघ्रही अपनी पुत्री से कहने लगा कि, मेरे कियेको तुझे स्वीकार करना पड़ेगा.

पुत्री अब कहनेमें क्यों कमी रखने लगी भर२ कर कहने लगी यह आप क्या कर रहे हैं क्या मुझे स्वीकार करना पड़ेगा ?

सरस्वती अपने पितासे यह हाल सुनतेही एकदम आगबबूला हो गई और नीचा सिर करके विचारमग्न हुई. अरे परमात्मा मेरेपर यह कलङ्क कैसा मालूम होता है कि कुटिलाने मुझे शीघ्रही निकालनेके लिये पिताश्रीको कुछका कुछ भिड़ा दिया है. खैर कोई बात नहीं अबलाका वेली तगदीर है और अपने पितासे कहने लगी " पिताश्री यह आप क्या कर रहे हैं आज तक न तो कुआचरण सीखा न सीखूंगी यदि ऐसाही है तो मुझे आपकी आज्ञा स्वीकार करनेमें फिर क्या उजर था ? मैं शीघ्रही मान लेती वहां तो मुझे खूब कुआचरण सीखनेको मिलता मालूम होता है कि मातुश्रीने आपको मेरे विरुद्ध कुछ भिड़ा रक्खा है. खैर कर्मकी गति. पर वास्तवमें देखा जाय तो कुआचरणवाली वही है न कि मैं. "

पिता—रहने दे तेरी सफाई तूने जैसा किया वैसा पाया मेरा विचार वृद्धके साथ तेरा सम्बन्ध करनेका बिलकुल नहीं था तेरे कुआचरणने ही यह सब कराया.

पुत्री—(आह भरती हुई) अरे पिता यह आपने क्या किया गजब करदिया मुझ पवित्र बालाको अपनी जबानसे बिना कारण कलङ्कित करके साराका सारा अनर्थ किया.

पिता—अब पवित्र बनने जाती है उस रोज सारी रात बाहिर जो रही ?

पुत्री—क्या मैं अपने हाथोंसे बाहिर रही थी यह आपकी वह कुटिलाथी कि जिसने अपने मित्रके साथ आनन्द मनानेको मुझे गुलाबके घर सोने भेजदी थी. मैं फिर न जातीतो क्या करती ?

पिता—पुत्री क्या कह रही है कुटिलाका मित्र कौन ?

पुत्री—(रोती हुई तथा शरमाती हुई) क्या कहूं पिताजी

सरस्वती इस समय ऊपरही बैठी हुई नाना प्रकारके तर्क वितर्क कर रही है अरे जीर्ण सेठ मरनेकी तो तैयारी कर रहा है फिर भी एक नवयौवना बालाको वरनेकी लालचमें लगा हुआ है. तुम जैसे लालची जो बेचारी बालाओंके सौभाग्यका तनिकभी विचार न कर सतीत्वका नाश करनेको तत्पर हो रहे हो सब मर क्यों नहीं जाते हैं. परमात्मा यह क्या विचित्र माया हो रही है वृद्ध लोगोंको ऐसी लालसा क्यों क्या उन्हें धन इसी लिये मिला है.अरे उनके धनाढ्य होने तथा ऐसी लालसा होनसेही तो बालाओंके सौभाग्यका नाश हो रहा है. पर इसमें विशेष दोष उस दुष्ट पिताका है जो अपनी नवयौवना बालाको उसे देकर उसकी लालसा पूर्ण करनेका यत्न कर रहा है. पिताश्री यह क्या सूझी जो हाथोंसे अपनी पुत्रीका वध करनेको त्यार हो रहे हो. क्या मेरी माता मर गई है जिससे यह सब करने पाए हो. वास्तवमें ऐसाही हुआ है उस हरामज़ादी कुटिलाने यह सब कराया है नहीं तो आज यदि मेरी जन्म माता जीवित होती तो क्या मज़ाल थी कि यह ऐसा करने पाते. ? हक़ीक़तमें सौतीली माता ऐसीही हुआ करती है भाग्यवश कोई अच्छी निकल जाय. पर अरे दुष्ट कुटिला तूने मुझ पवित्र बालापर यह दोष क्यों लगाया आह ! यह औरतभी क्या विचित्र है कि अपने अनिष्ट कर्मोंके साथ में दूसरोंको कलङ्कित कर रही है. यह उसका दोष नहीं है. वृद्धविवाह तथा कन्याविक्रयका प्रताप है कि, ऐसे २ अनिष्ट कर्म बालाएँ करने लग जाती हैं मुझे मरना क़बूल है. पर कदापि वृद्ध पुरुषके साथ अपना लग्न नहीं करूंगी अरे मन ! यह तो है पर मैं इससे कैसे बचने पाउंगी न मालूम मैंने ऐसे कौनसे अनिष्ट कर्म किये हैं जो आज मेरेपर यह विपति आपड़ी खैर कर्मकी गति जो होगा सो निपट लूंगी और प्रभो २ भजने लगी.

अनिष्ट कर्म पर इतना दबाव. आपको ऐसा कहते शरम मालूम नहीं होती. अबमैं उस अनिष्ट कार्यको कैसे स्वीकारकरने लगी जबकि यह बात आपके कांनपर आई आप मुझे पूछते तो सही यदि पूछ लिया होता तो आज यह समय तो नहीं आता. मैं साक्षात् देखरही हूं कि वृद्ध विवाहके कारण यह हाल होरहे हैं फिर मैं आपकी इस आज्ञा को क्यों स्वीकारने लगी मुझे कुटिलाकी तरह कुविचार नहीं सीखना है. मैं तो सतीका दावा रखना चाहती हूं जो वृद्धके साथ सम्बन्ध होनेसे कदापि नहीं रख सकती. आप इस अनिष्ट कर्मको छोड़िये और मुझे इस विषयमें ज़ियादा न कहिये नहीं तो प्राण रहित होजाऊंगी.

मूर्खदत्तने देखा कि पुत्री हटपर चढ़ी हुई है अभी माननेकी नहीं पीछे समझा लूंगा. और नीचे चला आया.

मूर्खदत्तने नीचे आकर ख़ुद बलहीन होने आदि कारणोंसे कुटिलाको ये बातें नहीं कही जो सरस्वतीसे जानने पायाथा और केवल यह कहकर कि, वह तो नहीं माननी वस्त्र आभूषण घरमें रख दो उन युवक पुरुषोंके साथ बैठ गया. उसका आकर बैठना था कि उनमेंसे एक बोल उठा आप इतनी देर अन्दर क्या करते थे बातें तो ज़ोर २ से होरही थीं ?

मूर्खदत्त—नहीं साहब यों घरकी बातें करते थे वह लड़की शरमाती है और कपड़े नहीं पहिनती.

युवा—इसमें शरमानेकि क्या बात है ?

मूर्खदत्त—बच्ची जो ठहरी.

इतना कहकर मूर्खदत्तने बातको टाल दी और दूसरे कार्यमें लीन हुआ.

डूबा जा रहा है बेचारेपर दुःखपर दुःख पड़ रहा है क्रोडीमलको मरेको थोड़ेही दिन हुएथे कि उसकी दादी सौभाग्यवती और मर गई न मालूम ऐसी अनाथ स्थितिमें उसकी कौन सुध लेता होगा और वह अपना निर्वाह कैसे करता होगा इसमें तो संदेह नहीं कि उसका सर्व चला जानेपरभी बुद्धिधन अपनी इज्जत कायम रक्खे हुए है केवल बेचारेने अपनी पढ़ाइ छोड़ रक्खी है पर न मालूम किस कारण क्या पैसा पास न होनेसे याकि चिन्ताके कारण किसी तरहसे हो बेचारे बुद्धिधन जैसे तीव्र लड़केको विद्या देवीका शरणा छोड़ना पड़ा आह यदि यह लड़का और पढ़ता तो कैसा उत्तम होता पर यह अन्याय कैसा कि, वह लाहोरीमल जो अनर्थ कर रहा है सुखविलास भोग रहा है. जब कि वह बुद्धिधन जो अनर्थोंको अपने पास नहीं आने देता दुःखपर दुःखं भोगरहा है अरे लाहोरीमल क्या मेरे कहनेका तुझे तनिकभी उपदेश नहीं हुआ क्या मैंने नाहकको अपनी जबानको कष्ट दिया मैं ऐसा समझता तो कदापि इस तरह रात्रिके समय आकर औपदेशिक भजन आदि न सुनाता अरे मैं इसका क्यों खयाल करने लगा नहीं मानता तो मेरा कौनसा कुछ लेलिया मैं तो एक दफा और जाकर उससे इसी प्रकार उपदेश कर आऊंगा देखें क्या होता है इस तरहके तर्क वितर्क जसवन्तसिंह कर रहा था कि, गणपति तथा ईश्वरदास आ उपस्थित हुए उनका आना था कि जसवन्तसिंहके विचारोंका भङ्ग हुआ और चारपाईसे उठ खड़ा हुआ तथा अपने मित्रोंको बैठनेका सङ्केत कर कहने लगा आज तो ऐसी धूपमें कृपा की.

गणपति—अरे साहब ! अब अपने धूपका विचार क्यों लाने लगें यदि धूमका विचार करें तो भूखे मरें.

वे दोनों युवा पुरुष एक-दो दिन और रहे और रही सही रीतभाँत अदा करके अपने गांव चले गए.



प्रकरण ५१

उस चोरीका किंचित् पता.



पहरका समय है गर्मीका समय होनेसे इस समय मनुष्य मात्र एक स्थानपर बैठे हुए अपना २ कार्य कर रहे हैं किन्तु बेचारे जसवन्तसिंहके ताल्लुक कोई काम न होनेसे अपने घरमें चारपाईपर पड़ा हुआ लेट लगा रहा है और निद्रा न आनेके कारण नाना प्रकारके विचार उसके मनमें आ रहे हैं. एक दफ़ा कहता है अब मैं उस लाहोरीमलको अपना मित्र क्यों समझने लगा कि जो शत्रु बनकर नाना प्रकारके कष्ट दे रहा है. दूसरी दफ़ा फिर यह कहता है कि, वाह उस पुरुषको जिसको कि मैं अपना मित्र कर चुका शत्रु क्यों समझने लगा इसमें तो कोई संदेह नहीं कि मैं उसको भलेही मित्र समझ लूं वह कदापि मुझे अपना मित्र नहीं समझेगा देखो मैं उस रातको जाकर नाना प्रकारके उपदेशिक भजन सुना आया; पर कोई ज्ञान उससे नहीं हुआ अभीतक वैसाही अनर्थ कर रहा है और मनुष्य मात्रको अपने सामने कुछ नहीं समझता देखो उस ज्ञानी बुद्धिधनको कि, जिसके विचार उत्तमोत्तम हो रहे हैं. अनाथ स्थितिमें

जसवन्तसिंह—नगिने तो न सही पर गणपति ! लाहोरीमलकी ऐसी मति कैसे होगई.

गणपति—क्या आपको मालूम नहीं वह तेजमल तथा हनुवन्तसिंह हर वक्त पास बैठे रहते हैं.

जसवन्तसिंह—वास्तवमें तुम ठीक कहते हो हकीकतमें उन्हींका प्रताप है कि मेरा उपदेश फलदायक नहीं होता साथमें लाहोरीमल आज मंत्री पदपर विराजमान है खैर कोई बात नहीं आज उसको उपदेश करनेके लिये यह आखिर दिन है और उसको भर २ के कह आऊंगा मानना होगा तो मानेगा नहीं तो उसकी इच्छा.

ईश्वरदास—अरे जसवन्त ! अभीतक तुम्हें उपदेश करनेकी ही धुंध लगी हुई है इस वातको छोड़ो और उन उत्तम पुरुषोंके सहायक वनकर उपदेश करो जो मानें.

जसवन्तसिंह—वास्तवमें तुम्हारा कहना यथार्थ है लाहोरीमल को उपदेश कदापि लगनेका नहीं है पर क्या हर्ज है ? आजका दिन और देखने दो.

ईश्वरदास—तुम्हारी इच्छा पर मेरे ख़यालमें उसको उपदेश करना वृथा है बुद्धिधन जैसेको उपदेश करो जो फलदायक हो देखो लाहोरीमलके अनिष्ट कर्मोसे सारे शहरमें कितनी अशान्ति फैल रही है क्या तुमको प्रजाकी उस अशान्तिके मिटानेका यत्न करना उचित नहीं है ? क्रोडीमलने कमर कसकर अनिष्ट कर्म करना शुरू किया इसी कारण अपने लाहोरीमलके सहायक वने अब जबकि लाहोरीमल ऐसा हो रहा है तो उसको ठीक क्यों नही किया जावे तुम जो ऐसा करनेमें पाप गिनते हो पाप नहीं है वल्कि उलटा पुण्य है मेरा कहना मानो और बुद्धिधनका उद्धार करो कि

जसवन्तसिंह—हां भाई बात तो ऐसीही है किसी न किसी तरह पेटभी तो भरना है पर यहतो कहो आज कैसे आना हुआ.

गणपति—योंही कुछ काम नहीं था इसलिये आगए.

जसवन्तसिंह—बहुत अच्छा किया पर देखो उस बेचारे बुद्धिधनपर कैसी विपत्ति पड़ी है. लाहोरीमल उसकी अनाथ स्थितिपर तनिकभी दया नहीं लाता.

गणपति—वास्तवमें बुद्धिधनकी स्थिति बहुत बुरी हो रही है इस समय वह रोटी टुकड़ेका मोहताज होरहा है लाहोरीमल भला उसकी स्थिति पर दया क्यों लाने लगा ? जब कि अपन जैसोंको भूलगया पर कृपाकर यहतो कहो एक रोज़ रातको तुम उपदेश करने गए थे क्या सारांश निकला ? क्या उसको उपदेश लगा.

जसवन्तसिंह—उपदेश लगो या न लगो मैं तो कथनानुसार भरके कह आया.

जसवन्तसिंहके इस कहने पर ईश्वरदास बोल उठा अरे आइन्दा तुम उसके घर जाकर इस तरह नगाओ जिसके लिये अपने सबकों को सूचना दे रक्खी है.

जसवन्तसिंह प्रथम तो यह हाल सुनकर क्रोधित हुआ किन्तु थोड़ेही समयमें उसको दबाकर कहने लगा क्या यह बात सही है ? कोई हर्ज़ नहीं मैंने कह जो दियाकि, वह मेरा प्राण क्यों न ले मैं कदापि उसका शत्रु नहीं बनूंगा.

गणपति—ईश्वर जो कहता है सही है मैंनेभी लाहोरीमलके सेवक द्वारा यह हाल सुना है पर तुम इतने नर्म क्यों बने हुए हो जब कि वह तुमको कुछ गिनताभी नहीं.

इतना कहकर ईश्वर खड़ा हुआ साथमें गणपतिभी उठा और दोनों प्रणाम कर चले गए.

जब रात्रि होगई और दस बज चुके जसवन्तसिंह हाथमें लठ लेकर घरसे निकला और सीधा लाहोरीमलके मकान पर पहुंचा और कोई उसको न रोके इस कारण सदर दरवाज़ा छोड़कर पीछे की तरफ़ खड़ा हो इस तरह कहने लगा अरे मूर्ख तू इस झूठी मायामें फंसकर मस्त हो क्यों सोता है निज आत्माको पहिचान औरे इस समय तू जो बुरे कर्म कर रहा है इसको छोड़कर ईश्वर स्तुतिमें लीन हो भव्य जीवोंको तार देख एक कवि क्या कह रहे हैं:—

(वारी जांडरे सामळीया.)

हे चेतन सुखकर जिनवर, चितमें धारनारे.
बड़े भागसें नर देह पाया, मोह जालमें तुं भरमाया;
वृथा श्वास मत खोना मोहक, मारनारे–हे चेतन. ॥ १ ॥
ज्ञान रूप पानीसें मनकी, शुद्धि कर तज ममता तनकीः
निर्मल बनकर जग जीवोंको, तारनारे–हे चेतन ॥ २ ॥
इस नगरीमें चोर वसत हैं, हरदम लुटनको वो धसत हैं;
सावधान होकर जंग जंजाळ, विसारनारे–हे चेतन ॥ ३ ॥
क्यों नहिं भजता वीर नामको, सुंदर तन फीर कौन कामको;
भक्ति करके अंतर वैरी, टारनारे–हे चेतन ॥ ४ ॥
बुरे कामसें तुं नहीं डरता, पुण्य काम चित्तमें नहिं धरता;
दुःख कर आसासे मनको तुं, निवारनारे–हे चेतन ॥ ५ ॥
उत्तम अवसर बीत जात है, आयुं तेरी काळ खात है;
शिवपद कारन अंतर मायः, डारनारे–हे चेतन ॥ ६ ॥

प्रजाके शान्तिका कारण हो नहीं तो देखना लाहोरीमल और क्या२ अनर्थ करेगा ?

जसवन्तसिंह—ईश्वर ! वास्तवमें तेरा कहना यथार्थ है पर मैं यदि बुद्धिधनका सहायक बनूंगा तो वह मेरे प्रिय लाहोरीमलकी क्या दशा होगी ? उसीको विचार रहा हूं.

गणपति—अरे इसमें क्या विचारना है जैसेको तैसा होनाही चाहिये. क्या यदि कोई पुरुष अनिष्ट करता हो तो उसको रोकनेके लिये कोई उपाय नहीं करना चाहिये ? और क्या वह ज्यों करता है करने देना चाहिये ? कदापि नहीं इस तरह होनेमें तो उल्टी हानि होती है. देखो पहिलेके ज़मानेमें उन अनाचार करनेवालोंका नाश करनेको कई पुरुप तत्पर हुए थे और उसमें उन्होने किंचित् दोष नहीं गिना है. इसमें संदेह नहीं कि तुमको बुद्धिधनके सहायक बननेसे लाहोरीमलका नाश होगा पर जबकि वह ख़ुद ऐसा होनेका पात्र हो रहा है तो अपने उसका विचार क्यों करने लगे ?

जसवन्तसिंह—इसमें तो संदेह नहीं कि मैं बुद्धिधनको यथा साध्य सहायता करूंगा पर लाहोरीमलके बिगाड़नेमें कदापि भाग नहीं लूंगा उसका कर्म उसको आपसे फल देगा.

गणपति—मै कब कहता हूं कि, तुम लाहोरीमलके बिगाड़नेमें भाग लो केवल मेरे कहनेका तात्पर्य यही है कि लाहोरीमलको उपदेश करना फ़ज़ूल है यदि उपदेश करनाही ठाना है तो बुद्धिधनको करो जो फलदायक हो.

जसवन्तसिंह—ऐसा करनेमें मुझे कोई हर्ज नहीं पर आज मैं रातको लाहोरीमलके वहां जाऊंगा देखूं क्या होता है ?

ईश्वरदास—तुम्हारा जाना फ़ज़ूल है आगे जैसी इच्छा.

जसवन्तसिंह विचार करता हुआ अपना रास्ता तैहकर रहा है और मनही मन कह रहा है धिकार है ऐसे मित्रको जो आज मेरेको धक्के दिलवानेको तैयार हुआ है वास्तवमें मेरे मित्रोंने ठीक कहा था नाहक्को जाकर मैंने अपना अपमान किया खैर कोई वात नहीं आज ही से समझा अब वह मरभी जाए तो मैं कदापि उसकी चिन्ता नहीं करूंगा पर अरे लाहोरीमल क्या आजकल तू वावरा बन गया है ? अरे वावरा वननेमें कौनसी कमी है ? मुझ जैसे पवित्र मित्रको धक्के दिलवाता है क्या तुझे यह मालूम नंहा है कि केवल तेरे ही फ़ायदेके लिये अपने पर झूठा कलङ्क लेकर फिर रहा हूं ! नहीं तो इसका उतारना मेरे लिये कौनसी मुशकिल वातथी. वास्तवमें तेरे कृत ऐसे हो हैं कि मैं ही तेरा शत्रु वनकर वदला लूं. पर अरे लाहोरीमल ! मेरी भलमंशाहीको देख कि तेरे इतना करने पर भी मैं कुछ न करते तुझको अपना मित्र समझकर उपदेश करता हूं. वह क्यों देखने लगा हार जानेके वाद देखेगा, किन्तु अरे लाहोरीमल तेरे इस तरह करनेमें मुझको तथा प्रजावर्गको कितना कष्ट हो रहा है " इस तरहके तर्क वितर्क करता हुआ जसवन्तसिह जब यमुनाके थाने पर पहुंचा है, गोपालसिंह नामके कांन्सटेबलने उसको आवाज़ देकर थानेमें बुलाया. जसवन्तसिह उसकी आवज़ सुनकर विचार रहित हुआ और थानेमें जाकर गोपालसिंहके पास जा वैठा. वे परस्पर दोनों इस प्रकार गुप्त रीतिसे वार्तालाप करने लगे.

गोपालसिंह—कहो भाई आजकल तो आप देखते भी नहीं. अब तो नौकरीभी नहीं कि, अवकाश न मिले. मैं एक सप्ताहसे आपको मिलनेके लिये यत्न कर रहा था एक दो वार आपके घरभी आया पर आप नहीं मिले आज योंही मौका मिल गया.

जसवन्तसिंह इस भजनके समाप्त होतेही और कुछ न कहते रुक गया और कान लगाकर तथा खिड़कियोंकी तरफ़ अधेरेमें खड़ा देखने लगा ज्योंही उसने लाहोरीमलको खिडकीमें मुंह निकालते देखा यह जानकर और गाने लगाः—

करता नहीं कछु सोच अब, मानुष हुआ तो क्या हुआ॥ क०अ०॥
मोती वा पन्ना हिरला, पुखराज नीलम चूनिया;
अपना हीरा देखा नहीं, जौहरी हुआ तो क्या हुआ॥ क०॥१॥
सोना सुहाना आगसे, देख खोट सगरी जारता,
अपना सुवर्ण सोधा नहीं, सराफ हुआ तो क्या हुआ॥ क०॥२॥
चांदी वा सोना बेचता, हुंडी बजाजी देखता;
पर लोकको देखा नहीं, व्यापारी हुआ तो क्या हुआ॥ क०३॥
मुद्दई मुद्दाला देखता, कानून किताबें खोलता,
अपना गुन्हा देखा नहीं, मुन्सिफ हुआ तो क्या हुआ॥ क०४॥
माता पिता सुत बहिन भाई, और तिरिया जमाइरे;
निज रूप आत्मके विना, वल्लभ हुआतो क्या हुआ॥ क०५॥

अरे मेरे मित्र जबकि तू अपने आपको पहिचान नहीं सकता तो तू दूसरको क्या पहिचानता होगा और क्या इन्साफ़देता होगा क्या तूने मंत्रीपद ग़रीबोंके गले काटनेको लिया है देख ऐसा मत कर निज आत्माको पहिचान नहीं तो पछताएगा अब यह पुरुष बार२ आकर उपदेश नहीं देगा बस आज हो चुका.

जसवन्तसिंहका इतना कहना था कि लाहोरीमल जसवन्तसिंह को जानकर शीघ्रही धक्के मार निकाल देनेको एक सेवकको आज्ञा दी. किन्तु जसवन्तसिंह यह आज्ञा सुनकर तथा उसकी ऐसी आज्ञा को धिकार देकर सेवकके आनेके पहिले ही वहांसे चल दिया.

कि " क्रोडीमलके घरमें चोरी अपने की और माल मंत्रीके घर गया " जो मैंने गुप्त रीतिसे सुना है. मैं कई दिनोंसे आपको कहनेवाला था पर अवकाश नहीं मिला आपको लाहोरीमल तथा हनुवन्तसिंहने कष्ट देनेमें कौनसी कमी रक्खी है. इसपरसे आप बदला लेना चाहें तो ले सकते है.

जसवन्तसिंह—अरे मैं क्या बदला लूं उनका कर्म उनको आपसे फल देगा.

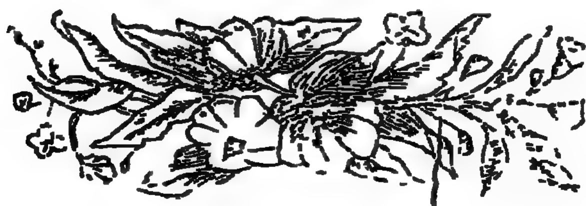
गोपालसिंह—मैंने सुना जो आपके समक्ष प्रगट करदिया.

जसवन्तसिंह—बहुत ठीक किया इसके लियेमैं तुम्हारा कृतज्ञ हूं लो अब आज्ञा हो जाऊं बारह बजने आए हैं.

गोपालसिंह—जाइये माफ करना.

जसवन्तसिंह—कोई बात नही.

इतना कहकर जसवन्तसिंह चला गया.



जसवन्तसिंह—क्या बताऊं आज कलमें एक झगड़ेमें फंसा हुआ हूं देखो वह मेरा प्रिय मित्र लाहोरीमल कैसे अनिष्ट कर्म करता है. मैं चाहता हूं कि उसे उपदेश करूं जिससे कि अनर्थ करना छोड़दे और प्रजाको शान्ति मिले वल्कि कई वार गयाभी मगर नहीं मानता आजभी वहींसे आ रहाहूं.

गोपालसिंह—वाहरे आपकी समझ! शत्रुको उपदेश? यह गुणतो आपहीमें पाया, आप मन चाहे उतना उपदेश उसको करो वह कदापि नहीं मानेगा. मोह, माया, तथा वालाओंके सतित्वको हरण करने तथा लूट मारमें जो लगा हुआ है?

जसवन्तसिंह—वास्तवमें ऐसाही है पर आज तू यह नई बातें क्या सुना रहा है? क्या लाहोरीमल वालाओंके सतित्वको हरण करने तथा लूट मार करानेमेंभी ताक है?

गोपालसिंह—क्या आपको मालूम नहीं है? सुपरिण्टेण्डेण्ट साहवको उसने मुंह लगा रक्खे है. वह क्यों? केवल इसी कारण क्रोडीमलकी चोरी फिर किसनेकी हैं. कराने वाले यही जो हैं?

जसवन्तसिंह—गोपाल तू क्या कहता है?

गोपालसिंह—मैं ठीक कहता हूं.

जसवन्तसिंह—अच्छा अब कृपाकर यह बता कि क्रोडीमलकी चोरी किसने की और माल सब कहां है?

गोपालसिंह—करने वाले वही वदमाश शेरआलम व गुन्नी हैं, माल सब मंत्रीजीके यहां पहुंचा है.

जसवन्तसिंह—यह तू किसपरसे कहता है?

गोपालसिंह—एक रोज वे दोनों आपसमें वात कर रहे थे

रने नहीं पाया और जबसे इस घरमें मेरा राज्य हुआ है अपने आपको खानेसेभी मोहताज पाताहूं. क्या आज मेरे पिता तथा दादीके अन्त समयके वाक्य सर्वथा झूठे सावित होनेको तत्पर हुए हैं! वास्तवमें ऐसाही मालूम दे रहा है. यह मेरा शरीर गलकर पिञ्जर हो गया है और व्याधि इतनी बढ़ गई है कि, जीनेकी कोई आशा नहीं मालूम पडती न कोई दवा लागती है, आज तो वैद्यराजनेभी आना छोड दिया. इसमें कोई संदेह नहीं कि वैद्यराज पैसोंका लोभ रखकर नहीं आए हैं. पर अरे वैद्यराज! इस समय मेरी क्या स्थिति है कि, मैं आपके उस लोभको पूरा कर सकूं. ज़रा मेरी इस अनाथ स्थितिपर दया लाते. ओहो! आज कलके वैद्यराजभी लोभी हो गए हैं कि जो टके लिये विना इलाज ही नहीं करते. किसीकी अनाथ स्थितिपर दया क्यों लाने लगे. ज़मानाभी तो ऐसा आके रहा है. वह तो पुराने ज़मानेके वैद्यराज थे जो केवल परोपकारके अर्थ औषध देतेथे और अपनी नामवरी बढ़ानेके लिये रोगियोंको आराम करनेके अर्थ अपने परिश्रमका तनिकभी खयाल न कर दिनमें विसियों फेरे दिया करतेथे. पर अब मैं वैद्यराजको क्या दूं, मेरे पास इस समय जहर खानेकोभी पैसा नहीं है. सौ दोसौ रुपयेका जेवर इन औरतोंके वदनपर है, यदि उनमेंसे एक लेकर वेचा जाए तो काम वन सकता है. किन्तु मैं उन्हें ऐसा कैसे कहने लगा. वाहरे कर्म तेरी क्या गहन गति है" इतना कहकर और चिन्तामग्न हुआ तथा मनही मन कहने लगा "अरे केवल मुझे यही चिन्ता नहीं है वह जो दो विद्यार्थी वोम्बे पढ़ रहे हैं उनके पासभी खर्ची नहीं है इतने दिन तक तो मेरे ससुरकी दुकान चलतीथी सो उन्होंने सहायता की पर अब वह दुकानभी क़च्ची पड गई, इसकी चिन्ता और लग रही है. इस समय किसको कहूं जो मेरी इस

प्रकरण ५२

मृत्यु खट्वापर बुद्धिधन.



हा ! कर्मकी क्या वलिहारी है कि वही बुद्धिधन जिसका जन्म होनेपर मुद्रिकाएं वाटीं गईं थीं और नाना प्रकारके आनन्दोत्सव मनाए गएथे और जिसके घरमें अथोक द्रव्य था आज अनाथ स्थितिसे कायर होकर नाना प्रकारके रोगोंसे पीडित होकर मृत्यु खट्वापर सोया हुआ है इस समय इसको कोई इतनाभी कहनेवाला नहीं है किकहो भाई ठीक तो हो वास्तवमें संसार स्वार्थका है जव इसके घर राज्यकार्य था नाना प्रकारके लोग आकर जमा होतेथे. जव कि आज कोइभी नज़र नहीं आता. वही बुद्धिधन उसकी माता तथा प्रियपत्नी वैठ हुए शोक मना रहे हैं वाचकवृन्द ! अपनेको उचित नहीं कि दूसरोंकी तरहसे उसकी सुध तक न लें. कृपाकर मेरे साथ चलिये और उसकी करुणाजनक स्थितिपर दया लाकर शोकमें शोक मनाइये.

बुद्धिधन मृत्युरूपी शय्यापर सोता हुआ नाना प्रकारके तर्क वितर्क कर रहा है " हे परमात्मन् ! क्या यह देह छूट जायगी ? रोगको देखते हुए तो यही विदित हो रहा है. मुझे इस देहके छुटनेका कोई फिक्र नहीं है पर शोक इस वातका है कि, इस संसारमें आकर कोई सुकृत कार्य करने नहीं पाया, जो इस समय मेरा साथी वनकर इस पवित्र आत्माको शान्ति देता. जवसे मैं समझने योग्य हुआ हूं, घरकी स्थिति ऐसी हो गई कि मैं कुछ क-

दुखिया बालाको धीरज क्यों होने लगी. रोती हुई तथा अपने पैरकी कड़ियां निकालती हुई कहने लगी " क्या वैद्यराज अपनी अनाथ स्थितिपर दया लाकर नहीं आए ? यह मेरे पैरकी कड़ियां लो और वेचकर तथा उन्हें रुपये देकर ले आओ और इनका इलाज कराओ " किन्तु सुन्दरी उसके पैरकी कड़ियां क्यों लेने लगी, न लेकर कहने लगी " अरे वहू ! यह तू क्या कर रही है, तेरी सौभाग्यकी चीज़ मैं कैसे लेने लगी ? वापिस पहिन ले मेरे कानमें सोनेकी वालियां जो मौजूद है " शीघ्रही निकाल कर स्वयम् सुन्दरी जिसने द्वारके वाहिर पैर तक नहीं दिया था वैद्यराजको बुलाने गई. उसका जाना था कि कनककुमारीने अपने पतिका अन्त समय समझकर वार्तालाप आरंभ किया.

कनककुमारी—(रोतीहुई) स्वामीनाथ ! क्या आप इस अवलाको सदैव दुःखितावस्थामें छोड़कर जानेको तैयार हुए हो ? क्या यह मेरा सौभाग्य नहीं रहेगा ?

बुद्धिधन—प्रिया ! क्या कहूं मुझेभी जीनेकी आशा नहीं है पर तू इस तरह क्यों रो रही है ज़रा धैर्य धर, पार्श्वनाथ सब अच्छा करेगा.

कनककुमारी—मुकुट शिरोमणि ! उसीपर तो मेरा आधार आके रहा है. पर आपके शरीरकी अवस्थाको देखते हुए धैर्य्य नहीं रहता कि, आप मेरे मुकुट शिरोमणि वने रहकर इस सौभाग्यको दिपाओगे.

बुद्धिधन—यदि तेरा सौभाग्य और रहनेका है तो उसको कोई मिटा नहीं सकता. क्या पृथ्वी पर लिया हुआ प्राणी जीने नहीं पाया है ?

चिन्ताका नाश करे और अन्त समय जानने पाऊं कि उन विद्यार्थियोंकी आशा पूर्ण होगी. पर मेरे मृत्यु खट्वापर सोते हुए कौन सहायता करने लगा, पीछे कोई जो उस करजेका चुकानेवाला नहीं है, अरे चुकानेको तो यह मेरा इतना बडा आनन्दभुवन जो पडा हुआ है, उसके रुपये कहींभी नहीं जा सकते. किन्तु ऐसा पुरुष कौन है जो अन्त समय मेरा सहायक बने. मेरी आरोग्यवस्थामें किसीने आकर मेरी सूधी नहीं ली तो भला अब कोई क्यों लेने लगा. अरे कोई मेरी सुध क्या लेगा, मेरा इष्ट पार्श्वनाथजी मौजूद है " और उसीका रटन करने लगा. पासमें उसकी मातुश्री तथा प्रियपत्नी चारपाईके हाथ देकर पृथ्वीपर नीचा सिर किये हुए बैठी हैं. और नाना प्रकारके शोक मना रही है. दस बज चुके पर किसीने भोजन नहीं किया है. आज उनकी वे आशाएं " किसी समय बुद्धिधन इस घरको दीपाएगा " उसकी स्थितिको देखकर नाश हो रही हैं. बेचारी कनककुमारी तो इस चिन्तामें लगी हुई है " क्या यह मेरा सौभाग्य अदृश्य हो जाएगा ? इनकी स्थिति देखते हुए ऐसाही मालूम दे रहा है पर हे प्रभो ! मैंने ऐसे कौनसे पाप किये हैं जो मुझ अबलापर यह कष्ट आना बदा है. अरे यदि मेरे सौभाग्यका नाश हो जाएगा तो फिर मेरी सुध लेनेवाला कौन है ? अब तो मेरे पिताके घरभी लक्ष्मी नहीं रही कि वह मुझे पालते. अरे मैं ऐसा विचार क्यों करने लगी. क्या इनको आराम नहीं होगा ? परमात्मा शीघ्रही शान्ति दे. किन्तु इनकी स्थितिको देखते हुए बिलकुल आशा नहीं रहती. वाहरे कर्म तेरी गहन गति है. दुःख देने लगा तो सर्व एक साथही " और इस तरहके तर्क वितर्क करती हुई फूट २ कर रो रही है. पासमें बैठी हुई उसकी सास उसे नाना प्रकारसे धीरज दे रही है पर उस

इधर बुद्धिधनभी केदा हुआ चिन्तारूपी सागरमें डूवा हुआ है. औषधीके कारण उसके शरीरमें गर्मी इतनी फैली हुई है कि उसको बोलनेकी सुधतक नहीं है और वह यही समझ रहा है कि प्राणमेरा शीघ्रही चला जायगा. शाम हुई और जब चार बज चुके वैद्यराज आपहुंचे. उनके कहनेके अनुसार बुद्धिधनके उपरके कपड़े सुन्दरी चिन्ताके मारे लेने नहीं पाई थी. उन कपड़ोंको ज्योंके त्यों देखकर वैद्यराजने शीघ्रही लेनेकी आज्ञा दी. ज्योंही कपड़े लियेगए बुद्धिधनने आंखें खोलीं किन्तु उस समय उसकी बोलनेकी श्रद्धा नहीं थी. वैद्यराज नाड़ी देखकर कहने लगे " देखो ! बहुत कुछ फर्क पडगया नाड़ी ठीक चल रही है " पर उनके इस कहनेको बेचारी औरतें क्या समझें. वैद्यका हुन्नर वैद्यही जानें. वेतो वैद्यराजके इस कहनेके उत्तरमें यही कहने लगीं " यही चाहिये इसको आरोग्य करदो तो हम आपके पैर धोकर पानी पीलें किन्तु यह बोलता तो नहीं है ? "

वैद्यराज—यह सब कपड़े तुमने इतनी देर रख छोड़े जिससे नहीं बोलता है. विशेष गर्मीके कारण जीव इसका घबराहटमें पड़ गया है. अभी थोडी देरमें शान्ति पड़ जाएगी फिर आपसे बोलने लगेगा.

सुन्दरी—यही चाहिये.

वैद्यराज यह कहकर " सुबह आकर देख जाऊंगा " चले गए. उनका जाना था कि सुन्दरी उठकर अपने बेटेको बुद्धिधन करके बुलाने लगा पर नहीं बोला. केवल आंखें फिरा कर उसकी तरफ टक टकी बांध देखने लगा और हाथोंसे बैठ जानेका सङ्केत किया. बुद्धिधनके कहे अनुसार सुन्दरी पास बैठ गई और पग

कनककुमारी—नाथ ! क्यों नहीं पर मेरे भाग्य ऐसे कहां ?

बुद्धिधन—यदि तूने पूर्व जन्ममें कुछ अच्छी कमाई की है तब तो यह शरीर आरोग्य होजाएगा. यदि तेरी कमाई ऐसी नहीं है तो फिर चिन्ता करना वृथा है. इस शरीरका नाश होना बदा है तो कोई रोक नहीं सकता.

कनककुमारी—(रोतीहुई) मुझ दुखियाकी कमाई अच्छी होती तो फिर आप बीमारही क्यों पड़ते ? मैं पापिनी हूं कि मेरे देखते हुए मेरे स्वामी नाथ कष्ट भोग रहे हैं. अरे पार्श्व इनसे पहिले मेरी सम्हाल क्यों नहीं लेता ? मैं इस संसारमें जीवित रहकर कौनसा भला करूंगी. केवल स्वामीकी सेवा करूंगी जब कि यह मेरे नाथ जगत मात्रकी सेवा करेंगे.

बुद्धिधन—इस विषयमें तुम कुछ नहीं कह सकती न तुम्हारा चाहा होसकता है. केवल वही होगा जो होना बदा है.

इनके परस्पर इतना वार्तालाप होचुका कि सुन्दरी वैद्यराजको लेकर आई. प्रथम तो उनको आसन दिया गया फिर वैद्यराजने बुद्धिधनका दाहिना हाथ लेकर नाड़ी देखी तदनन्तर जड़ी बूंटीकी औषधी दी और कहने लगे " इसको बहुतसे कपड़े तीन घंटे तक ओढ़ा रक्खो, पसीना होकर सर्व रोगका नाश होजाएगा. शामतक यह बिलकुल आरोग्य होजाएगा, शामको आकर फिर देखुंगा " और अपने सामने कपड़े डलवाकर चलता बना.

सुन्दरी तथा कनककुमारीको वैद्यराजने बुद्धिधनके आरोग्य होनेकी ढाढस देनेमें कमी नहीं रक्खी. पर उनको जबतक वह आरोग्य न हो धीरज कैसे होने लगी ? अन्न जल लिये बिना दोनों बुद्धिधनकी खटूवा पास बैठी हुई नाना प्रकारसे चिन्ता कर रही हैं

कहनेसे विदित हुआ कि आप बीमार हैं अतएव आरोग्य पूंछने चला आया कहिये आपको शान्ति तो है ?

बुद्धिधन—क्या कहूं इस समय मेरे पर दुःख पर दुःख आरहा है. शरमके मारे कुछ कह नहीं सकता. आज वैद्यराजने जो दवाई दी उससे कुछ शान्ति मालूम होती है. आपके यहां आनेमें शरमाने का कोई कारण नहीं है. मेरे मनमें शत्रुताका तनिक भी विचार नहीं है, मैं तो स्वयम् इसका नाश करना चाहता हूं. देखो यह शत्रुता ही का कारण है कि आज आनन्द भुवन इस गतिको प्राप्त हुआ है फिर मैं उसका स्मरण क्यों करने लगा ?

जसवन्तसिंह—धन्य है आपकी इस बुद्धिको वास्तवमें ऐसा ही होना चाहिये. यह सेवक आपके लिये हाज़िर है आजसे मुझे अपना मित्र समझिये और जो आज्ञा हो सहर्ष कहिये और मुझे कृतज्ञ कीजिये.

बुद्धिधन—धन्य है आपको कि, पहिलेकी शत्रुताका काई स्मरण न कर इस अनाथको सङ्कट समय याद किया और मेरी सेवा करना चाहते हो. इतने दिन मैं यह समझ रहा था कि, सर्व मनुष्य स्वार्थके हैं पर आपकी इस कृपाको देखते हुए मालूम हुआ कि, सर्व ऐसे नहीं हैं केवल अज्ञानी ही हैं जिन्होंने मेरी सुध नहीं ली.

किशोरीलाल, यह मालूमकर कि, किसीने सारा दिनमें भोजन नहीं किया, बुद्धिधनसे कहने लगा " क्यों साहब कुछ खाओगे? देखा मातुश्री आदि चिन्ताके मारे सारा दिन हुआ भोजन करने नहीं पाई हैं. यदि आप खाओगे तो येभी सहर्ष भोजन करलेंगी "

जसवन्तसिंहने यह समाचार पाकर इस विषयमें और कहना

चम्पी करने लगी. इतनेमें जसवन्तसिंह तथा किशोरीलाल आ पहुंचे. उनको देखतेही बुद्धिधन इसतरहसे बोलउठा मानो उन्हीं केलिये उसकी जबान रुकी हुई थी और धीरे२ कहने लगा "आज मेरे अहोभाग्य हैं कि आप लोगोंको इस दुःखितावस्थामें अपने सामने देखता हूं. कहिये आज इतना भारी अनुग्रह मुझ अनाथ पर क्यों ?"

जसवन्तसिंह—आपकी बीमारीका हाल सुनकर आराम पूछने आए हैं. क्या आपको हमारा आना आश्चर्य जनक मालूम होता है ?

बुद्धिधन—क्यों नहीं सिवाय वैद्यराजके मनुष्य मात्रको मुंह देखे एक महीना होने आया. मेरे प्रिय मित्र किशोरीलाल जैसेका मुंह आज देखता हूं तो भला आपकी आशाही क्यों होने लगी.

बुद्धिधनका इतना कहना था कि किशोरीलाल बोल उठा.

किशोरीलाल—इसकी मैं क्षमा चाहता हूं पर बात केवल मेरे न आनेकी यह थी कि मैं बाहिर गांव गया हुआ था.

बुद्धिधन—ऐसा ही होगा नहीं तो तुम आकर मेरी सुध न लो यह तो मुझे भी आशा नहीं पर जसवन्तसिंहजी साहब ! आज आपने ख़ुब कृपाकी. इसके लियेमें आपका कृतज्ञ हूं.

जसवन्तसिंह—मैं कई दिनोंसे इस विचारमें था कि आपकी सेवामें उपस्थित होकर आपका सहायक बनूं. आप कहीं शत्रुताका कारण न समझो इस लिये आनेमें हिम्मत नहीं पड़ी. आज योंही बाज़ारमें जारहा था कि किशोरीलाल बीचमें मिल गया. उसके

बुद्धिधन—धन्य है आपको कि मुझ जैसे अनाथको जो इस समय मृत्यु खट्वा पर सोता हुआ है रुपये देनेको तैयार हुए हो.पर आप फिर कहांसे रुपये लाकर दोगे इस समय वेकार जो हो.

जसवन्तसिंह—वेकार हूं तो क्या होगया परमात्माने मुझे खानि जितना दे रक्खा है शीघ्रही आज्ञा दीजिये विचारका इसमें कोई कारण नहीं है.

बुद्धिधन—यहतो ठीक है सहर्ष मैं आपकी इस आज्ञाको सिर चढ़ाऊंगा पर विशेष रुपये आपके पास कहांसे होने लगे फिर आपको गुज़ारेके लियेभी चाहियेंगे. लाहोरीमल कौनसी शीघ्रही जगह दे देगा.

जसवन्तसिंह—मैं उस दुष्टसे जगह लेना नहीं चाहता. मैं अपना गुज़र मांगकर करूंगा, आप इसका फिक्र क्यों करते हैं. आप मेरी प्रार्थनाको स्वीकार करिये और आपकी इस चिन्ताको दूर कीजिये की शीघ्रही आरोग्य हो जाओ. कहिये आपको कितने रुपये भेजने हैं.

इस प्रश्नका उत्तर बुद्धिधन देनेही नहीं पाया था कि किशोरीलाल वीचमें बोल उठा " अरे साहव आप तकलीफ़ क्यों उठाते है ? मैं जो मौजूद हूं. "

बुद्धिधन—अरे भाई तेरी स्थिति ऐसी कहां कि, मुझे सहायता कर सके,

किशोरीलाल—स्थिति तो मेरीभी अनाथ है पर क्या है एक रोटी मिलेगी उसमेंसे आधी आपको देकर खाऊंगा. आपने मुसीवतके समय मुझे मदद करनेमें कौनसी कमी रक्खी थी. अव जव

आरंभ किया " क्या सारा दिन हुआ किसीने भोजन नहीं किया?, यह तो उचित नहीं बुद्धिधनकी तरफ दृष्टि कर कहने लगा आप कहिये ताकि भोजन बनालें "

बुद्धिधनने दोनोंके आग्रह पर दुग्धका पीना स्वीकार किया और मातुश्री आदिको भोजन बना खालेनेको कहा. बुद्धिधनके कहे अनुसार सुन्दरी आदि भोजन बनानेमें लीन हुई तदनन्तर मित्रोंका वार्तालाप शुरू हुआ.

बुद्धिधन—किशोरीलाल जो दो विद्यार्थी बोम्बे पढ़नेको भेजे हैं उनके तथा उनके घरवालोंके खर्चा होचुका है, रुपये भेजने हैं. मेरी श्रद्धा नहीं कि कोई प्रबन्धकर सकूं कल तुम कृपाकर आना और इसका प्रबन्धकर देना.

किशोरीलाल—जो आज्ञा पर इसमें करनाही क्या है आप कहें तो अभी आपके सम्रुरके नाम इस विषयमें लिख दूं.

बुद्धिधन—उन्हें लिखने ज्यों नहीं है इस समय वे स्वयम् धनहीन हो रहे हैं.

किशोरीलाल—तब फिर आप कहांसे रुपये भेज सकोगे ?

बुद्धिधन—औरतोंके बदन परका जेवर बेच कर भेजूंगा और कहांसे आनेके हैं एक प्रतिज्ञा जो की है उसको किसी न किसी तरह पार पाडना कि, नहीं.

बुद्धिधनका इतना कहना था कि जसवन्तसिंह (सहायता करनेका समय पाकर) बीचमें बोल उठा वाह क्यों नहीं आप सहर्ष अपनी प्रतिज्ञाका पालन कीजिये पर औरतोंका ज़ेवर बेचनेकी क्या ज़रुरत है जितने रुपये चाहिये मुझे आज्ञा कीजिये मैं भेज दूं.

जसवन्तसिंह—(दया लाकर) परमात्मा ऐसा समय किसी को न दे, कल पांचसौ रुपये तुम्हें और दूंगा सो उन्हें दे आना.

किशोरीलाल—नही साहव यह पांचसौ रुपये कल मैं लेजाकर दूंगा आपजो चौदह सो रुपये भेजेंगे.

जसवन्तसिंह—क्या हो गया जहां चौदह सौ उसमें पांच सौ और.

किशोरीलाल—नहीं साहव यह नहीं होगा क्या सव सेवा आपही वजाओगे मुझे वजाने नहीं दोगे ?

जसवन्तसिंह—अच्छा तुम्हीं दे देना पर कलही लेजाकर दे देना ऐसा न हो कि किसी तरहकी तकलीफ हो.

किशोरीलाल—अपने वैठे हुए तकलीफ क्यों होने लगी ? इस प्रकार वार्तालाप करके जव दोनोंके अलहदा होनेका स्थान आया, अपना २ रास्ता लिया.

वाचकवृन्द ! देखिये धीरजका फल कैसा वलवान होता है. बुद्धिधन धीरज रखकर इष्ट रटनमें लीन रहा कि शीघ्रही उसको सहायता मिल गई और फिर जसवन्तसिंह जैसे से जो किसी समय आनन्द भुवनका शत्रु हो रहा था और जिससे सहायता मिलनेकी बुद्धिधनको स्वप्नमें भी आशा नहीं थी. धन्य है इनकी धीरज और मित्रताको.



कि, आपकी यह स्थिति है तो मुझे उचित है कि, मैं आपको सहायता करूं जितने रुपये दर्कार हों, आज्ञा कीजिये, ला दूं.

बुद्धिधन—(दोनोंको धन्यवाद देता हुआ) मैं इसमें कुछ नहीं कह सकता इस समय एक हज़ार रुपये बोम्बे भेजने हैं तथा चारसौ रुपये उनके घरवालोंको देने हैं जो चाहे भेज दे और मेरे खाते लिखे. व्याज सहित यदि मैं जिन्दा रहा तो दे दूंगा नहीं तो यह मेरा आनन्द भुवन देगा.

जसवन्तसिंह—अरे साहब यह आप क्या कह रहे हैं ? इतना कल्याण हमाराही सही. मैं कलही इन रुपयोंको भेज दूंगा (किशोरीलालकी तरफ मुखातिब होकर) कल तुम मेरे पास आना और पता ठिकाना बता देना.

किशोरीलाल—आप क्यों तकलीफ उठाते हैं मैं जो हाज़िर खड़ा हूं.

जसवन्तसिंह—तुम ऋण करके लाओगे मेरे घरमें जो पड़े हैं यार इसमें क्या ? मैंने भेज दिये तो क्या ? तुमने भेज दिये तो क्या ? काम होनेसे मतलब है इस बातको छोड़ो (और बुद्धिधनकी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहनेलगा) अब आज्ञा हो फिर हाजिर हूंगा.

बुद्धिधन—आप सहर्ष जा सकते हैं.

बुद्धिधनकी आज्ञा देनी थी कि दोनों उठ रवाना हुए. रास्तेमें जसवन्तसिंह किशोरीलालसे कहने लगा " इस समय बुद्धिधनके खानेकोभी नहीं होगा. "

किशोरीलाल—कहांसे होने लगा इतने दिन औरतोंका ज़ेवर बेचकर गुज़र किया है. अब वहभी ज़रासेमें आकर रहा है.

हनुवन्तसिंह—वास्तवमें आजकी रात्रि ऐसी ही है. आज्ञा हो तो जाकर ले आऊं.

लाहोरीमल—यार किसको लाओगे. ?

हनुवन्तसिंह—जिसे आप कहें.

लाहोरीमल—मोहनकी लड़की नगिनाको ले आओ वह ठीक है उसमें सुन्दरता विशेष हैं.

हनुवन्तसिंह—जो आज्ञा. इतना कहकर चला गया.

उसका जाना था कि तेजमल कहने लगा. नगिना वगिना कुछ नहीं है आपने बुद्धिधनकी स्त्री कनककुमारीको नहीं देखा है उसको यदि आप नज़रसे देख लें तो प्रसन्न हो जाएं. इस शहरमें उसके बराबर कोई सुन्दर नहीं है. क्या कहूं वह उसका क़द, वह उसका नाजुक बदन, वह उसका गोरापन, वह उसकी कमानीसी भौएं, वह उसकी प्रेमसे भरी हुई मृगीसी आंखें, वह उसका सारससा गला, बस जाने उसको विलकुल सांचेमें ढालकर घड़ी है

लाहोरीमल—(तेजमलकी यह बातें सुनकर पागलसा होगया और यह मानकर कि, कहीं कनककुमारी रास्तेमेंही बैठी होगी), फिर उसे लाता क्यों नहीं शीघ्रही ले आ.

तेजमल—क्या रास्तेमें बैठी है जो उठा लाऊं. वह यों थोड़े ही हाथ आनेकी है, बहुत कुछ प्रयत्न किया जाय तो हो सकताहै.

लाहोरीमल—तो फिर यत्न करता क्यों नहीं ? इतने दिन फिर क्या किया यत्न तो करता.

तेजमल—वह हरामज़ादा बुद्धिधनतो मेरे पर आंख निकालता है मुझको तो घरमें आनेभी नहीं देता, यत्न करूं तो कैसे करूं,

प्रकरण ५३.

लाहोरीमल आदिके अनिष्ट कर्म.



त्रिका समय है शुक्लपक्ष होनेसे चंद्रमाने अपनी रोशनी इस प्रकार पृथ्वी पर फैला रक्खी है मानो सफ़ेद चद्दर बिछाई हुई दृष्टिगत हो रही है. गर्मीका ऋतु होनेसे मनुष्यमात्र बाहिरको चार पाई डालकर खुली हवामें सोए हुए हैं. इस समय वह यमुनाभी अपनी एक निराली सुन्दरता दिखा रही है. वह उसका बहनेका झंझनाहट पशु पक्षियोंके रागोंमे मिलकर आशिकोंके मनको आनन्द दे रहा है, उन चंदन आदि सुगन्धित वृक्षोंकी हवासे, जो पासमें खड़े हुए हैं, पानीकी लहरें बनकर अति शोभायुक्त मालूम हो रही हैं. हवाके ज़ोरसे उन वृक्षोंकी सुगंधि दूर २ तक फैल रही है. कोई पुरुष ऐसे भी हैं जो इस समय यमुना किनारे ही बैठकर आनन्द मना रहे हैं. ऐसे समयमें लाहोरीमल, तेजमल, हनुवन्तसिंह आदि लाहोरीमलके मकान पर बाहिरको चांदनी बिछाकर बैठे हुए हैं. और लाहोरीमल चंद्रमाके प्रकाश तथा यमुनाकी शोभाको निहारकर नाना प्रकारसे आनन्द मना रहा है. एक दफ़ा कहता है "यार हनुवन्तसिंह इस समय यदि कोई नव यौवना बालाके साथ पिलङ्ग पर सोता हुआ आनन्द मनाऊं तो कितना शोभा युक्त मालूम हो" जबकि, दूसरी दफ़ा कहता है "ऐसी नवयौवना बाला कहांसे मिले पर यार आजकी रात्रि ऐसी उत्तम होरही है कि बस कुछ कह नहीं सकता आज तो कोई नवयौवना बाला इस स्थान पर होनी ही चाहिये"

तेजमल—आप इस भरोसे न रहिये वह जसवन्तसिंह जो ठहरा. आप ही के काममें देखिये क्रोडीमलको कैसा धूलमें मिला दिया.

लाहोरीमल—यह तो है पर इसका इलाज क्या ? मैंने उसको नौकरीसेभी हटा दिया और बुद्धिधनको यहांसे निकलवा दूंगा फिर वह मित्रता कहांसे रखने पाएगा.

तेजमल—आपने नौकरीसे हटा दिया और बुद्धिधनकोभी निकलवा दोगे पर अभी उसके दो कुएं जो मौजूद है वह नौकरीकी परवाह क्यों करने लगा और आपसे क्यों डरने लगा. क्या वह उन कुंओंसे सहायता नहीं करेगा ?

लाहोरीमल—अच्छा उन्हे खालसे करनेका लिख दे.

तेजमल—जो आज्ञा.

तेजमलका इतना कहना था कि हनुवन्तसिंह नागिनीको ले आया जिसे लाहोरीमल अपनी नज़रके सामने पाकर अति प्रसन्न हुआ और आनन्द मनानेकी लालसामें तेजमल आदिको घर जानेकी आज्ञा दी. आज्ञानुसार दोनों उठ रवाना हुए. उनका जाना था कि, लाहोरीमलको कनककुमारी याद आई और हनुवन्तसिहको आवाज़ देकर वापिस बुलाया तथा एकान्तमें लेजाकर कहने लगा " यार नागिनासे भी बुद्धिधनकी स्त्री अति रूपवान है. उसको किसी तरह लानेका यत्न करो जब तुम्हारी बहादुरी है.

हनुवन्तसिंह—(कठीन काम समझकर) ठीक है साहब ! यत्न करूंगा पर इसमें सफलता प्राप्त करना मुश्किल है वह सति जो ठहरी.

लाहोरीमल—अरे काहेकी सति, खाने तकको तो मिलतानहीं जरूर वह कुआचारणी बनकर धन-उपार्जन करके अपना गुज़र

हनुवन्तसिंहको कहिये वह अपनी चटपट लगाएंगे. आजकल वे रोटी टुकड़ेके मोहताज हो रहे हैं. थोड़ा बहुत देने पर काम बन जाएगा.

लाहोरीमल—ठीक है हनुवन्तसिंहको कहूंगा. पर तूभी यत्न करना. अरे यह तो बता अब बुद्धिधन साला मरता क्यों नहीं मैं ने तो महिनों गुज़रे सूखा जवाब दे दिया कि तुमको यहां जगह नहीं मिल सकती.

तेजमल—इस समय वह बीमार पड़ा हुआ है. आख़िर कभी न कभी बाहिर जावेगा तभी गुज़र चलनेका है. पर कहीं आप उसको यहां जगह मत देना नहीं तो फिर आपको कनककुमारी हाथ नहीं लगेगी.

लाहोरीमल—वाह मैं उस बदमाशको जगह क्यों देने लगा ? उसे यहांसे निकालनेका यत्न नहीं करूंगा. अब मुझे कनककुमारीसे मित्रता करनेकी है.

तेजमल—यह ठीक है पर कनककुमारीसे मित्रता कर लेनेके बादभी उसे जगह मत देना नहीं तो वह फिर आपको धक्का मारे विना कदापि नहीं रहेगा.

लाहोरीमल—ठीक कहा क्या मैं सांपको दूध पिलाने लगा ?

तेजमल—क्या कहूं आज तो मैंने नवीन बात सुनी, जसवन्तसिंहने बुद्धिधनसे मित्रता करली.

लाहोरीमल—क्या कहता है ?

तेजमल—ठीक कहता हूं उसने कुछ रुपये भी दिये है देखना अब वह अपने सबको कैसे ठीक करता है.

लाहोरीमल—अरे वह क्या कर सकता है ?

त्वका नाश करानेको लाहोरीमलको नाना प्रकारकी बातें बनाकर सुझा रहा है. और जसवन्तसिंहके कुएं खालसे करनेकी आज्ञा ली है. किन्तु यह सब खटपट तेजमलके भेदसे खाली नहीं है. इसके ऐसा कहने और करनेका यह कारण है कि, बुद्धिधन जसवन्तसिंहसे मित्रता करके कहीं मंत्री न बन जाए और साथमें इसकाभी नाश हो. इसमें तो संदेह नहीं कि, इन सब खटपटोंका मूल तेजमल है. अतएव हर समय इसका यत्न रहता है कि, लाहोरीमल सदैव मंत्री बना रहे और बुद्धिधनकी अनाथ स्थिति रहकर इधर उधर भटकता फिरे.

प्रकरण ५४.

सरस्वती चिन्ता मग्न.



पहरका समय है. इस समय मनुष्यमात्र अपने२ कार्य में लगे हुए नाना प्रकारके उद्यम कररहे हैं. कोई दुकान पर बैठा हुआ गाहकोंको सामान तोलकर दे रहा है तो कोई, जिसके यहां कपड़ेका व्यापार है, गज़ोंका हिसाब लगाकर कपड़ा ही दे रहा है. कोई योंही पैर पर पैर लगाए हुए गाहककी आशामें बैठा हुआ है, बल्कि किसीको आता देखता है तो बुलाभी लेता है. पर गाहक तो वहीं जाते हैं जहां सौदा सस्ते भावसे तथा ठीक मिलता है. इस समय चम्पापुरी के बाज़ारमें लोगोंकी भीड़भाड़ होरही है और सर्व अपना २ कार्य

करती होगी. क्या है ! तुम कहोगे जितने रुपये दूंगा पर किसी तरहसे उसे मिला दो.

हनुवन्तसिंह—अरे साहब ! वह भीख मागना कबूल करेगी पर यह बात स्वीकार नहीं करेगी. फिरभी यत्न करूंगा. किन्तु जहां तक बुद्धिधन यहां है काम बन नहीं आवेगा. प्रथम आप उसे निकलवानेका प्रबन्ध कीजिये.

लाहोरीमल—अच्छा मै इसका यत्न करूंगा फिरतो तुम कनककुमारीको ला दोगे ?

हनुवन्तसिंह—क्यों नहीं. इतना कहकर चला गया.

लाहोरीमल हनुवन्तसिंह आदिको विदाकर नगिनाके पास गया. और उसके हाव भाव तथा कटाक्ष पर मोहित होकर नाना प्रकारसे आनन्द मनाने लगा. जब लाहोरीमलने देखा कि, दो बज चुके हैं उसे सेवकको साथ देकर विदाकी और निन्द्रा देवीके शरणागत हुआ.

आज बेचारी लाहोरीमलकी स्त्री केतकी अपने पतिके आनेकी आशामें योंही पलङ्ग पर तड़फ रही है.

पाठकगण ! यह नगिना मोहन पंसारीकी कुमारी है. उसकी उम्र सोलह वर्षकी होचुकी है पर मोहनने रुपये लेनेकी लालसामें अभीतक इसका सम्बन्ध नहीं किया है. नगिना किसी क़दर सुन्दर होने तथा उम्र ज़ियादा होने और कुसंगतमें पड जानेसे कुआचरण सीखने पाई है. धिक्कार है मोहनको कि, अपनी प्रिय पुत्रीका विक्रय करनेके अर्थ अभीतक सम्बन्ध नहीं किया है. इस स्थान पर हमारे प्रिय वाचकवृन्दको आश्चर्य होगा कि, तेजमल अभीतक बुद्धिधन आदिके पीछे क्यों पड़ा हुआ है, जो कनककुमारीके सति-

मूर्खदत्त—तुम अपना काम शुरू करदो जमाईजीको अभी पत्र लिख देता हूं.

इतना कहकर मूर्खदत्त पत्र लिखने लगा कि, सरस्वती बाहिरसे आई और उस पत्रको छीन लेकर कहने लगी. “ मुझ निराधार पुत्रीका वध क्यों कर रहे हो ? क्या अभीतक ज्ञान नहीं हुआ ? तुम उस चाण्डालका लग्न किससे करोगे ! मैं कह जो चुकी कि, कदापि उस वृद्ध जीर्णसेठसे अपना लग्न कदापि नहीं करूंगी.

मूर्खदत्त—(यह समाचार सुनकर बावला बनकर) पुत्री यह तू क्या कह रही है ? क्या बिलकुल ही मेरी आज्ञाका उल्लंघन करनेको तत्पर हुई है ? मूढ न बन ज़रा विचार कर.

सरस्वती—इतने दिन ख़ूब विचार किया. विचार करके ही कहती हूं कि, मैं कदापि उससे लग्न नहीं करूंगी. यदि विचार न करती तो कभीकी आपके धोखेमें आजाती.

कुटिला—देखो विचार वाली जो शरम खाकर माता पिताके सामने प्रति उत्तर कर रही है. जा डूब मर.

सरस्वतीको कुटिलाके कहने पर क्रोध चढ आया और आंखें बनाकर कहने लगी “ मैं डुबकर क्यों मरने लगी, ! मरेगी तू जो अनिष्ट कर्म कर रही है. ”

बस फिर कुटिला क्या बोल सकती थी चुपचाप बैठी रही. केवल इतनाही कहा “ तू जाने और तेरा पिता जाने. मुझे इससे क्या ? ” कुटिलाका चुप होना था कि, मूर्खदत्त कहने लगा. “अरे पुत्री तू इस तरह क्या बोल रही है ? सीधी मान जा नहीं तो बर-

कर रहें हैं आज मूर्खदत्तभी कार्य वश हाथमें कागज़ ले इधर उधर फिर रहा है. और चाहता है कि, कोई पण्डित मिले और सरस्वतीका लग्न दिखाऊं. पर साथमें इसको इस वातकी भी चिन्ता होरही है कि, यदि सरवस्वतीने लग्न नहीं किया तो मुश्किल होगी. किन्तु यह निश्चयकर कि, वह कभी भी इन्कार नहीं करेगी यदि करेगी तो जबरदस्ती लग्न करना पड़ेगा, रुपये लेकर सम्बन्ध जो करादिया है? फिरते फिरते मूर्खदत्तको एक वृद्ध जोशी मिल गया उसको वह कन्याकी जन्म कुण्ड़ली देकर कहने लगा. " इनका लग्नदिन वतादो जोशीने दोनोंकी जन्म कुण्ड़ली ली और देखकर तथा हाथों पर अपना गणित लगाकर कहने लगा " आषाढ़ शुक्लपक्षकी पूर्णिमाका लग्न श्रीकार आता है. " मूर्खदत्तने यह लग्न दूरका समझा और जोशीसे कहने लगा. " कहीं दस पंदरह दिनमें कोई लग्न नहीं आता है ? " किन्तु जोशी तो उसीको ठीक कहने लगा. लाचार मूर्खदत्त जोशीको रुपया नालियर दस्तूरीका देकर अपने घर लौट आया और अपनी मियासे यह हाल कह सुनाया.

कुटिला—ठीक है वही सही क्या है ? ड़ेढ़ महीना रहा है. वातों २ में निकल जाएगा और तव तक कामभी हो जाएगा. नजदीकमें आता तो मैं अपना कार्य कैसे करने पाती. पर यहतो कहो लग्न है तो ठीक ? कहीं ऐसा न हो कि सरस्वती आनाकानी करने लगे ?

मूर्खदत्त—लग्न अति श्रेष्ट है. वह कदापि आनाकानी नहीं कर सकती.

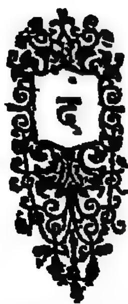
कुटिला—वस यही चाहिये. जमाईजीको उत्तर दे दीजिये और मुझे कहिये सो काम काज शुरू करूं ?

देर लगेगी. किन्तु आत्म हत्या करनेमें महा पाप है. उसको मैं कैसे करने लगी ? अरे इसमें पाप काहेका जब कि मैं एक शुभ कार्यके लिये करूंगी. सतिका तो काम ही है कि, अपना सतित्व बचाने आदि के लिये यदि कोई सहारा नहीं होवे तो आत्म हत्या करे. अतएव मैं सहर्ष इसको करूंगी. पर उस वृद्धसे लग्न करके अपने जन्मको कदापि भ्रष्ट नहीं करूंगी. पर हे करुणानिधान ! यह सर्व कार्य तेरी सहायता विना पार पड़ नहीं सकता. इस अनाथ निराधार बाला पर दया लाना तेराही काम है. "

सरस्वती इस तरह अपने मनमें चिन्ता करती हुई अपने इष्टको स्तुति कर रही है. आज मूर्खदत्त तथा कुटिला सरस्वतीसे बिलकुल विमुख होगये हैं और उसको बुलाते तक नहीं. पर सरस्वतीभी कायर न होकर अपने दुःखके दिन व्यतीत कर रही है.

प्रकरण ५५

बुद्धिधनको देश निकाला.



स बजेका समय है. इस समय अहलकारलोग दौड़२ कर अपने काम पर जा रहे हैं. यह समय आम दरबारका होनेसे राजासाहबनेभी अपना आगमन दरबार हॉलमें कर रक्खा है. पासमें लाहोरीमल आदि बैठे हुए राज्यकार्यकर रहे हैं. इतनेमें डाक आई. सर्व अपनी२

जोरीसे तेरा लग्न उसके साथ किया जायगा बोल फिर तू क्या करेगी ? ”

सरस्वती—मरगया कोई वरज़ोरीसे लग्न करने वाला. यदि आप वरज़ोरी करोगे तो प्राण रहित होते कौनसी देर लगती है ?

मूर्खदत्त—ठीक है, मैं भी देखूंगा कि, तू उस समय क्या करती है. लग्न तो तेरा उसीके साथ करूंगा. और इस तरह कहकर पत्रको लिखकर रवाना किया.

पत्रका रवाना करना था कि, सरस्वती बिलकुल चिन्तारूपी सागरमें डूबकर आंसू रूपी जलसे स्नान करने लगी और नाना प्रकारके तर्क वितर्क उसके हृदयमें उत्पन्न होने लगे. क्या मेरा लग्न उस बलहीन वृद्ध जीर्णसेठसे होगा ? क्या मेरे पिताको ऐसा अनिष्ट करते दया नहीं आती ? क्या मेरा नाश होजायगा ? क्या मैं थोड़े ही दिनोंके लिये इस संसारमें जीने पाऊंगी ? क्या मुझे आत्म हत्या करना पड़ेगा ? क्या यह मेरी समझ, यह मेरा हुनर, यह मेरा ज्ञान, किसीकाम न आकर चला जायगा ? इसमें तो संदेह नहीं कि, यह दुष्ट पिता मेरा लग्न उस वृद्धसे करेगा. उसको तनिकभी दया नहीं आएगी. यदि उसके हृदयमें दया होती तो हाथोंसे ऐसा क्यों करता ? किन्तु चाहे मेरा प्राण क्यों नहीं चला जाए, चाहे मुझे आत्म हत्या क्यों न करनी पड़े, चाहे मुझे भारीसे भारी दुःख क्यों न उठाना पड़े, चाहे मेरा पिता मुझको नग्न करके घरसे बाहिर क्यों न निकाल दे, मैं उसे स्वीकार नहीं करूंगी. पर यदि मेरे पिताने वरज़ोरी करके मेरा लग्न उस चाण्डालसे करादिया तो फिर मेरा क्या वस चलेगा ? अरे इसमें क्या ? यदि वरज़ोरी करेगा तो जिव्हाको दांतोंसे काटकर आत्म हत्या करते कौनसी

लेकर बुद्धिधनके लिये देश वाहिर होनेका हुक्म लिख दिया और सेवक द्वारा उसके पास रवाना किया.

दो बजेका समय है. बुद्धिधनको अब आराम होचुका है. इस समय वह अपने कमरेमें इष्ट मित्र जसवन्तसिंह तथा किशोरीलालके साथ बैठा हुआ वार्तालाप कररहा है. कि, इतनेमें वह सेवक आपहुंचा और उस हुक्मको बुद्धिधनके हवाले किया. बुद्धिधन हुक्म पाकर मनही मन कहने लगा कि, "क्या कोई और कष्ट भोगना बदा है? जो आज मेरे लिये मंत्रीका हुक्म आया है." और लिफाफेको खोलकर हुक्मको पढ़ने लगा. जब वह पढ़ चुका उस सेवककी तरफ़ दृष्टि करके कहने लगा कि, मन्त्रीजीको हमारा प्रणाम कहना और कहदेना कि, बुद्धिधन ऐसा नहीं है कि, आपके हुक्मका अपमान करे, सहर्ष तामील करेगा, सेवक यह उत्तर पाकर विदा हुआ, तदनन्तर जसवन्तसिंह कहने लगा, भाई साहब आज ऐसा हुक्म क्या आया है कि, जिसकी आप सहर्ष तामील करेंगे?

बुद्धिधन—(चिन्ता करता हुआ) हुक्म तो विलकुल बुरा है. पर मैं उसको वह जवाब न देता तो और क्या देता? (हुक्मको जसवन्तसिंहके हाथमें देते हुए) लो तुमभी पढ़ लो.

जसवन्तसिंहने उस हुक्मको लेकर पढ़ा और क्रोधित होकर कहने लगा, "हे दुष्ट लाहोरीमल! क्या उम्र भर तेरे ऐसे काम रहेंगे? क्या वेचारे बुद्धिधन जैसे अनाथ बालकके लिये यह हुक्म?"

जसवन्तसिंहका इतना कहना था कि, किशोरीलालनेभी उस हुक्मको लिया और इस तरह पढने लगा.

बुद्धिधन,

तुम आजकल प्रजावर्गको बहकाते फिरते हो और उनके

डाक खोलकर पढ़ने लगे. राजासाहबने आजकी डाकमें एक अर्ज़ी अजीब पाई और मनही मन कहने लगे, " इस अर्ज़ीका लिखने वाला कौन होगा ? क्या बात है कि, राज्यकी गुप्त बातें बाहिर पड़ने लग गई हैं ! अवश्यमेव आजकल सर्व अविश्वास पात्र हो रहे हैं. पर मंत्रीको पूछूं तो क्या उत्तर देता है ? और उस अर्ज़ीको लाहोरीमलके हाथमें देकर कहने लगे. यह क्या बात है पढ़कर उत्तर दो.

लाहोरीमलने उस अर्ज़ीको लेकर पढ़ी और प्रथम मनही मन विचार करने लगा कि, " यह बात कैसे बाहिर पड़ी. चाहे जो हो, यह जो लिखता है सर्व सत्य है. अर्ज़ीके अक्षर (अर्ज़ीको देखते हुए) भी पहिचानमें नहीं आते. पर क्या हर्ज है मैं यह सब खटपट बुद्धिधनकी बताऊं. " राजासाहबसे प्रार्थनाके रूपमें कहने लगा पृथ्वीनाथ ! यह तो मैं नहीं कह सकता कि, बात बाहिर कैसे पड़ी. पर मुझे यह खटपट सब बुद्धिधनकी मालूम होती है.

राजा—बुद्धिधन ऐसी खटपट क्यों करने लगा ?

मंत्री—केवल मुझे बदनाम करनेको. यदि आप उसको थोडे दिनके लिये देश बाहिर करदें तो फिर ऐसी अर्ज़ी आप कभी भी नहीं पायेंगे.

राजासाहब बुद्धिधनको उसके पिता जैसा मानकर आग बबूला होगए और कहने लगे, क्या अभीसे ऐसी खटपट करने लगा ? यदि ऐसा है तो शीघ्रही उसको देश बाहिर करदो.

लाहोरीमल यह हुक्म पाकर तथा अपने कार्य में सफलता समझकर मनही मन प्रसन्न हुआ और शीघ्रही हाथमें काग़ज़ क़लम

आपका शरीरभी बिलकुल आरोग्य नहीं हुआ है. आप शीघ्रही कैसे जा सकेंगे ?

बुद्धिधन—चाहे जैसे हो किसी न किसी तरह आज्ञाका पालन करना है.

जसतन्तसिंह—आप सहर्ष जाइए परमात्मा आपका सहायक है. पर कृपाकर यह तो कहें कि, क्या घरवालोंको साथ लेजाओगे ?

बुद्धिधन—मेरी माता तो इस समय यहां है नहीं. अपने पिताके घर गई हुई हैं. घरवाली जो है उसके लिये आप कहें जैसा किया जावे. मेरे ख्यालमें उसको साथ लेजाना उचित नहीं. वह मेरे साथ कहां २ फिरेगी ?

जसवन्तसिंह—मेरीभी यही राय है. आप अपनी घरवालीको यहांही रहने दें.

बुद्धिधन—रहनेको तो रहेगी पर उसकी खबर फिर आपलोगोंको लेना होगा.

जसवन्तसिंह—वाह ! क्यों नहीं मैं उनको अपनी सहोदर भगिनी समान पालूंगा. आप उनका किंचित् विचार न कीजिये. कहिये सवारीका क्या इन्तिज़ाम है ? घोड़ा मौजूद है ले जाइये.

बुद्धिधन—आपको घोडा कहांतक ले जाऊंगा ! पैदल जाना चाहता हूं.

जसवन्तसिंह—अरे साहब यह कभी हो सकता है मैं आपको अपना घोड़ा नज़र करता हूं. सहर्ष उसे ले जाइये.

बुद्धिधन—क्या आपका घोड़ा ले जानेमें आपको तकलीफ नहीं होगी ?

दिलमें अशान्ति फैलानेके हेतु बुरी तरहकी अर्जी दिलवाते हो, जिससे तुम्हारा यहां रहना उचित नहीं, अतएव राजा साहबकी आज्ञानुसार तुमको हुक्म दिया जाता है कि, चोवीस घंटेके अन्दर विश्वेश्वर नगर छोड़कर देश बाहिर होजाओ वरना तुम्हारे हकमें ठीक नहीं होगा.

राजमहल	}	लाहोरीमल.
ता० १९-८.		मंत्री.

अहो ! यह कैसा हुक्म ! किशोरीलाल उस हुक्मको इस तरह पढकर कहने लगा, " क्या मंत्रीजी बेचारेके बिलकुल ही पीछे पड़े हुए हैं ? क्या है साहब ! इस हुक्मकी तामील आप मत कीजिये. शीघ्रही राजा साहबको हाथ जोड़कर इस विषयमें अर्ज कीजिये और कहिये कि, मेरे लिये यह जुल्म क्या ? पर यहतो कहिये क्या आपने किसीकी कोई अर्जी लिखी या लिखावई है. "

बुद्धिधन—अरे किशोरीलाल क्या कहता है ? जन्म लेकरके कभी अर्जी नहीं लिखी है. और म कहांसे लिखता खुद जो मुशीबतमें फंसा हुआ हूं. किसीका दोष नहीं है मेरे कर्मही ऐसे हैं.

किशोरीलाल—यदि ऐसाही है तो आपको राजा साहबके पास जाकर अर्ज करनी चाहिये.

बुद्धिधन—वह मेरी अर्ज क्यों मानने लगे और मुझे उचितभी नहीं कि, उन प्रतापी महाराजाकी आज्ञाका उल्लंघन करूं जिनके अन्नसे यह मेरा शरीर बनने पाया है.

जसवन्तसिंह—वास्तवमें राजा साहबकी आज्ञाका उल्लंघन नहीं करना चाहिये वह जो अन्नदाता है. पर भाई साहब ! अभीतो

कनककुमारी—आपने तो किसीका मुंहभी नहीं देखा फिर यह कलङ्क कैसा ? मालूम होता है कि, उस दुष्ट लाहोरीमलकी यह सव खटपट है. अरे चाण्डाल ! तू मर क्यों नही जाता कि, जो मेरे पवित्र स्वामीको कलङ्कित करके देश वाहर करनेको तत्पर हुआ है.

बुद्धिधन—अरे उस वेचारेको क्यों वोलती है ? भाग्यमें जो ऐसा वदा है.

कनककुमारी—क्या आप कल शीघ्रही जाएँगे.

बुद्धिधन—वाह क्यों नहीं.

कनककुमारी—(रोती हुई) मैं फिर यहां क्यों रहने लगी ?

बुद्धिधन—तुम्हें तो यहांही रहनेका है तुम मेरे साथ चलकर कहां कष्ट उठाओगी ?

कनककुमारी—हे नाथ ! यह आप क्या कहते हैं ? आपके सिवाय मेरे इस संसारमें और क्या है ? मुझको कष्टका तनिकभी ख़याल नहीं है. मैं आपके साथ चलकर हर तरहका कष्ट सहूंगी. कृपाकर मुझेभी साथ ले जाइये. यह मेरे अहोभाग्य कहां है कि, ऐसे दुःखके समय आपके साथ रहकर सेवा करूं.

बुद्धिधन—वास्तवमें तुम्हारा कहना सर्व ठीक है. पर तुम्हारा मेरे साथ चलना उचित नहीं. तुम सानन्द यहांही रहो और अपना अमूल्य समय धर्म्म ध्यान आदिमें व्यतीत करो.

कनककुमारी—(रोती हुई) नही स्वामीनाथ ! इस दासीको आप अकेली यहां किसके सहारे छोड़ जाते हो. न मालूम दुश्मन पीछेसे क्या २ कष्ट देंगे कृपाकर मुझे साथ ले जाइये,

जसवन्तसिंह—कोई तकलीफ नहीं. कहिये आप कब जाएंगे !

बुद्धिधन—कल भोजन करके जानेका विचार है.

जसवन्तसिंह—अच्छा तो अब आज्ञा हो ? कल सुबह हाज़िर होऊंगा.

बुद्धिधन—सानन्द आइये.

बुद्धिधनका इतना कहना था कि, दोनों मित्र उठ रवाना हुए. उनके जातेही कनककुमारी आ उपस्थित हुई और अपने स्वामीसे कहने लगी, आज मंत्रीजीका आदमी एक काग़ज़ लेकर आया था वह क्या था ? क्या कोई शुभ समाचार है ?

बुद्धिधन—(जरा विचार कर) कुछ नहीं कल मुझे गांव जानेका है.

कनककुमारी—क्या नौकरी लगी ?

बुद्धिधन—नहीं तो योंही जाना है

कनककुमारी—बिना नौकरीके फिर जानेकी क्या ज़रूरत है ?

बुद्धिधनने देखा कि, अपनी प्रियासे बात छुपाना फजूल है और कहने लगा, " मेरे लिये देश निकालका हुक्म आया है. "

इतना सुनतेही कनककुमारी फुट २ कर रोने लगी और अपने स्वामीको कहने लगी, आपने ऐसा कौनसा अपराध किया जो आपके लिये ऐसा हुक्म ?

बुद्धिधन—कोई अपराध नहीं किया. केवल अनिष्ट ग्रहोंका प्रताप है जो झूठा कलङ्क लग रहा है.

कनककुमारी—आप पर क्या कलङ्क लगाया ?

बुद्धिधन—ऐसा कोई कलङ्क नहीं है. केवल यह कहा जाता है कि, मैंने प्रजावर्गको बहका कर राजा साहबको अर्ज़ी दिलवाई है और जिसमें प्रजाकी अशांतिका कारण माना जाता है.

लिखा हुआ है. उसको भला कौन रोक सकता है. आप धीरज रखिये. यह दिनभी निकल जाएंगे.

जसवन्तसिंह—धन्य है आपकी बुद्धिको! जो दुश्मनोंको आप दुश्मन नहीं समझते हैं. आपके उत्तम विचारोंको देखते हुए मालूम होता है कि, परमात्मा शीघ्रही आपका भला करेगा और देशाटनमें भी आपको कोई कष्ट नही होगा. (बग़लमेसे एक हजारकी अशर-फियां निकालकर) लीजिये और सिद्ध करिये ?

जसवन्तसिंहके थैलीका रखना था कि, किशोरीलालने भी पांचसौ रुपयेके नोट जेबमेंसे निकालकर रक्खे.

बुद्धिधन—(उनको वापिस करते हुए) अरे भाई मैं इन्हें लेकर क्या करूं. वापिसले जाइये. मुझे जुरुरत नही है. आखिर में परदेश जाकर कुछ कमाऊंगा कि नहीं ?

जसवन्तसिंह—इसमें तो संदेह नहीं कि, आप अपनी बुद्धिके अनुसार जहां जाएंगे कमाएंगे. पर घरसे ख़ाली हाथ जाना अच्छा नहीं. न मालूम रोज़गार लगनेमें विलम्ब हो. हम दोस्तों पर कृपा कर इसे स्वीकार करिये.

बुद्धिधन—यह तो सब ठीक है पर इतने रुपयेको लेजाकर क्या करूंगा ?

जसवन्तसिंह—यह कोई जियादा नहीं हैं. आप अमीर जो ठहरे.

बुद्धिधन—अरे मैं अमीर कहांसे होने लगा रोटी टुकड़ेका जो मोहताज हो रहा हूं ?

जसवन्तसिंह—हमारे सामने तो अभीतक आप अमीर ही हैं. और अमीर ही रहोगे. भिन्नभावको छोड़िये और हमारी भेट स्वी-

बुद्धिधन—किसीकी मजाल है जो तुम्हें कष्ट दे. जसवन्तसिंह किशोरीलाल जो यहां बैठे हैं. तुम सिवाय इन दोनोंके किसीका विश्वास मत करना और यहां कोई कष्ट दे तो इनकी सहायता लेना वे सर्व प्रकार तुम्हारी सहायता करेंगे.

कनककुमारी—(अपने स्वामीकी आज्ञाका उल्लंघन करना उचित न समझ) जो आज्ञा.

इस प्रकार वार्तालाप कर लेनेके बाद दोनोंने भोजन किया और जानेकी तैयारीमें लगे.

प्रभातका समय है. अभी आठ नहीं बजे कि, जसवन्तसिंह अपना घोडा लेकर आ उपस्थित हुआ. किशोरीलालभी आ पहुंचा है. इस समय बुद्धिधन अपने मन्दिरमें पूजन कर रहा है. जब वह पूजन आदिसे निवृत्त हुआ, शीघ्रही बाहिर आया और अपने दोस्तोंसे मिला. और उन्हें अपने कमरेमें लेजाकर कहने लगा, भाई आजमें आप लोगोंसे अलहदा होता हूं. परमात्माकी कृपा होगी तब मिलने पाऊंगा यह आनन्दभुवन आपपर छोड जाता हूं. आशा है कि, आप इसको अपना घर समझकर रक्षा करेंगे.

जसवन्तसिंह—आप इसका किंचित् फिक्र न कीजिये न हमें इसका फिक्र. केवल आपकी जुदाई कारज्ज इस समय हमारे दिल को घायल कररहा है. क्या करूं किसी समय लाहोरीमल मेरा मित्र था नहीं तो अभी उसका शिर उड़ाकर आपके समीप लाकर रखता.

बुद्धिधन—वाह साहब! आप समझदार हो करके यह क्या कह रहे हैं? लाहोरीमलका इसमें कोई दोष नहीं है. भाग्यमें मेरे यह सङ्कट

वाचकवृन्द ! इस बातके जाननेकी उत्कंठा करते होंगे कि, जसवन्तसिंहने अपने कुएं खालसे करनेका समाचार बुद्धिधनको क्यों नहीं कहा ? कारण इसका मात्र यही था कि, बुद्धिधन उसे सुनकर चिन्ता न करे और अशरफियोंके लेनेमें इन्कार न कर जाए. अहा ! धन्य है ऐसे मित्रोंको कि, जो रुपये देनेके साथमें ऐसे उत्तम विचार करते हैं.



प्रकरण ५६.

सरस्वतीका जय.



स दिनसे सरवतीने अपना लग्न होनेका समाचार पाया है, वेचारी मनही मन नाना प्रकारसे चिन्ता कर रही है आज वह उसका नाजुक बदन दुवला हो गया है. वह उसका सुन्दर मुख कुमला गया है. और सारे वदनमें ललाईके स्थानपर पीलापन दृष्टिगत हो रहा है, वह चाहती है कि, कोई उपाय ऐसा हाथ लगे कि आत्महत्या न करनी पडे और लग्नभी न हो. और अपनी सहेलीयोंके सामने अपना दुःख गा रही है. पर उसे कोई उपाय हाथ नहीं लगा और ज्यों २ लग्नका दिन निकट आता जाता है त्यों २ उसका खून उडता चला जा रहा है.

प्रभातका समय है. इस समय मनुष्य मात्र निद्रादेवीसे जाग्रत होकर नित्यकर्म कर रहे हैं. ऐसे समयमें बुद्धिधन चम्पापुरी शहर

कार करिये यदि आप सब रुपये साथ ले जाना उचित न समझें तो थोडा बहुत घरमें दे जाइये.

अपने मित्रके आग्रह पर बुद्धिधनने मोहर तथा नोट उठालिये और उन्हें बैठनेका कहकर भोजन करने गया. सानन्द भोजन करके तथा कनककुमारीको मोहरें दे, वापिस अपने मित्रोंके पास आपहुंचा और कपड़े पहिनने लगा.

कपड़े पहिनते हुए बुद्धिधन कहने लगा, आपकी इस कृपाका मैं अति कृतज्ञ हूं. आशा है कि, इसी तरह मुझे तथा मेरे इस आनन्द भुवनको समझोगे तथा जो मैं पत्र भेजुं उसका उत्तर सहर्ष दोगे.

किशोरीलाल—वाह क्यों नहीं ! आप यहांका किंचित् फिक्र न कीजिये ? अपने शरीरका यत्न करना ?

बुद्धिधन—वह मेरा इष्ट सर्वकी रक्षा करेगा.

जसवन्तसिंह—मेरा दिल कह रहा है कि, आप शीघ्रही लौटेंगे.

बुद्धिधन—आपकी ज़बान मुबारक हो.

जब बुद्धिधन कपड़े पहिन चुका, उठकर अपने मित्रों सहित नीचे आया और मन्दिरमे जा अपने इष्टके दर्शन कर सदर दरवाजेपर आया और घोडेपर सवार हो तथा आनन्द भुवनको प्रणाम कर विदा हुआ. इस समय दोनों मित्र उसके साथ चलते हुए बातें कर रहे हैं. जब वे शहरके बाहिर पहुंचे हैं बुद्धिधनने उनको तथा शहरको प्रणाम कर अपने घोड़ेको ज़ोरसे चलाया. थोड़ीही देरमें जसवन्तसिंह तथा किशोरीलालकी नज़रसे अदृष्य होगया.

आज जसवन्तसिंह, किशोरीलालको बुद्धिधनकी जुदाईका बहूत रञ्ज है पर कोई उपाय न होनेसे लाचार होकर अपने २ घर चले गये.

पहिली बुद्धिधनको एक नवीन पुरुष जानकर और मनही मन प्रसन्न हो, कहने लगी. " क्या कहूं हिन्दके वीरोंका नाश हो गया है जो दुष्ट लोग हम जैसी बालाओंका विक्रयकर वृद्ध पुरुषोंसे लग्न करते हैं. क्या तुम्हारे में कोई वीरता रहगई है जो पूछ रहे हो ? "

बुद्धिधन—बहिन ! तुम्हारे विचारके अनुसार जबकि सब वीरोंका नाश हो गया है तो मेरेमें फिर वीरता कहांसे होने लगी. पर कृपाकर यह तो कहो तुम कौन ज्ञातिसे हो किसकी पुत्री हो तुम्हारा घर कहां है, किसके साथ तुम्हारा सम्बन्ध किया है तथा तुम्हारा लग्न कब होनेवाला है ?

बुद्धिधनके इस प्रश्न पर पहिलीने अपनी तमाम कर्मकथा सुनादी और कहने लगी कि, मेरा पिता बरजोरीसे मेरा लग्न करेगा. कृपाकर ऐसा उपाय बताओ कि मैं इस दुःखसे मुक्त होजाऊं.

बुद्धिधन—(ज़रा विचारकर और मूर्खदत्तको धिक्कार देकर) सरस्वती घबराओमत कृपाकर यह बताओ कि सम्बन्ध करते समय तुमने इन्कार किया था ?

सरस्वती—क्यों नहीं, वस्त्रआभूषण जो आएथे उनको मैंने स्वीकार नहीं किये और अभीतक इन्कार कर रही हूं.

बुद्धिधन—धीरज रक्खो. इसका उपाय समय आए मैं करूंगा. कृपाकर तुम अपना मकान बतादो और यह कहदो कि, तुम्हारा लग्न पूर्णिमाको किस समय होगा.

बुद्धिधनका यह उत्तर पाकर सरस्वती प्रसन्न हुई और उसको उसी समय अपने साथ लेजाकर दूरसे अपना घर बता दिया. और कहने लगी कि, इसी घरमें मेरा लग्न दो बजे रातको होगा. इस

के वाहिर वावडीके पास एक वेरान मकानमें सोता हुआ है. थकावटके कारण अभीतक उठने नहीं पाया है. किन्तु ज्योंही वावडीपर औरतें पानी भरने आने लगी, उनके पैरोंके झंझनाहटसे बुद्धिधन निद्रासे जागृत हुआ और लोटा लेकर वावडीमें गया. वावडीमेंसे लोटा भरकर वाहिर आया कि, वहां दो कुमारी बालाएं खडी हुईं पाईं. जिनमेसे एक दूसरी वालाको कहने लगी " लग्नका दिन निकट आया है, न मालूम मेरी क्या गति होगी? यह तो मैंने अपने मनमें ठान रक्खा है कि, उस वृद्धके साथ मैं अपना लग्न कदापि नहीं करूंगी और मेरा पिता वरजोरी करेगा. अतएव उस समय मुझे आत्महत्या करनी पडेगी. तू मेरी शुभचिन्तिका है, कृपाकर कोई ऐसा उपाय वता कि, आत्महत्या करना न पडे और इस दुःखसे मुक्त हो जाऊं. "

दूसरी—मं क्या उपाय वताऊं? यहांपर सर्व जो ऐसेही हो रहे हैं. पैसा लिये विना अपनी वालाओंका सम्बन्धही नहीं करते.

पहिली—अरे पैसे ले करकेभी युवा पुरुपके साथ सम्बन्ध करे तो कोई वात नहीं. पर वृद्ध पुरुपसे सम्बन्ध कर वालाओंका नाश करते हैं. देखो मेरा नाश होनेमें क्या वाकी है? एक साठ वर्पके वृद्धके साथ मेरा सम्बन्ध किया गया है. क्या इसका कोई उपाय नहीं है? क्या हिन्दु वालाओंका इसी तरह नाश होगा?

इतना कहकर वह वाला फूटर कर रोने लगी. भला बुद्धिधनको उसका रोना क्यों भाने लगा? शीघ्रही उसकी करुणा जनक स्थिति परदया लाकर विलकुल उसके निकट गया और कहने लगा. वहिन कहतो तुझे क्या कष्ट है?

बैठे हुए थे, उन्होंने हाथ पकडकर खडे किये तथा उन्हींके बलपर वृद्धराजको घोडेपर चढ़ाये गए. जब वरराज घोडेपर बैठ चुके, कुटिलाने उनके ललाटमें तिलक किया तथा एक रुपया व श्रीफल वरराजके हाथमें दिया. तदनन्तर वरराजने एक मोंहर तथा पांच रुपये उस सामेलामें डालकर हाथ जोडे और फिर सर्व वहांसे मूर्खदत्तके घरको रवाना हुए. वहांपर वरराजको घोडेपरसे उतारे जाकर चारपाईपर बैठाए गए.

इस समय बेचारी सरस्वती ऊपरको बैठी हुई फुट २ कर रो रही है. और परमात्माकी स्तुति कर रही है. " क्या मेरा लग्न हो जाएगा ? क्या वह पुरुष जो मुझे वावड़ी पर मिला था, इस समय आकर मेरा सहायक नहीं बनेगा ? क्या मुझे आत्महत्या करनी पड़ेगी ? हे प्रभो ! हे करुणा निधान ! ! हे वीतराग प्रभो ! ! ! हे इष्टदेव ! इस समय तू ही मेरा सहायक है. तूही मुझ निराधार बालाको, जो दुःख रूपी समुद्रमे डूबी जा रही है, तारने वाला है "

इतनेमें कुटिला तथा मूंखदत्त उसके पास आए और उससे नीचे चलनेको कहा. पर सरस्वती नीचे क्यों जाने लगी ! रोती हुई कहने लगी, माता पिता ! मुझे नीचे लेजाकर क्या करोगे ! मैं लग्न तो कदापि नहीं करूंगी. " सरस्वतीके इतना कहने पर मूर्खदत्तको गुस्सा आया और कोई विचार न कर प्रथमतो बेचारीके दो लातें मारीं फिर दोनोंने मिलकर उसको घसीटते हुए. नीचे लाए और रीत्यानुसार चुडा तथा कपड़े पहिनाए. जब लग्नका समय निकट आया ओर वरराज विवाह मण्डपमें जाकर बैठ गए, जोशीने कन्याको लानेकी आज्ञा दी. आज्ञानुसार बेचारी सरस्वतीको वह दुष्ट मूर्खदत्त तथा उसकी स्त्री कुटिला घसीटते हुए मण्डपमें ले आए. सर-

वाला पर दया लाकर ज़रूर उद्धार करना. ऐसा न हो कि, मुझे आत्महत्या करनी पड़े.

बुद्धिधन—निश्चय रहो. आत्महत्या करनेकी कोई ज़रूरत नहीं है.

इतना कह तथा सरस्वतीको औरभी धीरज दे, बुद्धिधन अपने मुक़ामपर आया, तदनन्तर नित्यकार्यमें लीन हुआ.

आज आषाढ़ शुक्लपक्षकी पूर्णिमाकी रात्रि है. चंद्रमाने अपना आगमन अस्तमन वेलामेंही कर रक्खा है. इस समय चम्पापुरीमें बडी धूमधाम हो रही है. जीर्णसेठकी बरात वसन्तगढ़से आ गई है और मनुष्य स्थानकी तलाशमें इधरसे उधर सामान लिये हुए जा रहे हैं. गाडियोंपर गाडियों खडी हुई हैं. मूर्खदत्त आदि इस समय उनकी आगत स्वागतमें इधरसे उधर फिर रहे हैं और मकान बता रहे हैं. वरराज आदि शहरके बाहिर सामेलाकी इन्तिजारीमें बैठे हुए हैं. मनुष्य मात्र उनकी वृद्धावस्थाको देखकर हंसी मज़ाक़ कर रहे हैं. किन्तु उन्हें ज़रासीभी शरम मालूम नहीं होती और वहभी लोगोंकी तरफ़ टक टकी बांधकर देख रहे हैं, बल्कि मज़ाक़में उत्तर दे रहे हैं. जब सर्व बरातवालोंने स्थान पा लिया और खा पीकर निपट चुके, मूर्खदत्त आदि सामेला लेकर वरराजको लेने गए. जब सामेला वरराजके पास पहुंचा है, लोगोंकी भीडभाड बहुत हो गई और सब वरराजकी तरफ़ टकटकी बांधकर देखने लगे. तथा मनही मन कहने लगे. " यह कैसा दुष्ट है जो इस वृद्धावस्थामें लग्न करने आया है. क्या आज सरस्वती इससे लग्न कर सदैवके लिये दुःखरूपी समुद्रमें डूबेगी ? " सामेलेका आना था कि, वरराजको उनके पास, जो दो युवा

क्या सम्बन्ध करते समय अपनी संतान पर तनिकभी दया नहीं आई ? क्या तुझे यह मालूम नहीं हुआ कि, साठ वर्षके वृद्ध पुरुष साथ लग्न करनेमें इस बालाको कितना कष्ट होगा ? अरे जीर्णसेठ! तुझेभी धीक्कार है क्योंकि वृद्धावस्थानमें नवयौवना बालाको वरने आया है. क्या तुझे यह मालूम नहीं है कि, यह तेरा दुर्बल शरीर शीघ्रही छुट जाएगा ? फिर इस अबलाका क्या हाल होगा ? क्या तुझे इस बातका तनिकभी ज्ञान नहीं है कि, यह तेरा अन्त समय केवल ईश्वर रटनका है ? सच है तुम्हीं लोगोंके ऐसे अनिष्ट कर्मोंसे यह भारत बलहीन धनहीन तथा दुराचार होरहा है. यह तुम्हारे ही अनिष्ट कर्मोंका प्रताप है कि, आज कोई वीर पुरुष हमारे सामने दृष्टिगत नहीं होता बल्कि सर्व दुर्बल रोगी तथा अज्ञानी नज़र आते हैं. दुष्टो ! ज़रा नीतिका स्मरण करो. निज आत्माको पहिचानो, और ऐसे अनिष्ट कर्म करना छोड़ो, ताकि देशका उद्धार हो.

यह हाल देखकर सब डर गए और मनही मन ख़याल करने लगे कि, यह पुरुष कौन है जो सरस्वतीका सहायक बनकर उपदेश कररहा है. औरोंको तो क्या ग़रज पड़ी जो उस युवासे कुछ कहे. मूर्खदत्त कहने लगा, अरे तू कौन है जो हमारे काममें विघ्न कररहा है. (सरस्वतीको खेंचते हुए) सरस्वतीको छोड़ और अपना रास्ता ले.

युवा—(मूर्खदत्तको हटाते हुए) बस माफ करो इसकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते यदि सरस्वती कहदे कि, मैं इस वृद्धको वरनेको तैयार हूं. तो फिर मुझे कोई हर्ज नहीं है. पर सरस्वती ऐसा क्यों कहने लगी ! वह तो फूटर कर रोने लगी और उस युवासे कहने लगी, कृपाकर इस दुष्टसे बचाओ,

स्वतीने इस समय बहुतेरा चाहा कि न जाऊं और आत्महत्या कर लूं बल्कि दांतोंसे जिव्हाको भी काटी पर कोई असर नहीं हुआ. जोशीजीने उसको घसीटते हुए लानेका कारण पूछा तो मूर्खदत्त कहने लगा कि, केवल शरमके मारे आनेमें आना कानी करती थी जिससे घसीट कर लाए हैं. पर सरस्वतीसे रहा नहीं गया. चटसे कहने लगी, जोशीजी मेरे यहांपर न आनेका कारण मात्र यही था कि, मैं इस पिता तुल्य वृद्ध पुरुषसे लग्न करना नहीं चाहती. क्या आप जबरदस्तीसे इसके साथ मेरा लग्न करोगे ?

जोशी—नहीं तो मैं बरजोरीसे लग्न क्यों करने लगा ? जोशीका इतना कहना था कि, वरराजने अपने हाथमेंसे हीरेकी अंगूठी निकालकर जोशीके हाथमें दी. बस क्या था ? अंगूठी पातेही जोशीजी खुश होगए और जबरदस्तीसे लग्न कराना आरंभ किया.

अभी जोशीजी हस्त मेलन कराने नहीं पाये थे कि, एक युवा पुरुष आ उपस्थित हुआ और सरस्वतीको उठाकर तथा गोदमें लेकर कहने लगा, " बहिन घबरा मत इस पृथ्वी पर कौन है जो मेरे बैठे हुए तेरा एक वृद्ध पुरुषसे लग्न कर सके. " जोशीजी ! धिक्कार है तुमको जो निज धर्मका तनिकभी विचार न कर एक अंगूठीको पाकर सरस्वती जैसी भोली भाली लडकीको सदैवके लिये नाश करनेको तत्पर हुए हो. क्या तुम्हारा यही धर्म्म है ? क्या ब्राह्मण योंही कहलाते हो ? क्या तुमको उसकी आज्ञाके विरुद्ध सरजोरीसे लग्न करना उचित है ? तुम्हारे यह कृत्य देखते हुए तुम ब्राह्मण कहलानेके पात्र नहीं हो. जाओ डुब मरो. अरे मूर्खदत्त ! तुझे धिक्कार है कि, तू एक धनके खातिर सरस्वती जैसी लडकीका विक्रय करके एक वृद्ध पुरुषसे लग्न करनेको तत्पर हुआ है,

आत्माको नहीं पहिचाना ? क्या तुमको यह मालूम नहीं है कि, संसार असार है ? तुम इस समय जो मोहमाया आदिके जालमें फंसकर ललचा रहे हो सर्व वृथा है. इससे तुम्हारी सद्गतिके स्थान पर दुर्गति होगी. यह संसाररूपी जाल तुमको फंसानेको नाना प्रकारसे यत्न करता है. तुम उसका विचार क्यों नही करते:-

(राग. कल्याण)

सार नहिं जग, क्यों ललचावे. । टेर ।
कुटुम्ब कविलो धन सम्पत्ति सव, पग पग प्यारे फसावे. ॥१॥
धन सम्पत्तिसे सत् सुख समझे, अन्त समय क्यों छोडावे. ॥२॥
सत् सुखका नहिं अन्त प्यारे, वेद पुरान वतावे. ॥ ३ ॥
देखत भूला माया जालमें, सत सुख तूही भुलावे. ॥ ४ ॥
लख तू निजको मेरे प्यारे, अन्त प्रेम वढावे. ॥ ५ ॥
जाको खोजत वन वन तुहो, सोही आप वतावे. ॥ ६ ॥
ठाम नहीं चेतन विन प्यारे, अनुभव अचल वतावे. ॥ ७ ॥

जीर्णसेठ ! अव तुमको यही उचित है कि, इस मायावी सुखको जो दुःख समान है छोडो और सचा सुखपानेका यत्न करो.

उस युवाका इतना उपदेश करना था कि, स्वयम् जीर्णसेठ उठ खड़ा हुआ और उसके चर्ण पकड़ कर फौरनही कहने लगा " आजसे मैं तुम्हारा शिष्य वनता हूं. यह सरस्वती मेरी पुत्री समान है. कदापि लग्नकी लालसा नहीं करूंगा वल्कि अपना अन्त समय भक्तिमें व्यतीत करूंगा. पर मूर्खदत्तने इस सम्वन्धके वदले मेरेसे वीस हजार रुपये लिये हैं जो वापिस दिलादो. "

युवा—(वीस हज़ार रुपये सुनकर तथा आश्चर्य युक्त होकर) अरे मूर्खदत्त ! यह तूने क्या अनर्थ किया ! धिक्कार है तुझे ! अव इसके रुपये वापिस कर दे.

मूर्खदत्त—अरे यह तो कदापि ऐसा नहीं कहेगी, 'क्या' मेरा किया हुआ सम्बन्ध टूट सकता है ? कदापि नहीं इसे छोड़दे नहीं तो अभी लाठियां चलेंगी.

युवा—तुमको ऐसा अनिष्ट करनेका कोई अधिकार नहीं है. (डाट बताकर) कौन है जो लाठीको इसके या मेरे सामने कर सके. " देखो यह जाता हूं. मज़ाल है जो कोई मेरे सामने आ-जाए. " इतना कहकर सरस्वतीको ले जाने लगा.

जीर्णसेठने देखा, यह तो बहुत बुरा हुआ. उस युवाको आवाज़ देकर कहने लगा, कोई लाठी नहीं चलाता. कृपाकर इधर तो आओ मेरी बात तो सुनो ?

जीर्णसेठके इतना कहने पर बुद्धिधन वापिस लौटा. तदनन्तर जीर्णसेठ उसे कहने लगा, देखो तुम्हारे इसमें क्या है. तुम्हें हज़ार दो हज़ार रुपये चाहियें तो ले जाओ और इसे छोड़दो.

जीर्णसेठके इसतरह कहने पर सरस्वती अपने मनमें कहने लगी " कहीं जोशीकी तरह यह भी लोभमें न आजाय " पर वह परोप-कारी पुरुष लोभमें क्यो आने लगा ? जीर्णसेठके इस प्रश्नपर क्रोधित हो कहने लगा, यह तो जोशीजी थे जो तुम्हारे लोभमें आगए मैं क्यों आने लगा ? तुम्हारे रुपये तुम्हारे पास रक्खो. यह तो क्या यदि लाखभी दो तो पत्थर समान हैं ? यदि तुम अपनी देहका कल्याण चाहते हो तो लग्नकी आशाको छोडदो. नहीं तो याद रखना तुम्हारी गति बुरी होगी कि उसका सहन करना मुशकिल होगा. तुम्हे शर्म नहीं आती है कि, एक पुत्री समान वालिकाके साथ विवाह करनेको तैयार हुए हो. क्या तुमको उपदेश करने वाला नही मिला ? क्या तुमने अभीतक निज

युवाने अब अपने आपको छुकाना उचित नहीं समझा और कहने लगा " मैं क्रोडीमलका पुत्र बुद्धिधन हूं " ?

क्रोडीमलका नाम सुनना था कि, सबके सब थर २ कांपने लगे और इस अनुचित कार्यकी क्षमा चाहने लगे, जिन्हें बुद्धिधनने सहर्ष क्षमा किया. और मूर्खदत्तको यह कहकर कि " सरस्वतीका सम्बन्ध कहीं मत करना. मैं योग्य वर देखकर करूंगा " सरस्वतीको छोडकर तथा उसकी जय मनाता हुआ अपने डेरेपर लौट आया. और सुबह होतेही अपना रास्ता लिया, उधर प्रभात होतेही जीर्णसेठ शर्माता हुआ तथा एक तरह हर्ष मानता हुआ, बरात सहित अपने नगरको रवाना हुआ. और चम्पापुरीके सर्व मनुष्य यह समाचार पाकर सरस्वतीकी जय मनाने लगे.

प्रकरण ५७.

बुद्धिधनकी निष्काम भक्ति.



भातका समय है वर्षाऋतु होनेके कारण पानी बरष रहा है. वर्षाका आगमन होनेसे मोर आदिनेभी अपना कोलाहल शुरू कर रक्खा है. इस समय सारीकी सारी पृथ्वी हरीही हरी नजर आ रही है. स्थान २ पर अद्भूत किस्मके पौदे निकलकर उसकी सुन्दरताको और दिपा रहे हैं उन पौधोंपरके रङ्गविरङ्गे फूल इस समय अति शोभायुक्त मालूम हो रहे है. ऐसे समयमें बुद्धिधन कई दिनोंसे भटकता हुआ

मूर्खदत्त--अरे अब मैं रुपये वापिस कैसे देने लगा ? मैंने सरस्वतीका सम्बन्ध जो कर दिया ?

जीर्णसेठ--सम्बन्ध करनेसे क्या हुआ तुम्हारी पुत्री जो लग्न करना नहीं चाहती ?

सरस्वती--अब रुपये दे क्यों नहीं देते ? यदि जब कि मैंने रीत भांत आई और स्वीकार नहीं की, इन्कार करके रुपये वापिस कर देते तो कितना उत्तम होता.

मूर्खदत्त--बैठी रह. अपनी चतुराई पीछे बताना (इस युवाकी तरफ़ मुख़ातिब होकर) सुनोतो बहुतसे रुपये खर्च होगए कहांसे लाकर दूं ?

युवा--तुम्हारे पास कितने रुपये बचे हैं ?

मूर्खदत्त--(नीयत बिगाड़कर) दस हजार रुपये बचे हैं.

युवा--अच्छा दस हज़ार तथा इनके वस्त्र, आभूषण, वापिस देदो. बाकी यदि जीणसेठ लेना चाहें तो अभी तो मेरे पास नहीं है, मिलने पर दे दूंगा.

जीर्णसेठ--अरे साहब ! मैं आपसे क्या लेने लगा.

युवा--नहीं तो यदि तुम चाहो तो मैं देनेको तैयार हूं पर इस समय देनेसे लाचार हूं.

जीर्णसेठ--आप कौन हैं, कृपाकर बताओगे ?

युवा--मैं एक चलता फिरता मुसाफिर हूं. यदि विश्वास न हो तो मेरेसे तहरीर करवा लो.

जीर्णसेठ--मैंने तहरीर करवानेकी गरज़से नहीं पूछा है, केवल आपको जानना चाहता हूं.

जानु बले काउस्सग रह्या, विचर्यो देश विदेश;
खडा खडा केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश.
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वर्षी दान,
कर कंडे प्रभु पूजना, करता भवि बहु मान.
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनंत;
भूजा बले भवजल तर्या, पूजो खंध महंत.
सिद्ध सिला गुण उजली, लोकांते भगवंत;
वसीया तेणे कारण प्रभु, शारी शोखा पूजंत.
तीर्थंकर पद पुन्यथी, त्रीभुवन जन सेवंत;
त्रीभुवन तीलक समा प्रभु, भास तिलक जयवंत.
सोल पहर दइ देशना, कंठ विवर वर तुल;
मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिणे गले तिलक अमूल.
हृदयकमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष;
हीम देह वन खंडने, हृदय तिलक संतोष.
रत्न त्रीयगुण उजवली, सफल सुगुम विश्राम;
नाभीकमलनी पुजना, करतां अविचल धाम.
उपदेशक नव तत्वना, तिणे नव अंग जिणंद;
पूजे भवी बहु मानथी, कहे शुभ वीर मुणींद "

जब पूजा कर चुका गभारेसे वाहिर आकर हाथ धोए और मूर्तीके सामने वैठकर विधिपूर्वक एकाग्र ध्यानसे चैत्यवंदन करना शुरू कियाः—

(चाल मारवाडी पनिहारीकी)

चिंतामणि पारस प्रभु जिनदेवाजी, चिंता मनकी चूर पारसजी।
भटकत भटकत आवियो जिनदेवाजी, सेवक तुमारे हजूर पारसजी॥१॥

निवड जंङ्गलमें आ पहुंचा है जो वर्षाऋतुके कारण औरभी फला फुला दृष्टिगत हो रहा है. वह वहते हुए नाले औरही शोभा दिखा रहे हैं. बुद्धिधन वर्षासे भीग जानेसे दुःख पानेके स्थानपर अपने आपको ऐसे सुन्दर जङ्गलमें पाकर आनन्द मनाता हुआ उसे पार कर रहा है और जो २ अजीब बातें दिखाई पडती हैं उनको सहर्ष देखता हुआ जा रहा है. अब आठ वज चुके और कोई गांव नहीं आया यह समय पूजनका होनेसे मनही मन चिन्ता करने लगा. इतनेमें उसको ऐसे निवड जङ्गलमें एक छोटासा जैन देवालय दिखाई पडा. बस क्या था शीघ्रही वहां पहुंचा और अपने इष्ट पार्श्वनाथका मन्दिर जानकर आनन्दमें हो अपना डेरा वहीं जमा दिया. प्रथम तो घोडेका फिक्र किया तदनन्तर कपडे उतारकर साफ़ जलसे स्नान किया और पूजाकी सामग्री लेकर मन्दिरमें गया अपने नित्यकर्ममें लीन हुआ.

वाचकवृन्द! चलिये अपनेभी जाकर देखें कि बुद्धिधन अपना नित्यकर्म किस प्रकार करता है.

बुद्धिधनने मन्दिरमें जातेही प्रथम तो केसर चंदन वरास आदि अमूल्य वस्तुओंको घिसकर कटोरीमें ली. तदनन्तर मन्दिरके हाथेमें गया जहां गुलाव आदिके पौधे खडे हुएथे उनपरसे पुष्प तोडकर पवित्र जलसे धोए और एक तासलीमें रक्खे जब इस प्रकार पूजाकी सामग्री तैयार होगई बुद्धिधन उसे अपने हाथमें लेकर मूर्तीके निकट गया और, धूप, दीप, नैवेद्य आदि करके इस प्रकार कहते हुए पूजाका करना आरंभ कियाः—

" जल भरी संपुट पत्रमें, युगलीक नर पूजंत;
रीखब चरण अंगुठडो, दायक भवजल अन्त.

कार्योंसे मेरी आत्माका कल्याण नहीं हुआ और कई वार जन्म मरण करना पडा. हे प्रभो ! अब क्या मै मूर्ख हूं जो इस तरह करने लगा मुझे धन मोह, माया आदि पदार्थोंसे कोई सरोकार नहीं, न स्त्री पुत्र पौत्रादिकी कोई लालसा है, केवल अपनी देहीके कल्याणके अर्थ आपके चरणमें रहकर आपकी भक्ति करता हूं.

हे जिनेश्वर !

मैं जानता हूं कि, आपकी तरहसे भक्ति करके उत्तम भव्य जीव मोक्षको प्राप्त हुए हैं. तो फिर मैं उस मार्गको क्यों छोड़ने लगा ? आपकी उस पवित्र आज्ञाको शिर चढ़ाकर उसी प्रकार यत्न करूंगा. आपको जो पसंद आया वही मैं पसंद करूंगा. आपके मित्रोंको मैं सदैव अपने मित्र और आपके अरियोंको सदैव अपने शत्रु समझूंगा, क्षमा, नम्रता, सरलता और संतोप आपके पूर्ण मित्र हैं और क्रोध, मान, माया और लोभ आपके कट्टर शत्रु हैं उसी प्रकार मैभी उन्हें समझूंगा. क्षमादि सद् गुणोंको सन्मान देकर क्रोधादि दुरगुणोंका तिरस्कार करुंगाः—

(राग. मान मायाना करनारा रे.)

हितकारी जगत उपकारी रे, प्रभु पार्श्वनाथ अवतारी ।
दुःख दोहग दूर निवारी रे, भव सागर पार उतारी ॥ अंचलि ॥
पारस पुरिसा दानी कहाये, वंछित फल दातारी ।
अश्वसेन वामा देवीके नंदन, पूजन मंगळ कारी रे ॥ प्रभु १ ॥
शोधन भूमि साथही वर्षा, सुगंध निर्मल वारी ।
पांच वरण फुलोंकी वर्षा, जानुदघन मनो हारी रे ॥ प्रभु० २ ॥
केश दाढि मूछ नख अवस्थित, कोटि जघन्य सुरचारी ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अनुकूल, ऋतु वल्लभ वीर सारी रे ॥ प्रभु० ४॥

क्रूर करुणा करुणानिधी जिनदेवाजी, सब गुण तूं भरपूर पारसजी।
परिमळ गुण महीमहक्यो जिनदेवाजी, जिम कस्तूरी कपूर पारसजी।२।
मित्र अनादि कालके जिनदेवाजी, वर्णन सुत्रके धूर पारसजी।
तुज सेवक संसारमें जिनदेवाजी. आप पधारे दूर पारसजी ॥३॥
राग द्वेष, मल्ल जीतके जिनदेवाजी, प्रकट कियो निजनूर पारसजी।
मुझ शक्ति नहीं एहवी जिनदेवाजी, चरण पड्यो तुम शूर पारसजी।४।
तारण तरण विरुद है जिनदेवाजी, जगमें तुम शाहूर पारसजी।
सत्य करो मुझ तारके जिनदेवाजी, मानो अरज आतूर पारसजी।५।
पांच त्याग पण सेवीए जिनदेवाजी. पंचमी गति सुखभूर पारसजी।
पंचम पदसे दूर हो जिनदेवाजी, पांच प्रमाद करुर पारसजी ॥६॥
मांगू पंचम ज्ञानको जिनदेवाजी, टारी घाती मूर पारसजी।
वल्लभको वल्लभ यही जिनदेवाजी, प्रकटे आत्मसूर पारसजी ॥ ७ ॥

हे पार्श्वनाथ !

मैं इस असार संसारमें अनादिकाळसे जन्म मरण लेकर बहुत ही दुःखी हुआ हूं जिसका कारण मात्र यह है कि, सत्य मार्गको नहीं पहिचाना और जब२ मनुष्य जन्म पाता रहा विष समान सुख को विषय समान गिनकर उनके सेवन करनेमें मस्त रहा और उसीमें केवळ सार समझकर निज आत्माका घातक बना. अब फिर इस प्राणीके लिये वही समय आया है कि, कई योनियोंमें जन्म लेता हुआ दुःख भोगता हुआ भटकर कर इस संसारमें मानव जन्म लेने पाया हूं. इसमें तो संदेह नहीं कि, यह मेरा मनुष्य जन्म पाना अति उत्तम है यदि सत्य मार्गको जानकर तथा उस विषयो पळब्ध सुखको विष समान गिनकर अपनी देहीके कल्याणके अर्थ कोई यत्न करूं जब कि मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूं कि, उन अनुचित

परम किरपाल जग नामी, परम करुणा निधि धामी ।
परम पुरुषोत्तमारामी, परमपद आतमारामी ।
तुंहि भव दुःखको भंजन, तुंही भवि जीवको रंजन ।
जगत आधार तू कहिये, निरंतर सरण तुम लहिये ॥५॥
परम सतचित्त आनंदी, परम शिव सुख शुभ कंदी ।
कनक भवि जीवको करता, पारस सम उपमा धरता ॥६॥
जगद्गुरु देव तुं सोहे, जंगम सुर वृक्ष मन मोहे ।
मनोवांछित तूं दाता, चिंतामणि सम जग गाता ॥७॥
अनंति उपमा तोरी, सहित अंतशक्ति प्रभु मोरी ।
करु में उपमा केती, नहीं प्रभु शक्ति मुझ एती ॥८॥
तुहि जगतात जगमाता, आतम आनंद पद दाता ।
पूरण करो आशा अब मोरी, कहे वल्लभ करजोरी ॥९॥

हे ज्ञान मूर्ते !

आपके ज्ञानका मैं तुच्छ प्राणी क्या गणना कर सकता हूं जब कि बडे२ उसको जानने नहीं पाए. वास्तवमें आपके ज्ञानका पार नहीं आप ज्ञानके सागरहो और वह सागर ऐसा नहीं कि, ज्ञानी पुरुष उसके रहस्यको न जानकर लाभ न लेसकें. मैं ही दुःखिया प्राणि हूं जो उसके लेनेका यत्न नकर इतने दिन दुःख पाया। अब तो मैं कदापि संसारके धोखेमें नहीं आऊंगा. हे जगन्नाथ ! आप जगके नाथ हैं आप ही भव दुःखके भञ्जन तथा भव्य जीवोंके रञ्जन करनेवाले हैं और इसीकारण आपका शरणा लिया है. आपने वत्सलभाव धरके भव्य जीवोंको सनमार्ग दिखाया सत्यका स्वरूप समझाया धर्मका बोध किया. जड़ चेतनके लक्षणोंको बताए इसी प्रकार हे निष्कामी प्रभु ! मैं इस सौभाग्यको कब प्राप्तकर सकूगाः—

हे दयानिधे !

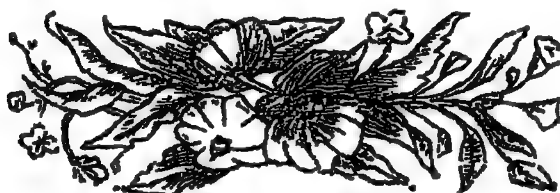
आपने जगतके तमाम जीवोंको निज आत्म समान गिनके सुखका मार्ग बताया. मनुष्य मात्रको भव बंधनसे मुक्त करनेका हरएक गांवमें जाकर उपदेश किया, और मोह मायामें फंसे हुए जीवोंको सत्य बोध देकर उनका उद्धार किया, अतएव आप हितकारी तथा उपकारी हो प्रभो आपके बताए हुए उपदेशानुसार मैंभी भेद भाव तजके तमाम लोगोंको सत्य मार्ग बताऊंगा और आप मेरे पिता हो इस अनुसार जीव मात्रको मैं अपने बन्धु समान समझूंगा. मैं किसीके साथ वैर भाव न करुंगा. न किसीको दुःखी करनेका यत्न करूंगा अपराधी पर क्रोध नहीं करूंगा, न अभिमान रक्खूंगा, न कभी लोभको अपना मित्र बनाऊंगा, न किसीको ठगनेके लिये जाल फैलाऊंगा, बल्कि जिस प्रकार एक अनाथ प्राणी रहता है. उसी प्रकार रहकर दुःखियोंको दुःखसे मुक्त करूंगा और सुखियोंके सुखको देखकर प्रसन्न रहूंगा. पर हे करुणा निधान ! यह प्राणी आपकेही आधार पर टिका हुआ है, इस प्राणीको सदैव उत्तम मति देकर मनो कामनाको पूर्ण करोगे ऐसी आशा है:—

(रेखता.)

पारस प्रभु नाथ तू मेरा, रटुं मैं नाम नित तेरा ।
विना तुम नाथ जिनराया, भवोभव दुःख बहु पाया ॥१॥
आनन्द गुरुकी निगेवानी, पूरव कछु पुण्यसे मानी ।
दिया तज देव जगफानी, यथारथ रूपको जानी ॥ २ ॥
तूही जगनाथ जगदेवा, करुं निशदिन तुम सेवा ।
पंचम गति दान कर स्वामी, निजातम रूपको पामी ॥३॥

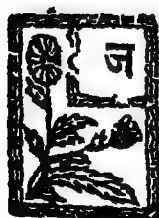
बुद्धिधन इस प्रकार स्तुति कर चुका, नाना प्रकारसे हर्ष मानता हुआ बाहिर आया. और कपडे आदि पहिन कर तथा घोडे पर बैठ कर अगाड़ी चला.

वाचकवृन्द ! देखिये भक्ति इस तरहपर कीजाती हैं अपनी सद्गतिके लिये बुद्धिधनने एकाग्र वृत्तिसे परमात्माको पहिचाननेके हेतु किस प्रकार अपने इष्टको प्रार्थना की है, वास्तवमें देखा जाए तो सच्ची भक्ति यही है मनुष्य मात्रको इस तरह एकाग्र चित्तसे भक्ति करनी चाहिये और आज कलके विषयोपलब्ध सुखको विष समान समझना चाहिये तबही आत्माका उद्धार हो सकता है.



प्रकरण ५८

सतीकी जय.



वसे तेजमलने कनककुमारीकी सुन्दरताका वर्णन लाहोरीमलके समीप किया है, तभीसे हनुवन्तसिंह आदि उसके सतित्वका नाश करनेको नाना प्रकारके यत्न कर रहे हैं. बुद्धिधनको जो देशवदर किया है उसका कारण मात्र यही था जिसको वाचकवृन्द ! स्वयम् जान गए हैं. बुद्धिधनके विश्वेश्वर नगरसे चले जाने बाद हनुवन्तसिंहने कमरकसकर कनककुमारीके सतित्वका नाश करनेको नाना प्रकारके यत्न किये पर उससे कोई बन नहीं आया. आखिर लुटेरी

(राग माड.)

जिन दर्शन दिजोरे पासजी दर्शन दीजोरे,
मारो अेळे जन्मारो जायरे जिन दर्शन दीजोरे ॥ टेर ॥
पारस पारस मैं जपुं, नित्य करू प्रणाम;
प्रभु तमारूं मुखडुं जोतां, सफल थाय मम कामरे.
पारसना गुण गावतां, सुख होवे भरपूर;
आठो पहर उमङ्ग रहे, मुख पर दुनो नूर.
प्रह उठीने प्रीतथी, प्रणमु पारस पाय;
केशर चंदन घोळीने, आंगी खूब रसाय.
आशा पूर्ण पासजी, करण मनोरथ काज;
जेम तार्यो ते नागने प्रभु, एम तारो मनें आज.
समरथ तेरो दास है, नित्य रहे तव नाम,
मेहर करी जिनजी मने, आपो शिवपुर धाम.

हे देवादि देव !

यह आयु व्यतीत होते देर नहीं लगती, कालरूपी शत्रु हर समय इसीमें ताक कर रहता है कि, कब आयु व्यतीत हो और ले जाऊं अतएव मैं हर वक्त उसका स्मरण करके आपका नाम जपता हूं और नाना प्रकारसे प्रसन्न करनेके अर्थ यत्न करता हूं, आशा है कि आप इस प्राणीको जिस प्रकार भव्य जीवोंको बोध करके तथा साक्षात् दर्शन देकर तारे हैं और जिस प्रकार नागको उसके दुरगुणको तनिकभी खयाल न कर तारा है, उसी प्रकार इस प्राणीके दुरगुणोंकी तरफ कोई लक्ष न देते तार कर शिवपुरके रास्ते पर ले जाएंगे.

कुमारीका प्रेम उसपर बढ़ता गया और कनककुमारी लुटेरीको अपनी एक बडी बहिन समझने लगी. लुटेरीको इस तरह कनककुमारीकी सेवा करते कई दिन व्यतीत हो गए किन्तु कनककुमारीको विश्वास पैदा करनेके कारण असली बातके विषयमें कुछ कहने नहीं पाई, जब कभी कामदेवका विषय लेकर लुटेरीने उसके समक्ष बातें कीं हैं उसको कभी ध्यान लगाकर नहीं सुनीं बल्कि यह कहती रही कि, यह काम है जो मनुष्य मात्रको उसकी मति फिराकर तथा सद्मार्ग विमुख करके परमात्माका अकृपापात्र बनाता है. ऐसे विषयको छोडो नहीं तो मैं तुम्हें अपने घरमें आने नहीं दूंगी.

दिनका समय है अभी बारह नहीं बजे हैं ऐसे समयमें लुटेरी कनककुमारीके यहां आई थोड़ी देर मनही मन यह विचारकर कि यां तो कार्य कभी भी सफल नहीं होगा, कोई युक्ति निकालनी चाहिये, कनककुमारीसे कहने लगी बहिन स्नान किये कितने दिन हुए क्या स्नानभी नहीं करती हो (कनककुमारीके शिर पर हाथ रखकर) देखो शिरमें कितनी जुएं होगई हैं ? पति तो सबके परदेश जाते हैं पर आपकी तरहसे इस तरह अपवित्रतो कोई नहीं रहती होगी ?

कनककुमारी—अरे यह क्या कहती है मेरे शिरमें जूएं, स्नान तो सदैव करती हूं न मालूम जूएं कैसे हो गई क्या कोई अनर्थ होना तो नहीं बदा है ?

लुटेरी—यह क्या कह रही हो ? अनर्थ क्यों होने लगा आप सहर्ष स्नान करके शिरको तेल मेट आदि पदार्थोंसे धोइये अभी सब जूएं जाती रहेंगी और आपका मन प्रसन्न होने लगेगा,

नामकी एक दूतीको इस कामपर नियतकी कि जो सब दूतियोंमें नामी दूतीथी और जिसने आज तक किसी कार्यमें असफलता प्राप्त नहीं कीथी, बडेसे बडा काम इस युक्तिसे कर दिखाया कि जिसको मनुष्य मात्र जानकर आश्चर्य करतेथे जबसे लुटेरी दूतीने यह काम हाथमें ले रक्खा है तभीसे लाहोरीमल आदिको अपने कार्यमें सफल होनेकी आशा हो रही है, बल्कि लाहोरीमल तो हर समय इस विचारमें रहता है कि कितना जल्दी कनककुमारीसे मिलाप हो, किसी वक्त तो वह उसीके ध्यानमें ग़र्क हो जाता है और पागलसा होकर इस तरहसे मनही मन देखता है मानो कनककुमारी हर वक्त उसके सामने खडी हुई है. पर नाराज़गीके कारण मिलना नहीं चाहती है, और उसको प्रसन्न करनेके लिये नाना प्रकारसे समझा रहा है. किन्तु जब वह ध्यान मुक्त हो जाता है तो अपने सामने कुछभी नहीं देखता और क्रोधित होकर हनुवन्तसिंह आदिपर जलता है.

लुटेरीने इस कामको हाथमें लेकर कनककुमारीके पास जाना आना शुरू कर दिया है, और इस तरहसे उसकी सेवा कर रही है मानो वह कनककुमारीके निजकी सेवकिन है, और किसीने उसको सेवा करनेके हेतु मुकरिर कर रक्खी है. जबसे लुटेरीका आना जाना हुआ कनककुमारीने अपने मनमें विचार किया कि पहिले कभी यह नही आतीथी अब जो आती है तो इसका कोई कारण होना चाहिये, मगर जब इसके उत्तरमें लुटेरीने यह कहा कि, इस समय आपके पास कोई नहीं है इस कारण आती हूं नहीं तो मेरे क्या सम्बन्ध ? आप कहो तो न आऊं, उसका कहना सत्य मानकर तथा घरमें अकेली होनेके कारण विश्वास कर गई और असली बातको जानने नहीं पाई, बल्कि दिन प्रतिदिन कनक-

कुमारीका प्रेम उसपर बढ़ता गया और कनककुमारी लुटेरीको अपनी एक बडी वहिन समझने लगी. लुटेरीको इस तरह कनककुमारीकी सेवा करते कई दिन व्यतीत हो गए किन्तु कनककुमारीको विश्वास पैदा करनेके कारण असली वातके विषयमें कुछ कहने नहीं पाई, जब कभी कामदेवका विषय लेकर लुटेरीने उसके समक्ष वातें कीं हैं उसको कभी ध्यान लगाकर नहीं सुनीं वल्कि यह कहती रही कि, यह काम है जो मनुष्य मात्रको उसकी मति फिराकर तथा सद्मार्ग विमुख करके 'परमात्माका अकृपापात्र बनाता है. ऐसे विषयको छोडो नहीं तो मैं तुम्हें अपने घरमें आने नहीं दूंगी.

दिनका समय है अभी वारह नहीं वजे हैं ऐसे समयमें लुटेरी कनककुमारीके यहां आई थोड़ी देर मनही मन यह विचारकर कि यों तो कार्य कभी भी सफल नहीं होगा, कोई युक्ति निकालनी चाहिये, कनककुमारीसे कहने लगी वहिन स्नान किये कितने दिन हुए क्या स्नानभी नहीं करती हो (कनककुमारीके शिर पर हाथ रखकर) देखो शिरमें कितनी जुएं होगई हैं ? पति तो सबके परदेश जाते हैं पर आपकी तरहसे इस तरह अपवित्रतो कोई नहीं रहती होगी ?

कनककुमारी—अरे यह क्या कहती है मेरे शिरमें जूएं, स्नान तो सदैव करती हूं न मालूम जूएं कैसे हो गई क्या कोई अनर्थ होना तो नहीं वदा है ?

लुटेरी—यह क्या कह रही हो ? अनर्थ क्यों होने लगा आप सहर्ष स्नान करके शिरको तेल मेट आदि पदार्थोंसे धोइये अभी सब जूएं जाती रहेंगी और आपका मन प्रसन्न होने लगेगा,

कनककुमारी—मुझे मन प्रसन्न करके क्या करना है ? इस तरह स्नान करनेसे मेरा मन कदापि प्रसन्न नहीं हो सकता मन मेरा मेरे स्वामीनाथ ! के मनसे जुड़ा हुआ है जो उन्हींके दर्शन होने पर प्रफुल्लित हो सकता है.

लुटेरो—हकीकतमें आपको इस समय चिन्ता बहुत है कि, आपके पति देश बदर किये गए हैं पर आप अपने हाथोंसे चिन्ताको बढा रही हो. चिन्ता बुरी बला है इसको छोड़ो और शिर धोलो, मैं जो अभी मौजूद हूं अच्छी तरहसे धो दूंगी.

इतना कहकर लुटेरी स्वयम् उठी और गर्मपानी करके ले आई तदनन्तर कनककुमारीको नहलाने लगी और उसके अङ्गके हरएक भागको निरखते हुए तथा उसकी शोभा करते हुए कहने लगी कनककुमारी आप यथा नाम तथा गुणा हो, हकीकतमें आपका यह शरीर कंचन समान है. परमात्माने आपको सांचेमें ढालकर बनाया है देखो यह आपकी आंखें कैसी मृगी सरिस मालूम होरही है, चहरेकी सुन्दरताका तो कहनाही क्या, गला कैसा सारससा मालूम दे रहा है, कमर कैसी पतली नज़ाकतसे भरी हुई है, क्या कहूं कोई हिस्सा ऐसा नहीं देखती कि, जिसको बुरा कहाजाए, धन्य है आपके भाग्यको परमात्मा आपको चिरायु रक्खे, पर हे कनककुमारी यह आपका कामसे भरा हुआ शरीर बिना पुरुष कैसे रह सकता होगा, न मालूम आपका पति कब लौटे यह शरीर जो दुरबल दिखाई देता है केवल कामरूपी अग्निसे जल रहा है, मेरेसे शरम न रक्खो और जो इच्छा हो सो कहो ताकि में आपकी कामना पूरी करनेका यत्न करूं.

लुटेरीका यह कहना था कि कनककुमारीकी आंखोंमें ज़हर

चढ़ आया और लुटेरीको पैरसे हटाकर कहने लगी खबरदार कभी ऐसी बातें कीं, क्या तूने इसी हेतु मुझे स्नान करनेकी सम्मति दी थी ? क्या तेरा यहीं उपदेश है पहिले भी तूने मुझे एक दो वार कहा उस समय मैंने फटकारनेमें कौनसी कमी रक्खी थी क्या तूझे शरम नहीं है कि, वार २ ऐसी बातें मेरे समीप करती है ?

लुटेरी—नाराज क्यों होती हो मैं कब कहती हूं कि, आप मेरा कहा करें यदि आपकी इच्छा हो तो मैं सहायता करनेको तैयार हूं.

कनककुमारी—ऐसे विषयमे मुझे तुम्हारी सहायताकी जरूरत नहीं है यदि तुम यहां आना चाहती हो तो और वातें किया करो.

लुटेरी—जो आज्ञा पर यदि आप विचार कर देखो तो आप अपने हाथोंसे ही दुःखी होते हो, देखो लाहोरीमल्ल आपके पीछे क्यों पड़ा हुआ है, आपके पतिको देश वदर क्यों किया, मात्र शत्रुतासे, यदि आप उसके पास जाकर अनाथ वनकर उसकी सेवा बजाओ तो क्या हर्ज है ? वह आप पर प्रसन्न हो जाएगा और आपके पतिको बुलाकर आपको माला माल कर देगा.

कनककुमारी—(लाहोरीमल्लका नाम सुनकर तथा क्रोधित होकर) वह चांडाल हमको क्या माला माल करेगा ऐसे पुरुषकी जो विना कारण शत्रु वनकर कष्ट देरहा है उसकी सेवा क्यों करने लगी ? और उस दुराचारके पास क्यों जाने लगी ?

लुटेरी—अरे कूछ नहीं वह तो जरासी वातपर प्रसन्न होजाएगा यदि आप उसके घर एकान्तमें जाकर मिल आओ तो सब काम ठीक हो जाएगा.

कनककुमारी—लुटेरीके ये वाक्य सुनकर आगवबूला होगई और धिक्कारती हुई कहने लगी चांडाली क्या तू मेरे सतित्वका

कनककुमारी—मुझे मन प्रसन्न करके क्या करना है ? इस तरह स्नान करनेसे मेरा मन कदापि प्रसन्न नहीं हो सकता मन मेरा मेरे स्वामीनाथ ! के मनसे जुड़ा हुआ है जो उन्हींके दर्शन होने पर प्रफुल्लित हो सकता है.

लुटेरी—हकीकतमें आपको इस समय चिन्ता बहुत है कि, आपके पति देश बदर किये गए हैं पर आप अपने हाथोंसे चिन्ताको बढा रही हो. चिन्ता बुरी बला है इसको छोड़ो और शिर धोलो, मैं जो अभी मौजूद हूं अच्छी तरहसे धो दूंगी.

इतना कहकर लुटेरी स्वयम् उठी और गर्मपानी करके ले आई तदनन्तर कनककुमारीको नहलाने लगी और उसके अङ्गके हरएक भागको निरखते हुए तथा उसकी शोभा करते हुए कहने लगी कनककुमारी आप यथा नाम तथा गुणा हो, हकीकतमें आपका यह शरीर कंचन समान है. परमात्माने आपको सांचेमें ढालकर बनाया है देखो यह आपकी आंखें कैसी मृगी सरिस मालूम होरही हैं, चहरेकी सुन्दरताका तो कहनाही क्या, गला कैसा सारससा मालूम दे रहा है, कमर कैसी पतली नज़ाकतसे भरी हुई है, क्या कहूं कोई हिस्सा ऐसा नहीं देखती कि, जिसको बुरा कहाजाए, धन्य है आपके भाग्यको परमात्मा आपको चिरायु रक्खे, पर हे कनककुमारी यह आपका कामसे भरा हुआ शरीर बिना पुरुष कैसे रह सकता होगा, न मालूम आपका पति कब लौटे यह शरीर जो दुरबल दिखाई देता है केवल कामरूपी अग्निसे जल रहा है, मेरेसे शरम न रक्खो और जो इच्छा हो सो कहो ताकि में आपकी कामना पूरी करनेका यत्न करूं.

लुटेरीका यह कहना था कि कनककुमारीकी आंखोंमें ज़हर

नहीं बनेगा ? यदि कोई उपाय नहीं चला और देखूंगी कि, लाहोरीमल बरज़ोरीसे मेरे सतित्वका नाश करेगा तो चटसे आत्महत्या करलूंगी किन्तु हे वीतराग प्रभो ! मैं ने ऐसे कौनसे, पाप किये हैं जो दुःख पर दुःख आरहा है. मैं अकेली पड़ी हुई बीमार कबूतरकी तरह तडफ़ रही हूं. पति मेरा न मालूम कहां दुःख भोग रहा होगा अवश्यमेव मैंने कोई कर्म ऐसे किये हैं जो भुगत रही हूं. इसमें तो कोई संदेह नहीं कि किये हुएका फल भोगना पड़ेगा. पर हे दयानिधे अब बहुत हो चुका मेरी इस करूणा जनक स्थिति पर दया लाकर सहायक बन, नहीं तो यदि मेरे सतित्वका नाश हो गया तो इस आनन्द भुवनका सर्वस्व नाश हो जाएगा. मैं तो क्यों जिनदी रहने लगी मेरा पतिभी यह समाचार पाकर शीघ्रही आत्महत्या करेगा.

इस प्रकार कनककुमारी बैठी हुई शोकातुर हो रही है जब पांच बजे ठंडा खाना पकापकाया पड़ा हुआ था सो थोड़ा बहुत खा लिया फिर संध्या होते ही मन्दिरमें गई और एकाग्र चितसे ईश्वरको स्तुति करके मकानमें आई तदनन्तर प्रतिक्रमण करके किवाड़ बंद-कर सो गई उधर लुटेरीने जाकर सर्व हाल लाहोरीमलको प्रगट किया जिसके सुनते ही लाहोरीमल क्रोधित हुआ और रात्रिको ही जाकर बरज़ोरीसे सतित्वके नाश करनेका विचार किया.

जब बारह बज चुके मनुष्य मात्रने चलना फिरना बंदकर दिया और सर्व पथारीके शरण होगए, लाहोरीमल लुटेरीके साथ बुद्धिधन के वहां गया. सदर दरवाज़ा खुला पड़ा था अतएव दोनों सहर्ष आनन्दभुवनमें दाखिल होगए किन्तु जिस मकानमें कनककुमारी आजकल अपना निवास कररही है वह दरवाज़ा बंद पाया. प्रथम तो उसके खोलनेको नाना प्रकारके यत्न किये, किन्तु जब देखाकि

नाश कराना चाहती है ? क्या तूने इसी हेतु मेरे यहां आना और इस तरह सेवा करना आरंभ किया है ? आज मैं इस बातको जानने पाई कि, तू इसी कारण मेरे यहां आती है पर जाके तेरे उस चांडालको कहदे कि शिर पटक कर मर जाए पर यह कनककुमारी अपने दर्शन तक नहीं देगी.

कनककुमारीका इतना कहना था कि लुटेरी निराश होगई और ज़ाहिरा क्रोध लाकर कहने लगी कि देखना अब मैं किस युक्तिसे तेरे सतित्वका नाश कराती हूं भलेकी तरहसे मान जा नहीं तो तेरा नाश हो जाएगा. पर कनककुमारी लूटेरीकी ऐसी बातोंपर कब डरने लगी सहर्ष कहने लगी कि, मरगया कोई मेरे सतित्वका नाश करने वाला लाहोरीमलतो क्या पृथ्वीका राजाभी नहीं कर सकता जा चांडाली मेरे घरमेंसे निकलजा नहीं तो ठीक नहीं होगा.

लाचार लुटेरी वहांसे चलती बनी और अब इस युक्तिमें लगी कि, किसी तरह बरज़ोरीसे भी इसके सतित्वका नाश हो जब मज़ा आवे.

लुटेरीके चले जाने बाद कनककुमारी चिन्ता रूपी सागरमें डूबकर नाना प्रकारके तर्क वितर्क करने लगी. क्या लाहोरीमलने मेरे पतिको इसी कारण देश बदर किया है लुटेरीके कहनेसे तो ऐसा ही विदित होता है पर क्या लाहोरीमलको राज्य मंत्री होकरके ऐसा करना उचित है ? कदापि नहीं यह कार्रवाई इसको दुराचारमें दाखिलहै. पर यदि लुटेरीके कहनेके अनुसार लाहोरीमलने रात्रिके समय आकर बरज़ोरीसे मेरे सतित्वका नाश करादिया तो गज़ब हो जाएगा मैं फिर सति कहलानेकी पात्र नहीं रहूंगी. पर मैं उसको ऐसा मोक़ा क्यों देने लगी और क्या उस समय वह मेरा इष्ट आकर सहायक

हैं? क्या यह मेरे उस दुःखका प्रभाव नहीं है कि, मैं बातको ठीक तौरपर जान नहीं सकती? वास्तवमें दुःखके कारण मेरी मति फिरी हुई है जो लुटेरी जैसी दूतीको आनन्द भुवनमें स्थान दिया. पर इस पश्चात्तापसे क्या हो सकता है. वह चांडाल जो बाहिर खडा हुआ किवाड खटखटा रहा है उसका उपाय करना चाहिये" और शीघ्रही उठकर प्रथम तो यह देखने लगी कि कहीं संकल तो खुल न गई. जब देखा कि संकल लगी हुई है, उसमें ताला और लगा दिया और अन्दरसेही खडी २ कहने लगी " हे दुष्ट! तू मध्य रात्रिके समय पराए मकानमें आकर क्यों दाखिल हुआ है और इस तरह द्वारको क्यों खटखटाता है, अपना रास्ता ले."

लाहोरीमल—अरे प्रिये! तू यह क्या कह रही है मैं बुद्धिधन हूं केवल तुझे मिलनेके लिये चुपकेसे आया हूं किवाड खोल.

लाहोरीमलका यह कहना सुनकर कनककुमारी प्रथम तो चिन्ता मग्न हुई और मनही मन कहने लगी " कहीं स्वामीनाथ तो नहीं हैं? अरे वह इस तरह क्यों आने लगे पर आजकल वह देश बदर किये गए हैं, आश्चर्य नहीं कि, मुझे मिलनेके लिये आए हों किन्तु इस तरह वह आज्ञाका उल्लंघन करे संभव नहीं. वही दुष्ट लाहोरीमल है जिसके लिये लुटेरी दिनको कह गई है" यह निश्चयकर कहने लगी " हे दुष्ट! मेरा स्वामी इस समय क्यों आने लगा वह तेरी तरहसे नहीं है आज्ञा पालनहार है, मैं तुझे जान गई हूं कि तू लाहोरीमल है और मेरा सतित्व हरनेको आया है, मैं तेरे इस धोखे में कदापि नहीं आऊंगी सीधा यहांसे चला जा नहीं तो तेरी बुरी गति होगी" लाहोरीमलने देखा कि, यह इस तरह धोखे में तो नहीं आती, किवाड़को उतारकर अन्दर दाखिल होनेके उपायमें

किसी प्रकार दरवाजा नहीं खुलता, लुटेरीने मकानके चारों तरफ फिर कर और दरवाजोंको देखा कि कोई खुला हुआ तो नहीं है जब लुटेरी पश्चिमकी तरफके दरवाजे पर पहुची तो उसीके पासकी एक खिड़की खुली हुई पाई जिसको देखते ही वह प्रफुल्लित हुई और लाहोरीमलको सङ्केत कर अपने पास बुलाया. लाहोरीमल सहर्ष जाकर उस खिडकीसे मकानके अन्दर दाखिल हुआ. लुटेरी वाहिर निगहवानीको खडी रही. लुटेरीके वताए हुए रास्तेसे लाहोरीमल उस कमरेमें पहुंचा जहां कनककुमारी अपना निवास कर रही है पर वहां जाकर देखता क्या है ? कि, द्वार उसका अन्दरसे वन्द है, उस कमरेमें एक छोटासा चिराग टिम टिमा रहा है. इस परसे लाहोरीमलको विदित हो गया कि कनककुमारी इसमें सोती हुई है और हाथसे किवाड खटखटाने लगा तथा कहने लगा " अरे किवाड तो खोल, कभीका जो वाहिर खडा हुआ हूं. " लाहोरीमलका किवाड खटखटाना था कि कनककुमारी एकदम निद्रासे जाग्रत हुई और दिनवाली वातपरसे जान गई कि शत्रु आन पहुंचा तथा घबराकर मनही मन कहने लगी ! हे प्रभो ! अव मेरी क्या गति होगी ? क्या यह शत्रु मेरे सतित्वका नाश कर देगा ? अरे यह चांडाल कव छोडने लगा पर मैं इस सङ्कटसे कैसे वचने पाऊंगी. दिनमें जसवन्तसिंह आदिभी नहीं आए जो उनको यह हाल कह देती और वे इस समय आकर मेरी सहायता करते. अरे कभी वह तो नहीं आए पर मेरीभी नादानी हुई जो सारा दिन चिन्ता की और उनको समाचार नहीं भेजा. यदि समाचार भेज दिया होता तो वे आ जाते किन्तु अव क्या हो सकता है. मैंने उस चांडाल लुटेरीको मुंह क्यों लगाई जो आज शत्रु वनकर काम दे रही है ? क्या मेरे विचार सव आज कल ऐसेही हो रहे

लाहोरीमल—शोर कर लेगी तो क्या होगा ? यहां कौन है जो आकर तेरी सहायता करेगा ! ज़रा मेरा कहना मान और आज्ञा दे नहीं तो फिर वरज़ोरी करनी पड़ेगी.

कनककुमारी—यह क्या कहता है ? क्या मेरी पुकारको कोई नहीं सुनेगा ? क्या तू वरज़ोरी करेगा ? क्या इस समय वह मेरा इष्ट आकर सहाय नही करेगा—इतना कहकर अपने इष्टको याद किया और कहने लगा हे इष्ट देव ! हे करुणानिधान ! ! यह दुष्ट मेरे सतित्वका नाश करनेको तत्पर हो रहा है यदि मैं वास्तवमें सती हूं और आज तक मेरे सतित्वको कोई कलङ्क नहीं लगा है, शीघ्रही आकर मेरा वचाव कर.

लाहोरीमल—तेरा इष्ट विष्ट कोई नहीं आता है. सीधी मानजा नहीं तो (जेव मेंसे निकालकर) देख यह छुरा अभी मार दूंगा

इतना कह लाहोरीमल उसके पास जाने लगा कि वाहिरसे एक पुरुष आकर उस कमरेमें दाखिल हुआ. शीघ्रही लाहोरीमलके हाथमेंसे छुरा लेकर उसे पकड़ लिया और कहने लगा " धिक्कार है तुझे जो मंत्री होकर पुत्र तुल्य प्रजाके साथ ऐसे अधर्म्म कर्म करता है तेरे इन कर्मोंको देखते हुए मुझे यही उचित है कि, इसी छुरेसे तेरा शिर अलहदा कर दूं. किन्तु हे दुष्ट ! तू मेरा किसी समय मित्र था इस कारण मित्रका हन्ता नहीं वनता पर याद रख भविष्यमें कभी ऐसा कर्म किया तो शिर अलग किये विना नहीं रहूंगा."

लाहोरीमल जसवन्तसिंहको अपने सामने पाकर शर्मिन्दा हो गया और विलकुल पानीमें वैठ गया. उसके चरण छूकर कहने लगा " मित्र मैं कदापि ऐसा कार्य नहीं करूंगा, यह कनककुमारी मेरी वहिन तुल्य है. मैंने झखमारा जो अनुचित कार्य करने आया.

लगा जिसको जानकर कनककुमारी और घबराने लगी तथा मनही मन नाना प्रकारसे ईश्वर स्तुति करने लगी " हे इष्ट प्रभो ! क्या यह दुष्ट इस तरह किवाड़ उतारकर अन्दर आने पाएगा ? क्या अन्दर आकर मेरे सतित्वका नाशकर देगा ? क्या उस समय मैं अपना सतित्व बचानेके लिये कुछ करने नहीं पाऊंगी ? क्या आज मुझे आत्महत्या करनी पड़ेगी ? मैं अपना सतित्व बचानेको प्राण रहित होनेको तैयार हूं पर जबतक तू मेरा सहायक न हो मेरा कोई भी यत्न काम नहीं आसकता. हे दयालु इस समय मुझ अबला पर दया लानेवाला तूही है. तेरे ही अनुग्रहसे मैं इस सङ्कटसे मुक्त होऊंगी.

लाहोरीमलने जब बहुत देरतक परिश्रम किया, वह दाखिल हो उतना किवाड़ हट आया. और वहां होकर शीघ्रही अन्दर गया जिसे देखते कनककुमारी एकदम घबरा गई और इष्टका नाम लेती हुई कहने लगी " हे चांडाल यह तेरे अधर्म्म कर्म ! खबरदार यदि मेरे हाथ लगाया, नहीं तो अभी तेरे पर आत्महत्या करके मर जाऊंगी और इधर उधर आत्महत्या करनेका साहित्य ढूंढने लगी. पर बेचारीको कोई वस्तु नजर न आनेसे निराश होगई.

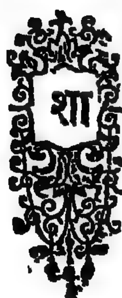
लाहोरीमल—प्यारी इस तरह घबराती क्यों है ? तुझे कोई नहीं मारता. इस माशूक पर कृपा करके अपना यौवन निछरावल करदे.

कनककुमारी—(क्रोधरूपी अग्निसे जलती हुई) अरे दुष्ट ! तुझे ऐसा कहते शरम मालूम नहीं होती ? क्या राज्य मंत्री होके तेरा यह कृत्य ? सीधा यहांसे चलाजा नहीं तो अभी शोर करती हूं.

कारणको जानने पाया. उसी दिनसे उसने रातका दौरा आनन्द-भुवनके चारोंतरफ करना आरंभ किया. जसवन्तसिंह अभी आकर मन्दिरके बाहिर बैठा नहीं था कि, अन्दरसे कनककुमारी तथा लाहोरीमलके वार्तालापकी आवाज सुनाई दी और शीघ्रही मकानके चारों तरफ फिरकर देखने लगा. पश्चिम दिशाको जाते लुटेरीको खडी पाई लुटेरी उसको देखकर भाग गई जिससे जसवन्तसिंहने कोई, अनर्थका होना माना और उसी खिड़कीसे दाखिल होकर सतीका उद्धार किया. धन्य है ऐसे मित्रको और धिक्कार है उस लाहोरीमल तथा लुटेरी को.

प्रकरण ५९.

बुद्धिधनकी वैराग्यवृत्ति.



शाम हो चुकी है. रात्रिने अपना आगमन शुरू कर दिया है. बुद्धिधन तीव्र गति घोडेको चला रहा है और चाहता है कि शीघ्रही किसी गांवमें पहुंचकर विश्राम लूं. किन्तु आठ बज जानेपरभी उसे कोई गांवदिखाई नहीं दिया और एक विरान स्थानमें छोटासा मकान देखकर वहीं अपना आश्रम जमा दिया. प्रथम तो घोडेको बांधकर प्रतिक्रमणमें लीन हुआ. जब प्रतिक्रमण कर चुका, उठकर घोडेके पास आया और उसको दाना खिलाने लगा। तथा मनही मन कहने लगा " यह कौनसा स्थान है जहां मैं आकर ठहरा हूं " और

कृपाकर अबकी दफ़ा क्षमाकर और इस सेवकको छोड़; नहीं तो कहीं मेरा काला मुंह होजाएगा."

जसवन्तसिंह---नहीं दोस्त! तेरा तो काला ही मुंह कराना है; आइन्दा कभी ऐसा करना भूल जाएगा.

लाहोरीमल---नहीं मित्र! अब मैं समझ गया कदापि ऐसा नहीं करूंगा, कृपाकर जाने दे.

जसवन्तसिंह---तेरे दुरगुणोंको देखते हुए मुझे उचित नहीं कि, तुझे छोड़ुं, पर तुझको एक अपना मित्र समझ कर दयाके ख़ातिर छोड़ता हूं. जा अपना मुंह काला कर.

इतना कह जसवन्तसिंहने उसको छोड दिया. उसका छोड़ना था कि, लाहोरीमल शीघ्रही वाहिर आया और लुटेरीको फटकार देते हुए ऐसा तीव्र गति भागा कि, कहीं जसवन्तसिंह पीछेसे आकर मार न दे.

लाहोरीमलके जाने बाद जसवन्तसिंहने कनककुमारीको धीरज दी तथा कनककुमारीने नाना प्रकारसे प्रफुल्लित हो उसका आभार मांना और कोटिशः धन्यवाद अपने इष्ट तथा जसवन्तसिंहको दिये तदनन्तर जसवन्तसिंह चला गया तथा कनककुमारी भी होशियार हो तमाम द्वार अन्दरसे बंद कर सो गई.

वाचकवृन्द! इस समय आप जसवन्तसिंहका आना जानकर आश्चर्य करते होंगे. किन्तु जसवन्तसिंह खुफिया पुलिसवाला जो ठहरा, भला इससे बात कैसे गुप्त रह सकती थी. बुद्धिधनके देश वदर होनेके बाद जसवन्तसिंह इसकी टोहमें लगा कि, उसको देश बंदर करनेका कोई गुप्त कारण होना चाहिये और शीघ्रही असली

काया अंते काम नहिं आवे, काया नहिं तेरी नहिं तेरी ॥ २ ॥
सांभळ वात कहुं परमानी, वांकी क्या करता गुमानी.
तुतो वडोजात वेमांनी, काया नहिं तेरी नहिं तेरी ॥ ३ ।
अव मत गाफिल रहेना वंदा, जूठा लगा जगतका धंधा.
पडा मोह जालका फंदा, काया नहिं तेरी नहिं तेरी ॥ ४ ॥
कहे नर कवीर सुनो नर ज्ञानी, ये शिक्षा हृदय ले मानी.
तेरेकु वात कहु निश्चेकी, काया नहिं तेरी नहिं तेरी ॥ ५ ॥

आहा ! कवीरजीने क्या उत्तम कहा है, वास्तवमें मनुष्य मात्र जो कायाको अपनी समझकर उसको प्रसन्न रखनेके लिये नाना प्रकारके यत्न करते हैं सर्व वृथा है. यह जिन्दगानी दो दिनकी चांदनी है, आयु खतम होते ही शीघ्र ही पतङ्गके रङ्गकी तरह उड जाएगी. संसार मात्र जो मेरा २ करके एकत्र करता है, सव यहां ही पडा रह जाएगा. मनुष्य गाफिल हो करके सवको अपना समझ रहाहै और भाई, वहिन, पुत्र, परिवार आदि परस्पर प्रेम वताकर एक दुसरेको संसारिक सुख देनेका यत्न करते हैं केवल स्वार्थका है. यह संसार मात्रका धंधा झूठा है. देखो एक कविवरने क्या उत्तम कहा है.

(भजन)

माया में वीरा, कांइ लपटांणोरे—
भूल गयो निज रुप रे, माया में वीरा० टेर

वार वार वीरा हाथ न आवेरे, ऐसो अमोलक टांणोरे ॥ १ ॥
कांडिरे कांडिकर धन तो कमायोरे, छेवट रज मांही जाणोरे ॥२॥
लखमी ढूंढतां ढुढनां प्यारारे, निज रत्न तो गुमांणोरे ॥ ३ ॥

इधर उधर दृष्टि करने पर राखका ढेर दिखाई दिया. जिसको देखते ही जान गया कि, " यह स्मशान है पर लोग कहते हैं कि ऐसे स्थानपर भूत प्रेत रहा करते हैं जो तो यहां दिखाई नहीं पडते. अरे भूत प्रेत कहांसे होने लगे जो यहां आकर रहे. इसके माननेवाले मूर्ख हैं और वे केवल, इसको यमराजके स्थानोंमेंका एक स्थान गिनकर डरते हुए कि, कहीं जितने मुरदे यहांपर जलाए जाते हैं भूत प्रेत होकरके वहीं रहते न हों और हमें भक्षण कर जाएं, ऐसा मान रहे हैं. वरना यदि विचार कर देखा जाय तो न तो कोई भूत है न प्रेत है, केवल उनकी शङ्का है. एक तरहसे देखा जाय तो इस तरह उनका यमराजके स्थानसे डरना उत्तम हैं. किन्तु खेद इस बातका है कि, उससे डरकर अपने आपको नहीं संभालते और रातदिन मायावी जाळमें फंसे रहते हैं. केवल उनका वैसा विचार तभीतक रहता है, जब कि कोई मरता है और इस स्थानपर लाकर जलाया जाता है. वह सदैव इस बातका विचार अपने मनमें नहीं रखते कि, यह काया कची मट्टीके घडेके समान है, न मालूम उसकी तरहसे कब नाश होजाय कोई ऐसा सुकृत कार्य करें जो उपयोगी होकर जन्म मरणके फेरे को टाले, सर्व इस बातका विचार करे या न करे पर मुझे तो उचित है कि सदैव इसका ख़याल रक्खूं " और कबीरजीके पदको इस तरह स्मशानपर खडा रहकर तथा विचार करता हुआ गाने लगाः—

काया नहीं तेरी तेरी मत कर मेरी. टेर.
आतो दो दीनकी जींदगानी, जैसी पत्थर ऊपर पानी;
अंते होयगी कुरबांनी, काया नहीं तेरी नहीं तेरी. ॥ १ ॥
जेसो रङ्ग पतंग खीलावे, ऐसी पलक प्रीति उडजावे.

सुकृतकार्य किया करे. और मोह मायाके जालमें फंसकर अनिष्ट कर्मोंको अपनी पवित्र आत्मामें स्थान न दे. किन्तु हे मन ! मेरे लिये क्या उचित है ? क्या मैं भी मोह मायाके जालमें फंसकर इन उत्तम भजनोंका सदुपयोग न करूं ? क्या मैं भी संसाररूपी सुखको परम सुख मानकर उसमें मस्त पड़ा रहूं ? कदापि नहीं धिकार है मुझे जो इस तरह करने लगा. यह मेरा मट्टीका बना हुआ शरीर एक रोज़ ऐसी ही जगह पर मिट्टीमें मिल जाएगा उस समय केवल मेरे कर्म साथ आयेगें और कोइ वस्तु साथ नहीं आएगी, फिर मैं इस शरीरका अभिमान क्यों करने लगा और इसको तृप्त रखनेके लिये धनादि वस्तुओंकी लालसा क्यों रखने लगा! उचित है कि सदैव अपनी इस आत्माको पवित्र रखकरउत्तम कार्य करूं जो फलदायक, उपदेशिक तथा परोपकारी हो आहा ! उन कविरायोंने शुभ कर्म करनेके लिये कैसा उत्तम कहा है:—

सुनो सकल भारत सन्तान, करो कर्म जिससे हो मान,
सब सुखका कारण है कर्म, यही मुख्य मानवका धर्म्म॥१॥
पराधीन किंवा स्वाधीन, हो धनाढ्य अथवा अति दिन;
करो सुकर्म धर्ममें लीन, होकर नित आलस्य विहीन ॥ २ ॥
जितने हुए वीर वरधीर, ज्ञानी ऋषि मुनि विमल शरीर;
सो जानहु सब कर्म-प्रभाव, कर्म हीनको सभी अभाव ॥ ३ ॥
पाकर यह दुर्लभ नर-देह, बनो नहीं आलसका गेह;
जब तक रहे देहमें मान, तब तक करो कर्म सन्मान ॥ ४ ॥
सब सुख सिद्धि कर्म वश जान, करो न कभी कर्म अपमान;
योग यज्ञ अरु जप तप ध्यान, सबका है शुभ कर्म निदान ॥४॥
जितने हैं जड जीव जहान, भले बुरे गुन अवगुन खान;

मारूंरे मारूं करे कांई नहि थारूंरे, अन्त समे तो हणांणोरे ॥४॥
साचीरे वस्तु वीरा संग नाही छोडेरे, त्यागे सो झुठो गणांणोरे ॥५॥
सद गुरु कनें जाओ भेद वतावेरे, दयाथी वतावे रूडो टालोरे ॥६॥
करुण थी चेतन भेद वतायोरे, अचल हृदयमां समाणोरे ॥ ७ ॥

वास्तवमें मनुष्य मायामें लिपट निज रूपको भूल जातें हैं. यह उनकी मूर्खता है. मनुष्य जन्म वार २ नहीं मिलता है फिर हम नाहकको धनोपार्जन करनेके यत्नमें लगकर दुःखके भागी क्यों वनें ? और उसमें फंसकर सच्चे सुखरूपी रत्नको क्यों गुमाने लगे ? यही उत्तम है कि काल रूपी समयका हर वक्त स्मरण करके सुकृतकार्य अभीसे किये जाएं, न मालूम काल कव आवेरे और फिर पश्चात्ताप करना पड़े (एक भजनको याद लाकर) देखो एक कवि महाशयने उस पुरुषको जिसने सारी जिन्दगी यों ही गुमाई किस तरहसे फटकार वताई हैः—

वीराजी देखो कालरो फेरोरे, झाले ले जासी दरवाररे । टेर ।
वालपणो तो वीरा खेल गुमायोरे, जुवानी तिया संग हेरोरे ॥ १ ॥
गेलो हुवोरे वीरा धन तो कमावारे, राख्यो नहिं लोभरो चेडोरे ॥२॥
निज नाम थने दाय न आवेरे, फूलो फिरे होय वेडोरे ॥ ३ ॥
सरिता जलसम गइतो जुवानीरे, अवतो वुढापो आयो नेडोरे॥४॥
अंग तो सवलो वीरा धुजवा लागोरे, लाठी टेकासु करे फेरोरे॥५॥
वैरी हुवारे थारा व्हाला तो सघलारे, कोई आव न थारे नेडोरे॥६॥
कष्ट पडयो जद राम सितारे रे, अवे सुणेला कोण हेलोरे ॥७॥
तीन टाले अर्ध चन्द्रने कूदोरे, आगे मितम होसी नेडोरे ॥ ८ ॥
चेतन सतगुरू रीत वताई रे, अचल गयो गुरु चेरोरे ॥ ९ ॥

यदि कोई अपनी देहका कल्याण चाहता है तो उसको यही उचित है कि हर समय कालका आना जानकर अपना नित्य कर्म

प्रकरण ६०

चिन्तामें जसवन्तसिंह.



नका समय है. जसवन्तसिंह भोजन करके अपने कमरेमें बैठा हुआ किताब पढ़ रहा है. पढ़ने २ जब स्त्रीके सतित्वका वर्णन आया एकदम प्रथम तो प्रसन्न हुआ और कहने लगा "मैंनेभी कनककुमारीके सतित्वको बचाया है" किन्तु जब कनककुमारीके साथमें बुद्धिधनका स्मरण हुआ, चिन्तारूपी सागरमें हिलोरे खाने लगा और किताबको फेंककर मनही मन कहने लगा "न मालूम मेरा प्रिय मित्र बुद्धिधन इस समय कहां होगा. उसका कोई पत्रभी नहीं आया. अरे बुद्धिधन! जाती दफे तू क्या कह गया था कि पत्र दूंगा, जब कि महींनो गुज़रे एक पत्रभी नहीं आया. क्या तूने योंही कहाथा? क्या तूझे यह मालूम नहीं है कि पत्र बिना यह तेरे शुभचिन्तक तथा कनककुमारी आदि चिन्ता करते होंगे? क्या तेरेभी वायदे लाहोरीमल कैसे हैं? नहीं मन! बुद्धिधन ऐसा नहीं है. वह दुष्ट लाहोरीमलही ऐसा है कि, जो सुख पाकर अपने प्रिय मित्रादिको भूल गया और कुकृत्य करनेमें लीन रहता है. अरे लाहोरीमल क्या करूं इस भवमें मैं तेरा मित्र कहला चुका, नहीं तो मेरी बहिन समान कनकुमारीके सामने कुदृष्टिसे देखनेका मज़ा बताता. बुद्धिधन इस बातको जानने पाएगा तब उसके हृदयमें कितना क्रोध चढ़ आएगा. आश्चर्य नहीं मुझे कहीं इस विषयमें ठबका दे. हे प्रभो! ऐसे दुष्टोंकी खबर शीघ्रही क्यों नहीं लेता? जो बेचारी बालाओंके सतित्वका नाश न हो, अनाथोंके

उन सबके प्रति हेतु महान, कर्म शुभा शुभ एक प्रधान ॥ ६ ॥
फल सुकर्मका है सुख भोग, पाते हैं सब सज्जन लोग;
जो कुकर्ममें देते योग, वे पाते दुःख दारिद रोग ॥ ७ ॥
जो चाहो अपना कल्याण, नित सुकर्म पर रक्खो ध्यान,
सुजन कर्म करके तज शोक, लेते बना लोक परलोक ॥ ८ ॥
मृतक आलसी एक समान, कर न सके कछु कर्म विधान;
इससे नित स्वशक्ति अनुसार, करो कर्म कुछ नीति विचार ॥९॥
भाग्य दोष दे कितने लोग, दुःख पाते तजकर उद्योग;
जो करते उद्यम व्यापार, कभी न वे पाते दुख भार ॥ १० ॥
उद्यम है सब सुखका मूल, देता मिटा हृदयका शूल;
इससे उद्यम करो महान, पाओगे दिन दिन सन्मान ॥ ११ ॥
करो नित्य देहिक व्यायाम, होगा तन सुडौल बलधाम;
करो मानासिक श्रम अभ्यास, दिन दिन होगा बुद्धि विकास ।१२।
खेती करो वनज व्यापार, जिससे खुले लाभका द्वार;
पहले पालो निज परिवार, पीछे करो देश उपकार ॥ १३ ॥
देकर तुम दीनोंको दान, करो न मनमें कुछ अभीमान;
दुष्ट जनोंसे करो न प्रीति, गहो सदा सज्जनकी रीति ॥ १४ ॥
सबके साथ उचित व्यवहार, करके बनो विनय आगार;
खुश होकर सारा संसार, तुमको सदा करेगा प्यार ॥ १५ ॥

" बस अब इसके अनुसार रहकर सदैव औपदेशिक तथा परोपकारी कार्य करूंगा कि इस मेरी आत्माका कल्याण हो " इतना कहकर और उसपर कटिबद्ध होकर वहांही सो गया. भोर होतेही घोडेपर सवार होकर अपना रास्ता लिया.

करने गया था. दिलसुख जाग उठा और उसे देखलिया. बस क्याथा जूतियोंसें ख़ूब सेवाकी गई. उसने तुम्हारी तरहसे उसको मित्र थोडाही समझा ?

जसवन्तसिंह—अच्छा किया मेरे छोडनेका कारण मात्र मित्रताका था. क्या हुवा मेरे हाथसे बचने पाया तो वहां जूतियां पडी. आख़िर कहीं न कहीं बुरे कर्मोंका परिणाम तो उसको मिलना ही था.

किशोरीलाल—यह तो ठीक है पर तुम आज कल रात्रिके समय बुद्धिधनके यहां जाते हो कि, नहीं ? कहीं ऐसा न हो कि वह दुष्ट फिरसे जाकर कोई अनर्थ कर बैठे.

जसवन्तसासिंह—वाह अब मैं क्यों ग़ाफिल रहने लगा ? रात्रिको सदैव आनन्द भुवनकी ही ग़श्त करता हूं.

किशोरीलाल—बस यही चाहिये, बुद्धिधन जो अपनेको आनन्दभुवन सौंप गया है.

गणपति—जसवन्त ! तुम कितने दिन आनन्द भुवनकी ग़श्त करते रहोगे ? बुद्धिधन कहांतक देश बदर रहेगा ? लाहोरीमलको ही निकालनेका उपाय क्यों नहीं करते ? जो अनर्थ होना मिट जाय ?

जसवन्तसिंह—यह तुम ठीक कहते हो पर अपनेको कोई उपाय करना उचित नहीं, उसका कर्म उसको शीघ्रही फल देगा.

ईश्वरदास—(गणपतिकी तरफ़ मुख़ातिब होकर) जसवन्त तो अभी तक लाहोरीमलको अपना मित्र समझ रहे हैं. मालूम होता है कि, इनको कुछ उसकी तरफसे मिल गया है.

गले न कटें" इस प्रकार जसवन्तसिंह विचार कर रहा था कि, किशोरीलाल, ईश्वरदास तथा गणपति आ उपस्थित हुए और प्रणाम कर उचित स्थानपर बैठ गए. तदनन्तर उनके परस्पर इस प्रकार वार्तालाप शुरू हुआः—

गणपति—कहो जसवन्त ! आज तुम किस विचारमें लीनहो?

जसवन्तसिंह—क्या कहूं बुद्धिधनका कोई पत्र नहीं आया और उस दुष्टने कनककुमारीकी तरफ कुदृष्टिसे देखा जिसका पश्चात्ताप हो रहा है कि, कहीं बुद्धिधन यह खबर पाकर मेरेपर नाराज़ न हो.

गणपति—अरे वह ऐसा नहीं है, धैर्यवान् है. कभीभी क्रोधित नहीं होगा पर वास्तवमें देखा जाय तो उस दुष्टने बहुतही बुरा किया.

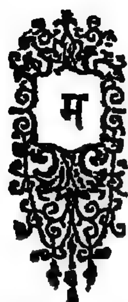
ईश्वरदास—अभीतक उसने अपनी आदत कहां छोडी है, कल रातको मियां साहब यमुना बाजारमें पहुंचेथे. वहांभी जूतियां खाकर वापिस आए, तुम्हीं थे जो छोड दिया वहीं शिर क्यों नहीं काट दीया ?

जसवन्तसींह—क्या कहूं मित्र समझ छोड दिया. (पश्चाताप करता हुआ) उसके लक्षण तो शिर कटवाने ही के थे. क्या अभी तक उसने अपनी आदत नहीं छोडी ? किसके यहां गया था. किसने ज़ुतियां मारी ?

ईश्वरदास—वह हरामज़ादा अपनी आदतोंको कब छोडने लगा, तुम चाहे जितना मित्र समझकर बचाओ. रातको उसी लुटेरीके साथ दिलसुख शेठके यहां उसकी कुंवारी लडकीसे सोहबत

प्रकरण ६१.

अहिंसा परमोधर्म.



म ध्यानका समय है. गर्मीका समय होनेसे धूप जो़रकी पड़रही है इस समय जीव मात्र कायर होकर हवाकी लालसाकर रहा है और चाहता है कि इस धूपमें इधरसे उधर जाना न पड़े तो अच्छा है. किन्तु बुद्धिधन इस लालचमें " कितना शीघ्र कहीं पहुंचकर कमाऊं " ऐसी धूपमें कष्टका कोई विचार नकर अपना रस्ता काट रहा है. जब वह एक घने जङ्गलमें पहुंचा, एक शिकारी घोड़े पर सवार हुए एक हरिणके पीछे हाथमें बन्दूक़ लिये घोड़ेको तीव्र गतिसे चलाता हुआ दिखाई दिया, हरिण चाहता है कि, शिकारीके हाथमेंसे किसी प्रकार निकलकर अपने प्राण बचाऊं और इधरसे उधर झाड़ियोंमें छिपता फिरता है. इधर शिकारीने उसका पीछान छोड़कर अपने घोड़ेको पूरी तेज़ीसे पीछे कर रक्खा है. बुद्धिधनने हरिण तथा शिकारीकी यह दौड़ भाग देखकर शीघ्रही अपने घोड़े को थामा प्रथम मनही मन शिकारीको धिक्कार देकर कहने लगा " यह कैसा दुष्ट है जो हरिणका प्राण हरनेको तत्पर होरहा है. क्या इसको तनिक भी दया नहीं आती ? क्या यह हरिणको मारकर भक्षण करेगा ? यह जिस प्रकार उसके पीछे अपने घोड़ेको दौड़ा रहा है इस परसे ऐसा ही मालूम दे रहा है. मुझे उचित है कि इसको ठहराकर तथा हरिणका प्राण बचाकर कुछ उपदेश करूं " और शिकारीको आवाज़ देकर अपने पास आनेको कहा. ऐसे

जसवन्तसिंह—ईश्वर ! यह क्या कहते हो ? मैं उस चांडालसे कुछ लेने लगा ? मुझे भूखे मरना मंजूर है पर चांडालसे तो कदापि कुछ नहीं लूंगा, न कभी जाकर कुछ कहूंगा. बदला न लेने का कारण केवल यही है कि उसको मैं कई बार अपना मित्र तथा बन्धु कह चुका, नहीं तो क्रोडीमलको मार भगानेमें कौनसी विलम्ब लगाई थी.

ईश्वरदास—धन्य है ! सदैव ऐसे विचार रखना कि जिससे कभी हमाराभी भला हो.

जसवन्तसिंह—वाह क्यों नहीं ? पर कहो किशोरीलाल ? बहिनको कोई कष्ट तो नहीं है ?

किशोरीलाल—अपने बैठे हुए कष्ट क्यों होने लगा ? मैं अभी वहांहीसे आरहा हूं. सर्व बातका आनन्द है केवल बुद्धिधनके वियोगसे किंचित कष्ट मालूम होता है.

जसवन्तसिंह—उसका दूर करना तो अपने हाथमें नहीं है.

इस प्रकार वार्तालाप तथा चिन्ता करते हुए चार बज गए. तदनन्तर किशोरीलाल जसवन्तसिंह आदि चारों बाज़ारमें चलेगए.

आपका ठीक नहीं था. क्या आपने "अहिंसा परमो धर्मः" के वाक्य को नहीं सुना है ?

शिकारी—" अहिंसा परमो धर्मः " किस चिडियाको कहते हैं, मैं कुछ नहीं जानता. अब तो तुझे स्वर्ग यात्राही कराना उत्तम है. पर इस वाक्यका अर्थ क्या है साथमें कहता क्यों नहीं ?

बुद्धिधन—क्या आपको इसका अर्थ मालूम नहीं है ? किसी जीवकी हिंसा न करना यही परम धर्म्म है. बताइये फिर आप ऐसा क्यों करने चले थे ?

शिकारी—वह ईश्वरका बनाया हमारा शिकार जो था, उसके मारनेमें हिंसा कैसी ?

बुद्धिधन—(दिलमें अफ़सोस लाकर) कौन कहता है कि हरिणादि जानवर आपलोगोंके शिकरको पैदा हुए हैं और उनके मारनेमें कोई हिंसा नहीं. जीव मात्रको यदि आप मारेंगे तो उसमें हिंसा अवश्य है. देखिये हरएकको अपना जीव कितना प्रिय होता है. उसको हरलेना तो बड़ी बात है, अगर कोई उसको ज़रासाभी कष्ट दें तो कितना दुःख होता है. आपहीके यदि मैं एक थप्पड़ही मारूं तो क्या आपको दुःख पैदा होकर बुरा मालूम नहीं होगा ? अवश्यमेव आपको दुःख पैदा होगा और क्रोधमें आकर एकके स्थानपर दो थप्पड़ मारेंगे. वह क्यों ? यहीं कि आप उसको सहन नहीं कर सकते. तो भला उसका प्राण लेना उसके लिये कितना दुःखदाई होगा और फिर उस जीवकी बुरी आह आपके लिये कैसी होगी ? क्या वह जानवर बोल नहीं सकता और आपको उसका बदला नहीं दे सकता इस कारण आंप उसको मारने चले थे ? आपके कृत्यको देखते हुए ऐसाही विदित हो रहा था.

जङ्गलमें मनुष्यकी आवाज़ सुनकर शिकारी प्रथम तो चौंक गया कि, कौन है जो बुला रहा है और इधर उधर देखने लगा जब शिकारीने बुद्धिधनको देखा उस पर लाल पीला होगया और अनजान मनुष्य जानकर हिरणकी तलासमें लगा. किन्तु उसके इधर उधर देखनेमें हरिणने अपना रास्ता लिया जब शिकारीको वह कहीं दिखाई नहीं पड़ा बुद्धिधन पर और क्रोधित हुआ तथा बुद्धिधनके पास जाकर कहने लगा. तू कौन है जिसने आवाज़ देकर मेरा शिकार गुमाया. याद रख (बंदूक़को बताते हुए) अब इस बंदूक़से तेरा शिकार करूंगा बोल तूने मुझे क्यों आवाज़ दी ?

बुद्धिधन—यदि आप मेरा शिकार करदो तो सबसे उत्तम है, मैं भी मुसीबतमें फिर रहा हूं शीघ्रही छुटकारा हो जाएगा. किन्तु आप मेरे पर इतने गर्म क्यों होरहे हैं, ज़रा शान्त होइये.

शिकारी—अरे मैं ! शान्त क्यों होने लगा, तेरा प्राण लेकर शान्त हूंगा. बोल तूने आवाज़ क्यों दी.

बुद्धिधन—मैंने आपको विचार करकेही आवाज़ दी थी. उस हरिणने आपका क्या बिगाडाथा जो उसके पीछे घोडाकर मारनेको तत्पर हो रहेथे ?

शिकारी—(क्रोधित होकर) क्या इसीके लिये मुझे आवाज़ दी थी ? (बन्दूक़को हाथमें सम्हालकर) वह मेरा क्या बिगाडता, मेरा शिकार जो था बोल अब उसके बदले तेरा शिकार करूं तो कितना उत्तम हो ?

बुद्धिधन—यह आपका अनुग्रह हो कि उसके बदले मेरा शिकार करें. किन्तु यदि ज्ञान रूपी चक्षुसे देखा जाए तो यह कार्य

(लावनी)

हे हितकरनर ! अब सुनियें अर्ज़ हमारी,
क्या कसूरसें संहारत हमें शिकारी ?
हम करत न कुछ तोफान लेश भर हानी,
वन फिरत चरत तृण हरित पिवत नितपानी;
नित शीत धूप वर्षाकी सहत हैरानी,
वनविभूतिमें हम वृद्धि करत हित मानीः
रहे वफादारी सहरोज पूर्ण हितकारी,
क्या कसूरसें संहारत हमें शिकारी ?
जो ग्रही दंत तृण शरण भहे रिपु आकर,
या पीठ दिखाकर भगे लुके कहीं जाकर;
मुनि शस्त्र रहित अरु दयापात्र हो हितकर,
नरवीर न मारत उन्हें दया दिल लाकर;
हम हिरन जाति सब नित्य उक्त गुणधारी,
क्या कसूरसें संहारत हमें शिकारी ??
हम भोलेभाले राग लुब्ध विश्वासी,
निःशंक यूथ सह नित्य रहे सुविलासी;
हित शत्रु हिंसक हमें देत दुखराशी,
कोई बचाओ हमको वीर ! सुगति अभिलाषी;
महि पतिसें मांगो शुद्ध न्याय सुखकारी,
क्या कसूरसें संहारत हमें शिकारी ??

(दोहा छंद.)

प्रथम फरज सुभजेशकी, रखे न कच्चे कान;
नेक न्याय देवें सदा, सबको एक समान.

क्या निरपराध जानवरका प्राण हरना पाप नहीं है ? शास्त्रानुसार इसमें अवश्य पाप है बल्कि औरभी विशेष बतलाया गया है कारण कि उसने आपका कोई अपराध नहीं किया था और उसको केवल अपने पेटके खातिर मारनेको तत्पर हुए थे. इस पृथ्वी पर नाना प्रकारके जीव हैं. सब आपके कहे अनुसार आपहीके शिकारके लिये है, इसका कोई दृष्टान्त आप बता सकते हैं ?

शिकारी—सब हमारे शिकारके लिये क्यों होने लगे. इस पृथ्वी पर मनुष्य गाय आदि बहुतसे जीव ऐसे है जिनका हम शिकार नहीं करते. केवल हरिण खरगोश, शेर, सूअर आदि हमारे शिकार हैं दृष्टान्त क्या बताऊं उनको सारा जगत मारकर खाता है.

बुद्धिधन—इसी परसे आपको मानना चाहिये कि वे शिकारके लिये पैदा नहीं हुए हैं, शिकारके लिये होते तो फिर सभी होते. वे केवल वनकी शोभाके लिये पैदा हुए हैं. सारा जगत इनको क्यों खाने लगा? बताइये मैं नहीं खाता, क्या मैं जगतमें शामिल नहीं हूं ?

शिकारी—तू जगतमें शामिल क्यों नहीं, पर हमारी ज्ञातिवाले तथा दूसरे भी कई एक इसका भक्षण करते हैं.

बुद्धिधन—इसका जो २ भक्षण करते हैं बुरा हैं. हरएक धर्म्म में कहा हुआ है कि हिंसाके करने जैसा भारी पाप कोई नहीं है फिर मैं कैसे मानूंके यह कार्य जो आप करतेथे उत्तम था. इस वनके जानवर पशु पक्षी किसीका कोई नुकसान न कर घास चारा फल फूलादि पर अपना निर्वाह करते हैं और वनकी शोभाको बढ़ाते हैं फिर उनको आप लोग क्यों मारते हैं. देखिये एक हरिण क्या पुकार कररहा है और उस पर कविराय अपनी क्या सम्मति देते हैं,

शिकारी—(बन्दूकको जमीन पर रखकर) क्या इसके भक्षण करनेमें कोई लाभ नहीं और उलटा पाप है ?

बुद्धिधन—मैं आपको गलत क्यों कहने लगा ? इसमें बहुत भारी पाप है और वह ऐसा है कि बड़ी कठिनाईसे छुटता है (गोवरमें जीवोंको बताकर) देखिये यह उन पापोंकी निशानी है कि यह जीव इस संसारमें जन्म लेकर अपने कियेको इस तरह बुरीगतिसे भोगते हैं. तो फिर जब कि आप इस तरह पाप करते हैं, अन्तमें जाकर आपकीभी वैसी गति होगी और वही प्राणी आपसे बदला लेंगे. यह मानव जन्म जो आपको मिला है आपकी अच्छी करनी की निशानी है फिर आप इसके कल्याणके अर्थ अपने हृदयमें दया रखकर सुकृत कार्य क्यों नहीं करते जो जन्म मरणके फेरेको टालें और आपकी सद्गति हो.

शिकारी—वास्तवमें एक गुरु महाराजने मुझे इसी प्रकार उपदेश किया था पर मैंने नहीं माना और कई जीवोंके प्राण लिये. (अपने दिलमें अफसोस लाकर) धिक्कार है मुझे जो उनकी आज्ञाका उल्लंघन करके उन निरपराधी निराधार पशु पक्षी जानवरोंको मारकर पापका भागी बना. हाय अफसोस ! अब मेरी क्या गति होगी ? मेरे किये हुए पाप किस तरह छुटेंगे ? कृपाकर कोई ऐसा उपाय बताओ कि मैं इन पापोंसे मुक्त हो सकूं.

बुद्धिधन—जो पाप आपने किये हैं भोगे बिदून छुटकारा नहीं पर हां यदि आजसे आप अपनी वृत्ति बदल दो और कियेका पश्चात्ताप करो तो कुछ फल दायक हो सकता है. अब आपको यही उचित है कि, अनिष्ट कार्यको छोड़कर दयाको सदैव अपना मित्र बनाइये और ईश्वर भक्तिमें लीन रहिये.

तरु पशु आदि तमाम हैं, जंगलको शृंगार;
खुद उनकी आत्मादि हित, रोज रहे तैयार.
नेकी शुकरावत नितान्त, नेकीदारके पास;
करें न नेकी नेक तो, नेकी बदीको भाग.
पृथ्वीनाथ शिरनाथ तउ, तिर्यग रहें अनाथ;
बडे सोचकी बात है, नाथ न करत सनाथ.

वीरनर ! आप ज्ञानी बनिये और इनका हरण करना छोडिये ताकि आपकी इस आत्माका कल्याण हो.

शिकारी—यदि ऐसा है तो फिर सब लोग शिकार करके मांसका भक्षण क्यों करते हैं ?

बुद्धिधन—क्या बताऊं जो २ शिकार करते हैं बुरा है. किसी ज़मानेमें जब कि लडाई आदि मौक़े पर अन्न फल फुलादि नहीं मिलते थे किसी अक्लमंदने प्राण बचानेके लिये जानवरको मार खानेका रास्ता केवल उसी मुसीबतके समय तक बतलाया था. जब कि आप जैसोंने उसको एक रूढी मानकर अभीतक वैसाही करना जारी रक्खा है.

शिकारी—यह तो ठीक है पर इसको मारकर भक्षण करनेमें हमारा पुरुषार्थ बढ़ता है फिर हम इसको क्यों छोड़ने लगे ?

बुद्धिधन—मैं इस बातको नहीं मान सकता. प्रथमतो ऐसी वस्तुके भक्षण करनेसे कोई पुरुषार्थ नहीं बढ़ता. इससे नाना प्रकारकी बीमारियां उत्पन्न होती हैं और जिसके लिये कई डाक्टरोंकी सम्मति है, कि मांसका भक्षण करना बनिसबत अन्नादि पदार्थोंके बुरा है. और पुरुषार्थके लिये इससेभी उत्तम पदार्थ इस पृथ्वी पर मौजूद हैं फिर आप ऐसेका भक्षण क्यों करते हैं कि, जिसमें पाप और हो ?

यम्' पढ़ने लगे. पढ़ते २ 'विश्वेश्वरनगरके' प्रजावर्गकी अर्ज़ी आई जिसको पढ़तेही आंखोंमें ललाई छा गई और एक वार लाहोरीमलपर सख्तीकी नज़रसे देखकर मनही मन कहने लगे "अरे दुष्ट यह तेरे कार्य ? क्या पुत्रवत् वाळाओंके सतित्वका नाश करता है? क्या तुझको ऐसा कार्य करते शरम मालूम नहीं हुई ? क्या उस समय मेरा डर नहीं हुआ, कि तेरा मालिक जो खबर लेनेको पीछे खडा हुआ है ? क्या राज्यमंत्री होके तुझे यह उचित है ? वास्तवमें किसी कहनेवालेने ठीक कहा है. ऐसे पुरुषको कि जिसके खानदानमें किसीने वडा काम नहीं किया है उसको उसपर नियत करना उचित नहीं. वह कदापि कामको संतोषकारक नहीं करेगा बल्कि राज्यमदमें फूलकर अनुचित कार्य करेगा. सो वास्तवमें ऐसाही हुआ. सात पुश्तोंमेंभी लाहोरीमलके खानदानमेंसे ऐसा काम किसीने नहीं किया फिर लाहोरीमल प्रजापालक क्यों होने लगा और उसके वैसे उत्तम आचार विचार क्यों होने लगे हाय! शोक! यह विचार उस समय मुझे क्यों नहीं आया जो मैं इसे मंत्री न वनाकर क्रोडीमलकोही मंत्रीपदपर रखता कि, जिसके खानदानमें सदैवसे मंत्रीपद चला आ रहाथा. उस वेचारेने ऐसा कोई अनुचित कार्य नहीं कियाथा केवल रिश्वत ली थी. उसमें क्या हो गया अहल्कार मात्र लेते हैं. पर यह अर्ज़ी कहां तक सही है इसकाभी निर्णय कर लेना चाहिये, कही क्रोडीमलके पत्रकी तरहसे किसीने झुठा तो नहीं लिखा है." यह विचार कर फिरसे अर्जीको देखने लगे और देखकर कहने लगे "अरे इसमें तो सवके दस्तखत मौजूद हैं, और यह जो लिखा 'हुआ है' कि, इसकी निर्णय दिलसुख सेठ तथा जसवन्तसिंहसे 'करलीजाय. फिर क्या ? यह अर्ज़ी झूठी नहीं होसकती. पर सर्वको

शिकारी—कृपाकर यह बात बताओगे कि आप कौन हैं ?

बुद्धिधन—मैं एक जैनी हूं और मुसीबतका मारा इधर उधर भटकता हूं. कहिये आप कौन हैं.

शिकारी—मैं पासके नगर दौलतपुरका राजा हूं कहिये आपको मुसीबत क्या है ?

इस परसे बुद्धिधनने अपनी तमाम कर्म कथा कह सुनाई जिसके सुनतेही राजा साहबको दया आई और यह जानकर "यह मंत्रीका लडका होनहार पढ़ा लिखा है" अपने नगरमें ले गए और अपना प्राईवेट सेक्रेटरी बनाकर केवल इसी कामपर रक्खा कि हर समय उत्तम बातें बताया करें और राज्य कार्यमें अच्छी सम्मति दे. बुद्धिधनभी मन भाती बात पाकर इसको सहर्ष स्वीकार करने पाया है और वहीं रहकर अपना निर्वाह कर रहा है.

प्रकरण ६२.

लाहोरीमलको निकालनेके उपायमें महाराजा.



होरीमलको मंत्रीका कार्य करते आज कई वर्ष व्यतीत हो गए. इसी प्रकार बुद्धिधनकोभी देशवदर हुए वर्षां गुज़रे.

दीनका समय है गर्मीका ऋतु होनेसे युगेंद्रपालसिंहने अपना निवासस्थान राज्यबाग़में कर रक्खा है. इस समय लाहोरीमल आदि पासमें बैठे हुए राज्यकार्य कर रहे हैं ऐसे समयमें एक सेवकने डाक लाकर राजासाहबके हस्तगत की, जिसे पाकर स्व-

प्रबन्धकर हमको इस दुःखसे मुक्त कीजिये नहीं तो नगर छोडकर जाना पडेगा आप हमारे दयालु तथा प्रतापी महाराजा हैं अतएव पहिले न जाकर अर्ज़ी द्वारा ज़ाहिर करते हैं आशा है कि आप हमारी इस अर्ज़ी पर शीघ्रही लक्ष देंगे.

विश्वेश्वरनगर आपके शुभेच्छु.

२९-४-१८८५ सही जवाहरीलाल, अमृतलाल, आदि.

जसवन्तसिंहने जब इस अर्ज़ीको पढ ली अपने मनकी चिन्ता दूर की और सहर्ष कहने लगा " पृथ्वीनाथ वास्तवमें यह अर्ज़ी सही है. "

महाराजा—तू किसपरसे जानता है ?

जसवन्तसिंह—क्या कहूं इस विषयमें कुछ अर्ज़ नहीं कर सकता. बुद्धिधनको देशवदर करनेका कारण यही था. मुकुट शिरोमणि ! मैं इस वातको जान गया और सदैव रात्रिके समय बुद्धिधनके मकानपर ग़श्त करनेको जाया करता. एक दिन मध्यरात्रिको मैं गया और कनककुमारीको अन्दरसे चिल्लाते हुए पाया. अन्दर जाकर देखता क्या हूं कि, लाहोरीमल उसके सतित्वका नाश करनेको हाथमें छुरा लेकर तत्पर हो रहा है, मैंने शीघ्रही पकड लिया और सवूतमें वह छुरा लेकर तथा धिक्कार कर निकाल दिया.

महाराजा—क्या कहता है क्या यह वात सही है वह छुरा कहां है ?

जसवन्तसिंह—मैं झुठ क्यों कहने लगा छुरा मेरे घरपर पडा हुआ है. उसने वहुतेरा लेना चाहा किन्तु मैंने नहीं दिया,

महाराजा—ठीक किया क्या दिलसुखवाली वात सही है ?

जसवन्तसिंह—हां पृथ्वीनाथ ! वह वातभी सही है. छुटेरीके

बुलाकर इसकी निर्णय कैसे करने लगा, केवल जसवन्तसिंहको ही बुलाना उचित होगा." यह विचार कर लाहोरीमलसे कहने लगे "अपना काम जो करना हो शीघ्रही करके रास्ता लो, आज हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है. महाराजाका इतना कहना था कि, लाहोरीमल आदिने अपने कागजोंका समेटना शुरू किया और शीघ्रही हर्ष मानते हुए कि, आज जल्दी छुट्टी पाई, अपने २ घर चले गए. उनका ज्याना था कि महाराजाने एक सेवकको जसवन्तसिंहके बुला लानेकी आज्ञा दी. आज्ञानुसार सेवक जाकर जसवन्तसिंहको बुला ले आया. जसवन्तसिंह प्रणाम कर इस तरहसे चिन्ता करता हुआ खडा रहा कि, कहीं आज कोई कसूर तो नहीं हुआ है जो महाराजाने बुलाया है. महाराजाने जसवन्तसिंहको अपने सामने खडा हुआ देखकर उसे बैठनेकी आज्ञा दी तदनन्तर वह अर्जी जसवन्तसिंहके हाथमें दी और कहने लगे इसको देख यह कहां तक सही है?

जसवन्तसिंहने उस अर्जीको घबराते हुए ली और मनही मन पढ़ने लगा जो इस प्रकार लिखी हुई थीः—

महाराजाधिराज युगेंद्रपालसिंह.

इसमें कोई संदेह नहीं कि लाहोरीमलका जुल्म प्रजावर्ग पर दिन ब दिन बढ़ता जाता है. इतने दिन उसको सहनकर लिया, अब सहन नहीं हो सकता उसने हमारी बहिन बेटियोंका सतित्व हरना आरंभ करदिया है. एक रोज रातको दिलसुखसेठकी बेटीका सतित्व हरनेको तथा एक रोज बुद्धिधनकी वहूका सतित्व हरनेको गया था. इस विषयमें हमसे पूछनेकी आवश्यकता नहीं है, आप दिलसुख तथा जसवन्तसिंहसे पूंछिये वे सब जानते हैं. और इसका शीघ्रही

इसे निकालूं. चाहे सो हो अब इसको निकाले विना छुटकारा नहीं. नहीं तो कहीं मेरा नगर उलट पुलट हो जाएगा " यह निश्चयकर जसवन्तसिंहसे कहने लगे कहो जसवन्त अब इस विषयमें क्या किया जाय ?

जसवन्तसिंह—कृपानाथ ! मैं इसमें क्या कहूं उचित हो सो कीजिये.

महाराजा—इसमें तो संदेह नहीं कि, लाहोरीमल अब मंत्री पद पर नहीं रह सकता. न ऐसे नीच आदमीको रखना उचित है. तुम कोई ऐसा पुरुष बताओ कि जो वास्तवमें उत्तम, खानदानी तथा कामको अच्छी तरहसे करने वाला हो.

जसवन्तसिंह—(इस समय बुद्धिधनका नाम बताना उत्तम समझ कर) मेरी रायमें तो ऐसे पुरुषको ही मंत्री पदपर रखना चाहिये कि जिसका खानदान सदैव उस कामको करता आया हो. वह कभी कोई बिगाड़ नहीं करेगा, कदापि करेगाभी तो ऐसा नहीं कि, जिससे प्रजा हा हाकार मचावे.

महाराजा—वास्तवमें तुम ठीक कहते हो पर ऐसा पुरुष कहां है ?

जसवन्तसिंह—है क्यों नहीं. बुद्धिधन जो क्रोडीमलके खानदानमें बैठा हुआ है.

महाराजा—वह तो अभी नादान है, आशा नहीं कि ऐसे भारी कार्यको कर सके.

जसवन्तसिंह—ऐसा समझनेमें आप गलती करते हैं वह ऐसा विद्वान्, चतुर, तथा होनेहार है कि यह तो क्या इससेभी भारी कार्य आसानीसे कर सकेगा.

साथ दिलसुखके घर उसकी कुंवारी पुत्रीके सतित्वका नाश करने गयाथा कि दिलसुख जाग्रत हो गया और जूतियोंसे खुब सेवा की.

महाराजा—(क्रोधित होकर) कोई है यहां हाज़िर जाओ दिलसुख सेठको बुला लाओ.

आज्ञानुसार सेवक दिलसुखको बुलाने गया. थोडेही समयमें दिलसुख आ उपस्थित हुआ. उसका आना था कि महाराजाने कहना आरंभ किया " दिलसुख क्या लाहोरीमल तुम्हारी पुत्रीके सतित्वको नाश करनेको तुम्हारे मकान पर आया था ?

दिलसुख—(शरमाता हुआ) हां कृपानाथ ! आया था किन्तु मेरे जाग्रत होनेसे कुछ नहीं कर सका.

महाराजा—तुमने उसके जूतियें मारी थी.

दिलसुख—(घबराता हुआ कि न मालूम आज यह बात क्यों पूछ रहे हैं. कहीं मत्रीजीने मेरी शिकायत तो नहींकी ? पर इसमें क्या, मेरी पुत्रीकी इज्ज़त लेने क्यों आए थे डरने क्यों लगा कह ही दूं) हां पृथ्वीनाथ ! जूतियें दीथी. नहीं देता तो क्या करता ?

महाराजा—बहुत ठीक किया. जाओ.

महाराजाकी आज्ञा पाकर दिलसुख सहर्ष वापिस लौटा. उसका जाना था कि महाराजा प्रथम तो मनही मन विचार करने लगे " यह अर्जी बिलकुल सही है. मैंने उस निराधार निरपराधी बालकको विना कारण देश वदर किया. वास्तवमें जसवन्तसिंहके कहे अनुसार लाहोरीमलकी केवल उसको निकालनेकी चाल थी. ख़ैर इस विषयमें मैं पीछे देखूंगा. अब इसके निकालनेका क्या उपाय ? यह रखनेका पात्र तो नहीं है! देखो इसके कैसे अनिष्ट कर्म. किन्तु ऐसा पुरुष कौन रह गया है कि, जिसको मंत्री पद देकर

आज जसवन्तासिंह हर्ष मानता हुआ तथा आनन्द रूपी लहरोंमें प्रफुल्लित होताहुआ जा रहा है और मनही मन कहता है कि, कितना जल्दी बुद्धिधन आवे और दुष्टका खानमा हो.

प्रकरण ६३.

भाग्योदय.



मका समय है अभी चार नहीं बजे हैं ऐसे समयमें दौलतपुरमें बुद्धिधन ऑफिससे आकर अपने मकान पर कपडे उतारकर बैठा हुआ है और मनही मन विचार कररहा है " घरमें किसीका पत्र क्यों नहीं आया ? क्या कोई कष्ट तो नहीं है ? आज मेरा दाहिना अङ्ग क्यों फ़डक रहा है क्या कोई खुश खबरी मिलनेवाली है ? शकुनी लोगों के माननेके अनुसार तो इसका फड़कना अति उत्तम है. पर इस समय मुझे तो उल्टी पत्रके न आनेसे चिन्ता होरही है. न मालूम प्यारी अपने यह दुःखके दिन कैसे व्यतीत करती होगी. मैं अपनी जन्म भूमिमें जाकर उसकी सुध कब लेने पाऊंगा ? क्या इस समय मेरे मित्र उसको सहायता करते होंगे ? वाह क्यों नही मेरे दोनों मित्र ऐसे हैं कि, किसीको ज़रासीभी तकलीफ़ नहीं होने देंगे. पर मेरे देश बदर होनेसे सबके जीवको दुःख मालूम हो रहा होगा " इस प्रकार बुद्धिधन बैठा हुआ चिन्ता कर रहा था कि विश्वेश्वर नगरसे एक सवार काग़ज़ लेकर आया और बुद्धिधनके हस्तगत किया, जिसको पाकर तथा पढ़कर बुद्धिधन अति प्रसन्न हुआ तथा-

महाराजा—इस समय वह कहां पर है?

जसवन्तसिंह—दौलत पुरके राजा साहबके पास है.

महाराजा—वहां क्या कर रहा है ?

जसवन्तसिंह—वह यहांसे देश वदर होकर जा रहा था. जब वह दौलत पुरके जङ्गलमें पहुंचा राजा साहबको हिरनके पीछे घोडा दौडाते देखे उस समय वह हत्या बुद्धिधनको पसंद नहींआई और उनको आवाज़ देकर बुलाए तथा नाना प्रकारसे उपदेश किया कि, जिससे प्रसन्न होकर अपने नगरमें ले गए और दो सौ रुपये माहवार पर अपना प्राईवेट सेक्रेटरी बना दिया. क्या बताऊं इस समय बुद्धिधनकी वहां इतनी वाह २ हो रही है कि मैं कह नहीं सकता.

महाराजा—क्या मेरे मंत्रीका पुत्र ऐसा! क्या मैंने उत्तम वालकको विना तपास किये देश वदर किया? धिक्कारहै मुझे और धन्य हैं उसको कि, उसने कोई बात न कहते शीघ्रही मेरी आज्ञाका पालन किया. जा शीघ्रही उसको बुलानेका उपाय कर. मैं उसके गुणोंको देखकर अपने अहो भाग्य समझूंगा.

जसवन्तसिंह—(प्रसन्न होता हुआ) जो आज्ञा आजही पत्र लिखकर रवाना करता हूं.

महाराजा—तू पत्र किसके हाथ भेजेगा यहांही लिखकर दे ताकि एक सवारके हाथ अभी रवाना करूं.

आज्ञानुसार जसवन्तसिंहने वहीं पत्र लिख दिया, तत्पश्चात् सवार द्वारा रवाना किया गया. पत्रका रवाना होना था कि महाराजाने जसवन्तसिंहको यह विषय गुप्त रखनेका कहकर घरजानेकी आज्ञा दी और स्वयम् दूसरे काममें लीन हुए.

कती. इतने दिन आप राज्यकार्यमें लक्ष नहीं देतेथे जिससे वैसी दशा हो गईथी अब जबकि आप स्वयम् सम्हाल गए हैं तो फिर क्यों बिगडने लगा. मुझे सहर्ष जानेकी आज्ञा दीजिये. यह सेवक आपकी सेवा करनेको हाज़िर है. जब आप चाहेंगे स्वयम् हाज़िर हो जाऊंगा, या पत्रद्वारा अपनी सम्मति जाहिर करता रहूंगा.

राजा—मैं तुमको रोक नहीं सकता, सहर्ष जाने दूंगा. किन्तु तुम्हारे गुणोंको देखते हुए मेरा दिल तुमको छोडना नहीं चाहता. क्या हर्ज है यदि तुम यहांही रहो ? मैं तुम्हारी तनख्वाह बढादूं और इस पत्रके उत्तरमें स्वयम् मैं महाराजाको लिखदूं.

बुद्धिधन—यह आपका अनुग्रह है. आज कल वहांका ढङ्ग बिगडा हुआ है एक वार मुझे जाकर अपनी जन्मभूमिकी सेवा बजाने दीजिये. क्या बताउं आते समय अपनी मातासेभी मिलने नहीं पायाथा.

राजा—क्या महाराजाने मिलने नही दिया ?

बुद्धिधन—नहीं तो वह घरपर नही थी अपने पिताके घर बाहिरगांव गई हुईथी. न माल्यूम उनकी क्या दशा होगी, महीनों गुज़रे घरका पत्र नहीं आया.

राजा—तुम सहर्ष जा सकते हो किन्तु आजही क्या, दोएक रोज़ और ठहरो ?

बुद्धिधन—इसमें शीघ्रता जो लिखी हुई है. आप कहें तो आज ठहर जाऊं. कलके लिये आज्ञा दीजिये, तैयारी कर रक्खूं.

राजा—सहर्ष तैयारी करो.

बुद्धिधन जो आज्ञा कहकर चला गया.

मनही मन कहने लगा " वास्तवमें शकुनी लोगभी अच्छा इल्म रखते हैं जो उनके कहे अनुसार बात होने पाती है. देखो आज मेरा दाहिना अङ्ग फड़क रहा था कि, शीघ्रही खुश खबरी मिली. धन्य है इष्ट देव ! धन्य है महाराजा !! धन्य है मेरे मित्रो !!! जो आज इस कष्टसे इस दासको मुक्त किया. इसमें कोई संदेह नहीं कि मैं यहां भी सानन्द हूं पर एक देश बदरके कलङ्कको लेकर फिर रहा हूं, जो मेरी चिन्ताका मूल हो रहा था. किन्तु अब न मालूम यहां के राजासाहब मुझे जानेकी आज्ञा देंगे कि नहीं, उनकी आज्ञा बिदून मैं जा नहीं सकता. वह अवश्यमेव आज्ञा देंगे विचारवान् जो ठहरे " इस प्रकार निश्चयकर तथा आनन्द मनाता हुआ उस सवारके आगत स्वागतमें लगा और अब यही चाहता है कि कितना जल्दी भोर हो और यह पत्र राजासाहबको जाकर बताऊं.

प्रभातका समय है. बुद्धिधन शीघ्रही जागृत होकर प्रतिक्रमण, पूजन आदि करके निवृत्त हुआ और आनन्दकी लहरोंमें मस्त हो समयानुसार राजासाहबके पास जा उपस्थित हुआ. जानेके साथही प्रणाम कर वह पत्र उनके हाथमें दिया, जिसको पढ़कर राजा साहब एक तरहसे प्रसन्न हुए कि, बुद्धिधन आज देशबदरसे मुक्त हुआ किन्तु साथमें यह जानकर कि यह मेरा शिक्षक चला जायगा, चिन्तामग्न हुए और कहने लगे.

" आज मैं इस पत्रको पाकर बहुत प्रसन्न हुआ किन्तु तुम्हारे चले जानेसे मेरा शिक्षक फिर कौन होगा और तुम जो राज्यकार्यमें उत्तम सम्मति देतेथे, जिससे यह मेरा बिगडा हुआ राज्य अल्प समयमें सुधरने पाया है, इसकी क्या दशा होगी ? "

बुद्धिधन—अब इस राज्यकी दशा कदापि बिगड नहीं स-

जाकर पूजन करते हुए अपने इष्टको इस कृपाके लिये कोटिशः धन्यवाद देने लगा. जब पूजा करचुका घरमें जाकर अपनी माता को (जो आ गई थी) प्रणाम किया. तदनन्तर भोजन किया और अपनी माताके साथ सुख दुखकी बातें करने लगा. जब दो बज चुके जसवन्तसिंह आया और शीघ्रही कपडे पहिना कर महाराजाके पास लेगया. बुद्धिधनने महाराजाको दंडवत कर एक मोहर नज़रकी जिसको उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर बैठनेकी आज्ञा दी. आज्ञानुसार बुद्धिधन तथा जसवन्तसिंह उचित स्थान पर बैठ गए.

इस समय लाहोरीमल पासमें बैठा हुआ काम रहा है. इन दोनोंको देखकर वह घबराने लगा तथा मनही मन कहने लगा " बुद्धिधन कहांसे आगया ? इसको किसने बुलाया ? कहीं जसवन्तसिंहने गडबड तो नहींकी ? पूछूं तो यह कैसे आया " और बुद्धिधनसे कहने लगा. " तुम देश बदर किये गए थे महाराजाकी आज्ञा बिना कैसे आगए. "

लाहोरीमलके इस प्रश्न पर महाराजा और क्रोधित हुए और कहने लगे इसको क्या पूछ रहा है यह मेरी आज्ञासे आया है. अपना चार्ज इसको सुपुर्द करदे "

महाराजाका यह हुक्म पाकर लाहोरीमल रोने जैसा होगया और मनही मन यह कहकर "जसवन्तसिंहने शत्रुताका बदलालिया" महाराजासे कहने लगा " पृथ्वीनाथ ! मैंने क्या अपराध किया जो मेरेसे चार्ज छुड़वाया जाता है ? "

महाराजा—बस अब ज़ियादा मत बोल. प्रथम इसे चार्ज दे दे पीछे सब बताऊंगा.

आज बुद्धिधनकी विदाईका दिन है बुद्धिधन प्रभात होतेही अपने नित्य कार्यसे निवृत्त होकर तथा भोजन कर शीघ्रही राजा साहबके पास गया और आज्ञा चाही. राजा साहबको आज्ञा देनेमें बहुत दुःख मालूम होने लगा, पर क्या होसकता था. प्रसन्न होकर तथा कोशमेंसे दस हजार सोना मोहर व एक हीरेका कंठा मंगवाकर बुद्धिधनको दिये और कहने लगे "यह तुम्हारी सेवाको देखते कुछभी नहीं है."

बुद्धिधन--पृथ्वीनाथ ! इन्हें मैं लेकर क्या करूं यह पैसाही दुःखका मूल है, इससे कदापि प्रेम नहीं रखना चाहिये वापिस लीजिये और केवल मुझे आशीर्वाद दीजिये कि, मेरा वहां जाने पर भला हो.

राजा--बुद्धिधन यह नहीं होसकता, तुम्हें लेनाही होगा यदि तुम मुझे नाराज़ करना चाहते हो तो छोड जाओ, यदि आशीर्वाद चाहते हो तो इसे ले जाओ. शीघ्रही तुम्हारा भला-होगा.

बुद्धिधनने इतना आग्रह देखकर उनको स्वीकार किया और राजा साहब तथा तमाम दरबारी लोगोंको आखिरी प्रणाम कर मकान पर आया. तदनन्तर सामान बांधकर उस सवारके साथ रवाना हुआ.

कई दिनोंसे आज बुद्धिधन मुसाफ़िरी करता हुआ तथा आनन्द मनाता हुआ अपनी जन्म भूमिमें आ पहुंचा है. ज्योंही वह नगरमें पहुंचा, घोडेसे उतर कर जसवन्तसिंहके पास गया और उसे मिलकर तथा तमाम हक़ीक़त जानकर धन्यवाद देकर घर आया. घरपर आकर कपडे उतारे स्नान किया और निज मन्दिरमें

न होना जानकर आनन्दयुक्त हुआ और मनही मन जसवन्तसिंहको धन्यवाद देने लगा. धन्य है उसको कि, लाहोरीमलपर किंचित् क्रोध नहीं किया.

जसवन्तसिंहके इस प्रकार कहनेपर तथा अपना छुरा नज़रोंके सामने पाकर लाहोरीमल लाजवाब हो गया. इसका लाजवाब होना था कि महाराजा और पूछने लगे "क्यों दिलमुखशेठके यहां उसकी कुंवारी पुत्रीके सतित्वका नाश करने तूही गयाथा और दिलमुखके हाथसे जूतियों खा आया. धिकार है तुझे! जा दुष्ट अपना मुंह काला कर."

लाहोरीमल यह नई बात सुनकर और चिन्तामें डूब गया तथा और कोई उत्तर न देकर मनही मन कहने लगा "न मालूम अब महाराजा मेरी क्या गति करेंगे? हाय! मैंने जसवन्तसिंहको अपना शत्रु क्यों बनाया? ऐसे अनिष्ट कर्म क्यों किये? जो आज महाराजाके सामने शर्मिन्दा हो रहा हूं और एक शब्दभी कहने नहीं पाता."

अब राजासाहबको भली प्रकार विदित हो गया कि लाहोरीमलने बहुत कुछ अनाचार प्रजा वर्गपर किया है और वह अनाचार ऐसा है कि, उसके लिये इसको प्राणरहितकी ही सज़ा देना चाहिये कि मेरी प्रजा हर्ष मानकर न्यायका होना जाने और तमामके समीप खुले शब्दोंमें कहने लगे "कि मैं लाहोरीमलके लिये जिसने पुत्री समान बालाओंपर अनाचार किया और जिससे प्रजा वर्गमें हाहाकार मच रहा है प्राणरहितकी सज़ा उचित समझता हूं कोई हाज़िर है जाओ इसको ले जाओ और प्राणरहित करके शीघ्रही मेरे समीप आकर ज़ाहिर करो.

महाराजाकी आज्ञानुसार लाहोरीमलने बुद्धिधनको चार्ज दिया जिसको उसने सहर्ष स्वीकार कर महाराजाको फिरसे दंडवत् किया. उसके उत्तरमें महाराजा कहने लगे " तुम्हारे खानदानको देखकर यह मंत्री पद तुम्हें देता हूं. आशा है कि तुम सदैव इस राज्यके शुभ चिन्तक रहकर राज्यका कार्य करोगे और प्रजा वर्गको प्रसन्न करनेका यत्न करोगे कि, जिससे तुम्हारी तथा इस राज्यकी प्रशंसा हो. "

बुद्धिधन—जो आज्ञा.

जब बुद्धिधन चार्ज ले चुका महाराजाने लाहोरीमलको प्रश्न करने शुरू किये " अरे लाहोरीमल ! क्या तूने बुद्धिधनको उसकी स्त्रीका सतित्व हरनेके अर्थ देश वदर किया था ? "

लाहोरीमल—नहीं तो ऐसा कौन कहता है ?

महाराजा—क्या तू एक रोज रातको लुटेरीके साथ बुद्धिधनके घर नहीं गया और उसकी स्त्रीका सतित्व हरनेका यत्न नहीं किया ?

लाहोरीमल—अरे साहब यह आप क्या कह रहे हैं !

लाहोरीमलका इतना कहनाथा कि जसवन्तसिंह बोल उठा "क्यों लाहोरीमल ! अब झुठ बोलनेसे क्या होता है ? (छुरेको निकालकर) देख यह किसका है. मैंही था कि, मेरी बहिनके सतित्वको बचाने पाया, नहीं तो तुमने उसके हरनेमें कौनसी कमी रक्खीथी इसी छुरेसे मारने दौडाथा. "

यह हाल बुद्धिधन पहिले जानने नहीं पायाथा. महाराजाकी ज़बानी अपनी प्रियाका हाल सुनकर प्रथम तो चिन्ता करने लगा कि, कहीं उसके सतित्वका नाश तो नहीं हुआ किन्तु सतित्वका नाश

न होना जानकर आनन्दयुक्त हुआ और मनही मन जसवन्तसिं-हको धन्यवाद देने लगा. धन्य है उसको कि, लाहोरीमलपर किं-चित् क्रोध नहीं किया.

जसवन्तसिंहके इस प्रकार कहनेपर तथा अपना छुरा नज़रोंके सामने पाकर लाहोरीमल लाजवाव हो गया. उसका लाजवाव होना था कि महाराजा और पूछने लगे "क्यों दिलसुखशेठके यहां उ-सकी कुंवारी पुत्रीके सतित्वका नाश करने तूही गयाथा और दिल-सुखके हाथसे जूतियों खा आया. धिक्कार है तुझे! जा दुष्ट अपना मुंह काला कर."

लाहोरीमल यह नई वात सुनकर और चिन्तामें डूव गया तथा और कोई उत्तर न देकर मनही मन कहने लगा "न मालूम अव महाराजा मेरी क्या गति करेंगे? हाय! मैंने जसवन्तसिंहको अ-पना शत्रु क्यों वनाया? ऐसे अनिष्ट कर्म क्यों किये? जो आज महाराजाके सामने शर्मिन्दा हो रहा हूं और एक शब्दभी कहने नही पाता."

अव राजासाहवको भली प्रकार विदित हो गया कि लाहोरी-मलने वहुत कुछ अनाचार प्रजा वर्गपर किया है और वह अनाचार ऐसा है कि, उसके लिये इसको प्राणरहितकी ही सज़ा देना चा-हिये कि मेरी प्रजा हर्ष मानकर न्यायका होना जाने और तमामके समीप खुले शब्दोंमें कहने लगे "कि मैं लाहोरीमलके लिये जिसने पुत्री समान वालाओंपर अनाचार किया और जिससे प्रजा वर्गमें हाहाकार मच रहा है प्राणरहितकी सज़ा उचित समझता हूं कोई हाजिर हैं जाओ इसको ले जाओ और प्राणरहित करके शीघ्रही मेरे समीप आकर ज़ाहिर करो.

राजासाहबका यह हुक्म देनाथा कि लाहोरीमल वहीं बैठकर रोने लगा तमाम दरबारी लोग इस हुक्मको सुनकर चिन्ता करने लगे किन्तु उस समय किसकी मजाल जो महाराजा साहबको कह सके. बुद्धिधनको लाहोरीमलपर दया आई और इस समय कुछ कहना उचित समझा और खडा होकर हाथ जोडकर कहने लगा. पृथ्वीनाथ ! इसमें कोई संदेह नहीं कि लाहोरीमलके कर्म अनिष्ट थे और उनकी एवज़ आपने जो प्राणरहितकी सज़ा तजवीजकी है. ठीक है. पर कृपानिधान ! इस तरह मंत्रीको प्राणदण्ड देना उचित नहीं. आप राजराजेश्वर तथा प्रजापालक हैं, हम आपके दास पैर २ के कसूरवार हैं एक वार आपको और विचारना चाहिये.

महाराजा—अरे इसने तो न करने जैसा किया है.

बुद्धिधन—पृथ्वीनाथका कहना यथार्थ है. फिरभी यह आपका मंत्री है. जरा विचारिये और दयाका स्मरण कीजिये

बुद्धिधनके कहने पर राजासाहब विचारमग्न हुए और कहने लगे कि, " वास्तवमें बुद्धिधनका कहना उत्तम है. प्राणरहितकी सज़ा देकर घातक बनना फ़ज़ूल है. कोडीमलकी तरह इसकी जागीर तथा घरबार ज़ब्त करना बस होगा. " और कहने लगे मैं बुद्धिधनकी सम्मतिके अनुसार प्राण रहितकी सज़ा माफ़ करता हूं और उसके स्थान पर उसकी जागीर तथा घरमेंका द्रव्य ज़ब्त करनेका हुक्म देता हूं. इसकी तामील शीघ्रहीकी जाय.

यह हुक्म सुनकर तमाम दरबारी लोग प्रसन्न हुए और बुद्धिधनकी वाहवाह करने लगे. किन्तु लाहोरीमलको तो कोई आनन्द नहीं हुआ.

राजासाहबकी आज्ञानुसार पुलिस लाहोरीमलके मकानपर पहुंची और घरमें जितना द्रव्य था सब लाकर राजासाहबके समीप रक्खा गया. उसका रखना था किं, लाहोरीमल चिल्लाने लगा कि, हाय! अब मैं मर गया कदापि बच नहीं सकता, लाहोरीमलका यह कहना था कि, राजासाहबसे आदि सब कहने लगे, यह क्या बकरहा है" किन्तु जब जो ज़ेवर लाया गया था उसको खोलकर देखा गया तो उसमें बुद्धिधनने सब अपना ज़ेवर पाया और मनही मन लाहोरी-मलको धिक्कार देकर कहने लगा. पृथ्वीनाथ! इसमें बहुतसा ज़ेवर हमारा है जो चोरी गया था.

महाराजा—अरे क्या कहता है तेरी चोरीका ज़ेवर? अभी लाहोरीमल कहरहा था कि, मर गया सो यही बात थी. (लाहो-रीमलकी तरफ़ मुखातिब होकर) क्यों यह ज़ेवर कहांसे कैसे आया? साफ़ २ कहदे नहीं तो अभी ठीक करदूंगा.

लाहोरीमलकी क्या मजाल थी जो झूठ कहने पाता. घबराता हुआ कहने लगा. पृथ्वीनाथ! क्या कहूं यह चोरी मैंनेही करवाई थी. वास्तवमें मंत्री साहब ठीक कहते हैं. यह सब ज़ेवर इन्हींका है.

महाराजा—(यह हाल सुनकर लाल पीले होकर) इस चो-रीका करने वाला कौन है?

लाहोरीमल—सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसने शेरअली व ग़नीको भेज कर यह चोरी करवाई थी.

महाराजा—हैं कोई हाज़िर हनुवन्तसिंह व दोनों उन सिपा हियोंको बुलाओ

आज्ञानुसार सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस व दोनो सिपाही आ उप-स्थित हुए.

राजासाहबका यह हुक्म देनाथा कि लाहोरीमल वहीं बैठकर रोने लगा तमाम दरबारी लोग इस हुक्मको सुनकर चिन्ता करने लगे किन्तु उस समय किसकी मजाल जो महाराजा साहबको कह सके. बुद्धिधनको लाहोरीमलपर दया आई और इस समय कुछ कहना उचित समझा और खडा होकर हाथ जोडकर कहने लगा. पृथ्वीनाथ! इसमें कोई संदेह नहीं कि लाहोरीमलके कर्म अनिष्ट थे और उनकी एवज़ आपने जो प्राणरहितकी सज़ा तजवीजकी है. ठीक है. पर कृपानिधान! इस तरह मंत्रीको प्राणदण्ड देना उचित नहीं आप राजराजेश्वर तथा प्रजापालक हैं, हम आपके दास पैर २ के कसूरवार हैं एक बार आपको और विचारना चाहिये.

महाराजा—अरे इसने तो न करने जैसा किया है.

बुद्धिधन—पृथ्वीनाथका कहना यथार्थ है. फिरभी यह आपका मंत्री है. ज़रा विचारिये और दयाका स्मरण कीजिये

बुद्धिधनके कहने पर राजासाहब विचारमग्न हुए और कहने लगे कि, " वास्तवमें बुद्धिधनका कहना उत्तम है. प्राणरहितकी सज़ा देकर घातक बनना फ़जूल है. क्रोडीमलकी तरह इसकी जागीर तथा घरबार ज़ब्त करना बस होगा. " और कहने लगे मैं बुद्धिधनकी सम्मतिके अनुसार प्राण रहितकी सज़ा माफ़ करता हूं और उसके स्थान पर उसकी जागीर तथा घरमेंका द्रव्य ज़ब्त करनेका हुक्म देता हूं. इसकी तामील शीघ्रहीकी जाय.

यह हुक्म सुनकर तमाम दरबारी लोग प्रसन्न हुए और बुद्धिधनकी वाहर करने लगे. किन्तु लाहोरीमलको तो कोई आनन्द नहीं हुआ.

किया और तेजमलके लिये क्या दंड जिसने क्रोडीमलकी चोरी साथ जाकर और मौका बताकर कराई.

महाराजा—वास्तवमें लुटेरी सजाके योग्य है किन्तु तेजमलके लिये यह तू क्या कह रहा है ?

जसवन्तसिंह—मैं सही कहरहा हू. आप इन सिपाहियोंसे पूछ लीजिये

जसवन्तसिंहका इतना कहना था कि, शीघ्रही दोनों सिपाही बोल उठे कृपानिधान ! मौका तो तेजमलने ही बताया था. नहीं तो हमने क्रोडीमलका कोश कब देखा था.

महाराजा—(क्रोधित होकर) कोई है हाजिर लुटेरी तथा तेजमलको बुला लाओ.

आज्ञानुसार दोनों आ उपस्थित हुए जिनको बाद उचित पूछ पाछके पांच पांच सालके लिये बंदीखाने भेजनेका हुक्म दिया गया

आज्ञानुसार तामील होकर दोनों सिपाही, लुटेरी तथा तेजमल बंदीखाने भेजे गए. तथा हनुवन्तसिंह अपने कियेका फल पाकर मुंह उतार घरको लौटा इस समय केवल लाहौरीमल बैठा हुआ है. जिसके लिये महाराजा विचार कर कहने लगे. अरे दुष्ट ! तेरे यह कार्य ! क्या तुझे मंत्री होकरके चोरीयो करवाना उचित था ? क्या ? मैंने तुझको अपना विश्वास पात्र योंही समझा था ? क्या मैंने तुझको ऐसा समझकर अपना मंत्री बनाया था ? न मालूम इससेभी विशेष ऐसे कार्य कितने किये होंगे ? अब तू मेर हाथोसे बच नहीं सकता. कोई है हाज़िर ! जाओ इसको शीघ्रही ले जाओ और प्राण रहित कर आओ.

हनुवन्तसिंह तथा उन दोनों सिपाहियोंका आना था कि महाराजा प्रथम हनुवन्तसिंहसे पूछने लगे. क्योंरे ! तूने इन सिपाहियोंको क्रोडीमलके मकान पर भेजकर चोरी करवाई है ?

हनुवन्तसिंह—नहीं तो हजूर ऐसा कौन कहता है ?

महाराजा—तेरा बाप लाहोरीमल जो कह रहा है और तमाम माल जो लाहोरीमलके यहांसे बर आमद होकर आया है.

हनुवन्तसिंह यह हाल सुनकर पानीमें बैठ गया और मनहीमन विचार कर कि "अब कहे विना छुटकारा नहीं. नामाक़ूल लाहोरीमलने जो कह दिया" और कहने लगा. पृथ्वीनाथ हुज़ूरका कहना यथार्थ ....है किन्तु मंत्रीजीके कहनेसे ही मैंने ऐसा कराया है.

हनुवन्तसिंहका कबूल करना था कि, उन दोनों सिपाहियोंने शीघ्रही क़बूल करलिया.

इतना क़बूल करना था कि, महाराजा विचार कर कहने लगे ये दोनों सिपाही—दस दस सालके लिये बंदीख़ाने भेजे जाएं तथा सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसका घर ज़प्त होकर कुल माल राज्य कोशमें लाया जाय और इसको सदैवके लिये नौकरीसे हटा दिया जाए कि, जिसने पुलिसका सुपरिण्टेण्डेण्ट होकरके पता लगानेके बजाए हाथोंसे ऐसा कार्य कराय'. किन्तु इस समय जसवन्तसिंहने देखा कि, लुटेरी, जिसके प्रतापसे लाहोरीमल अनिष्ट कर्म करने पाया तथा तेजमल, जिसके प्रतापसे क्रोडीमल आदिने कुमार्ग ग्रहण किये, बचने पाए हैं. जो अनुचित है. और महाराजाको हाथ जोड़कर कहने लगा कृपानाथ ! लुटेरीके लिये क्या दंड जिसने साथ जाकर बालाओंके सतित्वका नाश कराया तथा करानेका यत्न

लेकर तथा मोहनलाल एफ़. एकी डिगरी लेकर आनन्द भुवनमें मौजूद पाए और उनसे यह समाचार पाकर बुद्धिधन अति प्रसन्न हुआ.

बुद्धिधनके लिये आजका दिन ऐसा आनन्दयुक्त है कि,जिसको यह लेखनी वर्णन करनेमें अशक्त है किन्तु बुद्धिधन ऐसा विचारवान् है कि कोई आनन्द उत्सव न मनाकर सदेवकी तरहसे अपने आपको समझ रहा है और आनेके साथही आनन्दरूपी लहरोंमें अनाथोंको दानदेना शुरू किया तथा सदैवका सदाव्रत जारी करदिया जो रुपये राज्य-कोशसे बुद्धिधनको वापिस मिले उनको अपने घरमें न रखकर उन्ही हज़ारीमल सेठको बुलाकर कन्याशालादि सुकृतकार्यके लिये दे दिये. यह बाते होत होते सारे शहरमे फैल गई और जो जो सुनते गए प्रसन्न होकर बुद्धिधनकी वाह वाह करने लगे और सबके मुखसे इन्हीं मुबारिक शब्दोंकी वर्षा होने लगी कि बुद्धिधन चिरायु होकर सदैव हमारा मंत्री बना रहे और इसकी प्रशंसा दिन प्रति दिन बढ़ती रहे.

बुद्धिधनने राजासाहबकी आज्ञानुसार विद्यासागरको प्राईवेट सेक्रेटरीके स्थान पर दोसौ रुपये माह वारसे मुक़र्रिर कराया जसवन्तसिंहको सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिसकी जगह दी गई तेजमलकी जगह अपना सरिश्तेदार किशोरीलालको बनाया तथा मोहनलालको एकसौ रुपये माह वारकी स्कूल मास्टरकी जगह दी और राज्य नीतिके अनुसार दयारूपी अमूल्य वस्तुको अपना मित्र बनाकर राज्य कार्य इस प्रकार करने लगा कि सारे मुल्कमें वाहवाह होने लगी.

वह सरस्वती जिसका लग्न उसका पिता वृद्ध जीर्णसेठसे कर-नेको तत्पर हो रहा था और जिसको बुद्धिधनने जाकर बंद करवाया

राजा साहबकी फिरसे यह आज्ञा सुनकर बुद्धिधन खडा हुआ और हाथ जोड कर कहने लगा, कृपानाथ ? मेरे पर दया लाकर अबकी दफा इसको छोडो अब यह कदापि ऐसा कार्य नहीं करेगा.

महाराजा—अरे बुद्धिधन तू कैसा विचित्र मनुष्य है जो अपने दुश्मनके लिये सिफारिश कर रहा है.

बुद्धिधन—शास्त्रमें कहा हुआ है कि दुश्मनके दुःखको देखकर कदापि हंसना नहीं चाहिये बल्कि रञ्ज लाकर यथासाध्य मदद करना चाहिये कि जिससे शत्रुताका नाश हो जाए.

महाराजा प्रसन्न होकर धन्य है तेरी बुद्धिको तू यथानामा तथा गुणा है. मुझे पूर्ण आशा है कि तू इस राज्यको दिपाएगा तेरे कहे अनुसार मैं लाहोरीमलको छोडताहूं पर (लाहोरीमलकी तरफ मुख़ातिब होकर) आइन्दा ऐसा अनुचित कार्य कभी किया तो ठीक नहीं होगा.

लाहोरीमल जो आज्ञा कहकर तथा बुद्धिधनका आभार मानकर धनके जानेका कोई रञ्ज न कर अपने घर लौटा.

जब लाहोरीमल चला गया महाराजाने अपने कोशाध्यक्षको बुलाकर हुक्म दिया कि क्रोडीमलके घरसे जितना रुपया आयाथा सब बुधिधनको दे दिया जाए तथा लाहोरीमलकी जागीर बुद्धिधनको प्रदान करनेका स्वयम् परवाना लिख दिया और कहने लगे कि प्राईवेट सेक्रेटरीकी जगह जो कई दिनोंसे ख़ाली है तथा आज जो जगह ख़ाली हुई हैं उसका शीघ्रही प्रबंध कर कार्य निर्विघ्नतासे किये जाओ.

बुद्धिधन जो आज्ञा कहकर जसवन्तसिंहको साथ ले घरको लौटा.

उसका घर आना था कि वही दो विद्यार्थी जो बोम्बे विद्यापठन करनेको बुद्धिधनने भेजेथे विद्यासागर बी. ए. का डिपलोमा

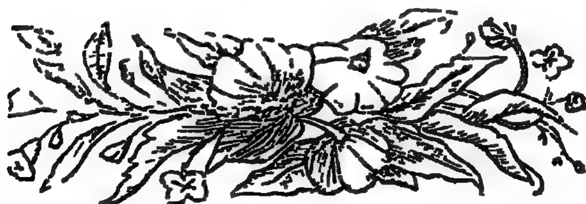
बुद्धिधनका विश्वेश्वर नगरमें आगमन जानकर स्वयम् वहां आई जिसका लग्न विद्यासागरसे करा दिया गया.

वाचकवृन्द ?

इस स्थान पर यह प्रगट करना अनुचित नहीं होगा कि बुद्धिधनने मंत्री पद पाकर किंचित् अभिमान नहीं किया और सदैव अपनेको वैसीही अवस्थामें जानकर तथा निज धर्म्म पर दृढ़ रहकर प्रजावर्गको अपने पुत्र समान समझकर राज्य कार्य करने लगा. और पहिलेकी तरह यथा नामा वनकर मनुष्य मात्रको उपदेश करता है तथा ज्यो २ सत्मार्गसे द्रव्य आता है उसका सन्मार्गमें व्ययकर अपना जन्म सफल कर रहा है.

शान्ति ! शान्ति ! ! शान्ति ! ! !

समाप्तः ॥



पृष्ट	संख्या	शब्द	पर्यायार्थ
१४६	१७	इजलासमें	दरवारमें, कचहरीमें
२६२	९ से ११	इसके पढ़नेकी जरूरत नहीं है	
१८९	१८	वाग़ी	घरवार छोडकर लूटने वाला
२३५	१	इकवालसे	प्रभावसे
२४२	५	ढाढ़स	दिलासा, धीरज
२४३	१९	वदाथा	लिखा था
२४३	२१	चया	पूरा खाया हुआ
२४९	२२	इश्वरकी	कर्मरूपइश्वरकी
२५९	१६	नक़व	फांटदेना,
२८२	१५	सुपरिण्टेण्डेन्ट	सवकामुखियाअफसर
२८६	१५	दावत	जियाफत, गोट
२८८	४	लुत्फ	मजा, सवाद
३१६	८	इन्सपेक्टर खुफिया पुलिस	छुपी पुलिसका इन्सपेक्टर.
३२४	१४	हरिके प्यारे	प्रभुके प्यारे
४१३	२१	खुफिया	छुपी
४३२	१२	पुश्तोंमेंभी	पिढियोंमेंभी

NOTES.

पर्यायार्थ उन शब्दोंके जो सामाजिक सज्जन समझ न सकें.

पृष्ठ.	संख्या.	शब्द.	पर्यायार्थ.
१	१७	आलीशान	विशाल
१	१८	बाआसानी	सरलतासे
२	३	क़रीब २	बहुधा, प्रायः
२	१३	सूर्यनारायण	सूर्यदेव
३	१५	ख़ैरख़्वाह	हितचिन्तक
४	२३	फ़रनीचर	सजावटका सामान
११	२६	पुट्ठे	पिण्डियें
३३	७	प्राईवेट	निजका
३६	१५	वल्हारी	जातसे
५०	५	खुफिया	गुप्त
५२	९	एन्ट्रेन्स	बीचका
५७	२०	फर्स्ट डिविज़न	पहिली श्रेणी
६२	२२	सूर्यभगवान	सूर्यदेव
६८	१८	प्लेग्राउण्ड	खेलनेका स्थान
८७	२३	ढाढस दी	धीरज दी
९९	२७	रियाया	प्रजा
१०९	१७	हरि	प्रभु
१२९	११	ख़ुखावर	भयङ्कर, डरावना

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४	४	उसकी	उसको
१४	५	उसकी	उसको
१६	१८	धरम	धर्म
१६	२४	नहीं	नहीं
१८	१४	सभ्य	सम्य
२०	१५	वल्कि	बल्कि
२४	८	हवा	ह्वा
२४	१३	दृष्टि	दृष्टि
२४	१०	मनने	मनमें
२४	२४	है	है
२५	२	कोइ	कोई
२९	६	वाहर	वाहिर
२९	२०	मैना	भैता
३२	२३	किथा	क्रिया
३५	१२	शत्र	शत्रु
३७	२४	कराएमा	कराएगा
३८	४	दफ्तर	दफ्तर
४१	२	ह	है
४५	१५	शकता	सकता
४८	१२	रिशवत	रिश्वत
४८	१८	थार	यार
४८	१९	ने	न
५२	११	सकता	सकती
५२	१५	वल्फे	बल्कि

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	६	ऊपदेशिक	औपदेशिक
२	१३	मूर्यनारायण	सूर्यदेव (सर्वत्र सूर्यदेव समझना चाहिये)
२	२४	मलूम	मालूम
४	१०	खिंची	खिची
४	११	भूवन	भुवन
४	१३	आनन्दभूवन	आनन्दभुवन
५	३	अलनता	अलबत्ता
५	१६	है	हैं
६	४	तु	तू
७	२	है	हैं
८	८	तु	तू
८	१४	वतादुंगा	वतादूंगा
८	२१	खामोंश	खामोश
९	६	वना	वना
१०	१२	माका	मौका
११	१६	पुश्तें	पुश्तें
११	१८	जा	जो
१२	३	कहसकती	कहसकता
१२	१७	में	में

पृष्ठ.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
९९	१८	लिखं	लिखूं
१००	१५	खलुवली	खलवली
१००	१८	नहीं	नहीं
१०२	१०	ापि	कदापि
१०३	१९	पहिल	पहिले
१०३	२१	वनूं	वनूं
१०३	२१	सत्रुता	शत्रुता
१०३	२२	शकता	सकता
१०४	१५	जिसस	जिससे
१०६	४	पाचंगा	पाऊंगा
१०६	१६	एसा	ऐसा
१०६	१९	हुं	हूं
१०७	१४	ऐसे २	ऐसी २
१०८	२०	काई	कोई
१०९	६	सकत्ताथा	सकता
१०९	१६	रखा	रक्खा
१०९	२५	किरणो	किरणों
१०९	२५	दिखलाइ	दिखलाई
११०	२	है	हैं
११०	१०	रूक	रुक
११०	१९	पुर्व	पूर्व
१११	१४	वहार	बाहर
१११	२२	दुसरा	दूसरा
११२	४	चाहिये	चाहिये

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
५३	१०	नहीं	नहीं
५७	१०	और छोडो	छोडो और
५८	१८	प्लेग्राण्ड्	प्लेग्राउण्ड
६०	७	संभाव	संभव
६६	१२	तया	तथा
७०	१२	अजकल	आजकल
७१	६	है	हैं
७१	२०	समा	समय
७२	१०	ज्यो	ज्यों
७२	१८	भोान	भोजन
७२	२३	मे	में
७७	१३	नही	नहीं
७८	१०	पहुचा	पहुंचा
७८	१६	है	हैं
८०	१	इन्ही	इन्हीं
८०	२१	गिरफ़तारी	गिरात्फ़ारी
८४	१४	स्त्रीयों	स्त्रियों
८५	२	ऐस	ऐसे
८५	१३	अनाय	अनाथ
८९	८	क्यो	क्यों
९०	१३	ताई	तॉई
९२	१०	है	हैं
९२	१०	मिलेगें	मिलेंगे
९२	१६	क्निारे	किनारे

पृष्ठ.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१२४	२०	रहे	रहे
१२५	३	है	हैं
१२५	१४	भाइ	भाई
१२६	१०	लाया	लाये
१२६	१५	दुर	दूर
१२६	२१	दष्टि	दृष्टि
१२७	१२	यया	यथा
१२८	९	हे	है
१२८	१३	है	हैं
१२८	२१	भुख	भूख
१२८	२२	दोनो	दोनों
१२८	२२	उपस्थि	उपस्थित
१२९	१०	गुफाए	गुफाएं
१२९	१४	नही	नहीं
१२९	१६	ह	हैं
१३१	२३	कुद	कूद
१३३	८	चलने	चलने
१३३	१४	सक्ते	सकते
१३४	५	लाहारीमल	लाहोरीमल
१३४	९	एसा	ऐसा
१३४	१२	की	कि
१३४	१२	जाउं	जाऊं
१३५	११	एसा	ऐसा
१३५	१४	नहीं	नहीं

पृष्ठ.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११२-२०	१६	ख़ातमा हुं	ख़तमा हूं
११३	१८	एसे	ऐसे
११३	२०	कूआ	कूआं
११५	७	सोचामि	शोचामि
११६	९	वनेहींगे	वनेहींगे
११७	६	लगें	लगे
११८	१७	ख्याल	खयाल
११९	१०	ऐसी	ऐसी
११९	१४	हैं	है
११९	२०	अछी	अच्छी
१२०	११	एसा	ऐसा
१२०	१५	कहारिस्त	फ़हारिस्त
१२०	२३	एसी	ऐसी
१२२	१	पश्चाताप	पश्चात्ताप
१२२	२१	मुक़र्रामें	मुक़र्ररामें
१२२	२४	ह	है
१२३	१२	इतनें	इतने
१२३	१४	पैसा	ऐसा
१२३	१५	हों	हां
१२३	२०	है	हैं
१२४	११	कूए	कुअे
१२४	१६	दोनो	दोनों
१२४	१८	रहें	रहे
१२४	१८	है	हैं

पृष्ट.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४६	५	उाचत	उचित
१४६	७	मानासंह	मानसिंह
१४६	९	हागा	होगा
१४६	१६	वाते	वातें
१४६	१९	भविष्यमे	भविष्यमें
१४६	२५	तदन्तर	तदनन्तर
१४७	८	झुठा	झूठा
१४७	८	दाष	दोष
१४७	११	हरन	हरने
१४७	१५	घरका	घरको
१४७	१६	हाकर	होकर
१४७	१८	झूठ	झूठा
१४७	१९	क्या	क्यो
१४८	१६	जरुर	जरूर
१४८	२०	जायगे	जाएंगे
१४९	१२	वैसे	वैसा
१५०	२	हों	हां
१५१	२१	पचीस	पच्चीस
१५१	२१	पंदर	पन्द्रह
१५१	२३	कों	को
१५२	१८	एसा	ऐसा
१५२	१९	कोइ	कोई
१५२	२४	क्योरे	क्योंरे
१५३	१०	चहरे	चेहरे

पृष्ठ.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
११६	१३	खूफिया	ख़ुफिया
१३६	२०	किशारसिंह	किशोरसिंह
१३८	२	एसे	ऐसे
१३८	१६	इनकार	इन्कार
१३९	१	करुंगा	करूंगा
१३९	११	नही	नहीं
१३९	२३	जसवन्तासिंह	जसवन्तसिंह
१३९	२४	धवराओ	घबराओ
१४०	११	दुर	दूर
१४०	२०	दुःखो	दुःखों
१४२	१	वातें	बातें
१४२	१४	ग़फलत	ग़लत
१४२	१४	हैं	है
१४३	५	जाऊगा	जाऊंगा
१४३	१८	में	मैं
१४४	४	कोधदास	क्रोधदास
१४४	६	जन्तमे	अन्तमें
१४४	९	कों	को
१४४	११	है	हैं
१४४	११	चुटकारा	छुटकारा
१४४	१४	ताप्तर्य	तात्पर्य
१४४	२०	वंर्ग	वर्ग
१४६	१	लोगो	लोगों
१४६	२	वढगा	बढ़ेगा

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
२१८	१३	दना	देना
२२२	८	उन्हेंने	उन्हे
२२४	३	लाहारीमल	लाहोरीमल
२२५	१	छोनाड	छोडना
२२६	१२	मे	में
२२७	२४	मेर	मेरे
२३३	२	के	की
२३६	१०	राजा	राज
२३६	१६	विगाड़	विगाडा
२३७	७	विवार	त्रिचार
२२८	५	गाढप	गडप
२५३	१	वने	वनें
२५४	१२	चक्	चुकं
२५४	१२	टकठा	एकठी
२५५	२०	जेरे	मेरे
२६०	५	तमाशवीन	तमाशवीन
२६१	११	ह	है
२६२	२८	कारवाई	कार्रवाई
२६२	२५	एकं	एक
२६३	१	रागी	रोगी
२६३	१	साता	सोता
२६३	६	मेर	मेरे
२६४	८	पर	परम्
२६७	२५	नरककी	नर्कके

पृष्ठ.	संख्या.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५४	१६	तृटत	तूटत
१५५	५	नही	नहीं
१५६	१०	कों	को
१५६	२२	फलभूत	फलीभूत
१५८	१८	छुटना	छूटना
१५८	१८	मुाश्किल	मुश्किल
१५९	५	कहो	कहा
१५९	२४	परिगाम	परिणाम
१५५	२४	गति	मति
१६२	३	रलिथां	रलियां
१६३	१	भा	भी
१६३	१९	अज्ञानता	अज्ञानता
१६३	२४	शरिस्तेदार	सरिश्तेदार
१६५	२३	मं	मैं
१६८	३	दीन	दिन
१७५	८	आधा	आध
१७८	६	म	मैं
१८१	१४	क्रोधित	क्रोधित
१८६	५	मैं	में
१९३	१	जा	जो
२००	१	कम्मठोक	कर्म्मठोक
२०२	२	अंगुठी	अंगूठी
२०७	४	उनको	उनके
२०७	४	प्राणके	प्राणको

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
३४१	१३	खूद	खुद
३४१	१९	यों	योंही
३४४	१७	उससे	उसे
३४५	१५	सवकों	सेवकों
३४५	१८	हैं	है
३४८	१३	वसन	वसत
३४८	२१	हं	है
३४८	२०	सावधान	सावत्र
३४८	२३	डरनारे	डारनारे
३४९	१२	मुछई	मुर्दई
३४९	१२	मुछाला	मुछाएला
३४९	१७	दूमरको	दूसरेको
३५०	७	कभी	कमी
३५०	८	नीहा	नहीं
३५०	१२	लाहोंरीमल	लाहोरीमल
३५०	१७	कोन्सरेबल	कोन्सटेबल
३५०	१८	आवज़	आवाज़
३५१	२०	गन्नी	ग़नी
३५२	३	नहीं	नही
३५२	५	है	हैं
३५३	१०	वैठ	वैठे
३५४	६	लागती	लागु होती
६५४	१०	ओही	ओहो
३५५	१६	स्यिति	स्थिति

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
२६१	३	क्यो	क्यों
२६१	१४	शुं	शुं
२६१	२७	करतो	करतों
२७३	१३	सुंने	सुने
२७८	१५	वनें	वनें
२८०	२०	हो	—
२८६	२६	चिठीरंसा	चिठीरसां
२८७	२६	हमं	हमें
२८९	२६	लेख नीवर्णन	लेखनी वर्णन
२९१	२	मांड़	माड़
२९३	१३	दुर	दुइ
२९५	२३	वश	वशकर
२९६	२२	दृष्टिगत	दृष्टिगत
३००	११	का	को
३१४	६	सुनाया	सुना आया
३१६	२४	मौकुफी	मौकूफी
३२८	९	खडे हैं	खडे
३२९	२२	जिसका	जिनका
३२९	१७	शेठस	शेठसे
३३०	१८	मं	में
३३६	९	है	करना है
३३७	११	हलाल२	हलाल
३४०	१५	हो	—
३४१	३	वात	बात

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
३९८	१६	मान	मन
४०१	११	रहे	रटे
४०१	१४	देवादि	देवाधि
४०१	१८	दुर्गुणको	दुर्गुणका
४०२	१९	बुद्धिधनफे	बुद्धिधनके
४०३	१८	करगा	करेगा
४१२	७	लगा	लगी
४१७	४	करूण	करूणा
४१८	१२	हा	हो
४१८	१२	कविरायों	कविराय
४२४	७	धने	घने
४४०	६	सहष	सहर्ष
४४२	१०	कामरहा है	काम कररहा है
४४४	१४	कहने	कहने
४४६	५	राजासाहबसे	राजासाहब
४४८	१२	वाद	वाद

पृष्ठ.	संख्या	अशुद्ध.	शुद्ध.
३५५	२४	कूटर	फूटर
३५६	९	वाहिर	वाहिर
३५९	१०	मात्रको	मात्रका
३६०	२१	देखा	देखो
३७०	३	तेजमलके	तेजमलकी
३७१	८	वह	वर
३७२	७	कदापि	—
३७७	१	हसु	हेतु
३८१	?	किसीकी	कीसकी
३८१	१८	रञ्ज	रंज
३८४	१	उत्कठा	उत्कंठा
३८४	१	होगे	होंगे
३८४	६	सखती	सरस्वती
३८५	५	कुमारी	कुवारी
३८५	१३	मं	मे
३८७	८	वेलामेंही	समयसेही
३९२	२२	सुकर	सुनकर
३९३	२४	जीणसेठ	जीर्णसेठ
३९५	६	अव	जव
३९५	१३	गया	गयाऔर
३९५	१८	पौधे	पौदे
३९६	१०	भास	भाल
३९६	२३	तुमारे	तुमरे
३९७	७	शाहर	मशहूर

१ श्रीमान् शाह खुबचंदजी गु-
मानमलजी
१ ,, शाह गोविन्दजी लक्ष्मी-
चंदजी
१ ,, मोदी जमनालालजी गो-
पीरामजी
१ ,, भोजक छोटालालजी म-
गनलालजी
१ श्रीमान् शाह किसतुरचंदजी
मनजीजी
१ ,, शाह खुमाजी मुलाजी
१ ,, गिसारामजी मोहनरामजी
१ ,, शेठशुलेमानजीमोलुदीनजी

आबूरोड

५ ,, मुता हंसराजजी खेताजी
३ ,, बाबू मुलचंदजी सिंघी
१ ,, मुंशी प्राणलालजी
१ ,, शाह खुशालचंदजी खेम-
राजजी
१ ,, शङ्करलालजीमोहनलालजी
१ ,, मुता हंसराजजी चेलाजी
१ ,, शाह नाथाजी धर्मचंदजी
१ ,, भंडारी शोभागमलजी
१ ,, हरणधर्मचंदजीभगवानजी
१ ,, तलाटी सगनाथसिंहजी

१ श्रीमान् मुनिर अमीर
१ ,, ताराजी चांपाजी
१ ,, भायाभाई मोकमलालजी
१ ,, उवाणी उदेचंदजी
१ ,, मोदी हीरालालजी साजु-
रामजी
१ ,, रणछोडजी वचरामजी
१ ,, बारट गुलाबाजी हरजीजी
१ ,, सांकला परतापसिंहजी
१ ,, मोदी बक्षीरामजी मोहन-
लालजी
१ ,, शेय्यद काजमअलीजी
१ ,, बारट चमनसिंहजी
१ ,, मोदी शिवनारायणजी प-
नालालजी
१ ,, मोदी सेडरामजी जगन्न-
नाथजी
१ ,, शाह चतराजी खुशालजी

आहोर

१ श्रीमान् मुता राजमलजी
केसरीमलजी

उथमण

१ ,, देवडा जोरासिंहजी जा-
गीरदार
१ ,, त्रीकमजी खुशालजी शाह

प्रथम ग्राहक होनेवालोंके धन्यवाद सहित

मुबारिक नाम.

अजमेर.

१ श्रीमान् रायबहादुर सोभागचंदजी ढड्ढा
१ ,, रायबहादुर नेमिचंदजी
१ ,, मुलचंदजी सोनी
१ ,, हीराचंदजी चचेती
१ ,, पंडित हरिलालजी

अजारी.

८ ,, राजसाहेबां जोरावरसिंहजी साहब

अचलगढ.

१ ,, मुता वजेराजजी रुपाजी

अरठवाडा.

१ ,, देवडा अनोपसिंहजी जागीरदार
१ शाह वरदाजी खुशालजी
१ ,, भीकाजी तेजाजी शाह
१ ,, शाह भगाजी सांकलचंदजी

असावा

१ श्रीमान् खत विश्वेश्वर तुलसीरामजी
१ श्रीमान् खत रतनेश्वर लालजी
१ ,, खत गणेशरामजी

आकुना

१ ,, पुरोहित चेनरामजी

आगरा

४ ,, लक्ष्मीचंद जैनश्वेताम्बर लाइब्रेरी

आबू

१ ,, रतनशी पुनशी लाइब्रेरी
१ ,, जैन दिगम्बर कारखाना
१ ,, पंडित भवानीशङ्करजी
१ ,, राठोड अचलसिंहजी
१ ,, शेख अमूखांजी
१ ,, राठोड शार्दूलसिंहजी
१ ,, देवडा शिवनाथसिंहजी
१ ,, शाह केसरीचंद्रजी रामचंद्रजी
१ ,, बाबू कल्याणदत्तजी आगरेवाला
१ ,, मोदी नाथालालजी रेवाशङ्करजी

छोटालखमाना

१ श्रीमान् शाह परतापचंदजी नवलाजी

छोटीसादडी.

२ ,, सेठ चंदनमलजी नागोरी

जणापुर

१ ,, राणावत रतनसिंहजी जागीरदार

जावाल.

२ ,, ठाकुर मेघसिंहजी साहब

१ ,, शाह मनरुपजी गुलाबचंदजी

१ ,, शाह कस्तुरचंदजी हरजीजी

जीरावल

१ ,, कोठारी जयचंदजी मुलाजी

जोइला

१ ,, शाह उमाजी इदाजी

१ ,, शाह खसाजी जेताजी

१ ,, शाह हीदुजी गलाजी

१ ,, शाह मुदाजी इदाजी

जोगापुर

१ ,, शाह जीवाजी हंसाजी

१ ,, शाह पुनमचंदजी पनाजी

जोधपुर

१ ,, काजी सिराजुल हुसनजी

१ ,, मुंशी असाद हुसेनजी

डोडुआ

१ ,, शाह भुरमलजीकीसतुरजी

तवरी

५ ,, शाह डायाजी मानाजी

१ ,, शाह खुशालजी खीमाजी

१ ,, सोनी गमनाजी हरजीजी

१ ,, शाह नोपाजी जेसाजी

१ ,, शाह रुगनाथजी रायेगजी

१ ,, शाह धुलाजी चेनाजी

तीजारा

१ ,, मुनशी गणेशीलालजी

देलदर

५ ,, सेठ भबूतमलजी चतराजी

१ ,, शाह केवदाजी लालाजी

१ ,, शाह नवाजी दोलाजी

नवारी

१ ,, श्रीमान् शाह नेमाजी

नागोर

१ ,, कोठरी जगरुपमलजी रगरुपमलजी

१ , पंडित दुरगाशङ्करजी

कलकत्ता

४ श्रीमान् रायबहादुर बद्रीदा-
सजी मुकिम वाइसरोज कोर्ट
१ ,, पंजीलालजी बनारशी
दासजी जोहरी

कालंद्री

३ ,, ठाकुर साहब कांनासिंहजी
३ ,, केसाजी वीरचंदजी शाह
२ ,, वजीगजी रुपाजी शाह
१ ,, सांकलचंदजी मागाजी
१ ,, हंसराजजी रुपाजी
१ ,, शाह मुनाजी दोलाजी
१ ,, शाह पनाजी जेठाजी
१ ,, शाहपुनमचंदजीवीरचंदजी
१ ,, शाह गोदाजी वनाजी
१ ,, शाहहिंदुमलजीदेवाचंदजी

कालाबाग

१ ,, यति रूपमलजी

कोजरा

१ ,, गांदी चीमनाजी लकमाजी

कामली (बलाडी)

१ शाह हांसाजी हकमाजी

कोयमतुर.

२ ,, श्रीमान् शाह ओराजी
शीवदानजी

खेजडीया

१ श्रीमान् शाह नथाजी पनाजी

खुडाला

१ ,, शाह मुलचंदजी केराजी

गोहली

२ ,, शाह वजीगजी हुकमाजी
१ ,, शाह जसरूपजी हींदुजी
१ ,, शाह फुलचंदजी राये-
चंदजी
१ ,, शाह लुम्बाजी वालाजी
१ ,, शाह चिमनमलजीजेसाजी
१ ,, शाह केसरीमलजी मोतीजी
१ ,, शाह चीमनमलजी वनाजी

गोगेलो.

४ ,, सेठ लालचंदजी अमन-
मलजी

गोडीवाडी

४ ,, सेठ रावतमलजी मुलता-
नमलजी

गोल

१ ,, खत केवलरामजी

चडुआल

१ श्रीमान् शाह कलाजी मुलाजी

पालडी (हनाद्रा)

१ ,, दवे भगवानजी जगन-
नाथजी

पाली

१ ,, पंडित बालकृष्णाजी
दामोदरजी शास्त्री

१ ,, कलां गुलराजजी सरि-
श्तेदार

१ ,, हजारीमलजी पनालालजी

१ ,, सिंघी हीराचंद्जी सोन-
मलजी

पोसालिया

१ श्रीमान् शाह चुनिलालजी
वाकना

१ ,, वेश्नव चत्रभुजजी गोपा-
लदासजी

१ ,, शाह नाथाजी भीमाजी

१ ,, देवडा अचलसिंहजी जा-
गीरदार

१ ,, शाह चंद्भाणजी परतापजी

पोसिनरा

१ ,, शाह देवीचंदजी रुपाजी

१ ,, शाह पुनमचंद्जी गजाजी

पोमावा

२ ,, सेठ नवलमलजी भवूत-
मलजी

वरलूट

१ ,, शाह नवाजी उमाजी

१ ,, शाह वना हीरुजी

१ ,, शाह अखेचंदजी गोमाजी

वाली

१ ,, सेठ उमरावचंदजी फुल-
चंदजी

१ ,, लक्ष्मीचंदजी पुनमचंद्जी

१ ,, गेमावत बीजेराजजी सा-
करचंद्जी

१ ,, सिरोड्या अजेराजजी

१ ,, सिरोड्या अनराजजी
श्रीकृष्णदासजी

१ ,, मुतानवलमलजी मेरमलजी

१ ,, महन्त कांडदासजी हीरा-
लालजी

१ ,, सिरोड्या साकरचंद्जी
सनताकचंद्जी

१ ,, शाह मुताजी सराचंद्जी

१ ,, सिरोड्या राजमलजी
केसरीमलजी

१ ,, मदनलालजी अगरवाल
१ ,, राठोड चतरासिंहजी

नीवज

२ ,, राजसाहेबांमोहब्बतासिंहजी साहेब
१ ,, मुता धुलाजी गोमाजी

नून

१ ,, शाह नथमलजी डायाजी

पाडीव

५ ,, ठाकर साहब अभेसिंहजी
१ ,, केशवलालजीभोगीलालजी
१ ,, शाह दोलाजी खुमाजी
१ ,, शाह अचलाजी गोवाजी
१ ,, शाह चिमनलालजीगोमाजी
१ ,, शाह पुनमचंदजी वजीगजी
१ ,, भीकाजी खुशालजी
१ ,, वीराजी केरीगजी
१ ,, शाह ताराजी मोटाजी
१ ,, शाह शङ्करजी तुवचंदजी
१ ,, शाह जोराजी फुलचंदजी
१ ,, शाह रुपाजी कोलीगजी
१ ,, ओजा सवाजी लीलाजी
१ ,, शाह हदाजी खुशालजी
१ ,, रवत मेमाजी मोटाजी
१ ,, शाह हींदुजी खुमाजी
१ ,, रतनचंदजी मुलाजी

परतापगढ

२ ,, सेठ लक्ष्मीचंदजी घीया
१ ,, कांकडेसा जडावचंदजी पुनमचंदजी

पींडवाडा

२ ,, शाह रायेचंदजी मोतीजी
१ ,, पडित मुलचंदजी
१ ,, शाह दुलीचंदजी
१ ,, शाह जवेरचंदजीहंसराजजी
१ ,, शाहभायेचंदजीहंसराजजी
१ ,, शाह रायेचंदजीहंसराजजी
१ ,, मुता अमीचंदजी गुमनाजी
१ ,, शाह पुनाजी जेताजी
१ ,, शाह जवानमलजी किसतुरचंदजी
१ ,, शाहकिसतुरचंदजी वेलाजी
१ ,, बाबू काशीनाथजी ओवरसियर
१ ,, पंडित लक्ष्मीरामजी
१ ,, यति लाभचंदजी

पालडी

१ ,, देवडा करणसिंहजी जागीरदार

१ ,, शाह रामीगजी पोमाजी
१ ,, शाह सांकळचंदजी मोकमचंदजी
१ ,, शाह चंद्रभाणजी जेठाजी
१ ,, शाह मनसुखलालजी मगनलालजी
१ ,, शाह जवानमलजी हीदुमलजी

भाईंदर

२० ,, शाह मुलतानमलजी जवेरचंदजी

भारजा

१ ,, मुबारखानजी थानेदार

भारुंदा

१ ,, शाह सुरजमलजी हरकचंदजी
१ ,, मुता लालचंदजी समर्थमलजी

भावलकोट

१ ,, शाह मुरजी गेलाभाइ

भावटा

१ ,, परोहित करतींगजी
१ ,, गोयल चमनसिंहजी
१ ,, वारड सादुलसिंहजी

भुज (Cutch)

१ ,, मुनशी ओदवजी
१ ,, शाह इदरजी देवचंदजी
१ ,, शाह वीरचंदजी खंगारजी
१ ,, मेसरी ठाकरसी भानजी
१ ,, शेठ सांकलचंदजी पानाचंदजी
१ ,, शाह सांकलचंदजी मानचंदजी
१ ,, शाह मुलचंदजी भगवानजी
१ ,, शाह अनोपचंदजी करमचंदजी
१ ,, शाह अजरामजी कसतुरचंदजी
१ ,, शाह वीरचंदजी लक्ष्मीचंदजी

मुलां

१ ,, नाथुसिंहजी थानेदार

भेव

१ ,, शाह धनरुपजी मानीगजी मडवाडिया

मडीया

१ ,, शाह वालाजी कीशनाजी
१ ,, शाह मुराजी मनरूपजी

बीकानेर

१ ,, मेहता अभेसिंहजी दरबार वकील

बोरावाडी

१ ,, सेठ जगननाथजी चोवरी

बावली

५ श्रीमान् रतनाजी लकमाजी

बेजवाडा

२ ,, शाह मुताजी समनीरामजी
१ ,, शाह नरसिंहजी नथमलजी
१ ,, शाह पेराजी अचलाजी
१ ,, शाह जुहारमलजी ताराचंदजी

बेलगांव

१ ,, बहिरा कपुरचंदजी हीराचंदजी

बोम्बे

२ ,, शाहफुलचंदजी हीराचंदजी
२ ,, शाहमङ्गलचंदजी गुलबाजी
२ ,, शाह रामजी गलाजी
२ ,, शाह नानचंदजी गुलाबजी
२ ,, शाह पनाजी मेदाजी
२ ,, शाह पुनमचंदजी भगाजी
२ ,, शाह खुमाजी लकाजी
२ ,, शाह हकमाजी कीसनाजी
२ ,, शाह लालाजी मेगाजी
२ ,, शाह लालाजी मेगजी
१ ,, शाह रतनाजी धनाजी
१ ,, शाह हुकमाजी धनाजी
१ ,, शाह नगाजी मेगाजी
१ ,, शाह वजीगजी गजाजी
१ ,, शाह खुशालजी प्रेमाजी
१ ,, शाह जगनाथजी मेदाजी
१ ,, शाह पनाजी मेदाजी
१ ,, शाह मायेचंदजी मंशाजी
१ ,, मेहता मगनलालजी लालचंदजी
१ ,, शाह रामचंदजी मेगाजी
१ ,, शाह हजारीमलजी फोजमलजी
१ ,, मुता केसराजी मानीगजी
१ ,, शाह माणेकचंदजी उदाजी
१ ,, जेठाजी भीमजी
१ ,, शाह फुआजी किसतुरजी
१ श्रीमान् शाह तीलोकचंदजी सुरजमलजी
१ ,, शाह माणेकचंदजी गुलाबचंदजी

१ ,, शाह रतनाजी जोदाजी
१ ,, शाह केसाजी गुलाजी
१ ,, शाह गमना रुगनाथजी

वागरा

१ ,, शाह भगवानजी राजाजी
१ ,, शाह चमनाजी ठुकमाजी
१ ,, शाह किसतुरजी हुकमाजी

वराडा

१ ,, शाह मागा खुमाजी
१ ,, शाह खङ्गारजी खुमाजी

वडगांव

१ ,, शाह लक्ष्मीचंदजी गुलावचंदजी
१ ,, शाह दोलाजी खेताजी
१ ,, शाह नवाजी सुरतींगजी
१ ,, शाह हटाजी रावलजी
१ ,, शाह पुनमचंदजीरिखमाजी
१ ,, शाह देसाजी धनाजी

वीरवाडा

१ ,, देवडा धुलसिंहजी जागी-

सरतरा

१ ,, शाह जगरुपजी सवाजी

सनवाडा

१ ,, लादुरामजी नाथुरामजी त्रीवेदी
१ ,, शाह पद्माजी आगाजी
१ शाह लुवाजी पनाजी

सागर

१ ,, शाह चमनाजी प्रेमचंदजी

सिरोडकी

१ ,, शाह खुवाजी गोमाजी
१ ,, शाह देवाजी डाहाजी
१ ,, शाह चेलाजी वजागजी

सिरोडी

१ ,, शाह लखमाजी जेठाजी

सिरोही

५ ,, शेठ जयचंदजी हिम्मतमलजी
५ ,, शाह भभूतमलजी रुपचंदजी मरडिया
३ ,, मोदी सागरमलजी रतनचंदजी
३ ,, शाह पुनमचंदजी चुनीलालजी
३ ,, गांधी रतनाजी वालाजी
२ ,, मोदी चुनीलालजी लुवचंदजी
२ ,, शाह किसतुरचंदजी भावाजी

१ ,, ठाकुर गुमानसिंहजी
१ ,, शाहसाकलचंदजी गोमाजी
१ ,, शाह मुलाजी दालाजी
१ ,, शाह नाथाजी हंसाजी
१ ,, शाह वीराजी डाहाजी

मदरास

३९ ,, शाह ताराजी धुलाजी
२ ,, भांनाजी ताराचंदजीशाह
२ ,, शाहफोजमलजीमुलचंदजी
२ ,, शाह जेठमलजी गेनमलजी
१ ,, शाह हरकचंदजी पुनमचंदजी
१ ,, शाह भेराजी चोगालालजी
१ ,, शाहहीराजीतीलोकचंदजी

मनादर

२ ,, राजसाहेबों दलपनसिंहजी साहब

मालगांव

२ ,, शाह मोतीजी मालाजी
१ ,, शाह वजा देवाजी
१ ,, शाह हीदुमलजी रामाजी

मोटागांव

२ ,, श्रीमान् ठाकुर रूपसिंहजी
१ ,, अचलाजी हकमाजी
१ ,, शाह ताराचंदजी भावाजी
१ ,, भीकाजी गमनाजी

मांडवाडा

२ ,, ठाकुर डुगरसिंहजी साहेब
१ ,, शाह मागाजी हुकमाजी

मांडांणी

१ ,, तेजाजी तोलाजी
१ ,, शाह हीदुजी भीखाजी

रेहवाडा

१ ,, रेहमानखांजी
१ ,, शाह लकाजी खुमाजी

रोहीडा

३ ,, मुता अनराजजीरायचंदजी
१ ,, मोदी मुलचंदजी नेतीजी

रतलाम

५ ,, अभिधान राजेंद्र कार्यालय
१ ,, सेठरायसाहबकेसरीमलजी
१ ,, सेठ रतनलालजी सुराना

लास

१ ,, शाह हांसाजी दरगाजी
१ ,, शाह केसाजी अकाजी
१ ,, शाह मानागजी धनरूपजी
१ ,, शाह सुरताजी भावाजी
१ ,, शाह सुताजी केसरीमलजी

१ ,, कोठारी जवानमलजी जेसाजी
१ ,, मोदीरुपचंदजी वरदीचंदजी
१ ,, गांदीवजीगजीकेसरीमलजी
१ ,, शाह चुनीलालजी खुमाजी
१ ,, मोदी मुलचंदजी जवानमलजी वरदीचंदजी
१ ,, सिंघी जालमचंदजी चेनमलजी
१ ,, गांदी मादाजी खुमाजी
१ ,, गांदी वालचंदजी गुलावचंदजी
१ ,, सिंघी समर्थमलजी पूनमचंदजी
१ श्रीमान् मरडिया मोतीचंदजी दानाजी
१ ,, शाह जामतराजजी गुलाव चंदजी
१ ,, साजी वनेचंदजी परतापचंदजी
१ ,, शाह कपुरचंदजी खुमाजी
१ ,, कांगटानी चुनीलालजी नवलाजी
१ ,, कांगटानी सुरमलजी हीमाजी ताराजी

१ ,, पंसोली माणकलालजी
१ ,, शाह जवानमलजी नेमाजी
१ ,, दोसी ओपाजी किसतुरचंदजी
१ ,, हरण रतनचंदजी गोमाजी
१ ,, वहितरा पुनमचंदजी लालचंदजी
१ ,, दवे मणीशङ्कर मंशारामजी चतरभुजजी
१ ,, वाबु वनेचंदजी रनेचंदजी शाह
१ ,, पंचोली जेतरामजी
१ ,, पंचोली भभूतमलजी
१ ,, परोहित जामतीगजी
१ ,, परतापचंदजी सुराना
१ ,, मोदी जोरावरमलजी पुनम चंदजी
१ ,, चोवावत खेमचंदजी दानमलजी
१ ,, गांदी वजेराजजी रुपाजी
१ ,, मोदी देवीचंदजी मनेचंदजी
१ सिंघी सुरजमलजी केसरीमलजी
१ ,, सिंघीजवानमलजी लूनाजी
१ ,, रावल मानीगजी
१ ,, सोनी भीमाजी डुंगरजी

२ श्रीमान् सिंधी रतनचंदजी नथमलजी
२ ,, मोदी मनेचंदजी कपुरचंदजी
२ ,, सिंधी मीलापचंदजी पुनमचंदजी
२ ,, चोधरी हुकमीचंदजी जीतमलजी
१ ,, सिंधी केसरीमलजी चीमनमलजी
१ ,, हरण जवानमलजी सवाइजी
१ ,, शाह नतमलजी मोतीजी
१ ,, मेहन्त चतरभुजदासजी देवीदासजी
१ ,, शाह हुकमीचंदजी मीयाचंदजी
१ ,, कांगटाणी जवानमलजी अचलाजी
१ ,, नागोरी भीकाजी ताराजी
१ ,, नागोरी देवीचंदजी चेनमलजी
१ ,, शाह सोनमलजी जोरावरमलजी
१ ,, वहितरा पुनमचंदजी सरेमलजी
१ ,, वोरा तीलोकचंदजी

१ श्रीमान् शाह ताराजी सुरजमलजी
१ ,, गांधी समनमलजी सांकळचंदजी
१ ,, दोसी ताराचंदजी माणकचंदजी
१ ,, नानावटी जालमचंदजी ताराचंदजी
१ ,, शाह भगवानजी गुलाबचंदजी
१ ,, पठाण वलीमोहमदखांनी छोटुखांजी
१ ,, सिंधी मुलचंदजी जवाहिरचंदजी रायवहादुर
१ ,, मोदी मीसरीमलजी खेमचंदजी
१ ,, शाह उदेचंदजी उमाजी
१ ,, शाह मनरुपमलजी जालमचंदजी
१ ,, शाह रुपचंदजी भेमाजी
१ ,, शाह लक्ष्मीचंदजी जेताजी
१ ,, भंडारी मनोहरमलजी सलेराजजी
१ ,, मोदी सांकलचंदजी दलाजी
१ ,, शाह आंबाजी पुनमचंदजी

१ श्रीमान् मोदी देवीचंद्जी खुशालचंद्जी
१ „ वैद्य शङ्करलालजी
२ „ वेहीत्रा खुबचंद्जी
२ „ दलालखुबचंद्जीखेमचंद्जी
१ „ मोदी कुशलचंद्जी सांकळचंद्जी

सीयाना

१ „ शाह देवीचंद्जी रुपाजी

सीलदर

१ „ शाह ववाजी गमनाजी
१ „ वजीगजी खुबाजी
१ „ शाह मानाजी मोतीजी

सीगवळ

२ „ शाह उमाजी हंसराजजी
२ „ नगरसेठ तरन्तराजजी
१ „ शाह वीरीदासजी फोजमलजी
१ „ शाह अनोपचंद्जी हरकचंदजी
१ „ शाह फोजमलजी गीलाजी
१ „ शाह डांवाजी गुलावचंद्जी
१ „ शाह गोमाजी केरीगजी
१ „ शाहकेसरीमलजी गुमनाजी
१ „ शाह दलीचंद्जी चांपाजी
१ श्रीमान्शाह दलीचंद्जी दोलाजी
१ „ शाह दलीचंद्जी वागाजी
१ „ मोदी जवरीलालजी लालचंद्जी
१ „ शाह भेराजी भगवानजी
१ „ शाह केवलचंद्जी ताराजी
१ „ शाह गमनाजी चेनाजी
१ „ शाह जसराजजी मनरुपजी
१ „ शाह हंमराजजी किसतुरचंद्जी
१ „ शाह जसराजजी किसनाजी
२ श्रीमान् धनरूपजी खङ्गारजी
१ „ शाह भगवानजी धुलाजी
१ „ शाह वनाजी वजाजी
१ „ शाह धुलचंद्जी जेनाजी
१ „ सोनी मेटाजी किसनाजी

सुळी

१ „ शाह हंसाजी तलाजी

हाथल

१ „ ओझा रामेश्वरजी सदाजी

हालीवाडा

१ „ शाह खुवाजी केसरीमलज
१ „ शाह फुआजी मंशाजी

हुवली

१ „ पेरशी कॉनजी शाह

१ श्रीमान् कंदोइ भीकाजी घोटाजी
१ ,, सिदल जयसिंहजी लक्कु-
आजी
१ ,, दवे साकलचंदजी नादे-
श्वरजी
१ ,, देवडा सोहनसिंहजी
१ ,, सोनी तुलसाजी केशरजी
१ ,, सोनी उमाजी ताराजी
१ ,, कांगटानी कनारामजी
समर्थमलजी
१ ,, ,, लुगाजी सांदाजी
१ ,, पुरोहित मोतीरामजी ची-
मनलालजी
१ ,, शाह कनीरामजी चमनजी
१ ,, धुलचंदजी अदाजी
१ ,, परोहित जवानशङ्करजी
भुरालालजी
१ ,, कांगटाणी नानचंदजी
पनाजी
१ ,, शाह रतनचंदजी दांनाजी
१ ,, कांगटानी मोनीचंदजी
परतापचंदजी
१ ,, नंग खुशालजी गुलवाजी
१ ,, वेश्नव लक्ष्मनदासजी तुल
सीदासजी

१ श्रीमान् हरण जोरजी प्रेमाजी
१ ,, जमादार जरीवखांजी
१ ,, शाह उफारमलजी नेमाजी
१ ,, ठेकेदार कलनखांजी
१ ,, देवडा बहादुरसिंहजी
१ श्रीमान् शाह खमचंदजी
डवाणीवाला
१ ,, पठांण गुलमोहमदखांजी
१ ,, चोधरी हीम्मतमलजी
जीपाजी
१ ,, चोधरी वीजेराजजी
१ ,, सेठ केसरीमलजी शिव-
नाथजी
१ ,, सिंघी जामतराजजी तील-
कचंदजी
१ ,, शाह खुशालजी नथमलजी
१ ,, जमादार चिमनसिंहजी
१ ,, शेख मेहबुबखांजी
१ ,, कंदोइ सुरचंदजी
१ ,, शाह केसरीमलजी खुब-
चंदजी
१ ,, शाहचुनीलालजीनथमलजी
१ ,, काजी हाफिज याकुब-
अलीजी